धरती माता

धरती माता

(*Good Earth*)

लेखक :

पर्लबक



प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा



अनुवादक :
प्रो० [illegible] शर्मा एम ए



मुद्रक :
सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस,
मथुरा





१९५७ ई०



मूल्य :
तीन रुपया

धरती माता

आज वाँगलुंग के विवाह का दिन था। भोर होते ही जब उसने अपने बिस्तर की मसहरी से झाँका तो उसे अचरज सा मालूम दिया। सारे घर में शान्ति थी केवल उसके बूढ़े बाप की खाँसी और उसके हाँफने की आवाज़ अवश्य आ रही थी। उस बूढ़े बाप का कमरा ठीक उसके कमरे के सामने ही तो था और नित्यप्रति उस बूढ़े की खाँसी की आवाज़ वाँगलुंग को सबसे पहले सुनाई देती थी। वांगलुंग उसे सुनता रहता लेकिन उठता तभी था जब वह आवाज़ निकटतम हो जाती और उसके पिता के कमरे से किवाड़ों के खुलने की आवाज़ स्पष्टतया सुनाई दे जाती।

किन्तु आज सुबह उसने ऐसा कोई इन्तज़ार नहीं किया। अपने बिस्तर की मसहरी को एक ओर खिसका कर वह एकदम उठ गया। उस समय कुछ अँधेरा बाकी था लेकिन फिर भी सामने आकाश की कालिमा शोभायुक्त थी। इसके अतिरिक्त जब उसने खिड़की पर लगे कागज़ में के छेद से झाँका तो आकाश की चमक और भी अधिक शोभायमान लगी। उसने खिड़की के पास जाकर कागज़ उखाड़ फेंका।

"इतना सुहावना समय है इस कागज़ को लगे रहने की कोई आवश्यकता नहीं," वह गुनगुनाया।

आज वह इस घर को स्वच्छ देखना चाहता है किन्तु वह इच्छा स्पष्टतया प्रकट करने में उसे कुछ झिझक व शर्म सी लगी। खिड़की से उसने हाथ डाल कर बाहर की हवा का स्पर्श किया और उसे लगा कि हवा के मन्द झोंके पूर्व से आ रहे हैं और हवा में पानी का अंश भी है। यह तो एक अच्छा लक्षण था। खेतों के पकने के लिए वर्षा की आवश्यकता थी। पानी शायद आज न पड़ता किन्तु यदि ऐसी ही हवा चलती रही तो अगले कुछ दिनों में अवश्य ही पानी पड़ जायगा। कल ही तो उसने अपने पिता से कहा था कि यदि ऐसी ही चमकती धूप पड़ती रही तो गेहूँओं में दाना भी पड़ सकेगा। किंतु अब ऐसा जान पड़ा कि देवताओं ने उसके प्रति शुभ कामनाएं प्रगट की हैं और खेत अवश्य लहलहाने लगेंगे।

वह झटपट अपनी नीली पतलून चढ़ाते हुए व कमीज को कंधे पर लटकाते हुए बीच के कमरे की ओर लपका और तब तक भाव-मग्न ही रहा जब तक कि उसने नहाने के लिये पानी गर्म न कर लिया। घर के साथ ही लगे छप्पर में वह सीधा चला गया—यहीं रसोईघर था। वहाँ उसे पालतू बैल का सिर झुका कर पूंछ हिलाते हुए अभिवादन मिला। अपने खेत से मिट्टी खोद-खोद कर ईंटों की दीवार चुन कर यह रसोई घर बनाया गया था और ऐसे ही गेहूँ की बालों का छप्पर छा दिया गया था। अपनी ही मिट्टी से इसी प्रकार उसके पितामह ने रसोईघर की भट्ठी भी बनाई थी जो इतने वर्षों से काम में आते २ अब काली पड़ गई थी। इसी भट्ठी पर आटे की एक बड़ी कड़ाई रखी थी।

पानी वहाँ आसानी से नहीं मिलता था इसलिये उसने डरते २ मिट्टी के दूँबे से भर कर पानी कड़ाही में डाला—कड़ाही भी पूरी नहीं भरी। आज वह अपने सारे बदन को स्नान करायगा। उसके समूचे बदन को उसकी माँ के अतिरिक्त और किसी ने नहीं देखा था—वह भी तब कि वह बचपन में ही अपनी माँ के पैरों पर लिटाया गया होगा।

आज कोई उसके बहन को देखने वाला आएगा अतएव वह इसकी सफाई अच्छी तरह करेगा।

यहाँ के इधर उधर से व रसोई के कोनों में घास फूस के टुकड़े इकट्ठे करके उसने किसी प्रकार आग जलाई। आज आखिरी दिन उसे स्वयं चाय सिलगानी है। ६ वर्ष पहिले जब उसकी माँ का देहांत हुआ था। तब से वह बराबर इसी समय उठकर चाय सिलगाता रहा है और इसी प्रकार पानी गर्म करके अपने बूढ़े पिता को लाकर देता भी रहा है। इन छः वर्षों से ही बराबर वह बूढ़ा भी अपने बेटे को व गर्म पानी की याद देती है क्योंकि गर्म पानी से उसकी खाँसी कुछ धीमी पड़ जाती थी। किन्तु अब पिता पुत्र दोनों को शायद आराम मिल सकेगा क्योंकि इस घर में एक स्त्री का प्रवेश होने वाला है। नहीं तो जाड़ा गर्मी सब बाँगहुइ को सुबह जल्दी उठकर चाय सिलगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अब तो वह अपने बिस्तर पर आराम से पड़ा हुआ स्वयं गर्म पानी का इंतजार करेगा और यदि ऐसी नारी अच्छी हो गई तो वह चाय को पत्नी का भी आनन्द ले सकेगा। कई वर्षों में एक वर्ष तो देव भी किसानों के लिए सुखदायी का सा हो जाता है।

और जब जब वह स्त्री घर आया करेगी तो उसके बच्चे आग सिलगा दिया करेंगे, अपने पति की खुशी के लिए वह अधिक से अधिक बच्चे तो दे ही सकेगी। इन्हीं विचारों में कि अनेक बच्चे इन दोनों कमरों में धमा चौकड़ी मचाते रहेंगे बाँगहुइ एकाएक रुक गया। दोनों कमरे तो अब तक उसे ज्यादा मालूम देते रहे हैं। जब से उसकी माँ मरी है तो आधा मकान तो बराबर खाली सा ही दिखाई देता रहा है। किन्तु फिर भी जगह कम होने के कारण उसने अपने सम्बन्धियों को अपने यहाँ आने से बराबर रोका है खास तौर पर अपने चाचा को जिनके कितने ही बच्चे थे।

एक आध बार चाचा ने कहा भी था, 'यार बेटे का इतने कमरों

की क्या आवश्यकता है ? क्या वे दोनों एक साथ नहीं सो सकते । बेटे के शरीर की गर्मी से बाप की खाँसी को आराम मिलेगा ।'

किन्तु बाप ने सदैव यही उत्तर दिया "मेरा बिस्तर तो मेरे पौत्र के लिए है । बुढ़ापे में वही मेरी हड्डियों को गरमी पहुँचायेगा ।"

"जब पौत्र पर पौत्र होते जायेंगे तो दीवारों के सहारे ही उनके पलङ्ग बिछाने पड़ेंगे नहीं तो वे सब लुढ़क २ कर नीचे ही गिरते रहेंगे। जगह कम पड़ी तो बीच के कमरे में भी बिस्तर लगाने पड़ेंगे तब तो सारा घर ही बिस्तरों से भर जायगा । इन्हीं विचारों में वाँगलुङ खड़ा हुआ था उधर भट्ठी की आग बुझ गई और कड़ाही का पानी भी ठंडा हो गया । दरवाजे पर बूढ़े पिता की छाया उसे दिखाई पड़ी जो हाथ से अपने कपड़े पकड़े हुए था क्योंकि उनमें बटन नहीं थे । खाँसते खाँसते थूक भी रहा था और हाँफता भी जाता था ।

'अभी तक मेरी खाँसी को आराम देने के लिए पानी गरम नहीं हुआ ?'

वाँगलुङ ने घूरकर देखा उसे कुछ ख्याल आया और शर्म मालूम हो । भट्ठी के पीछे से आकर उसने गुनगुनाया 'ईंधन भीगा हुआ सा है और हवा भी ठंडी सी चल रही है—'

वृद्ध महाशय बराबर खाँसते ही रहे जब तक कि पानी गरम नहीं हो गया । वाँगलुङ ने थोड़ा पानी निकाल कर कुछ सूखी पत्तियाँ उसमें डालीं । यह देख उस वृद्ध की आँखें चमक गईं लेकिन फिर भी वह शिकायत करने लगा ।

'तुम इतने फिजूल खर्ची क्यों हो ? चाय की पत्ती तो चाँदी की तरह तेज है ।

'यही तो दिन है' कुछ मुस्कराते हुए वाँगलुङ बोला 'पीजिये और आराम कीजिये ।'

बड़बड़ाते हुए उस वृद्ध ने अपनी सिकुड़ी हुई उँगलियों से प्याला

हाथ में पकड़ा और चाय की पत्तियों को पानी की सतह में बैठते हुए देखने लगा। इस कीमती पदार्थ को पीने से उसे हिचकिचाहट सी हो रही थी।

"ठंडी हो जायगी।" वांग्लु ग ने कहा।

"ठीक है ठीक है", सकपकाते हुए उस वृद्ध ने गर्म चाय के बड़े २ घूंट पीने शुरू कर दिये। एक प्रकार का संतोष उसे हुआ। किंतु साथ ही साथ वह यह भी देखता गया कि वांग्लु ग कड़ाही के गरम पानी को नहाने के टब में डालता जा रहा है। इस पर सिर उठाकर पुत्र की ओर एकटक विस्मय से देखा।

"इतने पानी से तो खेत सींचने की गुंजाइश है" वह एकदम बोल पड़ा।

वांग्लु ग ने कोई उत्तर न दिया। वह तो बराबर पानी को नहाने के लिये ही उंडेलता रहा।

'सुनते नहीं हो" वृद्ध ने चिल्लाकर कहा।

"करीब एक वर्ष से मैंने अपने शरीर को नहीं धोया है।" वांग्लु ग ने धीमी आवाज में कहा।

वांग्लु ग को अपने पिता से कहते हुए शर्म मालूम हुई कि वह अपने बदन को एक स्त्री के लिये स्वच्छ बनाने की चेष्टा में है। किसी प्रकार जल्दी से वह नहाने का टब उठाकर अपने कमरे में ले गया। उसके कमरे के किवाड़ सटकर बन्द नहीं होते थे उनकी दरारों में से झाँकते हुए वह वृद्ध चिल्लाया—

"यदि स्त्री के आने का आरम्भ इस तरह होगा, तब तो हो लिया—इस प्रकार पानी का खर्चा और चाय का पीना।"

वांग्लु ग ने भी चिल्लाकर कहा—"एक ही दिन की तो बात है। इस पानी को मैं बेकार खर्च नहीं करूंगा। नहाने के बाद जमीन पर ही डाल दूंगा।'

के बाद पैसा बचने पर ही मुमकिन था। यदि वह हजामत बनवाता तो शायद एक ही तरह का गोश्त खरीद सकता था। लेकिन फिर भी उसने तय किया कि हजामत बनवानी आवश्यक है।

अपने पिता को चुपचाप वहीं छोड़ कर वह सुबह ही बाजार चल पड़ा। कुछ २ अंधेरा होने पर भी खेतों में उगे हुए गेहूँओं और बाजरे की चमक पर सूर्य की किरणों की सुनहली आभा पड़नी आरम्भ हो गई थी। वांग्लुंग के अन्दर किसान का हृदय इस सुन्दर आभा को देखकर डोल उठा और वह रुक कर उगते हुए दानों की ओर से देखने लगा। अभी कलश में दाने भर नहीं पाये थे। शायद वे वर्षा का इन्तजार कर रहे थे। हवा में नमी का अनुभव कर उसने ऊपर आकाश की ओर देखा। काले बादलों से और भारी हवा से जाहिर था कि पानी पड़ेगा। वह अपनी 'धरती माता' के मन्दिर में जाकर अवश्य धूप बत्ती से आराधना करेगा, कम से कम आज जैसे दिन में तो अवश्य।

खेतों में से होता हुआ वह तंग रास्ते से शहर की ओर चल पड़ा। शीघ्र ही शहर की चहारदिवारी भी दिखाई देने लगी। उसी दीवार के एक बड़े फाटक के अन्दर ही तो वह आलीशान मकान है जहाँ उसकी होने वाली पत्नी बचपन से नौकरी करती है। यही तो 'ह्वांग' परिवार का शानदार मकान है। कुछ लोगों का विचार था कि बड़े घर में काम करने वाली लड़की से विवाह करने की अपेक्षा तो विवाह न करना ही अच्छा है। किन्तु जब उसने अपने पिता से कहा था—"क्या मेरा विवाह कभी न होगा?" तो उसके पिता ने उत्तर दिया था—"प्रत्येक स्त्री यही चाहती है कि रेशमी कपड़े और सोने के आभूषणों से वह लद जाय इसलिये वह ऐसा पुरुष ही ढूँढती है जो इतना खर्च उठा सके। ऐसी सूरत में गरीबों से विवाह करने के लिये तो नौकरानियाँ ही रह जाती हैं।"

बाँकाबहादुर को यह जानकर दुःख हुआ कि उसका पिता उसके लिये सुन्दर पत्नी की तलाश नहीं कर रहा था। सुन्दर स्त्री के होने से कोई बात थी भी जिससे कि सब आने जाने वाले उस पर बधाइयों की बौछार कर दें। तोते की उपमा बना कर जब उसने पिता से यह बात कही तो उसे उनकी फटकार ही मिली।

“सुन्दर को या हम लोग क्या करेंगे? हमको तो ऐसी ही पत्नी चाहिये जो घर का काम काज कर सके जिसके भाग्य में संतान सुख हो तथा खेत का भी काम काज कर सके। क्या कोई सुन्दर स्त्री यह सब काम कर सकेगी? वह तो अपने रूप रंग की ओर ही देखती रहेगी और अपना समय साज शृंगार में ही बिताया करेगी। नहीं। ऐसी स्त्री से हमारे घर का काम काज नहीं चलेगा। हम लोग तो किसान आदमी हैं। और फिर क्या बड़े सम्पन्न घराने में सुन्दर नौकरानियों को बिल्कुल कुमारी होते हुए भी किसी ने कभी सुना है। ऐसे घराने के रईस तो अपनी प्यास इन्हीं लड़कियों से ही बुझा लेते हैं। ऐसी सुन्दरी जो कुमारी न रह सकी हो उससे तो बदसूरत कुमारी को लेना अच्छा है। क्या तुम सोचते हो कि सुन्दरी नवयौवना किसी रईस के हाथों का स्पर्श करके सुखी होगी कि एक किसान के खुरदरे हाथों को लेना चाहेगी और फिर अपनी सूरत भी तो देखो।”

बाँकाबहादुर को यह बात समझ में आ गई। अपने शरीर के ऊपर हाथ फेरते हुए वह जोर से बोल उठा—“कम से कम ऐसी को नहीं लूँगा जिसके चेहरे पर दाग हों या दाँत मोटे हों।”

“ऐसी भी वैसी को मिल सकती है।” उसके पिता ने उत्तर दिया।

आखिर जो स्त्री ढूँढी गई उसका न तो चेहरा ही मोटा था और न उसके चेहरे पर चेचक के दाग ही थे। इतना तो उसको पता लग ही गया था यद्यपि इससे अधिक उसको और कुछ मालूम नहीं हो सका था। विवाह संबंध पक्का होने के उपलक्ष में उसने अपने पिता के साथ

सीने के मुलम्मे की दो चूड़ियाँ और हाथ के 'इयर रिंग' खरीद लिये थे। इसके अतिरिक्त बाँगड़ूक को और कुछ नहीं मालूम था केवल इतना ही वह जानता था कि आज उसे जाकर अपनी बीवी को ले जाना है।

इन्हीं विचारों में घूमता हुआ वह शहर के फाटक के अन्दर घुसा। वहाँ उसे कुछ ठंडक मालूम पड़ी। इधर उधर पानी छिड़कते हुए, गाड़ी में भरे हुए पानी के बर्तनों को लिये हुए आदमी घूम रहे थे। फाटक की मोटी २ दीवारों पर इस प्रकार पानी छिड़कने से ठंडक हो गई थी। गर्मी के दिनों में इसी प्रकार ठंडक की जाती थी और वहीं ठंडे मीठे नींबू के शरबत की बिक्री होती थी। यद्यपि नींबू तो अभी बाजार में नहीं आये थे किंतु 'ठंडे मीठे शफ्ताल्ह'* बिकते हुए उसे अवश्य दिखाई दिये।

"ठंडे मीठे शफ्ताल्ह—मौसमी शफ्ताल्ह। आइये खरीदिये ठंडे मीठे शफ्ताल्ह।" बेचने वाले पुकार रहे थे।

बाँगड़ूक ने अपने आप कहा "बात्सी में यह फल पसंद आय तो उसके लिए मैं खरीद लूँगा।"

फाटक के सीधे हाथ को मुड़कर वह नाइयों की गली में चला जहाँ उसने कुछ लोगों को हजामत बनवाते हुए देखा। ये व किसान थे जो शायद शाम को ही बेचने की सामिग्री ले आए थे जिसमें सुबह के बाजार में बेचकर शीघ्र ही अपने खेतों में जाकर दिन भर वहाँ अपना काम कर सकें। अपनी बग्घियों का सहारा लेकर ये लोग रात भर सड़क पर ही सो लिये थे। बाँगड़ूक उन लोगों से बच रहा था जिनसे कि कोई उसे पहिचान न ले और उसके साथ कोई मजाक न हो जाय। नाइयों की दुकानों की कतार में सबसे आखिरी दुकान पर जाकर उसने इशारे से एक नाई को बुलाया। नाई ने आकर गर्म पानी में अपना छुरा डाल कर काम शुरू कर दिया।

अपने व्यवसायिक ढंग से उसने पूछा— सभी बाल बना दूँ।

---

*बादाम की तरह का एक फल

बोंगहुक ने उत्तर दिया— "केवल सिर और मुँह के"

नाई ने पूछा— 'कान और नाक तो साफ हैं ?'

बोंगहुक ने उत्सुकता से पूछा— 'इसका और क्या लगेगा ?'

"चार पैसे" नाई ने कहा और अपने छुरों को पानी में डिबोने लगा।

"मैं दो पैसे दूंगा" बोंगहुक ने कहा।

"तब तो एक कान और एक तरफ की नाक ही साफ हो सकेगी" नाई ने तुरन्त ही उत्तर दिया और पूछा—"किधर के नाक और कान की सफाई कराना चाहते हो" ऐसा कहकर उसने बराबर में खड़े हुए दूसरे नाई की ओर हँसी का चेहरा बनाते हुए देखा। दूसरा नाई इस पर जोर से हंस पड़ा। बोंगहुक ने समझ लिया कि वह उन मसखरों के हाथ पड़ गया है। इसलिए उसने जल्दी से कहा— "जैसी तुम्हारी इच्छा।"

इसके बाद वह नाई के सामने झुक गया और ऊपर से भी साबुन व ब्रुश के हाथ जल्दी २ चलने लगे। नाई ने भी अपनी हाथ की सफाई दिखाते हुए उसके बालों को चतुराई से सटकते हुए उसके पट्टों को कुछ ढीला कर दिया। बोंगहुक के सिर के बाल साफ करते हुए नाई ने कहा 'यदि सिर के बाल बिलकुल ही साफ कराये तो वह किसान बुरा तो नहीं दिखाई देगा। आजकल के फैशन में तो चोटी ही साफ कराई जाती है ताकि खूबसूरत बालकी रहें।"

नाई का उस्तरा बोंगहुक की चोटी के किनारे से इतनी सफाई से घूम गया कि वह चिल्ला उठा।

"बिना अपने पिता से पूछे हुए यह चोटी मैं नहीं कटा सकता" इस पर वह नाई हँस पड़ा और उसकी चोटी को हल्की सी थपकी दी।

हजामत बन जाने के बाद जब पैसा नाई के साबुन लगे हाथों पर रखा गया तो बोंगहुक धक् से रह गया। इतना पैसा! किन्तु पहले २ जब ठण्डी हवा के झोंकों ने उसके मुंडे हुए सिर पर ठण्डक लगी

तो वॉंगलुंग ने अपने आप ही कहा "यह वर्षा एक ही बार आती है।"

अब वह बाजार को चला और सेर भर गोश्त खरीदा उस गोश्त को जिस प्रकार दो पत्तों में लपेटा गया वह भी उसने ध्यान से देखा, फिर कुछ हिचकिचाते हुए उसने दूसरे प्रकार का गोश्त भी थोड़ा सा खरीदा। जब सब कुछ खरीद चुका तो मोमबत्तियों की दूकान पर जाकर कुछ अगर बत्तियाँ खरीदीं। इसके बाद कुछ शरमाते हुए वांग के मकान की ओर उसने कदम बढ़ाए।

उस मकान के द्वार पर पहुँचकर उसे आश्चर्य हुआ कि यहाँ तक वह कैसे पहुँच गया। क्या वह अकेला ही यहाँ तक पहुँचा है। कम से कम उसे अपने पिता से चाचा से और पड़ोसी चिंग आदि किसी से तो साथ आने के लिए कहना चाहिये था। बड़े घरों में वह पहिले तो कभी नहीं आया! हाथ में खाने पीने का सामान लिये हुए वह कैसे कह सकता था। 'मैं उस स्त्री के लिए आया हूँ।"

दरवाजे पर टकटकी से देखता हुआ वह बहुत देर तक खड़ा रहा। दो बड़े बड़े लकड़ी के दरवाजों का बना फाटक बंद था उन पर धातों पर काला रंग था और लोहे के कुंडे उनमें लटक रहे थे। दरवाजे के दोनों ओर पत्थर के बने हुए दो शेर मानो फाटक की रक्षा कर रहे थे। एक बार वह घूम गया। इस फाटक के अन्दर घुसना तो मुमकिन नहीं था।

यकायक उसे मूर्छा आने लगी। उसने कुछ खाना भी नहीं खाया था—खाना तो वह भूल ही गया था। बराबर वालों के एक 'रेस्तराँ' में जाकर मेज पर दो पैसे रख वह बैठ गया। एक गंदा सा लड़का अपना काला चोगा पहिने हुए वहाँ आया, उसके पूछने पर वॉंगलुंग ने दो प्यालों गोश्त की लाने को कहा। प्यालियों के आने पर वह बकबका कर सब उड़ा गया। इतनी देर तक होटल का लड़का वहीं खड़ा रहा।

क्या और लोगे ' उस लड़के ने पूछा।

चांग हुश्र ने सिर हिला कर मना कर दिया। धीरे २ वह इधर उधर देखने लगा। रेस्तरां के एक छोटे कमरे में जहाँ मेज कुर्सियाँ भरी हुई थीं, कोई उसकी जान पहिचान का नहीं बैठा था। कुछ थोड़े से व्यक्ति वहाँ बैठे २ चाय पानी कर रहे थे। यह मजदूरों के बैठने का स्थान था। जितने मनुष्य वहाँ बैठे थे उन सब में वही साफ सुथरा था। इसे साफ सुथरा देखकर एक भिखारी भी उसकी ओर आकर कहने लगा—

"अरे आदमी कुछ दया करो कुछ पैसे दो मैं भूखा हूँ।"

चांग हुश्र से कभी किसी भिखारी ने दया मांगना नहीं की थी और न किसी ने उसे भला आदमी कह कर संबोधित ही किया था। वह प्रसन्न हो गया और भिखारी के बर्तन में उसने दो छोटे २ सिक्के डाल दिए। भिखारी ने जल्दी ही उन सिक्कों को अपने फटे चीथड़ों के एक कोने में कहीं डाल लिया।

चांग हुश्र वहीं बैठा रहा और उधर धूप भी चढ़ आयी। होटल के लड़के ने चिढ़ कर मनहूसजी से कहा, "यदि और कुछ नहीं लेना है तो यहाँ बैठने का किराया देना पड़ेगा।"

इस मनहूसजी पर चांग हुश्र भड़क उठा। वह एक दम उठ पड़ता किन्तु जब उसे होंग के मकान का ध्यान आया कि वहाँ जाकर उसे अभी की भीख लगनी है तो उसके शरीर में पसीना इतनी तेजी से छूट आया मानो वह कहीं खेत पर काम करके आया हो।

"चाय लाओ" उसने धीरे से लड़के से कहा। इतना कहते ही चाय आगई और लड़के ने तेजी से कहा "पैसा कहाँ है?"

चांग हुश्र की जेब से पैसे निकालने ही पड़े। कुछ बेरुखी से वह बड़बड़ाया "यह तो लूट है।" तभी उसकी नजर अपने एक पड़ोसी पर पड़ी जिसे अपने शाम को खाने पर भी बुलाया था मेज पर

रखते हुए बड़े २ पांव के घूंट लेकर बरामदे के दरवाजे से वह बाहर खिसक गया।

बाहर आकर कुछ निराशा से वह अपने आप ही कहने लगा "यह तो करना ही है" और धीरे २ वह फिर उन बड़े कमरों की ओर चल पड़ा।

इस समय दोपहर हो आया था इसलिये शायद मुझे कुछ मिले। वहीं चौकीदार भी बैठा दिखाई दिया। खाने के बाद वह सींक से दाँत कुरेद रहा था। वह लम्बे चौड़े डील डौल का आदमी था। बायें गाल पर उसके एक बहुत बड़ा तिल था जहाँ तीन चार बाल उग रहे थे। शायद इन बालों को कभी साफ नहीं किया गया था। जब वांगलुङ उसके सामने पड़ा तो वह जोर से चिल्ला पड़ा—

"क्या है?"

बहुत मुश्किल से वांगलुङ ने जवाब दिया—

"मेरा नाम वांगलुङ है और मैं किसान हूं।"

"अच्छा वांगलुङ-किसान-फिर क्या?" चौकीदार ने बुरी तरह कहा। चौकीदार भी अपने अधिक मालकिन के अमीर मिलने वालों से ही नरमी से पेश आता था।

"मैं आया हूं—मैं आया हूं—" लड़खड़ाई आवाज से वांगलुङ ने बोलना आरम्भ किया।

अपने तिल के बालों को उंगली से मरोड़ते हुए चौकीदार ने कहा "यह तो मैं भी देखता हूं।

वांगलुङ की आवाज धीमी पड़ती गई धूप से चेहरा पीला पड़ता गया। इसी दशा में वह सकुचाते हुए बोला "एक दासी है यहां।"

चौकीदार बहुत जोर से हँसा।

"तो तुम हो वह" वह जोर से गरजा। "मुझे आज एक दूल्हे का इन्तजार करने को कहा गया था लेकिन तुम्हारे हाथों में टोकरियां देख कर मैं ठीक से पहिचान नहीं पाया।"

'यह कुछ भीख मांगती है' बोलसुख ने उसका पीछा करते हुए कहा और इन्तज़ार करने लगा कि अब चौकीदार उसे अन्दर ले जायगा किंतु चौकीदार तो हिला तक नहीं। मिन्नत भरे शब्दों में आखिरकार बोलसुख ने कहा।

'क्या मैं स्वयं ही चला जाऊँ ?'

चौकीदार ने आँखें निकालते हुए कहा 'मालिक तुम्हें जान से मार डालेगा।' फिर बोलसुख को सीधा सादा समझकर बोला, 'कुछ भेंट चढ़ाओ तो काम बन सकेगा।'

बोलसुख समझा कि यह चौकीदार बिना कुछ लिये नहीं मानेगा।

'मैं तो गरीब आदमी हूँ।' बड़े अनुरोध से उसने कहा।

'देखूं, तुम्हारी पेटी में क्या है' चौकीदार ने कहा।

इस पर बोलसुख ने चुपचाप पेटी खोलकर रख दी और पैसे में से बटुआ निकाल कर रख दिया। चौकीदार ने दाँत निकाल कर सब सामान को टटोला। बटुए में एक चाँदी का सिक्का व चौदह ताँबे के सिक्के थे।

'मैं तो चाँदी लूंगा' चौकीदार ने कुछ शांति से कहा और इससे पहले कि बोलसुख कुछ कह सके उसने वह चाँदी अपनी जेब में डाल ली और फाटक में अन्दर घुस कर जोर से आवाज़ दी—

"दूसरा आया है, दूसरा आया है।"

बोलसुख को क्रोध आ रहा था लेकिन जब उसने चौकीदार की अन्दर आवाज़ देते हुए सुना तो चुपचाप अपनी थैलिया बन्द की और उसके पीछे चल दिया। इधर उधर कहीं देखा भी नहीं।

इसके बाद बोलसुख को किसी बात का होश नहीं रहा। एक बड़े सेठ परिवार के घर में जाने का यह पहला अवसर था। मकान के आँगनों में से वह सिर झुकाए हुए चलता रहा। उसका इस प्रकार से

उसको देखकर सभी लोग कौतूहल करते हुए हँस रहे थे। नई लोगन जब सब प्रश्न हो चुके तो चोबीदार ने उसे एकाएक एक छोटे कमरे में प्रवेश दिया। वहाँ वह अकेला खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद चोबीदार ने लौट कर कहा।

'मार्जरिन कहती हैं कि तुम्हें उनके सामने हाजिर होना है।'

लॉन हुक आगे बढ़ने लगा किन्तु चोबीदार ने उसे रोक लिया।

"परी मार्जरिन के आगे तुम इस प्रकार हाथ में थैला लिए हुए नहीं जा सकते—हाथ में यह माँस भरी पिटारी होने से तुम उनके सामने कैसे सिर झुकाओगे?"

"ठीक है, ठीक है—" लॉनहुक ने उद्विग्न होकर कहा। किन्तु पिटारी को सौंप रखने की हिम्मत उसे नहीं हो रही थी कि कहीं कोई उसमें से कुछ निकाल न ले। लॉन हुक को यह समझ नहीं पड़ी कि रानियों को शायद उसकी माँस मछली की कोई आवश्यकता नहीं। चोबीदार उसके डर को समझ गया और गुस्से से चिल्ला कर बोला।

'इस जमाने में ऐसा माँस मछली तो कुत्तों को खिला दिया जाता है।' और उसकी पिटारी छीन कर दरवाजे के पीछे पटक कर लॉन हुक को आगे ढकेल दिया।

लॉनहुक लम्बे बरामदों में से होकर एक बड़े कमरे में पहुँचा। ऐसे सुन्दर बरामदे जिनके खम्भों में [illegible] २ की मीनाकारी हो रही थी उसने पहले कभी नहीं देखे थे। इतने बड़े घर में उसके जैसे कितने ही घर समा सकते थे। इतने चौड़े रास्ते इतनी ऊँची २ छतें देख कर वह दंग रह गया। दीवारों में सुन्दर कामदारी देखता हुआ वह इतना चकित हो गया कि आगे पिछे जाना ही था लेकिन चोबीदार ने उसे पकड़ लिया और कहा—

'मार्जरिन के आगे इस प्रकार झुका जाता है।' ऐसा कह कर उसे झुका दिया गया।

काम करता रहा है किन्तु उसके हृदय को आकर्षित करने के लिये और बहुत सी बाँदियाँ जो इधर उधर फिरती रहती हैं आती हैं। इसे ले जाओ और अच्छी तरह रखो। यदि तुम इसमें कुछ दुर्गुण पाओ तो मेरी इच्छा न होती तो मैं इसे घर से कभी न हटाती क्योंकि रसोई के काम काज में यह बहुत कुशल है। मैं अपनी बाँदियों के विवाह इसी प्रकार करती रहती हूँ।"

और पति की ओर मुड़ कर बूढ़ा ने कहा—

"इसकी आज्ञा मानना और बच्चों से भर भर देना। अपना पहला बच्चा मुझे दिखाने के लिये लाना।"

"जी अच्छा मालकिन।" झुकते हुए पति ने कहा।

दोनों सकुचाए से खड़े रहे। वांगलुङ एक उलझन सी में पड़ा रहा कि क्या कहे और क्या न कहे।

"अच्छा जाओ!" बूढ़ा ने झुंझलाते हुए कहा। वांगलुङ जल्दी से ओला झुका कर घूमा और बाहर चल दिया पीछे २ उसकी स्त्री भी चल पड़ी और उसके पीछे बक्स लिए हुए चौकीदार। जिस कमरे में वांगलुङ की पेटी थी वहीं लाकर चौकीदार ने उस बक्स को डाल दिया और यह कहते हुए, कि इससे आगे वह नहीं ले जाय गा, वह वहां से अदृश्य हो गया।

तब वांगलुङ स्त्री की ओर मुड़ा और पहली बार आँखें भर कर उसे देखा। उसका चौड़ा सा छोटा सा चेहरा काफी ईमानदार लगा। चेहरे पर छोटी सी चौड़ी नाक थी, आँखें काली और भरी हुई थीं। कुछ कुछ उदासी की झलक उसमें चमक रही थी। उसका चेहरा था शांति मय। वांगलुङ जब तक उसे देखता रहा वह चुपचाप खड़ी रही। उसने देखा कि यह बात तो सच ही थी कि उसमें कोई सुन्दरता नहीं थी किन्तु चेचक के दाग भी नहीं थे और न कटे होंठ ही। कानों में अपने दिए हुए 'ड्रगन रिङ्ग' उसे लटकते हुए देखे और उंगलियों में अपनी ही दी हुई

अँगूठियाँ। एक प्रकार का परमानन्द अनुभव करते हुए वह एकाएक रुक गया। आखिर उसे स्त्री मिल ही गई।

"यह कलश है और यह पिटारी" उसने रूखी सी आवाज़ में कहा।

बिना कुछ कहे हुए वह झुकी और कलश का एक सिरा उठाते हुए अपने कन्धे पर रखा और उस बोझ से झुकती हुई ऊपर उठने की कोशिश करने लगी। वाँगलुंग देखता रहा और फिर बोला—

"मैं कलश उठा लूँगा, यह लो पिटारी"

और बिना इस बात की परवाह करते हुए कि वह नये कपड़े पहिने हुए है उसने कलश उठा कर अपने कन्धों पर लाद लिया और स्त्री ने चुपचाप पिटारी का सिरा पकड़ लिया। इतना बोझ उठाकर कई मीलों को पार करना है, इस विचार से वह कुछ चिंतित सा होगया।

"यदि कोई दूसरा ही छोटा सा द्वार होता तो" ' वह धीरे से बोला और स्त्री कुछ सोचकर ठिठक गई। शायद उसकी बात को अच्छी तरह से समझ नहीं पाई। तब वह एक छोटे फाटक के रास्ते से उसे बाहर निकाल लाया।

एक या दो बार वाँगलुंग ने उसकी ओर मुड़कर देखा। वह चुपचाप नपे तुले कदम रख कर चल रही थी मानो रास्ता उसका जाना हुआ हो। नाजरकोठारी के फाटक पर आकर वह एकाएक रुक गया और कलश को कन्धे पर ठीक से जमाकर जेब से बचे हुए पैसे निकाल ६ आड़ू खरीदे।

"इन्हें लो और खा लो" उसने उसी रुखाई से कहा।

स्त्री ने एक बच्चे की तरह उन्हें अपने हाथ में ले लिए। जब थोड़ी देर में वाँगलुंग ने मुड़कर देखा तो वह एक आड़ू को चबा रही थी पति को अपनी ओर देखते हुए उसने शरमा कर मुँह को रोक लिया।

इसी प्रकार वे दोनों परिवार की ओर खेतों में से चलते रहे।

वहीं पास ही जाकर "धरती माता" का मन्दिर था। यह छोटा सा मन्दिर मनुष्य के कंधों के बराबर भी ऊँचा नहीं था—कच्ची ईंटों से बना हुआ था और खपरैल की छत पड़ी हुई थी। बोंगहुड़ के पितामह ने यह मन्दिर बनाया था। उसी पितामह के समय के खेतों में बोंगहुड़ अब भी काम करता था। बाहर की ओर से इस मन्दिर की दीवारें मज़बूत थीं व पत्थर एक कलाकार ने वहीं चित्रकारी की हुई थी। किन्तु अब वर्षों के पानी तूफान से वह अस्पष्ट हो रही थी, अब तो यह एक बाँसों का ढाँचा ही दिखाई दे रहा था।

मन्दिर में दो छोटी २ मिट्टी की मूर्तियाँ विराजमान थीं। वही देवी देवता थे—लाल कागजों के कपड़े पहने हुए थे और देवता के चेहरे पर असली बालों की मूंछें लगी हुई थीं। प्रति नये वर्ष पर बोंगहुड़ का पिता अच्छा और नये कागजों के वस्त्र उन्हें पहिनाता था और प्रति वर्ष की वर्षा उनको खराब कर जाती थी।

इस समय मूर्तियों के कपड़े नये लग रहे थे और बोंगहुड़ को अपनी दया में वहाँ दर्शन करते हुए एक प्रकार का गर्व हो रहा था। उसने स्त्री के कंधों से पिटारी उतारी और मटकी की पेंदी नीचे रखी और धूपबत्तियों को देखा। उसे डर था कहीं ये बत्तियाँ टूट न गई हों किंतु वे साबित थीं-टूट जाने से अशुभ अपशकुन हो जाते। मन्दिर में धूपबत्तियाँ जलाकर उसने अपनी देवी देवताओं की आराधना की।

पति पत्नी दोनों मन्दिर की युगल मूर्ति के सामने खड़े रहे। धूप बत्तियों की सुगंधित राख को बोंगहुड़ की पत्नी ने उँगलियों से नीचे फेंक दिया जिससे बत्तियाँ बुझ न जाँय। किंतु उसे फिर संदेह हुआ कि कहीं उसका पति इस पर नाराज तो नहीं हुआ। भयभीत होकर डबडबाई आँखों से उसने पति की ओर देखा। पति को उसकी यह क्रिया अच्छी लगी। यही तो विवाह की शुभ घड़ी थी। चुपचाप वे दोनों बराबर खड़े रहे और जब आपसी धूप बत्तियाँ बुझ गईं तो फिर अपना सामान उठाकर चल पड़े। इधर धूप भी ढल गई थी और साँझ हो आई थी।

घर आकर देखा कि वांगलुङ का पिता सूर्य की आखिरी किरणों के दर्शन कर रहा था। वांगलुङ को स्त्री के साथ आता हुआ देखकर भी वह चुपचाप खड़ा रहा। ऊपर बादलों की ओर देख कर उसने एक गहरी आह भरी—

"वह बादल का टुकड़ा जो उत्तर की ओर दिखाई दे रहा है, वर्षा का लक्षण है। अब कल रात से पहिले ही वर्षा हो जायगी।" इतने में उस वृद्ध ने वांगलुङ को अपनी स्त्री के कन्धों से पिटारी उठाते हुए देखा और कहा, "क्या सारा पैसा खर्च कर दिया ?"

वांगलुङ ने पिटारी उठा कर मेज पर रख दी। "आज रात को मेहमान आएंगे" उसने कहा और बक्स को अपने सोने के कमरे में ले जाकर रखा। इतने में ही वृद्ध वहाँ आ गया और बोला—

"इस घर में पैसा खर्च होता ही जाता है।"

मन ही मन तो वह प्रसन्न था कि उसके लड़के ने आज मेहमानों को बुलाया है। लेकिन फिर उसने सोचा कि उसका इसी प्रकार बराबर खींचता रहना उचित ही होगा, नहीं तो घर में बहू को आरम्भ से ही फिजूल खर्ची की आदत पड़ जायगी। वांगलुङ ने कुछ नहीं कहा और पिटारी को रसोई की ओर ले चला। पीछे-पीछे बहू भी रसोई घर में चली गई। अंगीठी के पास मांस के एक एक टुकड़े को रखते हुए वह बोला:—

'यह मांस मछली का है। सात आदमी खाने आयेंगे। क्या तुम खाना बना सकोगी ?" स्त्री ने धीमी आवाज से कहा—"जब से मैं होंग के मकान में गई हूं मैंने रसोईघर में ही काम किया है। वहां तो दोनों वक्त हर प्रकार के मांस बनते हैं।"

वांगलुङ सुन कर बाहर चला गया था और फिर शाम तक उसने रसोईघर की कोई खबर नहीं ली। मेहमानों में उसके चाचा थे जो अपनी प्रसन्न मुद्रा में सब को हँसा रहे थे, १८ वर्ष का लड़का

चचा था जो कुछ बेसमझ सा था, और उसके पड़ोसी किसान थे। दो किसान तो उस गाँव के थे जहाँ से वांगलुङ बीज लाता था और एक उसका नहीं का पड़ोसी लिंग था जो शांत प्रकृति का मनुष्य था और केवल आवश्यकता पड़ने पर ही बोलता था। इन मेहमानों को मेज़ पर बिठाकर से निकल वांगलुङ रसोई घर में गया और अपनी स्त्री को खाना परोसने को कहा। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई जब उसकी स्त्री ने कहा—

"मैं तुम्हें प्लेटें बनाकर देती जाऊँगी और तुम मेज़ पर रखते जाना। मुझे आदमियों के सामने जाना अच्छा नहीं लगता।"

वांगलुङ को इस बात का गर्व हुआ कि यह स्त्री ऐसी ही है और अन्य पुरुषों के सामने जाना इसे पसन्द नहीं है। उसने प्लेटें ले लेकर मेज़ पर रख दीं और कहने लगा—

"आइये, चाचाजी व अन्य भाइयो—आइये।" और जब उसके विनोदी प्रकृति के चाचा ने कहा "तो क्या हम बहू को नहीं देखेंगे?" वांगलुङ ने उत्तर दिया, "अभी तो हमारा विवाह सम्पूर्ण नहीं हुआ और जब तक सुहागरात न हो जाय बहू अन्य किसी व्यक्ति के सामने कैसे आ सकती है?"

और उसने उन मेहमानों को खाने के लिये अनुरोध किया। मेहमान खाने लगे। कोई मछली की प्रशंसा कर रहा था, तो कोई माँस की। सभी खाना स्वादिष्ट बना था। मेहमानों की प्रशंसा के उत्तर में वांगलुङ कहता रहा, "यह तो मामूली खाना है—स्वादिष्ट भी नहीं होगा।"

किन्तु मन ही मन वह बड़ा सन्तुष्ट और प्रसन्न था कि इतने कम सामान में उस स्त्री ने किस चतुराई से इतना स्वादिष्ट भोजन बना दिया। वांगलुङ ने स्वयं कभी ऐसा स्वादिष्ट भोजन किसी के यहाँ नहीं किया था।

उस रात जब तक मेहमान गपशप करते हुए चाय पीते रहे, तब तक घर की स्त्री अपने काम में ही लगी रही। मेहमानों के विदा होते ही पैसों के पास पड़े हुए थाले में वह झुक कर बैठ गई। वांगलुङ ने जब उस थाली को उसकी आँखें मीठापन लिये हुए झुकीं। पति उसे अपने हाथों से उठाकर अपने कमरे में ले गया और मोमबत्ती जला कर जैसे ही उसने मेज पर रक्खी कि उस रोशनी के अपने को स्त्री के सामने अकेला पाकर कुछ शर्मा-सा गया।

और वह कपड़े उतारकर बिस्तरे में लेटने की तैयारी करने लगा। उधर पर्दे के पीछे उसकी स्त्री भी सोने की तैयारी में लगी। वांगलुङ ने कहा— "बिस्तरे में लेटने से पहिले बत्ती बुझा देना।"

इतना कह कर वह बिस्तर पर लेट गया और रजाई ओढ़ कर सोने का बहाना करने लगा। लेकिन नींद कहाँ थी। उसकी रग-रग तो उन्मुक्त अवस्था में हो थी और थोड़ी ही देर में अन्धेरा हो गया तो उसे अपने पास स्त्री की उपस्थिति मालूम पड़ी और वह एक विशेष प्रकार की भावना से उत्तेजित हो उठा, यह भावना उसके शरीर को तोड़ने के लिए काफी थी। अँधेरे में प्रसन्न चित्त हो उसने अपनी स्त्री को बाहुपाश में जकड़ लिया।



२

सुबह हो गई और सोमगुप्त जाकर अपनी बीवी की ओर एकटकी बाँध कर देखता रहा। इतने में ही बीवी जाग उठी और फ़ौरन उसने कपड़े पहिनने शुरू कर दिये। आकस्मात् ज्यों ही सूरज का प्रकाश उस चेहरे पर पड़ा तो सोमगुप्त को उसके चेहरे में कोई अन्तर दिखाई नहीं दिया। यह उसके लिये आश्चर्य की बात थी। उसे तो ऐसा जान पड़ता था कि रात भर में शकु भी बहुत दुखी होगी, लेकिन वह तो बिना किसी हिचकिचाहट के कामों पर लगी हुई कि मानो कुछ हुआ ही नहीं। उधर वृद्ध पिता की खाँसी जब सुनाई दी तो उसने कहा—

"पिताजी के लिये एक प्याला गर्म पानी दे आओ ताकि उनकी खाँसी को कुछ आराम मिले।"

अपनी ही आवाज़ में वो ये पूछा— 'क्या उसमें चाय की पत्तियाँ भी पड़ेंगी?'

इस सीधे प्रश्न से वांगलुंग विचलित हो उठा। अपनी हार्दिक इच्छा से तो वह यही कहना चाहता था कि "चाय की पत्तियाँ तो पड़े भी हो। क्या तुम समझती हो कि हम कोई गरीब भिखारी हैं?" किंतु उसकी स्त्री को सोच लेना चाहिये था कि इस घर में चाय की पत्तियाँ नहीं डाली जातीं। ह्वांग परिवार की बात दूसरी थी, वहाँ तो हर प्याले में चाय का रस होता होगा। वहाँ शायद नौकर चाकर भी सादा पानी नहीं पीते। साथ ही साथ उसे यह भी ख्याल था कि यदि पहले ही दिन उसके पानी में चाय डाली गई तो वह बरबाद हो उठेंगे। क्योंकि ऐसे अमीर तो थे नहीं। विचारों की इस उधेड़बुन में उसने कहा—

"चाय? नहीं नहीं—चाय से तो खाँसी बढ़ जायगी।"

इतना कह कर वह अपने बिस्तरे की गर्मी में बैठा रहा और उधर उसकी स्त्री ने आग जलाकर पानी गर्म कर दिया। वह चाहता था कि सोता ही रहे लेकिन वर्षों की जल्दी उठने की आदत से सोता न रह सका, फिर भी एक संतोषपूर्ण आलस्य में पड़ा ही रहा।

अभी भी उस स्त्री को अपनी समझते हुए वांगलुंग को हिचक सा मालूम देती थी क्योंकि उसे तो अपने खेत का ध्यान रहता कि गेहूँ पकेगा और जमीन बखरलेगी तब अपने पड़ोसी चिंग से अच्छा सा बीज खरीद कर डालेगा। विचारों की इन गड़बड़ियों में ही अचानक उसे ध्यान आया कि अब तो जिंदगी ने एक नया रूप ले लिया है। किंतु स्त्री को यह पसन्द भी आया कि नहीं। जीवन के इस नये स्रोत में भी उसे एक आश्चर्य सा लगा। उसका मन तो अब तक यहीं रहा

था कि उसे वह पसन्द आएगी या नहीं अथवा वह अपनी स्त्री को सुखी रख सकेगा या नहीं। उसका चेहरा तो भोला भाला था किंतु काम करने वाले हाथ अवश्य सख्त थे। फिर भी सारा शरीर तो गुदगुदा और सुडौल दीखता था। ऐसा लगता था कि उस स्त्री के शरीर का स्पर्श अभी तक किसी ने नहीं किया था। ह्वांग परिवार के रईसजादों ने केवल उसका चेहरा ही देख पाया होगा। उसके सुन्दर सुगठित शरीर को वे लोग कहाँ देख पाये होंगे। ऐसा सोचते २ उसे आभास हुआ कि अवश्य ही उसने भी उसे पसन्द किया होगा। किंतु वह फिर शर्मा गया।

इतने में ही कमरे का दरवाजा फिर खुला और चुपचाप अपने दोनों हाथों में प्याले लिये हुए वह आई। वांगलुङ ने उठकर प्याला थाम लिया। प्यालों में चाय की पत्तियाँ तैर रही थीं। तब उसने स्त्री की ओर देखा और वह किंचित डर से सहम कर बोल उठी—

"पिताजी के प्याले में मैंने चाय नहीं डाली, जैसा कि आपने कहा था—किंतु आपके और तुम्हारे लिए ।"

वांगलुङ ने देखा कि वह कुछ डरी हुई है और यह देखकर मन ही मन खुश हुआ किंतु उसकी बात खत्म होने से पहले ही बोल पड़ा—'ठीक है, ठीक है मुझे चाय पसन्द है' और खुशी के साथ चाय के घूँट लेने लगा।

मन ही मन वांगलुङ सोच रहा था—'यह मेरी स्त्री मुझे बहुत पसन्द करती है।"

× × × ×

ऐसे ही दिन बीतते गये और वांगलुङ को ऐसा लगा कि वह कोई काम नहीं कर रहा, केवल अपनी स्त्री के रूप में ही मस्ती से जीवन बिता रहा है। किंतु वास्तविकता यह थी कि पहले की तरह अब भी वह वैसी ही कड़ी मेहनत करता। पहिले की तरह ही वह घास के गट्ठरों को कन्धों पर लाद कर खेत में ले जाता, उसी प्रकार खेत में सिंचाई

करता हल चलाता बैलों को चारा डालता। किन्तु अब इसमें मेहनत नहीं मालूम पड़ती। सूर्य डूबने पर जब वह घर आता तो घर साफ मिलता और साफ मेज पर खाना भी लगा लगाया तैयार मिलता।

वह आराम से मेज कुर्सी पर बैठ कर खा लिया करता था। इसके अतिरिक्त वह देखता था कि कमरा भी लिपा लिपाया है और ईंधन भी जलाने के लिए इकट्ठा ढङ्ग से रखा हुआ है। उसके खेत पर जाने के बाद वो इधर उधर के जंगलों में से जलाने की सामग्री दोपहर होते होते बीन बटोर कर ले आती। वाँगलुँग इसी बात से काफी खुश रहता कि ईंधन खरीदने की अब कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी।

इसी प्रकार दोपहर के बाद टोकरी उठाकर वह भी सड़क की ओर चल देती और पशुओं का गिरा हुआ गोबर बटोर कर ले आती। इस गोबर से वह कंडे उपले भी थाप देती और एक ओर घर के बाहर गोबर इकट्ठा कर खाद भी खेत के लिए पर्याप्त मात्रा में तैयार कर देती। इतना काम तो उसने बिना किसी के कहे ही करना आरम्भ कर दिया था। दिन डूब जाने पर भी वह आराम नहीं करती बैलों के आने पर उनका चारा तैयार करती और पीने के लिए उनके बर्तनों में पानी भी भर कर रख देती।

इतना ही नहीं बल्कि बैलों को ठंड से बचाने के लिए उसने फटे पुराने कपड़ों को और घास के पूलों को इकट्ठा करके रात में बैलों को भी उन कपड़ों से ढकना शुरू कर दिया। ऐसे ही दिन प्रति दिन वह कोई न कोई काम बराबर करती रहती जिसका नतीजा यह हुआ कि घर भी साफ और भरा पूरा दीखने लगा। उधर आस पास की सफाई से घर के वृद्ध महोदय की खाँसी भी ठीक होने लगी और अब वह आराम से इधर उधर चलने फिरने लगे चैन से कुछ नींद भी आने लगी और कुछ २ संतोष भी होने लगा।

लगा । उसने अपनी स्त्री को कृतज्ञ दृष्टि से देखा और भरी हुई आवाज़ से कहा "बस अब रहने दो । अब दिन भी ढल चुका, घर चलकर पिताजी को बतायेंगे ।'

वे दोनों घर की ओर चल पड़े—स्त्री नियमानुसार पुरुष के पीछे पीछे थी । वृद्ध महोदय दरवाजे पर खड़े हुए थे, उन्हें भूख लगी थी और वह बेसब्री से बोल पड़े-

"खाने का इतना इन्तजार इस बुढ़ापे में नहीं होता ।" किन्तु योगराज कमरे में जाते २ कहता गया "उसके पेट में बच्चा है ।" योग राज चाहता था कि यह समाचार भी वह उस इत्मीनान से दे जैसे वह कहता था कि 'आज खेत में पश्चिम की ओर मैंने बीज डाले हैं।' किंतु इस आसानी से नहीं कह सका । इतने धीरे से भी ये शब्द कहते हुए योगराज को ऐसा लगा मानो कितने ज़ोर से उसने इस समाचार की घोषणा की हो ।

वृद्ध ने पहिले तो खुशी से आँखें चमकाईं और फिर ज़ोर से हँस पड़ा और बहू को प्यार देखते हुए बोला—"फसल तैयार दिखाई दे रही है !" धुंधले प्रकाश में वृद्ध महोदय बहू का चेहरा नहीं देख सके किन्तु वह बोली "अब मैं खाना तैयार करती हूँ !"

'हाँ-हाँ खाना" वृद्ध महोदय बड़े चाव से बोले और बच्चे की तरह उसके पीछे २ रसोईघर की ओर चल दिये । जैसे बच्चे की खुशी में वह खाने की बात थोड़ी देर के लिए भूल गये थे वैसे ही रसोईघर में आते ही वह बच्चे का ध्यान खाने के सामने भूल गए । योगराज अपने कमरे में जाकर बैठ गया ।

अपने शरीर से एक दूसरे शरीर की उपज, अपने ही खून से एक और जीवन ।

३

जब वांगलुङ की स्त्री के दिन पूरे हुए और समय समीप आने लगा तो उसने अपनी स्त्री से कहा,

'इस समय हमें किसी की सहायता का प्रबन्ध करना चाहिये— कोई स्त्री हो तो अच्छा होगा ।''

किन्तु स्त्री ने सिर हिलाकर मना कर दिया । उस समय शाम के खाने के बाद वह बरतन साफ कर रही थी । वृद्ध महोदय अपने बिस्तर पर शयन करने चले गये थे रात का समय था और वे दोनों अकेले ही थे, केवल दिये की बत्ती ही झिलमिलाती क्योंकि उसके ऊपर चमक रही थी ।

''किसी स्त्री का प्रबन्ध नहीं !'' उसने विस्मित होकर कहा । वांगलुङ को अपनी स्त्री की इस तरह की बातें सुनने की आदत सी पड़ गई थी क्योंकि अधिकतर तो वह इसी प्रकार सिर हिला कर या हाथों के इशारे से बात कर लेती थी और बोलती थी तो बहुत कम । अतएव इन बातों को समझने में वांगलुङ को कठिनाई नहीं होती थी । ''लेकिन केवल दो आदमियों से घर में उस समय कैसे काम चलेगा !'' उसने कहा ''मेरी माँ को ऐसे समय में गाँव से ही कोई औरत बुला लेती थी । मुझे तो स्वयं इन बातों की कोई जानकारी भी नहीं । क्या तुम्हारे साथ की पुरानी बांदियों में से कोई ऐसी नहीं जो आ सके ?''

यह पहला अवसर था जब वांगलुङ की स्त्री ने अपने घर वालों—

के बारे में कुछ सुना। उसने पति की ओर इस प्रकार आँखें फोड़कर कुछ गुस्से से देखा, जैसा पहले कभी नहीं देखा था।

"इस घर से कोई नहीं जायगी" वह चिल्ला उठी।

यह सुनते ही वांगलुङ के मुँह से पाइप गिर पड़ा और वह घूर २ कर देखने लगा। किन्तु उसकी स्त्री का चेहरा यथापूर्वक फिर शांत सा हो गया और वह मेज पर पड़ी चम्मचें इकट्ठी करने लगी, जैसे उसने कुछ कहा ही न हो।

"यह भी कोई बात है" वांगलुङ ने आश्चर्य से कहा। उसकी स्त्री ने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर भी वह अधिकारी की भाँति बराबर कहता रहा, "हम दोनों को कोई अनुभव नहीं और बच्चे की पैदाइश की कोई जानकारी नहीं रखते। पिता जी तो तुम्हारे कमरे में उस समय आ ही कैसे सकते हैं—और मैं, मेरे भद्दे हाथों से कहीं बच्चा पेट में ही न छूट जाय। इसीलिये परिवार के बड़े घर से ही बड़ी बीबियों के बच्चे होते ही रहते हैं, कोई आ सके तो..."

जब तक वह मेज पर चम्मचों को रख चुकी थी, उसने पति की ओर देखा और कुछ रुक कर कहा,—

"जब मैं उस घर में गोदी में बच्चा लेकर जाऊँगी तो बच्चे को लाल २ वस्त्र पहिना कर और चित्रकारी किये हुए जिनमें बुद्ध भगवान भी बने होंगे ऐसे कपड़ों से सजाकर ले जाऊँगी, सुन्दर जूते पहिन जाऊँगी। मैं भी अच्छे २ साटन के कपड़े पहिन कर उस रसोई घर में जाऊँगी जहाँ मैंने इतने दिन काम किया है। और इस तरह उस बड़े कमरे में जहाँ वह बुढ़िया अफीम के नशे में सदा की भाँति बैठी होगी जाकर अपने को और अपने बच्चे को उसको दिखलाऊँगी।"

वांगलुङ ने इससे पहिले इतनी लम्बी चौड़ी बात अपनी स्त्री के मुँह से नहीं सुनी थी। जब इतने शब्द इतनी सफाई के साथ मुँह से निकले मानो पहिले से ही भरे हुए हों और उसकी स्त्री ने ऐसा

मौसम पहिले से ही पता लिया हो। वह भी कितनी चतुर थी है, खेतों में काम करते २ ही उसने सारी कार्यवाही लोल को मालूम देती है। दूसरे दिन वह बराबर ऐसा काम कर और बाहर करती रही मानो उसके पेट में बच्चे का कोई जिक्र ही न हो और अब तो उसने अपने और बच्चे के पहिनने के कपड़ों के बारे में भी जिक्र कर दिया। बाँगढ़ू के पास वास्तव में ऐसे कोई शब्द नहीं रहे जिससे वह अपनी बीवी की सराहना कर सकता। आखिर अपने पाईप की तम्बाकू ठीक से भरते हुए वह बोला।

"मैं समझता हूँ तुम्हें कुछ रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी।

"यदि आप मुझे तीन चाँदी के सिक्के दे सकें तो " बीवी ने डरते हुए कहा "ये तो अधिक ही लेकिन मैं एक पैसी भी व्यय बर्बाद नहीं करूँगी। यह सारा हिसाब मेरा पुख्ता ही है।"

बाँगढ़ू ने जेब में हाथ डाला। कल ही तो उसने अपने खेत के तालाब के सरकंडों का बाजार में बेचा था और उसके पास माँगे हुए सिक्कों से अधिक ही थे। उसने चुपचाप तीन सिक्के निकाल कर मेज पर रख दिये। इसके बाद उसने कुछ हिचकिचाते हुए चौथा सिक्का भी निकाल कर मेज पर रख दिया जिससे वह चाय के रेस्तरां पर जाकर कुछ दाव पर लगाना चाहता था, किन्तु इस डर के मारे कि कहीं हार ही न जाय वह बचना भी चाहता था। इसीलिए तो वह जुए के अड्डों से दूर एक ऐसी जगह जाकर अपना खाली समय बिताया करता था जहाँ एक पैसे में ही अच्छी २ कहानियाँ सुनने को मिलती थीं।

"तुम यह एक और सिक्का अपने पास रखना" उसने पाईप का एक कश खींचते हुए कहा "बच्चे का एक और रेशमी कोट बनवा देना। आखिर पहिला बच्चा तो है।"

बीवी ने एकदम से वह सिक्का नहीं उठाया किन्तु उसकी ओर देखती हुई कुछ सोचकर धीमी आवाज से बोली।

"यह पहिला अवसर है मेरे जीवन में जब चाँदी का सिक्का मेरे हाथ में आया है।" इतना कहते हुए उसने वह सिक्का चुम्बन कर उठा लिया और जल्दी से अपने कमरे की ओर चली गई।

चोंगकुक मुँह उठाये रहा मेज पर पड़े हुए सिक्कों की ओर देखते हुए सोचने लगा। यह चाँदी तो उसी जमीन से निकलती है जिस पर उसने मेहनत की है हल चलाए हैं और जिस धरती पर उसने अपने को मिटा दिया है। उसे स्वयं इसी धरती से जीवन मिला, पसीने की एक एक बूंद से उसने इस धरती को सींचा और सींच कर इसमें अन्न उपजाया जिससे यह चाँदी मिली। पहिले जब कभी अपनी मेहनत का पैसा उसने किसी को दिया तो उसे ऐसा लगता था मानो अपनी गाढ़ी कमाई को वह फेंके दे रहा है। जब भी दर्द पैसा देने में होता था वह दर्द अब पहली बार अपनी पत्नी को पैसा देने में नहीं हुआ। वह पैसा बाजार के किसी दूकानदार बेईमान के हाथ में नहीं पड़ा। अब तो उस पैसे से वह लगा कि अपने वंशजों को उसी के बच्चे को पहिनाए जायेंगे और उसे एक प्रकार का हर्ष व संतोष हुआ।

समय आने पर उसको भी किसी की सहायता नहीं चाहती थी। एक रात जब सूरज छुप हो चुका था कि वह समय आ गया। वह दिन भर उसी के साथ दक्खिन में काम कर रही थी। गेहूँ काट लिया गया था और उस जमीन में चावलों के लिए पानी भरा जा चुका था। दिन भर की मेहनत में जो शक्ति थका सुस्त होती जा रही थी और जब उसके हाथ से हँसिया छूट गया तो चोंगकुक ने एक दम उसकी ओर देखा। एक नये प्रकार का पसीना, एक नये ढङ्ग का दर्द उसके चेहरे से झलक रहा था।

"समय आ गया है" वह बोली "अब मैं घर में जाती हूँ जब तक मैं न बुलाऊँ तुम कमरे के अन्दर न आना। सिर्फ सरकण्डे की एक

कंडी को महीन काट कर मुझे दे जाना ताकि मैं बच्चे का नाल काट सकूँ।"

इतना कहते हुए वह तो घर की ओर इस सुगमता से चल पड़ी जैसे कोई बात ही न हो। वांगलुङ उसे देखता ही रह गया और बाद तत्काल उसने एक सरकंडा निकाल उसे महीन काट कर घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुँचने पर उसने देखा कि गरम गरम खाना मेज पर लगा हुआ है और वृद्ध महाशय अपनी भूख को शान्त करने में लगे हुए हैं। इसके पहले ही स्त्री ने भोजन भी तैयार कर लिया था। वांगलुङ ने सोचा कि ऐसी स्त्री भी हर जगह और आसानी से नहीं मिलती। फिर वह कमरे के दरवाजे पर गया और बोला "यह कंडी तैयार है।"

वांगलुङ इन्तजार करने लगा, इस आशा में कि उसकी स्त्री अन्दर आ जाने को कहेगी। किन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह दरवाजे तक आई और दरवाजे की संद में से उसने सरकंडे की कंडी को ले लिया। वह कुछ बोली नहीं, किन्तु वांगलुङ दर्द के मारे अपनी स्त्री का हाँफना मात्र सुन रहा था।

वृद्ध महाशय खाते हुए बोले "यह था भी नहीं तो अंडा हुआ जा रहा है।" और कहा, "अभी से बच्चे को कोई तकलीफ न हो अभी बहुत वक्त है। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब पहिला बच्चा हुआ था रात भर गुजरने के बाद सुबह कहीं जाकर बच्चा पैदा हुआ। इतने बच्चे तुम्हारी माँ ने एक के बाद एक पैदा किये शायद एक दर्जन रहे होंगे—ठीक से ध्यान नहीं—किन्तु एक तुम ही जिन्दा रह सके। इसीलिये तो औरत को बच्चे निरन्तर पैदा करते रहने चाहिये।" और फिर कुछ रुक कर जैसे अचानक ध्यान हो आया हो वह फिर बोले, "अब इस समय तक मैं एक लड़के का बाबा हो जाऊँगा।" ऐसा कहते हुए वह खुशी के मारे बैठे २ जोर से हँसने लगे।

किन्तु बाँगलुङ बराबर कमरे के दरवाजे की ओर देखता रहा और दर्द भरी आवाज सुनता रहा। इतने में हो गर्म ताजे खून की गन्ध उसे आई। उस दुर्गन्ध से वह घबरा उठा। उधर श्री के जल्दी २ कराहने की आवाज भी आने लगी। अब बाँगलुङ को अधिक बर्दाश्त नहीं हुआ और अन्दर जाने को दौड़ा कि बच्चे रोने की आवाज सुनाई दे गई और वह सब कुछ भूल गया।

“क्या लड़का है?” वह बड़ी बेसब्री से चिल्लाया, इस समय अपनी बीवी का उसे कोई ध्यान नहीं रहा। बच्चे के रोने की आवाज फिर सुनाई दी और उसने फिर चिल्ला कर पूछा, “क्या लड़का है? कम से कम यह तो बता दो, क्या लड़का है?”

और एक आनन्द ही मुरझाई हुई धीमी आवाज में उसे सुनाई दिया “लड़का है।”

बाँगलुङ वहीं से उठा और मेज पर आकर बैठ गया। कितनी कोमलता से यह सब काम हो गया। खाना मेज पर पड़ा २ कब का ठंडा हो चुका था और वृद्ध महोदय वहीं बेंच पर सो गये थे। उसने अपने पिता को झंझोड़ कर उठाया।

“लड़का पैदा हुआ है” वह एक प्रकार की चीख की खुशी में जोर से बोला “तुम दादा बन गए, और मैं बाप।”

वृद्ध महोदय एकदम उठ बैठे और उसी प्रकार जोर से ठहाका मार कर हँसे जैसे सोते से पहिले हँसे थे।

“हाँ—हाँ—आराम दो” वह बोले, दादा—दादा—” कहते हुए वह उठे और फिर अपने बिस्तरे पर हँसते हुए चले गए।

बाँगलुङ ठंडे चावल ही लेकर खाने लगा। उसे अद्भुत जोर की भूख लगी हुई थी और दिक्कत यह थी कि मुँह भी उसका जल्दी नहीं चलता था। लेकिन कमरे में से वह अपनी बीवी की दर्द भरी आवाज और बच्चे का रोना सुनता रहा।

एक प्रकार के गर्व से वह बोला, "अब घर में शांति नहीं रहेगी, हरदम शोर गुल ही रहा करेगा।'

अब वह साथ कुछ था चुप सा कमरे के दरवाजे की ओर फिर गया। उसकी स्त्री ने उसे अन्दर बुला लिया। जिससे हुए खून की दुर्गन्ध अब भी कमरे में थी किन्तु सारा खून एक बाल्टी के कूड़े में भर दिया था और उसमें उसकी स्त्री ने बहुत सारा पानी भी डाल कर कूड़े को बिस्तरे के नीचे सरका दिया था ताकि वांगलुङ कुछ न देख सके। कमरा सजा सजाया हुआ था और वह खाट बिस्तरे पर बैठी हुई थी और उसके पास शिशु के पुराने पजामे में लिपटा हुआ जैसा कि वहां का रिवाज था, बच्चा पड़ा हुआ था।

वांगलुङ ने आकर देखा लेकिन मुँह से कोई शब्द नहीं निकले। वह उसको हुई भावनाओं से झुककर बच्चे को देखने लगा। मोटा गोल झुर्रा चेहरा था और सिर पर काले काले मुलायम बाल थे। रोना धोना कर आँखें बन्द किये हुए वह चुपचाप पड़ा था।

उसने स्त्री की ओर देखा और स्त्री ने उसकी ओर। स्त्री की आँखें अब भी दर्द के मारे झुकी हुई थीं और बाल पसीने से भीगे हुए थे। इसके अतिरिक्त वह जैसी की तैसी थी। किन्तु वांगलुङ का हृदय उसे देखकर उमड़ आया और ऐसे लगा मानो हृदय इन दोनों जीवात्माओं के लिए बाहर निकला जा रहा हो।

'अब मैं बाहर जाता हूँ और कुछ चीनी लाऊंगा। तुम इसे पानी में उबालकर पी लिया करना।'

और फिर बच्चे की ओर देखते हुए उसके मुँह से निकल पड़ा "एक निराशी भर कर अण्डे हमें खरीदने होंगे उनको लाल रंग में रंग कर गाँव भर में बाँटेंगे और सबको मालूम हो जायेगा कि हमारे लड़का हुआ है।

४

बच्चा पैदा होने के दूसरे ही दिन स्त्री अपने काम पर यथापूर्वक चल गई, घर का खाना बनाया। केवल खेत पर वह सौंगजुङ के साथ नहीं गई। सौंगजुङ अकेला ही वहाँ दोपहर तक काम करता रहा। शाम हर बार अपने पहिन कर वह शहर गया। वहाँ से एक दो पैसे वाले पचास अण्डे खरीदे और उनको लाल रंग देने के लिये लाल रंगाने को पक्का लाल रंग भी खरीदा। एक टोकरी में अण्डे लेकर फिर वह मिठाई की दुकान पर गया और लाल चीनी खरीदी, उसी के साथ-साथ दुकानदार ने एक लाल पैकेट और अपनी ओर से रख दिया और मुस्कराकर कहने लगा।

"शायद आज ही के पैदा हुए बच्चे की माँ के लिये ··· "

"बढ़िया लड़का" सौंगजुङ ने बड़े गर्व से कहा।

"भाग्यवान हो," दुकानदार ने कुछ लापरवाही से कहा और फिर दूसरे अनगिनत ग्राहक की ओर ध्यान देने लगा। ऐसा तो कितने ही व्यक्तियों से कितनी ही बार वह कह चुका था, प्रायः नित्य ही किसी न किसी घर में बच्चा पैदा होता और वह सब वस्तुएँ खरीदी जातीं। किन्तु दुकानदार के इन शब्दों ने सौंगजुङ को विशेष प्रभावित किया और वह इतना प्रसन्न हुआ कि बड़ी नम्रता से बार बार दुकानदार के सामने झुककर तब वहाँ से विदा ली। सौंगजुङ को ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसके समान सुखी और भाग्यवान व्यक्ति और कोई नहीं।

पहिले तो प्रसन्नता हुई किन्तु धीरे धीरे एक प्रकार की वेदना ने वाँगलुङ के विचारों को घेर लिया। इस जीवन में अधिक प्रसन्नता होना भी ठीक नहीं। इस वायु और पृथ्वी पर ऐसे भी जीव व प्रेत हैं जो मनुष्य के सुख का, विशेषतया गरीब के सुख को नहीं देख सकते। यकायक वह मोमबत्ती की दूकान में घुस गया, जहाँ धूप बत्तियाँ भी बिकती थीं। घर के चारों प्राणियों के नाम से उसने एक२ बत्ती मोल ली और धरती माता के मन्दिर में जाकर सिलगाई। इसी मन्दिर में वह अपनी स्त्री के साथ पहिले भी आ चुका था आज फिर नवजात शिशु के लिये शुभ आशीष देने को उसने धरती माता का अभिनन्दन किया। इस के उपरांत शांत और संतोष के साथ वह घर की ओर रवाना हुआ।

\+ \+ \+

कुछ ही दिनों में प्रथा के विपरीत वाँगलुङ की स्त्री भी उसके साथ खेत पर आने लगी। फसल कट चुकी थी, खलिहानों में से गेहूँ साफ किया जा रहा था, वह सब काम पति-पत्नी मिल कर करने लगे। गेहूँ को इस प्रकार साफ करके रखने के बाद फिर उन दोनों ने जमीन खोद कर तैयार की और नई फसल को बोने के लिए हल चलाने।

इसी प्रकार वाँगलुङ की स्त्री दिन २ भर खेत में काम करती रहती। और बच्चा चुपचाप एक तरफ पड़ा २ सोता रहता। जब बच्चा रोता तो वह अपना काम छोड़ झट अपने वक्षस्थल खोलकर स्तनों को बच्चे के मुँह में लगा देती। इस प्रकार जमीन पर सीधा बैठ थोड़ी देर माँ बेटे को सूर्य की किरण भी तपाने की चेष्टा करतीं। दोनों का ही रङ्ग मिट्टी के रङ्ग के समान भूरा था और दूर से देखने पर यही मालूम होता था मानो मिट्टी के दो पुतले बना दिये गये हों। खेतों की उड़ी हुई धूल के कण साथ २ उनके शरीर में चमकते दिखाई देते।

थोड़ी ही देर में स्त्री के बड़े बड़े मटमैले रंग के स्तनों से बर्फ के समान सफेद दूध की धार वह निकलती जब एक स्तन बच्चे के मुँह

में होता तो दूसरे से बराबर दूध उमड़ा पड़ता और वह उसे बहने देती। इस विचार से कि बच्चे के लिये यथेष्ट से अधिक दूध का कोष उसके पास है, उसे कोई परवाह नहीं थी और स्तनों से निकले दूध को बहने देने में भी एक प्रकार की शांति अनुभव करती। दिन पर दिन स्तनों में दूध बढ़ता जाता। कभी २ तो वह स्वयं स्तनों को ऊपर उठाकर दूध जमीन पर ही गिरा देती इस डर से कि कपड़े खराब न हों। बच्चा अपनी माँ के इस जीवन पान से निरन्तर मोटा ताजा होता गया।

धीरे २ सर्दी का मौसम आ गया। इस मौसम के लिये भी वाँगलुङ परिवार ने तैयारी कर रखी थी। इस बार इतनी फसल हुई थी कि नाज तीनों कमरों में नहीं समा रहा था। छत के ऊपरी कोनों से नीचे तक प्रत्येक कमरे में चर्ई के बने लम्बे बड़े गेहूँ और चावलों से भरे पड़े थे। वाँगलुङ और गाँव वालों की भाँति लापरवाह भी नहीं था और न धुन में ही पैसा उड़ाता बाहर जाकर खाने पीने में भी व्यय करने की उसको आदत न थी, इसीलिये उसे ज्ञात था कि सस्ते दामों में नाज न बेच कर कुछ समय के लिये रुक जाने को भी गु फायदा उसमें थी। अतएव यह नाज उसने सर्दी के दिनों के लिये रख लिया था। वह अच्छी तरह से जानता था कि नये वर्ष के उत्सव में नाज अनाज के लिये मुँह माँगा दाम देने को तैयार हो जायेंगे।

उसके चाचा को आज्ञा अपने से पहिले ही सारा नाज बेच देना पड़ता था। कभी २ तो नाज काटने व साफ करने की मुसीबत से बचने के लिए वह थोड़े ही दामों में खेत को बेच डालता था। इसका कारण एक यह भी था कि उसकी स्त्री मूर्ख और सुस्त और मोटी और सदैव ही मिठाई खाने की शौकीन। शहर से जो कभी यह मँगा कभी वह मँगा को रट बराबर लगाये रहती थी। इधर वाँगलुङ की स्त्री उसके लिये एक पिता के लिए अपने लिये और बच्चे के लिये जूते तक अपने हाथ सी डालती थी।

बौंगलुङ के चाचा के टूटे फूटे घर में इस प्रकार वस्तुओं के मटकों में बाल कभी रखा नहीं दिखाई दिया, किन्तु अपने घर तो कई दिनों की बटोरी हुई सुअर की टाँग भी सुरक्षित रखी हुई थी, उसको रस्सी से बांध और छेद में इस मांस को भली प्रकार सुरक्षित करके एक ओर टाँग रखा था इसके अतिरिक्त दोनों मुर्गियाँ भी इसी प्रकार सर्दी के लिए सुरक्षित की हुई रखी थीं। इस प्रकार खाने पीने की सभी वस्तुएँ पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी की हुई थीं।

अतएव अब और भी अधिक सर्दी पड़ने पर वे लोग घर में आराम से बैठ कर खा-पी सकते थे। उस समय तक बच्चा भी बैठने लगा था। बच्चे के जन्म दिन पर अधिकतर वह आपस में खाना पीना करते। बौंगलुंग ने अभी एक दावत ही दी थी जिसमें गाँव के सभी शामिल हुए थे उसके विवाह की दावत में भी आए थे। उन सभी को बौंगलुङ ने एक एक अंडे और इसके अतिरिक्त गाँव के जो लोग उसे बधाई देने आए उन सभी को उसने दो दो अंडे बाँटे। हर एक व्यक्ति बच्चे के सुन्दर सुडौल व सुगठित शरीर को देख कर प्रसन्न होता। अब वह बैठने लगा था अतएव उसे पेट में ले जाकर खिला देने की आवश्यकता न रह गई थी। दरवाजे पर बैठा बैठा वह सर्दी की धूप में खेलता रहता।

सर्दी की शुष्क हवा में पेड़ों के पत्ते झोंका खाने लगे और पानी में उगे हुए बीज भी ढेर गये। अब बौंगलुंग आसमान का इन्तजार करने लगा। उस दिन जब अचानक वर्षा हुई तो सब लोग घर में बैठे २ मुट्ठियाँ मसलने लगे और अपनी लम्बाई दृष्टि से दूर जमीन की ओर देखते रहे। बच्चे का रूप देखते ही बनता था। वह मेज की रुई को अपने हाथ में पकड़ने का प्रयत्न करता और जब कभी रूई हाथ में आ जाती वह हँस पड़ता, उसकी हँसी के साथ और सब भी हँसने लगते। वृद्ध महोदय की खुशी का भी कोई ठिकाना नहीं था बच्चे की

सुखी में अपने को डुबोता हुआ वह बोला "ऐसा बच्चा तो कितने ही गाँवों में नहीं होगा और बच्चे तो अब तक चलाने न लगें किसी चीज को गौर से देखते ही नहीं।"

इन दिनों में खेतों में कोई काम न था अतएव सभी किसान इधर उधर घूमते व एक दूसरे के घर जाकर बातचीत व गप्पों में अपना समय बिताते। खेती का काम तो अगवाड़ा वर्षा के अन्त में ही रहता था। स्त्रियाँ प्रायः घर में ही रहतीं, कोई कपड़े लत्तों की मरम्मत में व्यस्त रहती तो कोई घर का और काम संभालती, कोई शौकीन मिजाज स्त्रियाँ अचार की दावतों और खाने पीने का सामान जुटाने में लगी रहती।

किन्तु योगराज और उसकी स्त्री को इधर उधर घूमने अथवा मिलने जाने की आदत न थी। गाँव के और गरीब टूटे फूटे घरों की अपेक्षा इनका घर उत्तम और भरा पूरा था, किसी से मेल जोल बढ़ाने में उन्हें यही डर लगा रहता कि कहीं उनसे कोई उधार न माँगने लग जाये। क्या साल भर खाने को ही बचता था और किसके पास इतना पैसा था जो उसके खर्चे को पूरा कर सके? अतएव योगराज भी घर में ही रह कर अपने हल फावड़े आदि की देखभाल व मरम्मत में लगा रहता और स्त्री घर के काम काज संभालती रहती। यदि कोई मिट्टी का बर्तन जरा इधरउधर टूटा फूटा दिखाई देता तो वह अन्य स्त्रियों की भाँति उठा कर फेंकती नहीं बल्कि गीली मिट्टी गर्म कर बर्तनों में लगा देती। इस तरह उनके बर्तन ठीक भी हो जाते व नये दिखाई देने लगते।

इस प्रकार वे दोनों एक दूसरे के काम की सराहना करते हुए दिन बिता रहे थे। काम काज की बातों के अतिरिक्त फिजूल की गप्पों में वे समय नष्ट नहीं करते थे। कभी वे बात करते तो ऐसी ही "क्या नई फसल के लिये बीज बचा कर रख लिया है?" या "गेहूँ के दामों

को मिलाकर चारा बेच देंगे" 'इस गेहूँ का आटा अच्छा होगा' इत्यादि ।

इस बार की फसल में अच्छे पैसे मिल गये व जरूरत की चीजें खरीद लेने के बाद भी अच्छी खासी रकम बच रही । जितने रुपये उसके पास बच रहे वह वांगलुङ्ग केवल अपनी स्त्री को ही बताता, अपनी मढ़ी में सारे रुपये अपने रखने में उसे डर ही लगा रहता अतएव दोनों ने आपस की सलाह से ये रुपये सावधानी से रखने का उपाय सोच निकाला और वांगलुङ्ग की स्त्री ने अपने सोने के कमरे में एक ओर दीवाल खोदकर एक गड्ढा बनाया और वांगलुङ्ग ने वह रकम वहाँ गाड़ कर रख दी व ऊपर से मिट्टी करके उसे ढक दिया ताकि किसी को कोई शक न रह जाय । हाँ, उनको यह सन्तोष रहा कि उनके पास कुछ रुपया है ।

५

नए वर्ष के आगमन के साथ-साथ गाँव के प्रत्येक घर में तैयारियाँ हो रही थीं। वांगलुङ भी शहर जाकर रङ्ग-बिरंगे कागज लाया और लाल कागज पर खुशहाली के आशाजनक शुभ वाक्य लिखकर अपने हल इत्यादि पर चिपकाए, ये कागज खेत के औजारों पर, बैलों की जोड़ी पर और उन बाल्टियों पर भी, जिनमें वह पानी व खाद आदि ले जाया करता था, चिपके। कागज के सुन्दर फूल बना कर उसने घर के किवाड़ों पर लटकाए। इसके बाद वे मन्दिर के देवी-देवताओं की मूर्तियों के लिये कागज के चोंगे व लिबास बनाये, वांगलुङ ने उन वस्त्रों को मूर्तियों को पहिना कर सदा की भाँति अगरबत्ती, धूपबत्ती जलाकर आराधना की। घर में भगवान की मूर्ति के पास उसने दीपक जलाए।

इसके बाद वांगलुङ फिर बाजार गया और खाने पीने की बढ़िया सामग्री लाया। उसकी स्त्री ने चावल के आटे से बड़े-बड़े केक बनाये—जैसे कि धनाढ्य परिवार में बना करते थे। किन्हीं २ 'केक' में छिड़कने के लिये उसने मेवाएँ भी लगा दीं। मिठाइयों में लगी मेवा इतनी सुन्दर लग रही थी कि वांगलुङ ने कहा—'ऐसी सुन्दर चीज तो खाकर नष्ट नहीं करना चाहिये।'

वांगलुङ का बूढ़ा बाप मेज पर सजी मिठाइयों को देखकर बच्चों की तरह खुश हो रहा था। उसको देखकर कहने लगा—

"मेरे भाई को बुलाओ, अपने चाचा को भी बुलाओ बच्चों को भी, जरा वे लोग भी तो आकर देखें।"

किंतु अपनी समझ दशा मे बोगाडुक कुछ सचेत और सावधान रहने लगा था। भूखों को केवल मिठाइयाँ दिखाना तो काफी नहीं है, ऐसा वह सोचने लगा। "नये साल के दिन से पहिले हम मिठाइयों को दिखाना ठीक नहीं" बोगाडुक ने शीघ्रता से उत्तर दिया। और उसकी पत्नी कोट को हाथों से छूते हुए बोली—

'यह सब मिठाइयाँ हमारे खाने के लिये नहीं हैं, कुछ तो मेरे मामों को चढ़ाई जायेंगी। हम लोग इतने रईस नहीं जो ऐसी मिठाइयाँ खायें। यह सब तो मैंने भोग चढ़ाने की सामग्री के लिये बनाई हैं। नये वर्ष के दूसरे दिन मैं बच्चे को वहाँ ले जाऊँगी और भेंट स्वरूप यह मिठाइयाँ भी।"

बोगाडुक इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ। वे मिठाइयाँ टिकियाँ और केक तो अवश्य उस घर में जायेंगी जिसके बड़े कमरे में एक बार वह अपनी गरीब की दुर्दशा में जाकर खड़ा किया गया था, वहीं उसकी पत्नी एक मेहमान के रूप में बच्चे को सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित कर अवश्य ले जायगी।

उस बड़े घर जाने की बात ने नये वर्ष के गौरव और आडम्बर को दुगना किया। बोगाडुक अपने उस कोट को ध्यान में रख जो उसकी पत्नी ने पोशाक से कीमती कपड़ा लगा कर तैयार किया था, अपने आप कहने लगा—

"जब मैं उस घर में जाऊँगा तो इसी कोट को पहिन कर जाऊँगा।"

यह सोचकर ही बोगाडुक ने पहिले दिन जब उसके मेहमान नये वर्ष की बधाइयाँ देने आये तो अच्छी २ मिठाइयाँ छिपाकर टोकरी में रख दीं, कहीं लोग आने पर वह भी उन्हें खिलानी पड़तीं। बोगाडुक

के सिर को उसमें छिपा लिया और फिर ज़ोर से कहने लगा—

'कितने अफ़सोस की बात है कि यह बच्चा भी लड़की है, जिसे कोई नहीं चाहेगा। चेचक के दागों से भरा पड़ा है। भगवान करे यह मर जाय।"

"हाँ, हाँ" उसकी बीवी ने बात को समझ कर जल्दी से कहा।

इस होने को करने के बाद, वांगलुङ ने फिर अपनी बीवी से पूछा, "क्या तुमने उनकी ऐसी गरीबी का कारण पूछा?"

"मुझे रसोइये से बातचीत करने का थोड़ा ही अवसर मिला।" वह कहने लगी, "इस घर की हालत अब गिरती ही जायगी। पाँच छ जवान बेटे पैसा पानी की तरह बहा रहे हैं और वह भी दूसरे देशों में हर साल नई औरत रख कर पुरानी को घर भेज देते हैं। इधर बुड्ढा भी घर में ही रहता है, एक न एक रखैली भी हर साल बढ़ती जाती है और मालकिन भी दिन भर अफ़ीम फाँकती रहती है।'

"क्या यह ठीक है" वांगलुङ उत्सुकता से कहा।

' और फिर इसी बसन्त में तीसरी लड़की का विवाह होने वाला है।" बात को जारी रखती हुई ओ-लान बोली, उसके दहेज में ही कितना अपार बहाया रुपया खर्च हो जाएगा, उसके कपड़े बढ़िया से बढ़िया सूचाउ के बनी और हाँगचाउ के मशहूर दर्जियों की बनावट उन्हें तैयार करेगी। वह चाहती है कि उसके कपड़े विदेशी स्त्रियों के कपड़ों से भी अधिक सुन्दर व कीमती हों।"

"ऐसा है तो वह विवाह किससे करेगी?" वांगलुङ डरते हुए बोला। इतनी रकम के खर्चे से वह कुछ २ डर सा गया था।

"शंघाई के मजिस्ट्रेट के दूसरे लड़के के साथ उसका विवाह होगा।" और फिर कुछ रुक कर बोली, "उनका रुपया अवश्य ही कम होता जा रहा होगा क्योंकि मालकिन वह ज़मीन बेच रही है जो बाहर दीवारी के बाहर हो लगी हुई है, जहाँ वह हर साल चावलों की फसल

तैयार करवाते थे, वह जमीन बहुत अच्छी है और पानी भी वहाँ भरा रहता है।"

"जमीन बेच रहे हैं?" बोगतुख़ बोला, "तब तो जरूर ही वे लोग गरीब होते जा रहे हैं। जमीन तो अपने निकटतम सम्बन्धी से भी अधिक है, उसमें तो अपना खून होता है।"

वह कुछ सोचने लगा और फिर सिर झुकाते हुए स्त्री की ओर देखकर बोला—

"अच्छा! हम लोग उस जमीन को खरीदेंगे।"

वे एक दूसरे की ओर देखने लगे। बोगतुख़ की आँखों से हर्ष चमक रहा था एवं स्त्री की आँखों से आश्चर्यपूर्ण स्तब्धता।

"लेकिन जमीन तो.... जमीन तो" वह गुनगुनाई।

"मैं खरीदूँगा।" वह जरा जोर से बोला, "दोन के बड़े पाले की जमीन मैं खरीदूँगा।"

"लेकिन जमीन बहुत दूर पड़ेगी" कुछ विस्मित होकर बो-बास बोली, "आधा दिन तो वहाँ पहुँचने में ही कम जाया करेगा।"

"मैं खरीदूँगा।" बोगतुख़ कुछ उत्सुक सिवासी से बोला, मानों उसकी बात काटी जा रही हो!

"जमीन खरीदना तो अच्छी बात है," वह कुछ दबती हुई बोली, "जमीन खरीदने में पैसा लगाना उससे अच्छा है बजाय कि पैसा यूं ही रखा जाय। लेकिन तुम्हारे चाचा की जमीन का टुकड़ा ही क्यों न ले लिया जाय? अपनी जमीन के साथ ही लगा हुआ जो टुकड़ा है, उसे बेचने के लिये तो वह व्याकुल हो रहे हैं।"

"वह चाचा की जमीन," बोगतुख़ जोर से बोला, "वह तो मैं नहीं खरीदूँगा। उसमें तो कुछ नहीं उगता। बीसियों वर्षों से न तो उसमें हल चला है और न खाद ही पड़ी है। वह जमीन तो चूने की तरह सख्त है। नहीं, नहीं, मैं तो दूसरे गाँव वाली जमीन ही खरीदूँगा।"

के सिर को उनमें छिपा लिया और फिर ज़ोर से कहने लगा—

"कितने अफ़सोस की बात है कि यह बच्चा भी लड़की है जिसे कोई नहीं चाहेगा चेचक के दाग़ों से भरा पड़ा है। भगवान करे यह मर जाय।"

"हाँ, हाँ," उसकी माँ ने बात को समझ कर जल्दी से कहा।

इस होने को कहने के बाद, वांगलुङ ने फिर अपनी माँ से पूछा, "क्या तुमने उनको ऐसी गरीबी का कारण पूछा ?"

"मुझे रसोईघर से बात चीत करने का मौका ही अवसर मिला!" वह कहने लगी "इस घर की हालत अब गिरती ही जायगी। पाँच २ जवान बैठे पैसा पानी की तरह बहा रहे हैं और वह भी दूसरे देशों में हर साल नई औरत रख कर पुरानी को घर भेज देते हैं। इधर बुड्ढा भी घर में ही रहता है एक न एक रखैल भी हर साल बदली जाती है और मालकिन भी दिन भर कीमती अफ़ीम फूँकती रहती है।"

"क्या यह ठीक है" वांगलुङ उत्सुकता से कहा।

"और फिर इसी महीने में तीसरी लड़की का विवाह होने वाला है," बात को जारी रखती हुई ओ-लान बोली, उसके दहेज में ही काफी बड़ा खजाना रुपया खर्च हो जायगा, उसके कपड़े बढ़िया से बढ़िया साटन के बनेंगे और शंघाई के मशहूर दर्जियों की मदद उन्हें तैयार करेगी। वह चाहती है कि उसके कपड़े विदेशी स्त्रियों के कपड़ों से भी अधिक सुन्दर व कीमती हों।

"ऐसा है तो वह विवाह किससे करेगी ?" वांगलुङ कांपते हुए बोला। इतनी रकम के खर्च से वह कुछ २ सहम सा गया था।

"शंघाई के मजिस्ट्रेट के दूसरे लड़के के साथ उसका विवाह होगा।" और फिर कुछ रुक कर बोली "उनका रुपया अवश्य ही कम होता जा रहा होगा क्योंकि मालकिन वह जमीन बेच रही है जो बाहर दीवारों के बाहर ही लगी हुई है, जहाँ वह हर साल चावलों की फसल

तैयार करवाते थे, वह ज़मीन बहुत अच्छी है और पानी भी वहीं भरा रहता है।"

"ज़मीन बेच रहे हैं!" वांगलुङ बोला, "तब तो ज़रूर ही वे लोग गरीब होते जा रहे हैं। ज़मीन तो अपने निकटतम सम्बन्धी से भी अधिक है, उसमें तो अपना खून होता है।"

वह कुछ सोचने लगा और फिर सिर झुकाये हुए स्त्री की ओर देखकर बोला—

"अच्छा! हम लोग उस ज़मीन को खरीदेंगे।"

वे एक दूसरे की ओर देखने लगे। वांगलुङ की आँखों में हर्ष चमक रहा था एवं स्त्री की आँखों में आश्चर्यपूर्ण स्तब्धता।

"लेकिन ज़मीन तो.... ज़मीन तो ' वह गुनगुनाई।

"मैं खरीदूँगा।" वह ज़रा ज़ोर से बोला, "ह्वांग के बड़े घराने की ज़मीन मैं खरीदूँगा।"

'लेकिन ज़मीन बहुत दूर पड़ेगी,' कुछ विस्मित होकर ओ-लान बोली, "आधा दिन तो वहाँ पहुँचने में ही लग जाया करेगा।"

"मैं खरीदूँगा।" वांगलुङ कुछ तुनक मिज़ाजी से बोला, मानो उसकी बात काटी जा रही हो।

"ज़मीन खरीदना तो अच्छी बात है," वह कुछ रुकती हुई बोली, "ज़मीन खरीदने में पैसा लगाना उससे अच्छा है, जबकि पैसा गाड़ कर रखा जाय। लेकिन तुम्हारे चाचा की ज़मीन का टुकड़ा ही क्यों न ले लिया जाय? अपनी ज़मीन के साथ ही लगा हुआ जो टुकड़ा है, उसे बेचने के लिये तो वह व्याकुल हो रहे हैं।"

"वह चाचा की ज़मीन?" वांगलुङ ज़ोर से बोला, "वह तो मैं नहीं खरीदूँगा, उसमें तो कुछ नहीं उगता, बीसियों वर्षों से न तो उसमें कुछ फसल हुई है और न खाद ही पड़ी है। वह ज़मीन तो चूने की तरह सख्त है। नहीं, नहीं, मैं तो ह्वांग वालों की ज़मीन ही खरीदूँगा।"

"दूँगा की ज़मीन" उसके मुँह से ऐसे ही निकला, मानो वह अभी ज़मीन ख़रीद रहा हो। वह रुपया लेकर आयगा और सौदा करेगा, "मेरे पास रुपया है। जो ज़मीन बेचना चाहते हो उसकी क्या कीमत लगाते हो!"

और उसकी भी बात समझ गई। वह सोचने लगी कि आख़िर उसका पति वह ज़मीन ख़रीद रहा है जिसके मालिक की परवरिश में वह पली और बड़ी हुई है। उसने कहा—

"यही ज़मीन ख़रीद ली जाय। शायद वहाँ पैदा हो सके यही ज़मीन अच्छी है, पानी भी यहाँ आसानी से मिल जाया करेगा।" और फिर मन्द २ मुस्कान उसके चेहरे पर खेलने लगी। कुछ देर बाद वह बोली—

"पिछले वर्ष इन्हीं दिनों में मैं इस घर की नौकरानी थी।"

और वे दोनों इसी प्रकार अपने विचारों में डूबे हुए चलते चले गए।

\+ \+ \+ \+

६

वांगलुङ के जीवन को जमीन के इस टुकड़े ने जिसे उसने अब खरीद लिया था, बहुत कुछ बदल दिया। घर में गड़ी हुई चाँदी निकालने के बाद जब वह ह्वांग परिवार के मालिक के पास बराबर की हैसियत से आया तो कभी कभी वह सोचने लगा कि वह धन उसका वापिस आ जाए। आखिर जैसा बोल-चाल में कहा था कि जमीन दूर है, पौन मील से भी अधिक ही दूर होगी और वहाँ आने जाने में ही काफी समय खप जाया करेगा इस विचार से वह कुछ और भी निराश हो उठता था। फिर उस जमीन का खरीदना कुछ अच्छे मुहूर्त में भी नहीं हुआ क्योंकि जब वह वहाँ गया तो मालिक सो रहा था यद्यपि दोपहर हो चुका था। वहाँ जाकर जब उसने द्वार से कहा था, 'मालिक से कहो, मुझे जरूरी काम है—रुपये पैसे की बात।" तो चौकीदार ने साफ साफ जवाब दिया था —

"संसार का सारा रुपया भी आजाय तो भी उस बूढ़े शेर को जगाने का साहस मैं नहीं कर सकता। वह अपनी उस नई प्रेयसी के साथ सो रहा है जो अभी तीन दिन हुए आई है। मेरा साहस तो नहीं जो उसे जगा दूँ। मैं अपनी जिन्दगी से हाथ नहीं धोना चाहता।" और फिर उसने अपनी मूछों पर ताव देते हुए कहा था, "यह न समझना कि रुपए के लालच से वह जाग पड़ेगा। जब से वह पैदा हुआ है रुपया हमेशा उसकी हथेली के नीचे ही रहा है।"

आखिरकार यह काम उसके दलाल द्वारा ही पूरा हुआ जिसने बीच में ही कुछ रकम अवश्य ही साफ़ की होगी। ऐसे ही सोचते हुए वाँगलुङ को लगा जैसे चाँदी के वे रुपए ज़मीन से अधिक प्यारे थे। चाँदी चमकती तो थी।

किंतु ज़मीन तो अब उसकी हो चुकी थी। एक दिन वह ज़मीन को देखने चल पड़ा। किसी को पता नहीं था कि यह ज़मीन अब उसकी थी। शहर की चहारदीवारी से बाहर ज़मीन के इस टुकड़े पर वह अकेला ही घूम रहा था। उसने अच्छी तरह ज़मीन को नापा, तीन सौ क़दम लम्बा और एक सौ बीस क़दम चौड़ा हुआ था। उसकी सीमा पर चार पत्थर ह्वाँग के नाम से ही अब तक लगे हुए थे। और इन पत्थरों को वो हटवा कर वह अपने नाम के पत्थर लगवा देगा लेकिन अभी नहीं। वह नहीं चाहता था कि लोगों को मालूम हो जाए कि अब वह एक अमीर आदमी है। थोड़ा रुपया और इकट्ठा हो जाने पर वह यह काम करेगा। तब उसे ऐसी कोई परवाह भी नहीं रहेगी। फिर ज़मीन की ओर देखते हुए उसने सोचा—

"उस बड़े घर में यह ज़मीन कोई क़ीमत नहीं रखती, किंतु मेरे लिए यह ज़रा सी ज़मीन बहुत कुछ है।"

यह सोचने के बाद उसे अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई। इस ज़रा सी ज़मीन को वह बहुत कुछ समझता है लेकिन जब उसने रुपए दलाल के सामने रखे थे तो उसने लापरवाही से कहा था—

"यह रुपया उस बूढ़ी मालकिन की अफ़ीम को कुछ दिन तो चलायेगा ही।"

जो अन्तर उसके और ह्वाँग परिवार के बीच उसे जान पड़ा वह बहुत बड़ा था। एक प्रकार के क्रोध से उसने फिर यह दृढ़ निश्चय किया कि इसी ज़मीन को वह चाँदी से भर देगा और वह इसी प्रकार ह्वाँग की सारी ज़मीन ख़रीदता चला जायगा तभी यह अन्तर मिट सकेगा।

बसन्त के आगमन से दिन अब फिर बड़े हो गए। वह अपनी ज़मीन में पूरी लगन के साथ जुट गया। उसका बाप बच्चे को देखता रहता और स्त्री उसके साथ खेत पर काम में लगी रहती। खेत में काम करते हुए एक दिन अचानक उसकी निगाह अपनी स्त्री पर पड़ी और वह ताड़ गया कि पेट में बच्चा फिर है। उसे यह अच्छा नहीं लगा कि फसल कटने के समय वह काम करने लायक नहीं रहेगी।

"तो अब की बार फिर तुम्हें पूरे दिन हुए"

"अब ऐसी तकलीफ नहीं होगी, वह तो पहिले बच्चे के समय ही तकलीफ अधिक होती है।" वह तड़क कर बोली।

इसके बाद बच्चे के सम्बन्ध में फिर कोई बात नहीं हुई। स्त्री का पेट बढ़ता गया और आखिर वह दिन आ गया जब वह चुपचाप घर में घुस गई। उस दिन दोपहर को भी खाने के लिए वह घर नहीं गया क्योंकि गेहूँ पका हुआ पड़ा था, उसे समेटना था और बादल गरज २ कर वर्षा की घोषणा कर रहे थे। लेकिन दिन छिपने से पहिले ही स्त्री भी वहाँ पहुँच गई, उसका शरीर थका हुआ था और चेहरा क्लांत था। वाँगलुङ कहना चाहता था "आज के दिन काफी मेहनत हो गई, अब जाओ बिस्तर पर आराम करो" किन्तु उसका शरीर स्वयं इतना थक गया कि उसने सोचा कि उसकी थकान भी बच्चा पैदा करने की थकान के बराबर ही हो चुकी है इसलिये निर्दयी की भाँति चुप रह गया। फिर हँसिया चलाते हुए बीच में बोला।

"लड़का है या लड़की?"

"यह दूसरा लड़का है" स्त्री ने शांत स्वभाव से कहा।

इसके बाद आपस में कोई बातचीत नहीं हुई, किन्तु वाँगलुङ प्रसन्न था और इस प्रसन्नता से उसे थकान का बोझ कम मालूम पड़ने लगा। देर रात तक चाँद के प्रकाश में काम करते रहने के बाद वे दोनों घर चले गए।

खाने के बाद जब वह अपने दिन भर के थके हुए शरीर को उसके पानी में धो चुका और चाय का एक प्याला पी चुका तो वांगलुङ अपने दूसरे लड़के को देखने अन्दर गया। खाना देने के बाद घर-काम बिस्तरे पर बैठी हुई थी और बच्चा उसके सहारे से पड़ा हुआ था—यह बच्चा पहिले बच्चे की तरह मोटा ताजा तो नहीं था किन्तु फिर भी देखने में अच्छा लगता था वांगलुङ ने उसे देखा और एक प्रकार से सन्तुष्ट हो कर फिर अपने कमरे में चला गया। सोचने लगा कि इस प्रकार हर साल लड़का पैदा होता रहेगा तो लाल रंगे हुए अण्डे बाँटने में मुसीबत हो जायगी। पहिले बच्चे के लिए तो यह सब ठीक था। वह अपने पिता की तरफ देखकर बोला—

"अब एक बच्चा और हो जाने से बड़े बच्चे को आपके बिस्तरे पर सुलाना पड़ेगा।"

वृद्ध महाशय प्रसन्न हो गए। बहुत दिनों से उनकी यह इच्छा थी कि बच्चा उनके साथ सोकर बुढ़ापे की गली हुई हड्डियों को कुछ गर्मी पहुँचावे।

इस बार फसल और भी अच्छी हुई। वांगलुङ ने फसल बेच कर काफी रुपया इकट्ठा कर लिया और पहिले की भांति दीवार में गाड़ कर रख भी लिया। उसको अपनी जमीन की पैदावार से दुगनी चावलों की पैदावार उस जमीन से हुई थी जो उसने ह्वांग से खरीदी थी। अब तक प्रायः सभी को पता चल गया था कि वह जमीन अब वांगलुङ की है। वांगलुङ को गाँव का मुखिया बनाने की चर्चा गाँव से चल पड़ी थी।



अब जैसा कि उसे डर था चोंगलुङ का चाचा उसके लिये दुख-दायी हो गया। अपने पिता के छोटे भाई को पूरा अधिकार था कि वह परिवार सहित चोंगलुङ पर निर्भर रहे। यद्यपि अब तक चोंगलुङ और उसके पिता ने गरीबी के दिन काटे इन्होंने किसी प्रकार की सहायता नहीं दी केवल अपनी स्त्री और सातों बच्चों को ही खिलाते रहे। उनके परिवार में से काम कोई नहीं कर सका। चाची घर को सफाई करने से दूर ही रहती और बच्चे तो अपने मुँह की लूटन को नहीं छुड़ा पाते थे। लड़कियाँ बड़ी होगई थीं और विवाह के योग्य थीं लेकिन गाँव में इधर उधर फिरा करती थीं। कभी २ तो उन्हें आदमियों से बातचीत करते भी देखा गया था। इन बातों को चोंगलुङ अपने परिवार के लिए कलंक समझता था। ऐसे ही एक दिन जब उसने चाचा की बड़ी लड़की को फिरते हुए देखा तो उससे न रहा गया। सीधा वह उसके घर पहुँच कर चाची को खरी खरी सुनाते हुए बोला—

अब इस लड़की से कौन विवाह करेगा जो हर एक आदमी से बात करती फिरती है। इधर तीन चार वर्ष से यह विवाह के योग्य है और फिर भी घूमती रहती है। आज ही मैंने उसे गाँव के एक पुरुष से हाथ में हाथ लिये बात करते हुए देखा है।

चाची की जबान तेज काम करती थी। चोंगलुङ पर बुरी तरह बरस पड़ी।

"ठीक है उसके विवाह का और दहेज का खर्चा कौन देगा ? जिनके पास अनेक भूमि है और उसका उपयोग करना जानते हैं और जो पैसा इकट्ठा कर अपने और भूमि खरीदते रहते हैं उनके लिये बातें बनाना आसान है लेकिन तुम्हारे चाचा तो आरम्भ से ही भाग्यहीन हैं। निर्दोष होते हुए भी उनका भाग्य बुरा है। भगवान की ऐसी ही इच्छा है। जहाँ और लोग अच्छा नाज पैदा करते हैं वहाँ उनका बीज भूमि में ही निर्जीव हो जाता है।'

इस प्रकार कहते हुए चाची जोर जोर से रोने लगीं एवं अपने सिर के बाल नोंच नोंच कर फेंकने लगी। फिर बोली—

"दुर्भाग्य का होना भी एक बात है जो तुम नहीं समझ सकते। जब कि औरों की भूमि में अच्छा चावल और गेहूँ उत्पन्न होता है तब हमारी भूमि में घास ही होकर रह जाती है। जब औरों के मकान सैकड़ों साल तक खड़े रहते हैं, तो हमारे मकान की जमीन तक हिल पड़ती है जहाँ औरों के पुत्र उत्पन्न होते जाते हैं वहाँ मेरे पुत्रियाँ ही होती हैं— वाह रे दुर्भाग्य !

वह इतनी जोरों से चिल्लाई कि पड़ोस की स्त्रियाँ अपने अपने घरों से बाहर निकल आईं और आकर वहाँ खड़ी हो गईं। किन्तु वाँगलुङ उसी प्रकार खड़ा रहा उसे तो जो कहना था वह कह चुका था फिर बोला—

"फिर भी यह उचित नहीं कि मैं अपने बड़ों को सीख दूँ किन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि लड़की जब तक कुमारी रहे तभी उसका विवाह कर देना चाहिए, वरना क्या किसी ने कभी ऐसा भी देखा है कि सड़कों पर कुतिया बच्चे न देती हो ?"

इस प्रकार साफ २ बात कहके वह सीधा अपने घर चला गया और चाचा को उसी तरह हाथ हिलाते छोड़ गया। अब जब कि वह प्रति वर्ष होंग परिवार की थोड़ी २ भूमि खरीदने की तैयारी में लगा था

और उम्र में बढ़ते हुए लड़कों के भविष्य के लिये कुछ ज़मीन जायदाद खरीद कर रखना चाहता था, तो उसे अपने चाचा के परिवार की खस्ता हालत को देखकर, बड़ा गुस्सा होता।

दूसरे दिन जब वह अपने खेत पर काम कर रहा था तो उसका चाचा वहाँ आया। उस समय भीखान वहाँ नहीं थी। दूसरे बच्चे होने के बाद दस महीने हो चुके थे और अब तीसरी सन्तान होने वाली थी। इस बार उसकी तबियत ठीक नहीं रहने के कारण उसका खेत में आना नहीं होता था अतएव वाँगलुङ अकेला ही काम कर रहा था। वाँगलुङ घास खोदता रहा और चाचा वहीं पास में चुपचाप खड़े रहे। आखिर वाँगलुङ कुछ ईर्ष्या से बोला—

"माफ़ करना चाचाजी आपको देख कर भी मैं बराबर काम में लग रहा हूँ। यह फसलें आप जानते ही हैं दो ही और तीन तीन बार बोई जाती हैं। आपका तो यह काम खत्म हो गया होगा। मैं काम में बहुत सुस्त हूँ—गरीब किसान हूँ—काम से कभी समय ही नहीं मिलता जो थोड़ा बहुत आराम कर सकूँ।"

उसका चाचा वाँगलुङ के व्यङ्ग को समझ तो गया किन्तु शांति से बोला—

"मैं तो भाग्यहीन हूँ। हम सब पचीस बीज डालने पर कहीं एक पौद उठी है। उसमें खाने के लिये भी सामान खरीदना पड़ेगा।"
ऐसा कह कर उसने एक लम्बी साँस ली।

वाँगलुङ ने अपना खुरप और खड़ा कर दिया। वह समझ गया था कि चाचा कुछ रुपये चाहते हैं अतएव चुपचाप रहा। आखिर चाचा ने ही बात आरम्भ की—

"घर में जो बातें तुमने मेरी बड़ी लड़की के सम्बन्ध में कही हैं मुझे बताई गई हैं। तुम अपनी उम्र के हिसाब से बुद्धिमान हो और जो कुछ तुमने कहा है सच है। उसका विवाह हो ही जाना चाहिए। हम

समय उसकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की है, इस उम्र में तो लड़कियों के बच्चे होने आरम्भ हो जाते हैं। मुझको बराबर यही डर लगा रहता है कि कहीं किसी आवारा व्यक्ति के साथ फँसकर वह हमारे सम्मानीय कुटुम्ब को कलंक न लगा दे।'

चौंगहुआ ने कुल्हाड़ी उठाकर एक ओर रख दी। वह साफ-साफ कहना चाहता था कि ऐसा ही है तो अपनी लड़की को वश में क्यों नहीं रखते। घर के अन्दर वह सफाई से क्यों नहीं रहती और घर के काम काज में ही समय क्यों नहीं बिताती ?'

किन्तु ऐसी बातें अपने से बड़ों से नहीं कही जातीं इसलिए चौंगहुआ चुप ही रहा।

"यदि मेरा भाग्य अच्छा होता," चाचा बोलते रहे—"तो घर में ऐसी ही स्त्री होती जैसे तुम्हारे पिता की थी या जैसी तुम्हारी स्त्री है। वह खेत के काम में भी सहारा देती और लड़के भी पैदा करती। किन्तु मेरी स्त्री तो पड़ी २ मोटी हो रही है बराबर लड़कियाँ ही पैदा की हैं उसने जैसे तैसे एक लड़का हुआ वह भी इतना आलसी है कि उसे भी लड़की कहना ही ठीक होगा। यदि ये सब ऐसे न होते तो मैं भी उतना ही खाता पीता और खुशहाल रहता जैसे कि तुम हो। मैं बस इच्छा में स्वयं तुम्हारी लड़कियों के विवाह करता और तुम्हारे लड़के का काम दिखाने में अपनी जमानत भी देता, तुम्हारे मकान की मरम्मत की आवश्यकता होती तो सहारा देता, मतलब यह कि हर प्रकार से तुम्हारी तुम्हारे बच्चों की व तुम्हारे पिता की देखभाल में स्वयं करता। आखिर हम दोनों में एक ही तो खून दौड़ रहा है।"

चौंगहुआ ने धीरे से उत्तर दिया।

आप जानते हैं मैं कोई अमीर आदमी नहीं हूँ। घर में पाँच लोग खाने वाले हैं, पिता बूढ़े हो गए हैं उनसे कुछ काम होता नहीं किन्तु खाने को तो चाहिए ही। इसके अतिरिक्त एक बच्चा और होने वाला,

है, कदाचित् इस समय तक पैदा भी हो गया हो।'

चाचा एकदम बोले—"तुम अमीर हो, तुम्हीं ने तो ब्याज के बड़े भारी की जमीन पर जमीन खरीदी है, भगवान जाने कितनी मँहगी खरीदी होगी। क्या गाँव में और भी कोई ऐसा है जो यह सब कर सकता हो?'

इतना सुनते ही सोमदत्त को गुस्सा आ गया और वह चाचा की ओर चिल्लाकर बोला—

"यदि मेरे पास कुछ रुपया है तो वह इसलिये कि मैं स्वयं मेहनत करता हूँ मेरी स्त्री भी मेहनत करती है। चाचों की तरह हम घर घर गप्प नहीं हाँकते, जुआ नहीं खेलते और बच्चों के प्रति लापरवाही नहीं बरतते।

यह सुनकर चाचा के झुर्रियों भरे चेहरे पर खून दौड़ गया अपने भतीजे की ओर दौड़ कर उसके दोनों गालों पर जोर से चाँटे मारते हुए कहा—

"तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम अपने चाचा से ऐसी बातें कहो। क्या यही तुम्हारा न्याय है? क्या तुम्हारा कोई सिद्धांत नहीं? क्या तुमने यह नहीं सीखा कि अपने से बड़ों के साथ आदर और श्रद्धा से बात की जाती है?"

सोमदत्त अन्दर ही अन्दर क्रोध से घुट सा रहा था किंतु साथ-साथ अपने कसूर का भी उसे आभास था इसलिये चुपचाप खड़ा रहा।

गुस्से से चिल्लाते हुए चाचा कहते गए—'मैं सारे गाँव में तुम्हारी बातें कहूँगा। कल तुमने मेरे मकान पर आकर मेरी ही लड़की के चरित्र पर आघात किया और आज तुमने मेरे साथ इस बुरी तरह से बर्ताव किया है। मेरी लड़कियाँ अब खराब हो जायें फिर भी मैं उनसे भी ऐसी बातें सुनना पसन्द नहीं करूँगा।" वह जोर जोर से कहते गये—"मैं सारे गाँव में कहूँगा—सारे गाँव में कहूँगा।" आखिर विवश होकर

बोंगाकुड़ बोला—"मुझसे चाहते क्या हैं आप ?" बोंगाकुड़ ने सोचा' अगर सारे गाँव में घर की कोई बात फैलती है तो बुरी बात है। चाचा के परिवार और उसके परिवार का मूल तो एक ही है।

इतना सुनते ही चाचा का गुस्सा शांत हो गया और वह बोंग कुड़ का हाथ सहलाते हुए बोला—"मैं तुम्हें जानता हूँ तुम अच्छे बच्चे हो—तुम तो मेरे बेटे हो। वैसे अगर पाँच-दस आदमी के लिये मुझे दो तो मैं अपनी लड़की के विवाह की बातचीत चलाऊँ। तुम ठीक ही कहते हो कि लड़की के विवाह का समय आ गया है।

बोंगाकुड़ अपनी मुस्कान को एक बार छिपाता हुआ बोला—"घर पर आइये रुपया पैसा हर जगह नहीं लिये फिरता हूँ।" और वह आगे बढ़ता गया विचारों में वह दुखी हो रहा था कि उसकी गाढ़ी कमाई के सिक्के अब दस होते न कुएँ में डाल दिये जायेंगे।

दोनों बच्चों को जो घर में खेल रहे थे एक तरफ हटाता हुआ वह सीधा अन्दर अपने कमरे में चला गया उधर चाचा उन बच्चों के साथ खिलवाड़ करने लगे। बोंगाकुड़ ने बच्चों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। बाहर की रोशनी से अब वह बन्द कमरे में गया तो उसे बड़ा अन्धेरा लगा और उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। केवल छेद से थोड़ा प्रकाश आ रहा था। किन्तु सहसा उसे ताजे खून की गन्ध आई। वह समझ गया, बोला— "यह क्या ? क्या तुम्हारा समय आ गया।"

अपनी स्त्री की बहुत धीमी आवाज में उसने सुना—"वह भी हो ही गया अब की बार तो लड़की है।

बोंगाकुड़ खड़ा का खड़ा रह गया। उसे कुछ बदशगुनी मालूम हुई। उसके चाचा का घर लड़कियों के ही कारण बिगड़ रहा था। अब उसके घर में भी एक लड़की पैदा हो गई।

बिना कुछ कहे हुए वह सीधा दीवाल की ओर जाकर खूँटी से थोड़ी मिट्टी निकाल कर चाँदी के सिक्के गिनने लगा। एक एक

करके उसने भी एक लिये।

"यह क्यों लिखवा रहे हो?" भी ने अचानक भाभी में ही पूछा।

"जबरदस्ती मुझ बाबा को उधार लिये पड़ रहे हैं।" उसने जवाब दिया।

उसकी बात ने पत्नी को कुछ नहीं कहा किन्तु फिर बोली—

"यह न कहो कि उधार दे रहे हो। इस घर में उधार देना कुछ मानी नहीं रखता बल्कि यह कहना उचित होगा कि रुपया फेंका जा रहा है।"

"यह तो मैं भी जानता हूँ" बोलकुछ कुछ रुखाई से बोला— "रुपया देना ऐसा लग रहा है जैसे शरीर का कोई टुकड़ा काट कर देना पड़ रहा हो, केवल इसलिये कि हमारा कुटुम्ब एक ही है और हम एक ही खून के हैं।"

इसके बाद वह गया और बाबा के हाथ में रकम रख कर सीधा अपने खेत पर चला गया और वहाँ जाकर काम में ऐसा जुट गया मानो भूमि का फाड़ कर रख देगा। उस समय निरन्तर उसे रुपयों का ही विचार रहा। वह उसकी कड़ी मेहनत की कमाई थी जो उसने और जमीन खरीदने के लिये रख छोड़ी थी।

काम करते २ जब शाम हो गई तो उसका क्रोध कुछ शांत हुआ और घर जाकर खाना खाने का ध्यान आया, तभी उसे उस नये जीव का भी ध्यान आया जिसने अभी २ घर में जन्म लिया था उसे लगा कि उसके घर में भी लड़कियों का पदार्पण आरम्भ हो गया— लड़कियाँ जो माँ-बाप को कभी नहीं रुचतीं जिनको दूसरे घर के लिये ही पाल पोसकर बड़ा किया जाता है। अपने खाना पर जाते हुए मार्ग के बीच वह दिवारी गई बालिका का मुँह भी नहीं देख पाया था।

अपनी खोदी हुई घास के गट्ठर की ओर देखते ही वह निराशा से भर गया। अब तो अगली फसल तक ही कुछ रुपये उसके पास इकट्ठे हो पाएँगे। उधर आकाश की ओर से कौवों का झुण्ड आकर सिर के ऊपर मँडराने लगा, वह उनकी ओर देखने लगा। कौवों के झुण्ड ने उसके घर को चारों तरफ के पेड़ों पर बैठ कर घेर लिया और जोर जोर से काँव-काँव करने लगे। वह उन्हें भगाने के लिये उधर दौड़ा, तब कौवे शोर करते हुए वहाँ से उड़ गए।

वह जोर से कराह उठा। यह वसन्तकुल की निराशा थी।

८

'एक बार यदि मनुष्य दैवी कृपा से वंचित हो जाय तो फिर कोई देवता उसकी ओर ध्यान नहीं करते" वांगचुक को कुछ ऐसा आभास आपसे आप होने लगा। ग्रीष्म के आरम्भ में ही सदैव की भाँति वर्षा ने भी अपना रुख बदल दिया। धूप की चमक से दिन पर दिन बीतते चले गये किन्तु वर्षा न हुई। प्रातः होते ही धूप चमक उठती और रातें भी बिना बादल के आकाश में तारों से आच्छादित होतने लगीं।

खेतों की जिस जमीन को वांगचुक ने बड़ी मेहनत से जोता था वह अचानक गर्मी से चटकने लगी और जो कुछ पौधे उग आये थे वे मुरझा गये। चावल की फसल भी रुक गई। एक लम्बे बाँस पर दोनों ओर भारी बाल्टियाँ लटकाए वह पहिले गेहूँ की पौध को पानी देता और फिर चावल के खेत को सींचता। इसी प्रकार मेहनत करते २ सारे शरीर में छाले पड़ गए, किन्तु वर्षा न हुई।

आखिर तालाब भी सूखने लगे और मिट्टी जम गई, कुएं का पानी भी इतना नीचे जाने लगा कि वांगचुक ने सोचा—

"यदि बच्चों और बूढ़े पिता के लिए पानी रखना है तो पौधों को सूखा रहने देना होगा।'

क्रोध से और फिर गिड़गिड़ा कर, अपने प्रश्न का उत्तर भी वांगचुक अपने आप देते हुए बोला—

"यदि फसल के पौधों को सूखा छोड़ दिया तो सब भूखे ही मरेंगे।" वास्तव में सारे प्राणियों के जीवन का आधार यह पृथ्वी ही तो है।

जमीन का वह टुकड़ा जो ह्वांग के मकान के चारों ओर था और जिसे वोंगलुङ ने खरीद लिया था, कुछ कामयाब साबित हुआ क्योंकि उसने सारी जमीन छोड़ कर इसी टुकड़े को खाइयों को पानी से अपने कंधों पर बाल्टियों को ढो कर पानी दिया। जब इस टुकड़े की फसल पूरी हो गई तो वोंगलुङ ने अपने यहाँ पैदा हुए अनाज को उसी समय बेच दिया। इस रकम से वह और जमीन खरीदना चाहता था, अतएव शीघ्रता से ह्वांग के घर गया और दलाल को बीच में रख कर बोला—

"मुझे अपनी जमीन के बराबर वाला टुकड़ा और चाहिये!

इधर उधर से वोंगलुङ ने यह सुन ही रखा था कि ह्वांग परिवार में गरीबी का राज्य आरम्भ हो चुका है और इस वर्ष तो दशा बहुत ही खराब रही है। बस बुढ़िया को पिछले दो दिनों से अफीम की पूरी खुराक भी नहीं मिल सकी है और जितनी ही बार अपने आदमियों को बुलाकर उसने बार-बार फटकार से पड़ा है —

"क्या अपनी और जमीन बिकने के लिये बाकी नहीं बची है।" बूढ़े मालिक ने एक और रखैल को रख लिया था, वह लड़की उसी की रखी हुई बाँदी की लड़की थी और इसका विवाह भी घर के नौकरों में से एक के साथ हो चुका था, किंतु मालिक की पिपासा इस लड़की के साथ पूरी नहीं हो पाई थी। अब उसकी उम्र सोलह वर्ष की थी और जवानी का पूरा उभार था। मालिक जितना बूढ़ा होता जाता था, उतनी ही उसकी इच्छा जवान और कम उम्र की लड़कियों के साथ ऐश करने के लिए तीव्र होती जाती थी। जिस प्रकार बुढ़िया को अफीम की धुन थी उसी प्रकार मालिक काम-वासना तृप्त करने के मद में रंग

अपनाया जाता था। समझाने से भी उनकी समझ में यह बात नहीं आती थी कि इस प्रकार ऐसा करने के लिए अब रुपया नहीं रह गया था और रोज रोज नई-नई लड़कियों के कानों के झुमर रिंग' तथा हाथ के लिए सोने के आभूषणों के लिए अब कोई रकम नहीं रह गई थी। उसने अभी तक अपनी जिन्दगी में यह नहीं सुना था कि "रुपया नहीं है" और न वह सुनने की उसमें बरदाश्त ही थी।

अपने माँ बाप के ऐसे ढंगों को देख कर लड़के लोग भी समझते कि उनकी जिन्दगी के लिए काफी रकम मौजूद है और इसीलिए रियासत के मैनेजर को सुना सुना कर हर तरह से रुपया ऐंठते रहते थे। बेचारे मैनेजर की परेशानी बढ़ती हो जाती थी। जिस आराम से बैठ कर साहब अपनी जिन्दगी बसर कर रहे थे, उसमें भी फ़र्क़ पड़ चुका था। इन परेशानियों और फ़िक्रों के कारण वह भी सूखने लगे थे।

देवताओं की कृपा इस परिवार से उठ चुकी थी। हुआंग परिवार की रियासत की किसी जमीन में कोई पैदावार वर्षा के अभाव से नहीं हो पाई थी। इस हालत में जब वाँगलुङ मैनेजर के पास यह कहते हुए पहुँचा कि "मेरे पास रुपया है" तो ऐसा लगा मानो वह कितने ही दिन के भूखे से यह कह रहा हो कि "मेरे पास खाना है।"

मैनेजर कोई इन्कार नहीं कर सका। जहाँ पहले इसी प्रकार की खरीद फ़रोख्त में कितने ही दिन लग जाते थे, वहाँ आज कोई समय नहीं लगा। एक हाथ से रुपया दूसरे हाथ में गया कागज़ों पर दस्तखत होकर मुहर लगी और जमीन वाँगलुङ की हो गई।

इस बार फिर वाँगलुङ ने कितना रुपया दिया वह गिनने की ख्वाहिश नहीं की वह उसकी गाढ़ी कमाई का रुपया था जो उसने अपने खून को पसीने की तरह बहा कर इकट्ठा किया था। रुपया बिना गिने ही दे दिया गया क्योंकि यह जमीन खरीदने की वह ठान चुका था। यह नई जमीन पहिले वाली से दुगनी थी और अधिक उपजाऊ

थी। किन्तु वांगलुङ के लिये ज़मीन के उपजाऊ होने की बात इतनी बड़ी नहीं थी जितनी कि यह बात कि यह ज़मीन एक बड़े रईस आदमी से ख़रीदी गई है। इस बार यह बात उसने किसी को नहीं बताई यहाँ तक कि ओ लान को भी नहीं।

× × ×

महीने पर महीने बीतते चले गये किन्तु वर्षा न हुई। पतझड़ आने लगा और तब आकाश में इधर उधर छोटे २ बादलों के टुकड़े दिखाई दिये। इन्हीं बादलों की ओर गाँव वाले देखते रहते। कोई कहता कि इस टुकड़े में पानी है कोई कहता उस टुकड़े में और इतने ही में वायु के झकोरों से बादल इस प्रकार उड़ते हुए चले जाते, जैसे झाड़ू लगाते हुए धूल उड़ती चली जाती है। आकाश फिर सूना का सूना रह जाता। प्रातः होते ही सूर्य चमक उठता तथा रात में चन्द्रमा भी इसी प्रकार अपनी चमक दिखा कर अस्त हो जाता।

किन्तु बड़ी मेहनत के परिणाम स्वरूप वांगलुङ के खेतों में अवश्य थोड़ा बहुत नाज पैदा हुआ। सेम और मटर की भी फसल बहुत कम हुई। खेत से इस पैदावार को समेटने में वांगलुङ ने अपने दोनों लड़कों को भी लगा लिया। बहुत ही कड़ाई और ईमानदारी से फसल बीनी जाने लगी। मटर और सेम की फैली हुई बेलों को जब वांगलुङ एक ओर फेंकने लगा, तो उसकी बीवी बोली—

"इन्हें अकारथ नष्ट नहीं किया जायगा। मुझे याद है जब मैं बच्ची थी तब शांटुङ में इसी प्रकार अकाल के अवसर हो आए थे। तब इन्हीं सूखी हुई बेलों को हमने खाया था। खाने में ये घास से अधिक स्वादिष्ट होती हैं।"

इतना सुन कर सब कुछ देर के लिए चुप हो गए, अकाल के लक्षण तो स्पष्टतया दिखाई देने लगे थे और इसका डर सभी समझते थे, केवल छोटे बच्चों को ऐसा कोई डर नहीं था। उनके लिए तो माँ

के स्तनों में अभी काफी दूध था। दूध पिलाते पिलाते मो-बाप बोली, “पी ले अब तक थोड़ा बहुत दूध भी रहे—पी ही जा” जिसको पूरा अभिप्राय नहीं हो पाता था—गोलाम फिर बच्चे से भी और उसके स्तन सूख गये थे।

इधर कभी कोई बाँगड़ू से पूछ बैठता “अब की बार खाना पीना कैसे हो रहा है?” तो वह जवाब देता, “मुझे मालूम नहीं—कुछ इधर उधर का इकट्ठा किया हुआ अनाज काम में आ रहा है।”

किन्तु गाँव में कोई व्यक्ति और किसी से इस प्रकार का प्रश्न नहीं करता, कोई यह नहीं पूछता, “क्या खा रहे हो? कैसे खा रहे हो?” सबको अपनी ही फिक्र रहती कि “आज हम क्या खायेंगे?” माँ बाप कहते —“ आज हम बच्चों को क्या खिलायेंगे?”

बाँगड़ू ने अपने बैल की देख भाल भी की, जब तक वह कर सका। जब तक इधर उधर से रखा हुआ चारा बाकी रहा, उसे खिलाता रहा। जब चारा खतम हो गया तो पेड़ों से पत्तियाँ तोड़कर खिलाता रहा, किन्तु सर्दी का मौसम आ जाने से पेड़ों में भी पत्तियाँ बाकी न रहीं। जमीन में घास जमना ही नहीं हो सकता था, बीज डालने से जमीन में ही सूख जाते थे बीज भी सारे खाये जा चुके थे। जब कुछ न बचा तो उसने बैल को इधर से उधर चराने के लिए छोड़ दिया। रस्सी से बाँध कर वह अपने लड़के को बैल के ऊपर बैठा देता और बैल ऐसे ही जो कुछ मिलता चर आता। कुछ दिन बाद उसने, इस डर से कि कहीं गाँव वाले बैल को ही न हड़प जायँ उसका बाहर जाना रोक दिया। बैल भी अपने खूँटे से बँधा २ सूख गया।

आखिर वह दिन भी आया जब चावल और गेहूँ का एक दाना भी नहीं बचा तथा कोई सूखा चारा भी नहीं रहा। बैल जब भूख से चिल्लाने लगा तो बूढ़े बाप ने कहा—

“इस बैल को ही खायेंगे।”

वाँगलुङ यह सुनकर चिल्ला पड़ा, उसे लगा—मानो किसी ने धक्का दिया हो, "अब हम आदमी को काट कर खायेंगे ?" बैल उसका बरसों का साथी था और उसके साथ २ उसने भी ज़मीन पर उतनी ही मेहनत की थी उसने कहा—

"बैल को हम कैसे खायेंगे ! फिर ज़मीन पर हल कैसे चलेगा ?"

बूढ़े बाप ने उत्तर दिया "या तो अपने और बच्चों के प्राण बचा लो या बैल के ही । अपनी ज़िन्दगी तो फिर खरीदी नहीं जा सकती हाँ बैल तो फिर भी खरीदा जा सकता है ।"

वाँगलुङ ने उस दिन बैल को नहीं मारा । ऐसे ही दो दिन निकल गए और बच्चे भी भूख से घबराने लगे तो ओलान ने बच्चों को अपने पास समेट कर करुण दृष्टि से वाँगलुङ की ओर देखा । वाँगलुङ ने जब देखा कि बैल मारना ही पड़ेगा तो रुखाई से बोला—

"तो तुम बैल को मार दो । लेकिन मैं यह काम स्वयं नहीं करूँगा ।"

वह अपने कमरे में गया और जाकर रजाई लपेट अपने बिस्तर पर पड़ रहा ताकि बैल के मरते वक्त उसके तड़पने की आवाज़ उसे सुनाई न दे ।

इसके बाद ओलान बाहर निकली और रसोई में काम आने वाली छुरी से उसने बैल की गर्दन काटी गिरता हुआ खून एक बर्तन में इकट्ठा किया फिर उसकी खाल खींच कर एक ओर रख दी तथा माँस के बड़े टुकड़े काट कर अलग रख दिए । वाँगलुङ तब तक बाहर न निकला जब तक माँस पक कर मेज़ पर न आ गया । किन्तु जब वह अपने बैल का माँस खाने लगा तो उसके मुँह में न चल सका, थोड़ा रसा ही पीकर वह उठ गया । यह देख कर ओलान ने उससे कहा—

"यह बैल ही है और अब तो वह बूढ़ा हो गया था । जब अच्छे दिन आयेंगे तो इससे भी अच्छा बैल मिल जायगा ।"

वाँगलुङ को बेचा जबरन बैल । उसने फिर एक दो माँस के टुकड़े खाए । इस प्रकार घर वालों ने बैल का माँस भी सारा समाप्त कर लिया । अब बैल की केवल खाल ही बची थी, जिसे ओ-लान ने सिल पोंचकर बाँस पर कस दिया था ।

पहिले तो गाँव वाले समझे हुए थे कि वाँग के पास काफी अनाज और रुपया है और उसने यह सब छिपा रखा है । उसका चाचा जब एक बार आया तो उसने मटर और सेम के कुछ दाने उसकी जेब में डाल दिये थे । चाचा के पास सात बच्चों और स्त्री के लिए खाने को वास्तव में कुछ नहीं था । दुबारा जब वह फिर कुछ माँगने आया तो वाँगलुङ ने साफ इनकार कर दिया । "पहिले मुझे अपने बूढ़े बाप की देख भाल करनी है फिर कोई और । मेरे पास अब कुछ नहीं रह गया है ।' और चाचा को खाली हाथ वापिस जाना पड़ा । उस दिन से चाचा वाँगलुङ के विरुद्ध चढ़-बढ़ कर गाँव वालों को भड़काने लगा—

"यह मेरा भतीजा है, उसके पास रुपया है और खाने को अनाज भरा पड़ा है, किन्तु यह हममें से किसी को भी कुछ नहीं देगा मेरे बच्चों के लिए भी कुछ नहीं देगा, मेरे बच्चों के लिए भी कुछ नहीं । हमें तो अब भूखा ही मरना पड़ेगा ।"

गाँव वालों का तो एक-एक दाना और एक एक पैसा कभी समाप्त हो चुका था । भूख से उनकी स्त्रियाँ और बच्चे तड़प रहे थे । ऐसी दशा में जब वाँगलुङ के चाचा को उन्होंने यह कहते हुए सुना कि "केवल एक के यहाँ खाना है—केवल उसी के बच्चे अब भी मोटे हो रहे हैं" तो सारे गाँव वाले एक रात वाँगलुङ के मकान की ओर चल पड़े और लाठियाँ मार मार कर दरवाजों को पीटने लगे । वाँगलुङ ने जब पड़ोसियों का शोर गुल सुना तो उसने दरवाजे खोल दिए । घुसने में ही सब के

सब हम पर टूट पड़े और उसे उठा कर मकान के बाहर फेंक दिया। उसके बच्चों को भी बाहर ढकेल दिया तथा घर के कोने कोने की छान बीन करने लगे। जब उनको कुछ नहीं मिला तो उन्होंने गुस्से में आकर मकान को छप्पर व शहतीर उठा उठा कर फेंक दिया।

यह देखकर चों-चांय करने लगी और उस ओर गुट के बीच अपनी आवाज उठाती हुई बोली—

"अभी यह कुछ न करो। अभी वह समय नहीं आया कि हमारे मकान का सामान लूटने लगो। जितना सामान है वह सब उन्हें ले जाओ। अभी तो तुमसे अपने मकान का सामान भी रक्खा हुआ है। अभी तुमने अपनी मेज कुर्सियाँ तो नहीं बेच डालीं। हमारा सामान भी छोड़ दो। हम सब बराबर हैं। हमारे पास भी तो नाम का कोई दाना नहीं है—तुम्हारे पास तो कुछ है भी क्योंकि जो कुछ हमारा है वह तुम्हारा हो चुका। यदि कुछ और सामान उठाना तो अवश्य तुमको छोड़ेंगे, सजा तुम्हें अवश्य देंगे। अब हम लोग जाते हैं, बच्चों के लिए और हम अपने पेड़ों से डालियाँ तोड़ेंगे—तुम अपने बच्चों के लिए।" बोलते बोलते उसने इन दोनों तथा चोंचे इस पेड़ के बच्चे के लिए अपने पेड़ की ओर इशारा किया। सब लोग शर्मा कर एक एक करके वहाँ से चल दिये। इस बीच में उनका पड़ोसी भी था। गाँव वाले कोई बुरे आदमी नहीं थे वह तो बुरा समय था, जिसके वश होकर वे सब लोग यहाँ घुस आए थे।

चोंगलाल इस के पर बराबर खड़ा रहा और सोचता रहा। यहीं इसी दरवाजे पर ढेरों नाज पड़ा रहता था किन्तु अब इसके पास घरे नाज को बच्चों को और जो जो, जिसे पेट में पड़े हुए बच्चे के कारण सुराक की विशेष आवश्यकता है, खिलाने के लिये कुछ भी नहीं है। सोचते सोचते वह एक खयाल मन से काँप उठा। किन्तु थोड़ी ही देर

में उसकी रगों में खून फिर तेजी से दौड़ गया। उसने आप ही आप कहा—

"ये लोग मेरी जमीन मुझसे नहीं ले सकते। अपनी जमीन को जैसा मैंने बना दिया है, उसे ये लोग नहीं छीन सकते। अगर मेरे पास रुपया होता तो अवश्य ही ये लोग लूट ले जाते। जमीन तो मेरे पास हर सूरत से है ही।"





भोलानाथ दरवाजे पर बैठा बैठा सोचने लगा कि अब कुछ न कुछ करना ही चाहिये। इस खाली घर में पड़े रहना मुश्किल होगा। जीवित रहने का निश्चय उसके मस्तिष्क में अब दृढ़ होने लगा। मानव के ऊपर ही निर्भर रहना तो कायरता की निशानी होगी। इससे अधिक और क्या भेद हो सकता है। देवी देवताओं का आश्रय लेने से तो कहीं आकर कुछ करना ही अच्छा है।

इन्हीं विचारों में खोए एक दिन वह भरनी माता के मन्दिर की ओर चल पड़ा और वहाँ जाकर उसने पूजा किया। अब वहाँ पूजा कभी नहीं कराई जाती थी। कितने ही महीनों से यह मन्दिर टूटी-फूटी हालत में ही पड़ा था, मूर्तियों के वस्त्र फट चुके थे किंतु मूर्तियाँ उसी प्रकार दृढ़ और निश्चल थीं। भोलानाथ दाँतों को पीस कर गुस्से से मूर्तियों की ओर घूरने लगा और फिर घर आकर बिस्तर पर पड़ गया।

सभी की दशा एक सी थी। उठ पड़ा तथा वह आसानी से उठता नहीं था। उठने की आवश्यकता भी क्या थी! कम से कम नींद में कुछ सुख तो मिलता ही थी। कहीं भी कुछ खाने को दिखाई नहीं देता था। कहीं कोई जानवर भी नहीं दिखाई देता था।

बच्चों की आँखें फूटने लगी थीं। गाँव की गलियों में कहीं भी कोई बच्चा खेलता दिखता नहीं मिलता। अधिक से अधिक वह अपने ही घर में दानों पर बच्चों को दुलारने तक करते देखता, इन बच्चों

का गोश्त-पोस्त शरीर अब हड्डियों का ढाँचा भर रह गया था। छोटी बच्ची यद्यपि उठने बैठने की उम्र की थी, किंतु उसमें उठने भर की जान कहाँ थी? वह बिस्तर पर ही पड़ी रहती, जो कुछ मुँह में आ जाता चूस लेती और इस प्रकार वह अपने जीवन से संघर्ष कर रही थी। उसके छोटे से जीवन में इस संघर्ष को देखकर वांगलुङ का हृदय पसीज जाता। वह कभी २ उसे अपनी गोदी में उठाकर खिलाने लगता, वह बच्ची भी हँसने की चेष्टा करती किंतु हँसी मुस्कराहट से आगे नहीं बढ़ पाती। उसकी मुस्कराहट देखकर वांगलुङ की आँखों में आँसू आ जाते।

बूढ़े बाप की दशा फिर भी औरों से अच्छी थी क्योंकि जो कुछ भी खाने को इकट्ठा होता, वह उसे ही दिया जाता, चाहे बच्चों को न मिले। वांगलुङ कभी २ गर्व से सोचने लगता कि कोई यह न कहने पावे कि बुढ़ापे में मृत्यु के समीप की अवस्था में बूढ़े बाप को नहीं पूछा गया। यदि उसका शरीर भी बूढ़े बाप के काम में आ सकता तो वांगलुङ सहर्ष दे देता। वह बूढ़ा जो कुछ मिलता खा लेता और दिन रात सोता रहता। इस प्रकार उसमें इतनी शक्ति भर रह गई थी कि दोपहर को दरवाजे तक धूप सेंकने के लिये चल फिर लेता था। एक दिन वह बूढ़ा अपनी आवाज को तेज करके बोला—

' मैंने इससे भी खराब दिन देखे हैं। एक समय तो मैंने स्वयं आदमी औरतों को बच्चों का माँस खाते देखा था।"

"लेकिन ऐसा इस घर में कदापि न होगा।' वांगलुङ ने डर से भर्राई आवाज में कहा।

× × × ×

एक दिन वांगलुङ का पड़ोसी चिंग वहाँ आया। वह भी हड्डियों का ढाँचा भर हो था। दरवाजे पर आकर धीरे से बोला—

"शहर में कुत्तों का माँस खाया जा रहा है जहाँ कहीं भी थोड़ा

खाना मिलता है, उनका माँस खा लेते हैं। यहाँ भी हम लोगों ने खेतों में काम करने वाले जानवरों को खा लिया है। अब खाने के लिये क्या कुछ रह गया है!"

वांगलुङ ने घोर निराशा से सिर हिलाया। अपनी छाती से चिपकाये हुए उस छोटी सी बच्ची को उसने और चिपका लिया। फिर भी समीप खड़े चौरे से कहने लगा—

'गाँव में आदमी का माँस आदमी खा रहा है सुना है तुम्हारा चाचा भी वही खा रहा है उसके घर में सभी यह खा रहे हैं नहीं तो वे लोग कैसे जीवित रह सकते हैं। जिनके पास कभी भी खाने भर को नहीं रहा, उनमें चलने फिरने की शक्ति कहाँ से आ रही है!"

वांगलुङ चिङ के चेहरे की रेखाओं का देखता रह गया। एक विशेष डर से काँप उठा, उसकी समझ में स्वयं नहीं आया कि किस डर से वह एकाएक इतना व्याकुल हो गया है।

"हम यह जगह छोड़ देंगे" वह ज़ोर से बोला—"हम लोग दक्षिण की ओर चल पड़ेंगे। यहाँ सभी भूखे मर रहे हैं, न जाने कब बच्चों को खाने लग जाँय।"

पड़ोसी ने कुछ धैर्य से उसकी ओर देखा—"आह! तुम तो अभी जवान हो।" फिर उदास हो बोला—"मैं और मेरी स्त्री तो बूढ़े हो चुके हैं। हमारे पास तो केवल एक लड़की ही है। हम लोग तो यहीं मर जायेंगे।'

'तुम हमसे ज्यादा भाग्यवान हो।' वांगलुङ बोला—"मेरे साथ तो एक मेरा बूढ़ा बाप है, तीन छोटे २ बच्चे हैं और एक बच्चा होने वाला है। हमें यहाँ से चल ही देना चाहिये वरना न मालूम कब अपनी ही प्रकृति बदल जाय और कुत्तों की भाँति हम लोग आपस में ही एक दूसरे को खा जायँ।"

तब एकाएक उसे लगा कि वह ठीक और बहुत ठीक कह रहा है

और उसके खो-खान की आवाज़ थी। ओलान चुपचाप दिन दिन भर बिस्तरे पर पड़ी रहती, क्योंकि रसोई बनाने का तो कोई काम रह ही नहीं गया था।

"चलो—हम लोग दक्षिण की ओर चलेंगे।" वांगलुङ बोला।

वांगलुङ की इस आवाज़ में प्रसन्नता थी जो महीनों से किसी ने नहीं सुनी थी। बच्चे एक दम सिर उठाकर उसकी ओर देखने लगे बूढ़ा बाप अपने कमरे से निकल आया और ओलान कमज़ोरी की अवस्था में ही सरक कर दरवाज़े पर आकर खड़ी हो गई। दरवाज़े के सहारे से खड़ी होकर बोली—

"यह अच्छी बात है, अब कम से कम चलते चलते तो मरेंगे।"

उसके पेट के अन्दर बच्चा फलता सा साफ दिखाई दे रहा था क्योंकि ओलान के शरीर पर और कहीं तो माँस रहा नहीं था। वह बोली—' केवल कल तक के लिये रुक जाओ। कल तक बच्चा पैदा हो जायगा ऐसा मालूम मुझे हो रहा है।

अच्छा कल सही!" वांगलुङ ने उत्तर दिया। ओलान की ओर देखकर उसका हृदय भर आया। अपने से अधिक दया उसे उसी पर आई। फिर बोला "तुम कैसे चल सकोगी?" पड़ोसी चिंग की ओर देखते हुए बोला "यदि तुम्हारे पास कुछ हो तो मुट्ठी भर नाज दे दो ताकि इस समय मैं इन बच्चों की माँ के वास्ते बना सकूं। यदि तुम यह उपकार मेरे साथ कर सकोगे तो मैं भूल जाऊंगा कि तुम भी बाकी की तरह मेरे घर से थोड़ा बहुत नाज उठाकर ले गए थे।'

चिङ ने बड़ी शर्म से उसकी ओर देखा और दबी आवाज़ से बोला—"उस समय से अब तक मुझे ज़रा भी रोटी नहीं मिली है। वह तो वह कुत्ता, तुम्हारा चाचा था जिसने मुझे यह लालच दिया था कि तुम्हारे पास नाज भरा पड़ा है। इस कठोर भगवान के नाम से मैं

न बरदाश्त किया यह समझना कठिन था।

चोंग कुछ न बोला, किन्तु बच्चे को उठा कर दूसरे कमरे में ले आया और जमीन पर डाल दिया। फिर इधर उधर से ढूंढ कर एक चटाई का टुकड़ा उठाया और उसमें बच्चे को लपेट लिया। बच्चे को उठा कर वह घर से बाहर की ओर निकल गया और खेतों में जहाँ तक उसके पैर उसे ले गए वह चलता चला गया। एक टूटी फूटी पुरानी कब्र के पास जाकर एक कोने में उसने बच्चा रख दी। बच्चा को रख कर वह वापिस चला ही था कि एक भेड़ियानुमा कुत्ता आकर उसे झकझोरने लगा। वांगलुङ ने एक ईंट उठा कर मारी लेकिन कुत्ता वहाँ से हटा नहीं। वांगलुङ दुखी तो था ही, थक भी गया था। आखिर 'जैसा है, ठीक है' कहता हुआ वापिस हो गया।

×   ×   ×

दूसरे दिन जब रोज की तरह सूरज निकला तो वांगलुङ को एकाएक सी अवस्था में ऐसा जान पड़ा कि न जाने इस कमजोरी की हालत में उसको घर और बच्चे कहीं ले फिर चल भी सकेंगे या नहीं! दक्षिण की ओर उस स्थान पर पहुँचते २ तो जहाँ कुछ खाना मिल सके सभी चीत हो जावेंगे। इससे तो अच्छा होगा कि यहीं रुक जावें और इन्हीं बिस्तरों पर मरें। बिस्तर पर बैठा हुआ वह सोचता रहा और सामने खेतों की ओर नजर गड़ा कर देखता रहा क्योंकि वहाँ ऐसी कोई वस्तु भी नहीं बच पाई थी जो खाने के काम आ सकती।

अब उसके पास पैसा नहीं था। कई दिन हुए आखिरी पाई भी खर्च हो चुकी थी। यदि पैसा होता भी तो उससे भी कोई लाभ न था क्योंकि खाने की कैसी भी सामग्री नहीं बच पाई थी जो खरीदी जा सकती। उसने सुना था कि शहर में कुछ ऐसे रईस लोग थे जिन्होंने नाज जमा कर रखा था। वे उस और भी बड़े रईसों के हाथ बेच रहे थे किन्तु इन बातों पर उसे अब ताव भी नहीं आता था। अब तो उसे

इतना भी आभास नहीं होता कि शहर तक जाकर बिना पैसे ही कुछ प्रबन्ध कर आ ये। वास्तव में भूख उसे रह ही नहीं गई थी।

भूखे पेट की ज्वाला से अब उसे कोई कष्ट न होता। अपने खेतों में से घास और मिट्टी तक खोद २ कर वह बच्चों को खिला चुका था। कुछ दिन से केवल मिट्टी को पानी में घोल घोल कर बच्चों को दे रहा था। बच्चों को तड़पन कुछ क्षणों के लिए तो शांत हो हो जाती। किन्तु अब उसे मानसिक वेदना से महान् कष्ट होता। वह इन्हीं दुःखी विचारों में ओत प्रोत हो सोचने लगा कि इसी प्रकार मौत के मुँह में चला जाना ही ठीक होगा। इतने में हो उसे लगा कि उसके खेतों में कोई चल रहा है। कुछ आदमी उसकी ओर आते दिखाई दिये किन्तु वह बैठ ही रहा। पास आने पर उसे समझ आई कि उन आदमियों में से एक तो उसका चाचा था। साथ के दोनों अन्य पुरुषों को वह नहीं पहिचानता था।

व्यंग-मुस्कान से उसका चाचा बोला "इधर कई दिनों से तुम्हें देखा नहीं," पास आकर और भी जोर से बोला, 'तुम कितने अच्छे रहे। और तुम्हारा बाप मेरा बड़ा भाई वह अच्छा तो है ?"

बाँगड़ू ने चाचा को ओर देखा। चाचा दुबला पतला तो अवश्य था किन्तु जैसा भूख से कमजोर होना चाहिये था वैसा दिखाई नहीं दे रहा था। जो थोड़ी बहुत शक्ति बाँगड़ू के शरीर में बची रह गई थी उसी से उसकी नाड़ियों में क्रोध भरा खून एकदम बहने लगा और भर्राई आवाज से बोला, "तुम कैसे अच्छे रहे हो ?" इस समय किसी प्रकार के शिष्टाचार का कोई विचार नहीं रहा और न इसी बात का कि वहाँ अजनबी मनुष्य भी मौजूद हैं। उसे तो केवल चाचा के शरीर पर चढ़ा हुआ मांस ही नजर आ रहा था। चाचा ने आँखें मछली तरह घोंघम और हाथों को आकाश की ओर उठाते हुए कहा—

"पाता रहा हूँ ! यदि तुम मेरा घर सुन सकते ! अब चिड़िया के उड़ाने के लिए तिनका भी बाकी नहीं रहा। मेरी स्त्री—तुमने तो देखा।

न बरदाश्त किया यह समझना कठिन था।

बाँगलुक कुछ न बोला किन्तु बच्चे को उठा कर दूसरे कमरे में ले आया और जमीन पर डाल दिया। फिर इधर उधर से ढूंढ कर एक चटाई का टुकड़ा उठाया और उसमें बच्चे को लपेट लिया। बच्चे को उठा कर वह घर से बाहर की ओर निकल पड़ा और खेतों में जहाँ तक उसके पैर उसे ले गए, वह चलता चला गया। एक टूटी फूटी पुरानी कब्र के पास आकर एक कोने में उसने लाश रख दी। लाश को रख कर वह वापिस चला ही था कि एक भेड़ियानुमा कुत्ता आकर उसे झकझोरने लगा। बाँगलुक ने एक ईंट उठा कर मारी लेकिन कुत्ता वहाँ से हटा नहीं। बाँगलुक दुखी तो था ही थक भी गया था। आखिर "जैसा है, ठीक है" कहता हुआ वापिस हो गया।

× × ×

दूसरे दिन जब रोज़ की तरह सूरज निकला तो बाँगलुक को स्वप्निल सी अवस्था में ऐसा जान पड़ा कि न जाने इस कमज़ोरी की हालत में उसके पाँव चार कदम आगे के लिए चल भी सकेंगे या नहीं! दक्षिण की ओर उस स्थान पर पहुँचते २ तो जहाँ कुछ खाना मिल सके, सभी जीव [illegible] जायेंगे। इससे तो अच्छा होगा कि यहीं रुक जायें और इन्हीं सिसकियों पर मरें। बिस्तर पर बैठा हुआ वह सोचता रहा और सामने रास्तों की ओर नज़र गड़ा कर देखता रहा क्योंकि वहाँ ऐसी कोई वस्तु भी नहीं बच रही थी जो खाने के काम आ सकती।

अब उसके पास पैसा नहीं था। कई दिन हुए आखिरी पाई भी खर्च हो चुकी थी। यदि पैसा होता भी तो उससे भी कोई लाभ न था क्योंकि खाने की कैसी भी सामग्री नहीं बच पाई थी, जो खरीदी जा सकती। उसने सुना था कि शहर में कुछ ऐसे रईस लोग थे जिन्होंने अनाज जमा कर रखा था। वे उसे और भी बड़े रईसों के हाथ बेच रहे थे, किन्तु इन बातों पर उसे अब क्रोध भी नहीं आता था। अब तो उसे

इतना भी आभास नहीं होता कि शहर तक आकर बिना पैसे ही कुछ असर कर जा के। वास्तव में भूख उसे रह ही नहीं गई थी।

भूखे पेट की ज्वाला से अब उसे कोई कष्ट न होता। अपने खेतों में से घास और मिट्टी तक खोद २ कर वह बच्चों को खिला चुका था। कुछ दिन से केवल मिट्टी को पानी में घोल घोल कर बच्चों को दे रहा था। बच्चों को लगभग कुछ वर्षों के लिए तो मौत हो ही जाती। किन्तु अब उसे मानसिक वेदना से महान् कष्ट होता। वह इन्हीं दुःखी विचारों से पीस पीस हो सोचने लगा कि इसी प्रकार मौत के मुँह में चले जाना ही ठीक होगा। इतने में तो उसे लगा कि उसके खेतों में कोई चल रहा है। कुछ आदमी उसकी ओर आते दिखाई दिये किन्तु वह बैठ ही रहा। पास आने पर उसे समझ आई कि उन आदमियों में से एक तो उसका चाचा था। साथ के तीन अन्य पुरुषों को वह नहीं पहिचानता था।

व्यंग-मुस्कान से उसका चाचा बोला 'इधर कई दिनों से तुम्हें देखा नहीं" पास आकर और भी जोर से बोला, 'तुम कितने अच्छे रहे। और तुम्हारा बाप मेरा बड़ा भाई वह अच्छा तो है ?"

झोंगड़ू ने चाचा की ओर देखा। चाचा दुबला पतला तो अवश्य था किन्तु जैसा भूख से कमजोर होना चाहिये था वैसा दिखाई नहीं दे रहा था। जो थोड़ी बहुत शक्ति झोंगड़ू के शरीर में बची रह गई थी उसी से उसकी नाड़ियों में क्रोध भरा खून एकदम चढ़ने लगा और भर्राई आवाज से बोला "तुम कैसे खाते रहे हो ?" इस समय किसी प्रकार के शिष्टाचार का कोई विचार नहीं रहा और न इसी बात का कि यहाँ अजनबी मनुष्य भी मौजूद हैं। उसे तो केवल चाचा के शरीर पर चढ़ा हुआ मांस ही नजर आ रहा था। चाचा ने आँखें अच्छी तरह खोलकर और हाथों को आकाश की ओर उठाते हुए कहा—

"खाता रहा हूँ! यदि तुम मेरा घर देख सकते! अब चिड़िया के उड़ाने के लिए तिनका भी बाकी नहीं रहा। मेरी पत्नी—तुमने तो

ही था उसे, कितनी भोली थी ! कितना सुन्दर शरीर था उसका और कितनी चिकनी खाल थी ! और अब वह केवल हड्डियों का ढाँचा भर ही रह गई है । बच्चों में से केवल चार ही बाकी बचे हैं—तीनों बड़े बच्चे तो मर गए—बड़े हो गये—रह गया मैं तो मुझे तुम दुख दे रहे हो ।"

अपनी कमीज की बाहों से आँसुओं को अच्छी तरह पोंछते हुए वांगलुंग ने कहा, "तुम खाते पीते तो रहे हो ।"

"मैं तो केवल तुम्हारे और तुम्हारे पिता यानी अपने बड़े भाई के बारे में ही बराबर सोचता रहता हूँ,' चाचा ने तेजी से उत्तर दिया, 'और अब तुमसे मैं सिद्ध भी कर दूँगा । मैंने इन भले आदमियों से कुछ दाना उधार लिया था इस शर्त पर कि अपने गाँव की कुछ जमीन इन्हें खरीदवाने में मैं इनकी सहायता करूँगा । और सबसे पहिले मुझे तुम्हारा ख्याल आया । आखिर तुम मेरे भाई के ही तो लड़के हो । ये लोग तुम्हारी जमीन खरीदने आये हैं और तुम्हें रुपया देंगे—दाना—भोजन ! इतना कह कर चाचा कुछ पीछे हट गये ।

वांगलुंग जैसे का तैसा रहा वह जरा भी नहीं हिला । न तो वह उठा ही और न उसने इन नये आदमियों को पहिचानने की ही चेष्टा की । किन्तु सिर उठा कर उसने उनकी ओर देखा तो उनके रेशमी और साफ कपड़ों को देखकर वह समझ गया कि अवश्य ही ये भद्र पुरुष शहर से आये होंगे । शरीर भी उनके साफ सुथरे दिखाई दे रहे थे । उन्हें देखने से कोई संदेह नहीं होता था कि ये लोग भी इस अकाल में कभी भूखे रहे होंगे । एकाएक उसके हृदय में उनके प्रति घृणा उमड़ पड़ी । एक ओर खाते पीते मनुष्य थे और दूसरी ओर उसके बच्चे भूख से पीड़ित मिट्टी खा रहे थे और ये लोग आज उनकी बिगड़ी दशा में उसकी जमीन छीनने आये थे । उसने अपने सूखे चेहरे को ऊपर उठा कर देखा और कहा—

मैं जमीन नहीं बेचूँगा"

उसका चाचा कुछ आगे बढ़ा। इसी समय वांगलुङ का मोटा
बच्चा सरकता हुआ वहाँ आ पहुँचा। इस बच्चे को देख कर चाचा
बोला—

"यह तुम्हारा बच्चा है? क्या यह बच्चा वही है जिसे मैंने इन्हीं
गर्मियों में खूब मोटा ताजा देखा था?"

और सभी उस बच्चे को घूर देखने लगे। वांगलुङ अपने आप
को अन्दर ही अन्दर सिकोड़ रहा था किन्तु अब नहीं सँभाल सका और
चुपचाप रोने लगा। जिसके आँसू अब तक बाहर नहीं आये थे अब
आँसुओं की धार उसके गालों पर बहने लगी।

'क्या कीमत दोगे?' आखिर वह बोला। 'इन बच्चों और
बूढ़े बाप को भी देखना है इनको तो कुछ न कुछ खिलाना ही है। वह
स्वयं और इनकी माँ तो जमीन खोद कर स्वयं ही काम चला कर पेट
रहते किन्तु इन लोगों का क्या होगा?"

शहर से आये हुए आदमियों में से एक काली आँख वाला
मनुष्य बोला—

"ऐसा आकाल के समय में हम तुम्हें औरों से अच्छी कीमत
देंगे तुम्हारे बच्चों की खातिर जो भूख से मर रहे हैं हम तुम्हें देंगे'
फिर कुछ रुक कर तेजी से बोला 'एक एकड़ की कीमत में हम तुम्हें
एक सौ पेंस (पेंस—लगभग एक आना) देंगे।"

वांगलुङ एक कठोर हँसी से बोला "इतना भी क्यों देते हो।
यह तो मुफ्त बराबर है। जब मैं जमीन खरीदता हूँ तो इसी की दोगुनी
कीमत मुझे देनी पड़ती है।'

"किन्तु इसकी कीमत तब नहीं हो जाती जब किसी भूखे से
खरीदना हो," दूसरा मनुष्य बोला। वह थोड़ा सा पतली नाक वाला
मनुष्य था किन्तु आवाज इसकी बड़ी तीखी थी।

वांगलुङ ने तीनों की ओर देखा। इन तीनों को पूरा यकीन था

१७

अब और कुछ काम नहीं था सिवाय इसके कि घर के दरवा
बन्द करके भगवान की प्रार्थना की जाए। जो कुछ बचे थे वे शीत पड़ने ह
हुए थे। गोपाल ने बच्चे को एक कंबल और एक २ कम्बल दे
और कुछ खाना मिलने की आशा से वे लोग गेहूँ में से होकर च
पड़े।

छोटी बच्ची को बाबूराम अपने सीने से चिपकाये चल रहा थ
लेकिन जब उसने देखा कि उसका बूढ़ा पिता थकते २ थक कर गिरने ही
वाला है तो उसने बच्ची को गोपाल को पकड़ा दिया और बूढ़े बाप को
पीठ पर बिठाकर चलने लगा। इस प्रकार उपवास यह परिवार चलत
चला गया। रास्ते में एक छोटा मन्दिर भी मिला गया किन्तु उस मन्दिर
में बैठे [illegible] भगवान की मूर्तियों ने इस परिवार की ओर ध्यान भी नहीं
दिया। ऊपर सर्दी की भी ठण्डी हवा चलने के बावजूद भी बाबूरा
पसीने से भरा रहा था। इतनी ठण्डी और सर्द हवा में बच्चे भी रोने
लगे। बाबूराम बच्चों को पुचकारते हुए बोला—

'तुम तो बड़े हो गए हो और दक्षिण की ओर जाने वाले यात्री
हो। वहाँ इतनी सर्दी नहीं होगी, वहाँ नित्य प्रति खाने को भी मिला
करेगा हम सब के लिए मकान भी मिलेंगे तुम भी खाओगे और हम
भी खाया करेंगे।"

मार्ग में चलते २ ठहरते २ वे काफ़ी समय से इस बड़ी दीवार

के दरवाज़े पर पहुँच गये। यहीं, यहाँ की ठण्डी हवा से गर्द भरे हुए वाङ्लुङ् को असीम आनन्द प्राप्त हुआ था। लेकिन अब बर्फ गिरी हुई थी और उसकी कीचड़ से सब के पैर लथ-पथ थे, बच्चों को आगे बढ़ना कठिन हो रहा था और ओलान एक तो अपने बोझ से ही परेशान थी दूसरे छोटा बच्चा भी गोद में था। वाङ्लुङ् ने किसी प्रकार बूढ़े बाप को पीठ पर बैठाकर उस दलदल से पार कराया और फिर एक-एक बच्चे को उठाकर दूसरी ओर किया। वह इस मेहनत से इतना अधिक थक गया कि उसके शरीर के रोम २ से पसीना चू उठा और साँस भी तेज चलने लगी। इस प्रकार हाँफते २ वह आँखें मूँदकर चुपचाप दीवार के सहारे बैठ गया।

थोड़ी देर बाद रास्ता चलना फिर शुरू हुआ और शीघ्र ही वे वांग ह्वाँग परिवार के मकान के बड़े फाटक पर पहुँच गए। किन्तु आज फाटक पर बड़े २ लोहे के ताले पड़े हुए थे और दरवाजों पर गरीब स्त्री पुरुषों की भीड़ बैठी २ धनी पुरुषों को कोस रही थी। वाङ्लुङ् जब अपने ग्रहों से जुलूस के साथ उधर से निकला तो उस बैठी हुई भीड़ में से एक की आवाज़ सुनाई पड़ी—

'इन धनी पुरुषों के हृदय भी भगवान के हृदय की तरह पत्थर के हैं। इनके पास खाने को अब भी चावलों के ढेर लगे हैं। परन्तु ये जो चावल बच जाते हैं उनसे अब भी मदिरा बना कर पीते हैं और इधर हम गरीब लोग भूखे मर रहे हैं।"

और फिर दूसरा बोला—

"यदि मेरे इन हाथों में ज़रा सी भी शक्ति बची होती तो इन महलों में और इन सब मकानों में आग लगा देता, चाहे मैं स्वयं ही क्यों न जल जाता। कैसे २ वांग परिवारों का नाश हो जाय।'

किन्तु वाङ्लुङ् ने न तो इन बातों की ओर कोई ध्यान दिया और न कुछ उत्तर ही दिया। चुपचाप वे लोग अपने मार्ग पर बढ़ते चले गये।

इसी प्रकार चलते चलते ये लोग जब शहर में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि हजारों व्यक्ति दक्षिण की ओर चलते चले जा रहे हैं। किंतु वांगलुंग के दिमाग में यह उलझन थी कि दीवार के किस कोने में उस पुजारी जायगी क्योंकि अब शाम हो चली थी। इसी उलझन में उसने अपने परिवार को भीड़ में धँसा दिया और तब उसने एक से पूछा—

"यह इतनी भीड़ किधर जा रही है?"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—

"हम लोग भूखे हैं और दक्षिण की ओर जाने वाली, इंजन के डिब्बे की पकड़ने जा रहे हैं। रेल के डिब्बे उस दूर पर दिखाई दे रहे मकान के पीछे से जाते हैं। हम में से जो भी पैसा देंगे उन्हें वहाँ जगह मिल सकेगी।"

रेल के डिब्बे! इन डिब्बों के बारे में अब तक केवल सुना ही गया था। कितने ही महीने पहले वांगलुंग ने एक चाय की दूकान पर सुन रक्खा था कि ये डिब्बे एक दूसरे से जुड़े रहते हैं और इन्हें न जानवर खींचते हैं न मनुष्य, किंतु मशीन से खींचे जाते हैं, उस मशीन से आग और पानी निकलते रहते हैं। कई बार वांगलुंग ने सोचा भी था कि कभी छुट्टी के दिन अवश्य ही वह इन डिब्बों की सवारी का आनन्द लेगा, किंतु वह खेत और जमीन का काम ही ऐसा था कि कभी छुट्टी मिल नहीं पाती थी और न कभी मिली ही। और फिर दूसरे किसी पर उसे विश्वास भी नहीं था जिस पर खेत छोड़ कर वह जाता। वास्तव में मनुष्य के लिये यह जरूरी नहीं कि जीवित रहने के लिये वह आवश्यक वस्तुओं से अधिक की जानकारी रखे।

एक प्रकार का संदेह लिये वांगलुंग अपनी स्त्री से बोला—"क्या हम लोग भी इन डिब्बों में चलें?"

इन दोनों ने बूढ़े बाप को व बच्चों को भीड़ में से हटाते हुए आपस में एक दूसरे की ओर एक आशा से देखा। एक क्षण के विश्राम

के लिए बूढ़ा तो सड़क पर बैठ गया और बच्चे वहीं लेट गए, उन्हें भीड़ का यह डर भी नहीं लगा कि कहीं हम दबा न जायें। मो-लान की गोदी में वह बालिका निर्जीव सी पड़ी थी, उसे देखकर चौंगहुआ सब कुछ भूल गया और एकाएक चिल्ला पड़ा—

"क्या वह छोटी बच्ची मर गया ?"

मो-लान ने बच्ची के माथे को देखा और बोली

"अभी नहीं। अभी तो उसकी साँस कुछ २ चल रही है किन्तु शायद रात तक यह बच्ची जीवित नहीं रह पाएगी। यदि कुछ-" मो-लान के मुँह से कोई और शब्द नहीं निकल पाए और वह चौंगहुआ के चेहरे की ओर एक टक निगाह से देखती रह गई। चौंगहुआ ने कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु इतना अवश्य उसे ध्यान हो गया कि इसी प्रकार इन लोगों को यदि एक दिन भी और चलना हुआ तो ये सभी मर जायेंगे और यह सब सोचते हुए भी जो कुछ आशा उसकी आवाज में रह गई थी, उसी आवाज से उसको धीरज बँधाता हुआ बोला—

"उठो बच्चो उठो, बाबा को उठाओ। हम लोग चल कर उन डिब्बों में बैठेंगे।"

इस समय इन लोगों की ऐसी दशा हो चुकी थी कि यह नहीं कहा जा सकता था कि वे लोग और चल सकेंगे या नहीं। इतने में ही रात के अँधेरे में एक इस पार की आवाज सबको सुनाई पड़ी और दूर से दो आँखें आग सी चमकती हुई दिखाई पड़ीं कि सब के सब चिल्लाते हुए उस ओर को दौड़ पड़े। और इसी धक्कापेल में सब लोग एक दूसरे से टकराते हुए एक बक्स जैसी तंग जगह में आ पड़े। शीघ्र ही इंजन शोर मचाता हुआ इन डिब्बों को खींच कर ले चला।

वाँगलुङ के पास जो दो चाँदी के सिक्के थे उनमें उसने सौ मील तक का रेल का टिकट खरीद लिया और जो कुछ ताँबे के सिक्के वापिस मिले उनमें से एक एक रोटी सब के लिए और बच्चों के लिये एक प्याली में चावल के लिये । एक समय के खाने के लिए यह सब कुछ काफी था इतना खाना और ऐसा खाना तो उनको कितने ही दिनों से नहीं मिला था । वह बूढ़ा आदमी बहुत प्रसन्न हुआ और आनन्द से खाते २ सब को ओर देखते हुये बोला "खाना अवश्य चाहिये नहीं खाने से यह पेट सुस्त पड़ जाता है और मेरा भी खराब ही जाता है । मुझे तो अब खाना हजम भी नहीं होता किन्तु फिर भी खाना अच्छी है । डिब्बे में बैठे हुए सब व्यक्ति उस बूढ़े की बात पर हँस पड़े ।

वाँगलुङ ने सारी रकम का खर्च नहीं की थी । वहाँ रहना था वहाँ पर बनाने के लिए कम से कम कुछ चटाइयों की आवश्यकता तो थी ही । इन चटाइयों को खरीदने के लिये उसने कुछ पैसे बचा रक्खे थे । इस डिब्बे में कई व्यक्ति ऐसे थे जो किसी दो बार दक्षिण प्रदेश में जा चुके थे, कोई २ तो वहाँ दाम कमाने जाता था और थोड़ा बहुत पैसा भी बचा लेता था, किन्तु वाँगलुङ को वहाँ जाने का पहिला अवसर था । वह खिड़कियों को वहाँ की जमीन को बड़े कौतूहल से देख रहा था और इन लोगों की बातें भी सुन रहा था । ये सब बात इस प्रकार

बातें कर रहे थे मानो वे ही सब कुछ जानते हों और बाकी लोग मूर्ख हों।

एक मोटे मुँह के व्यक्ति ने कहा, "पहिले तो तुम जाकर कम से कम छः चटाइयाँ खरीद लेना। दो-दो पैसे में एक चटाई मिल जाती है। चोरों होशियारी से खरीदने की होती हैं नहीं तो गाँव के आदमी समझ कर एक २ चटाई के तीन तीन पैसे वसूल कर लेते हैं। मैं तो सब कुछ यहाँ की बातें जानता हूँ। मुझे तो यहाँ के सभी व्यापारी भी मूर्ख नहीं बना सकते।" इतना कह कर उसने सन्तोष भाव से सिर हिला... सब की ओर देखा और अपनी प्रशंसा की दाद जोहने लगा।

...ढ़ ने उसकी बात को बड़ी उत्सुकता से सुना।

"और फिर ?" बाँगड़ू ने पूछा। इतनी भीड़ में उसे बैठने ... जगह भी नहीं मिल पाई थी। दरवाजे की खिड़की से उसे हवा लग... ही थी और धूप भी उस पर आ रही थी।

"इसके बाद," वह व्यक्ति अपनी आवाज को और तेज करके बोला, "इन चटाइयों को जोड़ कर एक छोटी सी झोंपड़ी बना लेना और फिर भीख माँगने के लिए निकल पड़ना। लेकिन इससे पहिले ... अपने बदन में कीचड़ लपेट कर अपनी दशा को जितना भी हो सके ... इतना दयनीय बना लेना।

बाँगड़ू को यह बात इतनी अच्छी न लगी, क्योंकि उ... स्वप्न में भी कभी भीख माँगने की बात ध्यान में नहीं आई थी।

"क्या भीख माँगना अच्छी है ?" उसने पूछा।

"हाँ जरूरी," वह व्यक्ति बोला, "लेकिन दो पीकर ही भी... माँगने जाना चाहिये। यहाँ के लोग सुबह के समय चावल इतना ... जाते हैं कि उनका बचा हुआ चावल भी यदि इकट्ठा किया जाय ... काफी हो जाता है। इसके अतिरिक्त एक थैली में इतना चावल ... में मिल जाता है कि अच्छी तरह से पेट भर जाय। इसके बाद ...

से भीख मांगने जाया जा सकता है और जो कुछ पैसा मिल जाए उससे सब्जी वगैरह खरीदी जा सकती है।"

वाँगलुङ ने भीड़ से छिपा कर चुपचाप अपनी जेब की रकम एक २ करके गिनी और हिसाब लगा कर देखा कि चटाइयाँ खरीद कर सब को एक एक पैसे के चावल दिलवाने के बाद भी उसके पास तीन पैसे बच रहती है। उसने सोचा कि अब वह नई जिन्दगी शुरू कर सकता है। हाथ में बर्तन लिए इधर उधर फिरते हुए भीख माँगना किसी तरह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। बूढ़ा बाप और बच्चे बल्कि उसकी स्त्री भी यदि इधर उधर घूम कर भीख माँगें तो और बात है लेकिन वह तो कुछ काम करके भी कमा सकता है।

"क्या कोई काम नहीं मिल सकेगा?" उसने फिर उसी व्यक्ति से पूछा।

"है काम!" वहीं थूकते हुए उस व्यक्ति ने कुछ घृणा से कहा "यदि तुम चाहो तो रिक्शा चला सकते हो और इस प्रकार गर्मी में अपने पसीने को खून बना सकते हो फिर भी यदि सवारी न मिले तो रहा सहा खून भी जमकर बर्फ बन सकता है। सवारी न मिलने पर हर एक राह चलते से सवारी के लिये पूछना भी तो एक प्रकार की भीख ही होगी।" और फिर सबको कोसते हुए उसने चारों ओर देखा ताकि वाँगलुङ और कुछ न पूछे।

लेकिन जो कुछ वांगलुङ ने सुना, वह सब उसके लिये लाभदायक ही रहा, क्योंकि रेल से उतरने के बाद उसके पास एक बना बनाया प्रोग्राम था। इसी प्रकार रेल से उतरने पर उसने अपने परिवार को एक मकान की दीवार के सहारे खड़ा कर दिया और अपनी स्त्री से उन सबकी देख भाल करने के लिए कह कर चटाइयाँ खरीदने चल पड़ा। नई जगह के कारण कभी उस चटाइयों के बारे में एक से पूछना पड़ता, तो कभी दूसरे से। इस प्रदेश के निवासियों की भाषा भी कुछ अजीब होने से थोड़ी भी

बात को समझाने में भी उसे काफी समय लग जाता था।

आखिर शहर के दूसरे छोर पर जाकर कहीं चटाइयों वाली दूकान मिली। इसके मूल्य की जानकारी उसे पहिले से ही थी, अतएव हिसाब से रकम निकाल कर दिया और उसे चटाइयों का गट्ठर बगल में दबाकर वह वापिस उस जगह पर पहुँच गया जहाँ उसका परिवार इन्तजार कर रहा था। उधर उसने देखा कि बहू ओलन व बच्चे सब डरे हुए से सहमे से थे, किन्तु बूढ़ा बाप आनन्द से इधर उधर देख रहा था। उसने वांगलुङ से कहा—

"देखते हो, इस प्रदेश के निवासी कितने सादे लगते हैं इन लोगों के रंग कितने साफ हैं और चमड़ा भी काफी मुलायम मालूम देता है। अवश्य ही ये लोग नित्य प्रति सूअर का माँस खाते होंगे।'

किन्तु राह चलने वालों में से किसी ने भी वांगलुङ व उसके परिवार की ओर देखा तक नहीं। रास्ता इतना चलता था कि लोग सीधे व बिना इधर उधर देखे ही चल रहे थे। कभी जानवरों का झुंड का झुंड निकल पड़ता—गाड़ियों को खींचते हुए ऊपर से मिट्टी व ढेलों के झुंड लाद की बोरियों को लादे हुए निकले। इन जानवरों के झुंड में पिछली जानवर पर उसका मालिक सवार होता, लेकिन इस मालिक को तो केवल चाबुक और हंटर घुमाने का ही काम था, इधर उधर क्या हो रहा है, कौन आ जा रहा है इससे कोई मतलब उसे नहीं रहता। सब लोग इतने खुदगर्ज दिखाई दे रहे थे कि वांगलुङ के पास से निकलने पर, उसकी ओर घृणा की दृष्टि से देखते। इन जानवरों को हाँकने वालों को वांगलुङ व उसके परिवार की अजीब हालत को देखकर एक विशेष प्रकार का आनन्द होता था। वांगलुङ इस भीड़भाड़ को देखकर ऐसी उलझन में पड़ गया कि उसे यह समझ में न आया वह अपनी झोंपड़ी कहाँ बनाए?

जिस दीवार के सहारे वह लोग चले थे, उसी के सहारे वहीं

झोंपड़ियाँ खड़ी थीं, इन झोंपड़ियों पर नजर फेरते हुए उसने अपने दिमाग में अपना नक्शा सा बना लिया था, केवल जगह भर की तलाश थी। कड़ाहियों को मोल भाव कर भी उसने देखा वे इतनी सख्त थीं कि कुछ भी नहीं पा रही थीं। यह देखकर चौधराइन ने कहा—

'कड़ाहियों को मैं मोल सकूंगा बचपन में मैंने यह काम किया है।'

खो-खाल ने बच्चों को गोद में से उठा कर नीचे बिठा दिया और कड़ाहियों को माप कर झोंपड़ी बनाने लायक कर दिया। जल्दी उसकी कड़ाहियों को माप कर झोंपड़ी बनाने की छत बन गई और इधर उधर पड़ी हुई ईंटों से इन कड़ाहियों की छत बन गई और इधर उधर पड़ी हुई ईंटों को समेट कर जमीन पर फर्श भी बिछ गया। इस प्रकार ऐसी जगह बन गई, जहाँ वे लोग किसी प्रकार रह सकते थे। कुछ देर वहाँ बैठकर परिवार के लोगों ने एक दूसरे को प्यार देखा और थोड़ी बात चीत की। थोड़ी देर में चौधराइन बोला "चलो अब सब सार्वजनिक रसोई घरों की तरफ चलें।" इतना सुनते ही सभी पलाथन उठ खड़े हुए। बच्चों ने भी अपने २ प्याले उठा लिए और चल दिए। थोड़ी दूर चलने के बाद इन लोगों को मालूम पड़ गया कि इतनी झोंपड़ियां एक ही लाइन में किसकी हैं और वे लोग क्या करते हैं? वहाँ कितने ही आदमी हाथों में प्याले लिये हुए शायद अमीरों के रसोई घरों की ओर जा रहे थे। चौधराइन भी परिवार सहित इन्हीं लोगों में मिल गया। दूर जाकर एक बड़ी सी इमारत के पीछे बड़ी २ कड़ाहियां चढ़ रही थीं और वहाँ खाना पक रहा था। चावल भी उबल रहे थे। वहीं बाहर सारी भीड़ जमा हो गई और सब लपक गया, बच्चे भी ऐसी भीड़ भाड़ में रोने चिल्लाने लगे। सभी को यह फिक्र लग गई कि यह खाना न रह जाय वह बचा न रह जाय। कुछ देर बाद रसोईघर खुल गए और वहाँ के आदमी बोल पड़े—

सब के लिए बहुत खाना है सब लोग अपने अपने नम्बर से खड़े हो जायें।'

इतनी भीड़ के लोगों को समझाना कठिन हो गया भूखे की पुरुष जानवरों की तरह गुत्थम गुत्था करते रहे, जब तक कि सबके पेट में कुछ न कुछ पड़ न गया। बाँगड़ू तो कुछ भी न कर सका वह इस भीड़ के धक्कों से अपने पुत्र और बच्चों को ही बचाता रहा। सब के बाद में इन लोगों को पैसे देकर खाना मिल सका।

भर पेट चावल खाने के बाद जब थोड़े चावल बच रहे तो बाँगड़ू ने कहा—

"यह मैं रात को खाने के लिए ले जाऊँगा।"

किन्तु पास ही वर्दी पहिने हुए एक व्यक्ति खड़ा था, वह कुछ तेजी से बोला:

"नहीं तुम कुछ ले नहीं जा सकते जो कुछ है वह पेट में ही भर लो। बाँगड़ू को बड़ा आश्चर्य हुआ और बोला।

"मैंने पैसे दिये हैं तो तुम्हें क्या मतलब चाहे मैं पेट में भरकर ले जाऊँ या बर्तन में ले जाऊँ।"

वह व्यक्ति फिर बोला—

"हम को ऐसा नियम रखना ही पड़ता है, यदि ये नियम नहीं बनाए जायें तो कई लोग ऐसे हैं जो कम कीमत में इतना अधिक खाना घर ले जाकर अपने जानवरों सूअरों वगैरह को खिलाते हैं। सस्ते दामों में इतना खाना केवल गरीबों के लिए ही है सूअरों के लिये नहीं।"

बाँगड़ू को और भी आश्चर्य हुआ और वह चिल्ला पड़ा—

"क्या यहाँ ऐसे भी लोग हैं! किन्तु गरीबों को सस्ती कीमत में खाना क्यों मिलता है? कौन देता है?"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—

"यह सब शहर के धनी व्यक्तियों की ओर से किया जाता है कुछ लोग इसलिए सहारा देते हैं कि यह पुण्य का कार्य है। यदि यहाँ गरीबों को खाना खिला दिया जाय तो वे समझते हैं कि मर कर उनका

स्वर्ग का रास्ता साफ हो जायेगा।"

"कुछ भी हो और किसी भी कारण से किया जाता हो," वांगलुङ बोला, "यह कार्य तो अच्छा ही है, केवल साफ दिल से किया जाना चाहिये।"

अपने वाक्यों न बढ़ाकर वह व्यक्ति चुप रहा और एक बार बाद दिया। उधर वांगलुङ सब को लेकर अपनी नई झोंपड़ी में चल दिया। वहाँ जाकर आराम से सब लोग सो गए और सुबह देर तक सोते रहे क्योंकि आज कितने ही दिनों बाद उनको पेट भर भोजन मिल सका था, इसलिये नींद भी खूब अच्छी आई।

दूसरे दिन यह आवश्यक था कि और पैसा हो तो सुबह का खाना खाया जा सके। जो कुछ पैसा बचा था वह सब तो रात को ही समाप्त हो चुका था। वांगलुङ ने ओ-लान की ओर संदेह-दृष्टि से देखा, किन्तु उसको दिमाग में कोई आशा नहीं थी। वहाँ तो सब ओर भागते दौड़ते पीले लोग दिखाई पड़ते थे बाजार में मछलियाँ व तरह २ के गोश्त भी भरे दिखाई देते थे, सब्जियों के बाजार में सब्जियाँ भरी थीं। किसी भी व्यक्ति व उसके बच्चों के लिए वहाँ भूखा रहना नामुमकिन था। यह जगह उसके देश की तरह नहीं थी जहाँ चाँदी के सिक्कों से भी खाना नहीं खरीदा जा सकता था। ओ-लान ने बड़े धीरज से कहा—

"मैं, बच्चे और बुड्ढा भी भीख माँग सकते हैं, विदेशों के सफेद आदमी पर तो ऐसे आदमियों को कुछ रहम आएगा ही। जो हमें भीख नहीं देंगे, वे कम से कम उनको तो देंगे ही।"

फिर उसने दोनों बच्चों को अपने पास बुलाया, वे बच्चे तो थोड़ा खाकर ही सब भूल गए थे। वे सब दौड़कर सड़क के किनारे पहुँच गए तो ओ-लान ने कहा—

"तुम लोग अपने ये प्याले इस प्रकार हाथ में ले लो—" और एक प्याला अपने हाथ में लेकर वह गिड़गिड़ा कर बताने लगी—

"अच्छे साहब, भले अच्छे साहब, श्रीमती जी! कुछ पुण्य कमाइये, धर्म करने से स्वर्ग मिलेगा। थोड़ा बहुत पैसा तो आप लोग यों ही फेंक देते हैं—इस भूखे बच्चे को भी दे दें।

छोटे बच्चों ने माँ के इस वार्तालाप ढंग को देखा बांगहुड़ ने भी गौर से देखा। इस प्रकार की आवाज में उसने भीख माँगना कहाँ से सीखा? ऐसे कितने गुण इस स्त्री में बाकी रह गये थे जिनके बारे में बांगहुड़ को स्वयं कोई जानकारी नहीं थी। वो बांगहुड़ की निगाह का अर्थ समझ गई और बोली—

"मैं बचपन में इसी प्रकार भीख माँग सकती थी। ऐसे ही अकाल के समय में मुझे बेच दिया गया था।"

जब इस महाशय को जो दे रहे थे, कह चाहा। उन्हें भी एक प्याला दे दिया गया। चारों सड़क पर भीख माँगने चल पड़े। स्त्री ने भी अपना वर्तन हर रास्ता चलते राहगीर पर हिलाना आरम्भ कर दिया। बच्ची को उसने गोद में ले रक्खा था। बच्चे की ओर देख २ कर और राहगीरों की ओर हाथ बढ़ा २ कर चिल्लाने लगी—

"साहब, मेमसाहब! यदि आप कुछ न देंगे तो बच्चा मर जायगा। हम लोग भूखे मर रहे हैं," और वास्तव में बच्चा निर्जीव सा दिखाई दे रहा था। लोगों से पैसे मिलना आरम्भ हो गया।

किन्तु दोनों छोटे लड़कों को भीख माँगना थोड़ी ही देर के बाद एक खेल सा बन गया। उनमें से बड़े को तो शर्म आती थी सो वह धीरे से ही बड़बड़ा कर रह जाता था। बच्चों को माँ ने दूर से जब यह हाल देखा तो उनको घसीट कर झोंपड़ी में ले गई और गुस्से में तड़ातड़ उनको चाँटे मारने लगी।

"तुम लोग कहते हो कि भूखे मर रहे हैं! और फिर उसी समय हँस भी देते हो। मूर्खो! ऐसा करने से तो भूखे ही मर जाओगे।" और फिर बराबर दोनों के चाँटे मारती चली गई, जब तक [illegible] बच्चे।

जोर जोर से रो न पड़े। उन बच्चों को माँ ने फिर बाहर भेजा और कहा—

'अब ठीक है। अब तुम भीख माँगने की सूरत में हो। अब हँसे तो और पिटोगे।'

उधर वांगलुङ्ग एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ रिक्शे किराये पर मिलते थे। वहाँ एक रिक्शे को किराये पर लेकर वह सड़क पर आ गया। लकड़ी के इस भारी रिक्शे सरीखी सवारी को खींचता हुआ वह सोच रहा था कि कहीं देखने वाले उसे मूर्ख न समझ रहे हों। उसके रिक्शा खींचने में दिक्कत हो रही थी, उसी प्रकार जैसे बैल को पहिली बार हल में जोतने में कठिनाई होती है। लेकिन उसे पैसा कमाने के लिए इधर उधर रिक्शा लेकर दौड़ना तो था ही। इस शहर में और भी सैकड़ों आदमी रिक्शा चलाते ही थे। आखिर पहिले तो वह खाली रिक्शे को लिए हुए इधर-उधर चलाने की प्रैक्टिस करने लगा फिर सोचा कि इससे तो भीख माँगना ही अच्छा था, कि इतने में ही गली के एक मकान का दरवाजा खुला और एक चश्मा लगाए बूढ़ा मास्टर सा व्यक्ति दरवाजे से बाहर निकल कर उसे आवाज देने लगा।

वांगलुङ्ग कहने लगा कि उसके लिए रिक्शा चलाना बिलकुल नई बात है किन्तु वह बूढ़ा मास्टर बहरा था इसलिए उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि रिक्शे वाला क्या कह रहा है। केवल इशारे से रिक्शा को बैठने के लिए सीधा करने को कहा। और वांगलुङ्ग ने अपने बल को बात न समझ रिक्शे को ठहरा कर और बूढ़े को एक पढ़ा लिखा भला आदमी समझ लिया लिया। बूढ़ा तन कर बैठ गया और बोला—

मुझे कंफ्यूशियस मन्दिर ले चलो। फिर चुपचाप बैठा रहा। इस प्रकार वांगलुङ्ग को कुछ भी पूछने का कोई अवसर नहीं दिया। बिना जाने हुए कि यह मन्दिर किधर है वांगलुङ्ग रिक्शा लेकर चल पड़ा।

चलते हुए रास्ते में उसने मन्दिर की जानकारी कम की रिक्शे को तेज दौड़ाने का कोई मौका नहीं था क्योंकि सड़क यातायात भर रही थी, कहीं सामान बेचने वाले खोंच रहे थे तो कहीं सवारियाँ इधर उधर भाग रही थीं। ऐसी भीड़भाड़ में वह रिक्शा लेकर केवल चल ही रहा था, साथ ही उसे पीछे के बोझ का भी ध्यान न रहा था। उस बोझ पर बोझ लादने की तो आदत थी किन्तु बोझ खींचने का अभ्यास नहीं था। मन्दिर पहुँचते २ उसके पैर थक गए और हाथों में छाले पड़ चुके थे। वहाँ पहुँच कर उसने फिर रिक्शे को खड़ा किया और वह बूढ़ा मास्टर उतर गया। अन्दर की जेब में हाथ डालकर उसने एक छोटा सा चाँदी का सिक्का बाँगड़ू को दिया और बोला—

'मैं सदैव इतना ही देता हूँ, भी चपड़ करने से कुछ न होगा।' इतना कहते हुए वह मन्दिर में घुस गया।

बाँगड़ू का इरादा वैसे भी किसी तरह की हुज्जतबाजी करने का नहीं था क्योंकि उसने पहिले ऐसा सिक्का कभी देखा भी नहीं था। इस सिक्के को लेकर वह पासमें चलता की दुकान पर गया जिसका भुनाने पर इक्कीस पैसे उसे मिले। बाँगड़ू को यह सोचकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस इतिहास प्रदेश में पैसा इतनी आसानी से मिल जाता है। उसे यह नहीं ज्ञात पड़ा कि पास ही एक दूसरा रिक्शावाला उसकी रेजगारी गिन रहा है, वह बाँगड़ू से बोला—

"केवल इक्कीस ही पैसे ! उस बूढ़े को तुम कितना दूर ले आए थे?' और जब इसका उत्तर उसने सुना तो वह चिल्ला उठा—'वह बूढ़ा छोटी तबियत का आदमी है। उसने तुम्हें केवल आधा ही किराया दिया है। चलने से पहले तुमने कितना ठहराने की बातचीत की थी?"

"मैंने कुछ ठहराया नहीं" बाँगड़ू बोला। "उसने कहा—'आ जाओ' और मैं चला आया।

दूसरा व्यक्ति यह सुन कर बड़ा दयनीय दृष्टि से बाँगड़ू की ओर देखता रहा।

"यह भी अजीब आदमी है,' वह व्यक्ति राह चलते यात्रियों की ओर देखकर बोलने लगा— "किसी ने कह दिया और आप चले गये पैसे ठहराए ही नहीं कितना नामाकूल है यह, मुकराम! यह आम बात है कि केवल विदेशियों को ही बिना ठहराए सवारी में बिठाया जा सकता है। इन लोगों का स्वभाव ही और होता है। इनके बुलाने पर बिना कुछ ठहराए ही विश्वास किया जा सकता है। ये विदेशी भी मूर्ख ही होते हैं, उन्हें यह मालूम ही नहीं रहता कि कितनी दूर जाने का क्या रेट है! उनकी जेब से तो चाँदी पानी की तरह बहती है।" सब सुनने वाले हँस पड़े।

बोंगहुक कुछ न बोला। यह ठीक ही था कि शहर के इन निवासियों में वह मूर्ख ही दिखाई पड़ता था। फिर बिना कुछ कहे सुने वह अपना रिक्शा बढ़ाए चला गया।

"कुछ भी हो, इन दामों से बच्चों का पेट का रास्ता तो मिल ही जायगा," उसने कुछ दृढ़ता के साथ अपने आप से कहा और तभी उसे ध्यान आया कि अभी तो रिक्शा का किराया भी देना है। अभी वह उस किराये का आधा भी नहीं कमा पाया है।

इसके बाद उसे एक और सवारी मिली और रेट ठहराने पर दोपहर को दो सवारियाँ और मिल गईं, किन्तु रात को जब उसने सारी कमाई की रेजगारी गिनी तो किराया [illegible] के बाद केवल एक पेंस ही बचा। अतएव बड़े दुःखी मन से वह अपनी झोंपड़ी में घुसा। सोचने लगा कि खेत पर दिन भर की मेहनत से कहीं अधिक मेहनत करने पर भी ऐसी कोई कमाई नहीं हो सकी। इन्हीं विचारों में एक के बाद एक विचारों ने उसे फिर विचलित कर दिया।

घर पहुँचने पर उसे मालूम हुआ कि पाछाम को दिन भर की भीख में जो थोड़ी थोड़ी रेजगारी मिल पाई थी, वह पाँच पेंस से कम ही थी, ल्हामा बच्चों को जो कुछ मिल पाता था, वह सब मिलाकर

इतना हो गया था कि दूसरे रोज सबेरे का खाना खरीदा जा सकता था। थोड़े बच्चे से जब उसकी रेजगारी लेने की कोशिश जबरदस्ती से की, तो बच्चा दूर रहा। वह बच्चा अपनी रेजगारी को मुट्ठी में भींचे हुए ही सो गया और दूसरे दिन उसने अपनी ही रेजगारी से अपने लिये चावल खरीदे।

लेकिन बूढ़े को दिन भर में कुछ भी नहीं मिला। वह चुपचाप सड़क के किनारे बैठा ही रहा। उससे भीख मांगने की कोई चेष्टा ही न हो सकी। वहीं कभी वह सोता रहा, कभी ऊंघता रहा। उसे बूढ़ा समझ कर किसी ने और खबर भी नहीं की। सन्ध्या को जब उसने अपने हाथ खाली देखे तो केवल इतना ही कहा—

"मैंने तो हल चलाये हैं, बीज बोये हैं और इस प्रकार अपने खाने के लिये चावल इकट्ठे किये हैं। इसके अतिरिक्त मेरे एक लड़का है और उसके भी बच्चे हैं।"

उसके इन शब्दों में यही आशा और विश्वास था कि जब उसके एक लड़का है और उसके भी संतान है तो उसे भी खाना मिल ही जायगा।

१२

इस प्रकार बांगलुक का काम आरम्भ हुआ और भूख की जो अग्नि थी वह शांत होने लगी। उसकी कमाई से व भोजन की भीख से इतना मिल जाता था कि सारे परिवार को खाने के लिये चावल आसानी से उपलब्ध हो जाते। अतएव बांगलुक के जीवन में जो नया-पन आ गया था वह अब और भी निखरता जा रहा था। इस शहर के बारे में उसकी जानकारी बढ़ चली थी। दिन भर सड़कों पर भागते २ अब वह जान गया था कि शहर के कौनसे व छिपे हुए हिस्से किधर हैं और फैशन की वस्तुएँ कहाँ मिलती हैं। वह यह भी समझ गया था कि सवेरे के समय उसके रिक्शे में जो सवारियाँ बैठती हैं—उनमें से पुरुष वर्ग तो स्कूल अथवा दुकानों पर जाते हैं और स्त्री वर्ग को बाजार में सब्जी वगैरह खरीदने जाना होता है। किन्तु इसके अतिरिक्त वह और कुछ नहीं जान सका था कि स्कूल क्या होता है? केवल स्कूलों के नामों से ही वह परिचित हुआ था, जैसे "चीन महाविद्यालय" अथवा "पश्चिम विद्या मन्दिर" आदि। इन स्कूलों के फाटक तक ही वह जा पाता था, अन्दर जाने का उसे अवसर भी नहीं मिल सका था। फिर उसे तो मजदूरी मिल जाती थी और कुछ चाहिये भी नहीं था।

रात में सवारियाँ किधर जाती थीं इसकी जानकारी उसे होती चली जा रही थी, लोग किस प्रकार का आनन्द कहाँ जाकर लूटते थे इन स्थानों से वह अब अनभिज्ञ न था, फिर भी उसके अपने आनन्द की

सीमा तो अपनी झोंपड़ी तक ही थी। सवारियों के साथ तो उसका मार्ग किसी एक द्वार पर ही रुक जाता था। उस बड़े शहर में सभी व्यक्तियों के बीच उसका जीवन एक ऐसे चूहे के समान था जो अपनी ज़िन्दगी किसी बड़े संपन्न घर में छिपा २ कर रोटी के फेंके हुए टुकड़े खाकर ही गुज़ार देता है।

वांगहुड़ अपने को इस दक्षिण प्रदेश में विदेश ही समझता। एक तो उसकी भाषा इधर की भाषा से भिन्न थी, दूसरे सूरत में भी बड़ा अन्तर था। यहाँ लोगों को आसानी से रकम मिल जाती थी, इस लिये खाने के समय कई प्रकार की तरकारियाँ खाने का स्वभाव सा हो गया था। यहाँ के निवासी वस्त्र भी अच्छे और कीमती पहिनते थे। इस प्रकार अपने को विदेशी समझते हुए, वह एक दबा हुआ सा जीवन व्यतीत करता रहा। एक दिन उसने मन्दिर के सामने एक नवयुवक का भाषण सुना, जिसमें विदेशियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई गई थी। उसने कहा था कि चीन के निवासियों को विदेशियों के प्रति ऐसा आंदोलन करना चाहिये। कि वे लोग यहाँ से चले जायें। इस प्रकार का भाषण सुनकर वांगहुड़ दहल उठा और सोचने लगा कि कदाचित् यह आंदोलन उन्हीं लोगों के विरुद्ध होगा जो उसके उत्तरीय प्रदेश से यहाँ जीविका-निर्वाह करने आये हैं। इसी प्रकार के भाषण प्रायः नित्य प्रति हुआ करते थे, जिनमें कहा जाता था कि यहाँ के निवासियों को मिलकर एक साथ उठना होगा और समय रहते २ वह शक्ति कर इस योग्य बनाना होगा कि उनके आंदोलन से सारे विदेशी यहाँ से भाग जायें। वांगहुड़ यह न समझता था कि जिन लोगों से ऐसा करने को कहा जा रहा है, उनमें वांगहुड़ व उत्तरीय प्रदेश के लोगों को भी सम्मिलित होना है या नहीं?

उस दिन जब वह अपना बाज़ार में सवारी की खोज में रिक्शा लिये हुए खड़ा था तो एक दूकान से उसने कुछ चीनियों को निकलते हुए देखा। तब उसे पता चला कि यहाँ और भी लोग हैं जो उससे भी

अधिक विदेशी हैं। तभी उसे यह भी समझ में आ गया कि चौपाटन के लिये जो मायन सुनाई दे रहे थे वे इन जैसे लोगों के लिये ही थे। कुछ भी हो, इन दिनों में से उसे ऐसी एक सवारी मिल गई, जिससे अधिक मजदूरी तय हुई। ऐसी सवारी उसे पहिले कभी नहीं मिली थी। उस सवारी की वेशभूषा से उसकी समझ में नहीं आ सका कि वास्तव में वह स्त्री है अथवा पुरुष। कमर तक को वह सवारी पतलून पहिने हुए गर्दन में एक जानवर की खाल लपेटे हुए थी। उस सवारी को लेकर उसे पुरी वाली सड़क पर जाना था। वह तेज दौड़ने लगा। रास्ते में जान पहिचान वाला एक और दूसरा रिक्शे वाला मिला, जिससे सोमारू ने पूछा—

"देखते हो—मैं किस प्रकार की सवारी ले जा रहा हूँ!" और उसे उत्तर मिला—

"एक विदेशी—वह तो अमेरिकन जो है—तुम धनी हो जाओगे—" किंतु सोमारू रिक्शा दौड़ाते हुए बैठा चला गया। जब वह पुरी वाली सड़क पर पहुँचा तो वह काफी थक चुका था और उसके शरीर से पसीना बराबर चू रहा था। वह जब रिक्शे से उतरी तो उसने टूटी-फूटी बोली भाषा में कहा—"तुम्हें इस प्रकार तेज दौड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी", और चुपचाप दो चाँदी के सिक्के जो लगभग दुगुना किराया था, उसके हाथ पर रख दिये।

तब सोमारू ने सोचा कि वास्तव में यही लोग विदेशी हैं। यहाँ के निवासी जिनके काले बाल और काली पुतली वाली आँखें हैं उन लोगों से भिन्न भूरे बाल और नीली २ आँखों वाले हैं। जब रात को वह दिन भर की मजदूरी लिये अपनी झोंपड़ी में पहुँचा तो उसने सब हाल जोहान को बताया। वह बोली—"मैं भी वैसी स्त्री को देखा है, मैं उन्हीं से भीख माँगती हूँ और वे ही मुझे चाँदी के सिक्के दे देती हैं।"

किंतु न तो सोमारू को और न उसकी पत्नी को यह पता था

कि ये विदेशी अपनी सहृदयता से ये चाँदी के टुकड़े नहीं देते बल्कि इस-लिये देते हैं कि वे समझ नहीं सकते कि भिखारियों को ताँबे के टुकड़े देने से ही काम चल जाता है। जो कुछ भी हो, अपने इस अनुभव से वह यह अच्छी तरह समझ गया कि उस दिन जो धनयुक्त रहे थे, उसका सम्बन्ध इन विदेशियों से ही था न कि उसके प्रदेश से भाग कर आये हुए गरीब चीन के लोगों से।

नगर के बाहर झोंपड़ियों की कतार में रहते व दिन भर कुछ न कुछ मेहनत मजदूरी करते रहते वालों को यह तो पता चल गया था कि यहाँ खाने की कमी नहीं है। वाँगलुङ और उसका परिवार भी अन्य लोगों की भाँति उस प्रदेश से आये थे जहाँ अकाल पड़ा था, जहाँ सभी भूख से पीड़ित थे तथा जहाँ की सारी खेती सूखा होने से बरबाद हो चुकी थी।

यहाँ इस नगर में खाना पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध था। मछली बाजार में मछलियों की ही भरमार थी नाव की मण्डी में चावल धान भरा रहता था। गेहूँ और अन्य अनाजों की भी कहीं कोई कमी नहीं थी। इसी प्रकार मांस बिकने की जगह पर सभी प्रकार के जानवरों का माँस मिल जाता था। सब्जी भी सारी किस्म की व जो कुछ भी जमीन से उगाई जा सकती थी मौजूद थी—मोटी २ लाल गाजरें, लम्बे हुए मोली के फूल इत्यादि, सेम। इस शहर के बाजार में ऐसी कोई वस्तु न थी जो न मिलती हो, मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार सभी कुछ पा भी सकता था। इन सबके अतिरिक्त भाँति-भाँति की मिठाइयाँ, फल और मेवों को देख कर ही तबीयत प्रसन्न हो जाती थी। जगह जगह बच्चे हाथों में थाल लिए हुए बेचने वालों की ओर दौड़ते-भागते दिखाई देते थे।

यह कहा जा सकता था कि इस नगर में कोई भी भूखा नहीं मरता होगा।

इतना सब कुछ होते हुए भी नित्य प्रति वाँगलुङ व उसके परिवार के सब लोग, फटे कपड़े पहिने सर्दी में सिकुड़ते हुए अपने २ कटोरे लेकर निकलते और जो कुछ भीख में मिलता, उसी से अपना निर्वाह करते। ओलान की दिन भर की भीख से व वाँगलुङ के दिन भर रिक्शा चलाने पर भी, उनकी झोंपड़ी में नित्य प्रति चावल नहीं पक सकता था। कभी २ एक दो पैसे यदि बच भी जाते तो उनकी खरीद की जाती, उनकी सँड़सी को पकड़ी ही उसे पकाने के लिए ईंधन भी इधर उधर से बीन बटोरा जाता। इस बीनने बटोरने में कभी २ ओलान के बच्चों को कोई आदमी चीर भी देता और रोते २ जब घर आते तो ओलान को बड़ा दुःख होता। बड़ा बच्चा शर्मीला अधिक था, सीधी प्रकृति का भी था, इसलिये वही अधिकतर पकड़ा जाता और वही पिटता रहता था, किन्तु छोटा भीख माँगने में इतना चतुर नहीं था, जितना छोटी मोटी चीजें चुरा कर ले आने में।

किन्तु ओलान को बच्चों की इस आदत से कोई परहेज नहीं था। यदि बच्चे बिना कोई कष्ट के भीख नहीं माँग सकते तो पेट भरने के लिए चोरी करना भी कोई बुरी बात नहीं थी। वाँगलुङ को छोटे बच्चे की यह आदत पसंद नहीं थी किन्तु वह ओलान से कुछ कह नहीं सकता था। इसीलिए वाँगलुङ बड़े बच्चे से कुछ नहीं कहता था, यद्यपि उसके सीधेपन से परिवार की कमाई में कुछ सहायता नहीं हो पाती थी। इस बड़ी दीवार के सहारे जैसा जीवन यापन हो रहा था, वह सब वाँगलुङ को पसन्द नहीं था। उसकी समझ में तो उसकी अपनी जमीन ही उसका इन्तजार कर रही थी।

एक रात जब वाँगलुङ देर से घर लौटा तो खाने के लिये उसे ढेर सा माँस मिला कि उसकी आँखें चौंधिया गयीं और उसने ओलान से कहा, "आज अवश्य किसी विदेशी से ही कुछ मिला है" किन्तु अपनी आदत के अनुसार ओलान ने कोई उत्तर नहीं दिया।

इतने में ही छोटा बच्चा अपने गर्वयुक्त विवेक से बोला—

"मैं इस माँस को जानता हूँ। जब कसाई माँस काट रहा था तो खरीदने वाली मोटी बी के हाथों के नीचे से होकर मैंने माँस का टुकड़ा उठा लिया और ले भागा और इसे लाकर एक बर्तन के नीचे छिपा दिया।"

"तो अब मैं इस माँस को नहीं खाऊँगा।" वाँगलुङ्, क्रोधित होकर बोला—"हमें वही माँस खाना उचित है जिसे या तो हम खरीद सकें या हमें भीख में मिल जाय। चुराकर माँस खाना उचित नहीं। हम लोग भिखारी अवश्य हैं किन्तु चोर कदापि नहीं।" और इतना कह कर उसने अपने हाथ से बर्तन में से माँस निकालकर फेंक दिया। बच्चा रोता बिलखता ही रह गया।

तब ओलान उठी और उसने जमीन पर फेंके हुए माँस को उठाया, पानी से उसे साफ कर फिर उबलते पानी में थोड़ा पकने को रख दिया।

"मांस तो माँस ही है" वह धीरे से बोली—

वाँगलुङ् ने इस पर कुछ कहा तो नहीं, किन्तु उसे डर अवश्य हो गया। उस डर का कारण कि उसके बच्चे इस नगर में चोर होते जा रहे हैं। फेंके हुए माँस को जब ओलान ने उठाया तो वाँगलुङ् कुछ न बोला, जब वह माँस बुड्ढे को दिया गया तो भी उसने कुछ नहीं कहा— किन्तु स्वयं उसने नहीं खाया, केवल सब्जी खाकर ही अपनी भूख मिटाई। जब खाना खाना समाप्त हो चुका तो वह छोटे बच्चे को घर के बाहर दूर तक पकड़े हुए ले गया और उसे खूब मार लगाई। मारते हुए चिल्ला कर यह कह रहा था, "चोर को ऐसी ही मार पड़ती है।" फिर घर पहुँच कर अपने आप से कहने लगा—

"हम लोगों को अपनी जमीन पर वापिस चलना चाहिये।"

१३

इसके सदृश नगर में चोंगहुङ अपनी गरीबी के दिन किसी प्रकार काट रहा था। जिस नगर में खाद्य व अन्य खाने पीने की सामग्री में कोई कमी नहीं थी जहाँ तरह २ की सुन्दर वस्तुओं के अतिरिक्त रेशमी वस्त्रों के ढेर लगे रहते थे जहाँ के निवासी अधिक से अधिक मूल्य के वस्त्रों से सुसज्जित रहते तथा गलि २ की दुकानों से भरपूर रहते उसी नगर के एक भाग में चोंगहुङ रहता था जहाँ लोगों को न तो खाने को अन्न मिल पाता और न पहिनने को वस्त्र।

सारा कुटुम्ब सर्व धनी व सर्व सम्पन्न व्यक्तियों के यहाँ दावतों के लिये तरह २ की मिठाइयाँ, केक आदि तैयार करने में दिन २ भर मेहनत करता, परन्तु उसके बच्चों को प्रातः से संध्या तक दौड़ धूप करते रहने पर भी मजदूरी नहीं मिल सकती, जो उनकी आवश्यकताओं को पूरी करती। अन्य भी कुटुम्ब मिल कर जहाँ रेशमी वस्त्रों की सिलाई करते रहते गर्म कपड़ों को काटते रहते, वहाँ उनके अपने तन ढकने को वस्त्र भी न थे।

चोंगहुङ इन्हीं लोगों के बीच रहते हुए कई प्रकार की बातें सुनता रहता किन्तु उधर अधिक ध्यान नहीं देता। बड़े बूढ़े अधिकतर कुछ नहीं कहते सुनते। उनके अतिरिक्त अधेड़ अवस्था वाले सभी व्यक्ति रिक्शा खींचते ठेले चलाते, व धनी-मानी लोगों के लड़कों के लिये सवारी को ढोते फिरते। बोझा खींचते २ उनकी हड्डियों का अस्थिपंजर हो जाता किन्तु

फिर भी चुपचाप रात को थोड़ा बहुत खा पीकर सो रहते । गोदाम की तरह हम सभी के चेहरे रिसियाए खिसियाए रहते । उनके मन में क्या पड़ा था, यह कोई नहीं जानता था। यदि कभी कोई बातचीत भी आपस में होती तो खाने का दुखड़ा रोया जाता अथवा पैसे का ।

थोड़ी बहुत शांतिमय अवस्था में जब उनकी मुद्रा देखने में आती तो ऐसा जान पड़ता मानो क्रोध वश उनके चेहरे सिकुड़ गए हों—यद्यपि वहाँ क्रोध का नाम भी न होता । कई वर्ष तक बराबर भारी २ बोझा ढोते रहने के कारण उनके चेहरों पर अनेक झुर्रियाँ पड़ चुकी थीं और आँखें गड्ढों में धँस गई थीं । उनको स्वयं ही ऐसा कोई ध्यान नहीं था कि वे किस प्रकार के दिखाई देते हैं । एक बार उनमें से एक ने शीशा देखते हुए यह अवश्य कहा था कि 'शक्ल बिगड़ी नहीं है ।' इस पर सब साथी सब मजदूर हँस पड़े थे तो उसे यह आभास हुआ था कि कदाचित उसने ऐसी बात कह दी होगी जो उन लोगों को बुरी लग गई है ।

इन कोठरियों में जो बात प्रायः बड़ों के बड़े चौबारे बच्चों का सीधा विरोध किया करता क्योंकि बच्चे पैदा होते ही रहते थे और इस प्रकार उनकी संख्या भी बढ़ा ही करती थी । इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ इधर उधर पेटों से ही जन भी डाला करतीं । इन सारे २ घरों में बच्चों का जन्म और उनकी मृत्यु इतनी होती रहती थी कि माँ बाप को भी ध्यान नहीं रहता कि उनके कितने बालक जन्मे और कितने मरे, केवल उन्हें यही मालूम रहता कि इतने पर खाने वाले हैं ।

इस प्रकार इन लोगों का जीवन भी एक विशेषता प्राप्त कर गया था । वे सारा दिन भर बाजारों में घूमते फिरते । पुरुष इधर उधर काम करके थोड़ी बहुत मजदूरी करते व बच्चे और स्त्रियाँ जहाँ दाँव लगता, वहीं से कोई वस्तु चुरा लाते या भीख माँग कर ले आते । भोगराज और रमकी भी इस दौरे से विशेष समाज के बाहर थे ।

बड़े भी पुरुष ऐसे जीवन को चुपचाप स्वीकार कर चुके थे किंतु

धीरे २ वह समय भी आ गया, जब बच्चे बड़े हो गये और उनका यौवन उनको एक विशेष स्फूर्ति देने लगा। गरीबी की दशा में इनमें असंतोष की भावना जागृत हो गई और क्रोध से भरकर ये लोग आपस में विद्रोह करने की बातचीत करने लगे। इसके बाद जब इन नवयुवकों के विवाह और फिर बच्चे हुए तो इस प्रकार संख्या बढ़ जाने से और भी दुःखी होकर विद्रोही हो उठे। जानवरों से अधिक घोर परिश्रम करने पर भी जब उनके परिवार भूखे रह जाते, तो ऐसी भावनाओं का जागृत होना स्वाभाविक ही था।

सर्दियाँ समाप्त होने पर जब वसंत का आगमन हुआ तो इन निर्धन परिवारों के कष्ट और भी बढ़ गए। वर्षा पड़ने पर झोंपड़ियों में अन्दर और बाहर पानी तथा कीचड़ हो गई। अब सोने का भी कोई उपयुक्त स्थान नहीं रहा तो वांगलुङ एक दिन बहुत ही परेशान हो गया और अपनी झोंपड़ी से बाहर निकल सड़क के किनारे जाकर चुपचाप खड़ा हो गया। वहाँ आकर उसने अपने बूढ़े बाप को बैठा हुआ देखा। छोटी बच्ची बड़ी हो चली थी और बूढ़े बाबा के पास नहीं जाती थी। ओलान ने एक बड़े कपड़े के लम्बे टुकड़े से बच्ची का एक हाथ बांध कर दूसरा कोना बूढ़े के हाथ में पकड़ा दिया था जिससे बच्ची इधर-उधर दूर न जा सके। बच्ची अपनी माँ की गोद में से उचक २ पड़ती इस प्रकार ओलान को भीख माँगने में बाधा पड़ती, इस बाधा से बचने के लिये ही उसने यह उपाय किया था। इसके अतिरिक्त ओलान पेट से थी और वह एक साथ दो बच्चों का बोझ अपने कमजोर शरीर पर सह भी नहीं सकती थी।

वांगलुङ उस बच्ची का उठना, चलना और फिर गिर पड़ना देखता रहा। सन्ध्या की सुहावनी ठण्डी हवा से उसे फिर अपनी जमीन और अपने खेतों का ध्यान हो आया। "इन्हीं दिनों में"—उसने अपने पिता से कहा,— "बीज बोये जाते हैं और गेहूं बोया जाता है।"

ओह ! बूढ़े ने धीरे से कहा, 'मैं समझता हूँ तुम्हारे मन में क्या बात है। अपने जीवन में दो बार मैंने ऐसे दिन बिताये हैं और प्रकार अपने खेतों व जमीन को छोड़ना पड़ा है।"

"किन्तु पिताजी, आप हर बार अपनी जमीन पर वापस भी गये हैं।"

'अपनी जमीन पर तो जाना ही था बेटे' बूढ़े ने शांतिपूर्वक कहा।

वांगलुङ्ग ने मन ही मन कहा कि वह भी वापस जायगा इस वर्ष नहीं तो अगले वर्ष तो अवश्य ही। अपनी खेती को फिर से उपजाने के विचारों में लीन वांगलुङ्ग चुपचाप झोंपड़ी में वापस गया और बड़ी उदासी के साथ अपनी स्त्री से कहा—

"यदि मेरे पास कुछ भी होता तो उसे बेच बाच कर अपनी जमीन पर अवश्य चला जाता। यदि पिताजी बूढ़े न होते तो हम लोग भूखे मरते भी वापस चल सकते थे। किन्तु अब वह और बच्चे सौ मील कैसे चल सकेंगे? और तुम भी पेट में बच्चा लिये कैसे चल सकोगी?"

ओलान चावल पका रही थी चावलों का मोह एक ओर निहारती हुई धीरे से बोली— इस लड़की के अतिरिक्त बेचने को और कुछ नहीं है।'

यह सुनकर वांगलुङ्ग का दम ऊपर का ऊपर ही रह गया और वह जोर से बोला—"नहीं, लड़की को तो मैं नहीं बेचूँगा।"

"मैं बेची ही गई थी," ओ ने धीरे से उत्तर दिया, "मुझे एक अमीर घराने में बेचा गया था और उस रकम के सहारे मेरे माँ बाप घर वापस चले गये थे।'

"तो क्या इसीलिए तुम भी अपनी लड़की को बेच दोगी?"

"यदि मेरे ही वश की बात होती तो मैं बेचने से पहिले लड़की

वांगलुङ का मुँह सूखा का सूखा रह गया। इस दीवार की दूसरी ओर वास्तव में इतनी ही अमीरी थी।

"जब लोग बहुत ही अमीर हो जाते हैं, तब भी उसे निकालने का एक उपाय है" इतना कह वह व्यक्ति एकदम चुप हो गया, जैसे उसे कुछ ध्यान आ गया हो।

'ओह ! फिर काम पर जाना है", और वह रात के अँधेरे में चल पड़ा।

किंतु वांगलुङ को उस रात बिल्कुल नींद नहीं आई। दीवार के उस पार के सोने, चाँदी और मोतियों की चमक में वह सोचता ही रहा—एक ओर इतनी अमीरी और यहाँ तन ढकने को कपड़ा नहीं, इसी सोच विचार में उसे अपनी बच्ची को बेचने का लालच हो आया और उसने मन ही मन कहा—

"यदि बच्ची को एक धनी परिवार में बेचा जाय तो अच्छा होगा, वह अच्छा खाना खा सकेगी आभूषण भी पहिन सकेगी और बड़ी होने पर किसी रईस को लुभा भी सकेगी", किंतु इसके प्रत्युत्तर में उसने कहा— 'उसे बेचने से कोई हीरे-मोती तो मिलेंगे नहीं, अधिक से अधिक अपनी जमीन पर वापिस जाने लायक रकम शायद मिल जाय तब फिर खाली सामान बैल व घर की मेज-कुर्सी बिस्तर आदि खरीदने को कहाँ से आयेगा ? क्या इसलिये मैं बच्ची को बेच दूँ कि यहाँ भूखे मरने की अपेक्षा हम लोग वहाँ अपनी जमीन पर भूखे मरें ? जमीन में बोने के लिये हमारे पास बीज भी तो नहीं है।"

जैसा कि उस व्यक्ति ने कहा था कि अमीरों के अधिक अमीर बन जाने पर भी कोई उपाय निकल ही आता है, किंतु वांगलुङ की समझ में ऐसा कोई उपाय नहीं आता।

१४

झोंपड़िया के इस गाँव में बसन्त भी आया। मैदानों में पहाड़ी टीलों में घास उग आई, पेड़ों में नई-नई पत्तियाँ भी उग आईं व कहीं कहीं पहिले के पड़े हुए साग-सब्जी के बीज भी फूट पड़े। इस हरियाली में अब यह आवश्यक नहीं रहा कि साग-सब्जी इधर उधर से मांगकर लाई जावें। अब तो नित्य प्रति स्त्रियाँ और बच्चे हाथों में टूटे-फूटे बर्तन व टोकरे लिये हुए निकल पड़ते और खेतों में उगी हुई सब्जियाँ बीन बटोर लाते, इस प्रकार न तो भीख ही माँगनी पड़ती और न पैसा ही खर्च होता। भी बच्चों की इस खोज में पोखाम व उसके दोनों लड़के भी शामिल रहते।

किन्तु पुरुष-वर्ग को तो काम करना ही पड़ता, बांगड़ू भी पहिले की तरह दिन भर मेहनत मजदूरी करता। यद्यपि दिन बड़े और गर्म हो जाने के कारण मजदूर-वर्ग थोड़ा चिड़चिड़ा रहता। सर्दी में दिन छोटे थे मेहनत करने से शरीर में गर्मी रहती थी तो वे लोग चुप-चाप काम करते रहते थे और दिन के समाप्त हो जाने पर अँधेरा होने के पहिले ही घर आकर जो कुछ मिलता था पी लेने के पश्चात् सो जाते थे। बांगड़ू की झोंपड़ी में भी ऐसा ही होता था और वह यह भी समझता था कि ऐसा ही सब दूसरी झोंपड़ियों में होता।

जो कुछ भी हो, ऋतु परिवर्तन से लोगों की अवस्था बदलता

स्वप्न की भाँति दिखाई देतीं। वह और कुछ एहसास भी नहीं करता। जो कुछ अजीब बात उसे दिखाई देती, बस वह चुपचाप स्वीकार कर लेता। वहाँ कभी २ कोई अखबार भी पहुंच जाता, लेकिन इस बारे में भी वह कोई और जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करता था।

अखबार में क्या छपा होता है वाँगलुङ्ग की समझ में यह नहीं आता था। अपनी जवानी में या पहिले कभी भी अक्षरों को पहिचानने की कोशिश ही नहीं की थी। अतएव शहर के फाटकों पर चिपके हुए इश्तहारों में क्या लिखा होता है व उसका मतलब क्या और किसके लिए होता है यह उसकी समझ के बाहर की बात थी। शहर ही में दो बार ऐसे अखबार व पर्चे उसके हाथ में दिये गए, लेकिन वे बेकार रहे।

पहिली बार ऐसा पर्चा उसे एक विदेशी ने दिया था जिसे उसने एक दिन रिक्शा में बिठाया था। वह विदेशी ताड़ के वृक्ष के समान ऊँचे कद का दुबला पतला व्यक्ति था, उसकी आँखें बर्फ की तरह सफेद थीं व मुँह पर लम्बी दाढ़ी थी जब उस विदेशी ने पर्चा हाथ बढ़ाकर वाँगलुङ्ग को दिया था तो उसने यह भी देखा था कि उसके हाथ का रङ्ग लाल था व उस पर भी बड़े २ बाल थे, उसकी लम्बी नाक व्यक्तित्व की शोभा बढ़ा रही थी। वाँगलुङ्ग डरके मारे पर्चा लेने से इन्कार भी न कर सका। विदेशी के चले जाने के बाद जब उसने पर्चे को गौर से देखा तो उसमें एक व्यक्ति का चित्र था जो हाथ फैलाए हुए एक तख्ते पर टंगा हुआ था, शरीर पर कोई वस्त्र भी नहीं थे। यह देखने से मृत व्यक्ति का चित्र मालूम होता था क्योंकि आँखें उसकी बंद थीं और सिर कंधे पर झुका हुआ था। वाँगलुङ्ग चित्र को देख कर कुछ डरा था, चित्र के नीचे कई व्यक्तियों के चित्र थे किन्तु वाँगलुङ्ग उस चित्र का कोई मतलब नहीं निकाल सका।

रात को उसने चित्र लाकर बूढ़े बाप को दिखाया था, वह भी कुछ पढ़ तो सकता ही नहीं था अतएव दोनों यही बात करते रहे कि

चित्र का क्या मतलब निकल सकता है। बौंगहुड़ के दोनों लड़के भी चित्र को देख २ कर हँस पड़ते व कभी डर के मारे सहम जाते।

"देखिये तो एक ओर से उसके खून बहता दिखाई दे रहा है।" छोटे बाप ने कहा—

"यह व्यक्ति अवश्य ही कोई पाप कर रहा होगा तभी इस प्रकार फाँसी पर लटकाया गया है।"

किन्तु बौंगहुड़ तो चित्र को देखकर सहमता रहा। सोचने लगा कदाचित् यह चित्र उस विदेशी के भाई का होगा और उस जाति के सब लड़का लिपटने की चेष्टा में होंगे। अतएव बौंगहुड़ उस सड़क पर जाने से बचता रहा, जहाँ से उस विदेशी की सवारी निकली थी। फिर धीरे २ चित्र के बारे में वह बिल्कुल ही भूल गया। चोवान ने उस चित्र को कागजों के मोटे २ टुकड़ों में सीकर जूते के तल्ले में मज़बूती से सी दिया।

दूसरी बार बौंगहुड़ को जो पर्चा मिला वह शहर के ही एक युवक ने उसे दिया था। वह पढ़ा लिखा काम पढ़ता था और कभी २ सड़क के चौराहों पर भाषण दिया करता था। वह उसे काम पर पर्चे सड़क पर चिल्ला २ कर बाँट रहा था। इस पर्चे में भी कुछ इसी तरह का चित्र था किन्तु इस चित्र में कोई दाढ़ी वाला व्यक्ति नहीं था बल्कि एक वर्दी का कोई सिपाही मालूम होता था। एक कमजोर, बड़े पीतले वर्दी व्यक्ति के ऊपर बैठे एक मोटे ताजे व्यक्ति का यह चित्र था, जो बार २ छुरे से उस निर्बल व्यक्ति को घायल करता हुआ दिखाई दे रहा था। इस चित्र को देखकर तथा दस्तक ढकती भी चित्र के नीचे जो कुछ छपा था उसे बौंगहुड़ बहुत कोशिश करके भी नहीं समझ सका। अतएव उसने पास से जा रहे एक व्यक्ति से चित्र का मतलब पूछा—

"क्या इस वीभत्स चित्र का मतलब आप मुझे समझा सकेंगे?"

उस व्यक्ति ने कहा "इस ओर खड़े हुए युवक का भाषण सुनकर

सुन लो, देखो यह क्या हो रहा है।"

बाँगड़ू उस युवक का भाषण ध्यान से सुनने लगा। उसने जो कुछ सुना वह पहिले कभी नहीं सुना था।

"यह एक व्यक्ति का चित्र तुम्हारा ही है" वह युवक कह रहा था, "और जो छुरा भोंक कर मार रहा है वह जमींदार और धनवान लोग हैं। ये पूँजीवादी लोग तुमको तुम्हारी मृत्यु के बाद भी मारते चले जाते थे। तुम लोग विवश हो गरीब हो इसीलिये कि ये धनवान सारी वस्तुएँ हड़प लेते हैं।"

बाँगड़ू गरीब था, यह वह जानता था, किन्तु वह अपनी गरीबी का कारण उस दैवी शक्ति को समझता था जो या तो समय पर वर्षा करती ही न थी और यदि वर्षा करती थी तो इतनी कि बाढ़ आ जाय और लोग अधिक संकटग्रस्त हो जाँय। यदि उसकी समय समय पर खेती को धूप और वर्षा का सहयोग मिलता रहे तो कोई कारण नहीं कि बाँगड़ू गरीब बना रहे। किन्तु उस युवक का भाषण वह और भी कौतूहल से सुनता रहा कि समय पर वर्षा न होने का इन धनवानों से क्या सम्बन्ध है। भाषण समाप्त हो जाने पर भी जब बाँगड़ू ने ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ पाया तो वह उतावला होकर पूछने लगा—

"साहब, क्या ये धनवान लोग ऐसा उपाय भी कर सकते हैं जिससे वर्षा हो जाय और मैं अपनी खेती पर काम करने लग सकूँ?"

इतना सुनकर वह युवक उपहास करते हुए बोला—

"तुम भी कितने मूर्ख हो! यदि वर्षा नहीं होती तो कोई भी पानी नहीं बरसा सकता। किन्तु इस बात का हम से कोई सरोकार नहीं। यदि अमीर और धनवान, जो कुछ भी उनके पास हो उसका हिस्सा हमें भी दे दें तो हम सब के पास पैसा भी हो और खाना भी। अब तो पैसा और खाना इन्हीं के पास है और गरीब लोग भूखे मरते चले जा रहे हैं।"

सुनने वाले सभी वाह-वाह करने लगे, किन्तु वाँगलुङ को कोई संतोष नहीं हुआ और वह चुपचाप लौट आया। उसकी समझ में केवल यही रहा कि पैसा न आया तो शीघ्र ही समाप्त हो जाता है अब उसके पास जमीन तो है। हाँ अवश्य खेती को समय-समय पर यदि धूप व वर्षा नहीं मिली तो फिर भुखमरी फैल जाती है। बहरहाल जो पर्चे वह युवक बाँट रहा था, वह वाँगलुङ ने चुपचाप समेट लिए क्योंकि उसे ध्यान आ गया कि ओलान कागज के टुकड़ों को जूतों के तले में सीकर मजबूत कर देती है। उसने आकर वे पर्चे ओलान के हाथों में दे दिये और कहा—

"जूतों के तलों के लिये कुछ काम बना।" वह फिर अपने काम में लग गया।

संध्या के समय फिर जब पड़ोसियों में बातचीत हुई तो मालूम हुआ कि उस युवक के भाषण को सभी ने बड़े ध्यान से सुना था। उनको समझ में आया कि अमीर और गरीब में केवल एक दीवार का अन्तर था और जब ये लोग इतनी दूर तक भारी भारी बोझ ढो सकते हैं तो वह दीवार भी आसानी से तोड़ी जा सकती है।

अब इन गरीबों की अशांति में एक अशांति और फैल गई जो इस युवक की भांति और भी कई लोग धीरे २ फैला रहे थे। झोंपड़ियों में रहने वालों के हृदय में यह भाव भर गया कि ऐसी कितनी ही वस्तुएँ हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है किन्तु वे सब दूसरों के अधिकार में हैं। ऐसे ही दिन प्रति दिन इन विचारों से आपस में बातचीत होती रहती। इधर और कड़ी मेहनत करने पर भी कोई अधिक मजदूरी नहीं मिल पाती तो इन अभागे मजदूरों के अन्दर लूट मार करने की भावनाओं का स्रोत उमड़ने लगा। ये भावनाएँ इतनी तेजी पकड़ने लगीं कि उन्हें दबाना कठिन हो गया। वाँगलुङ यह सब देखता सुनता रहता। वह इन लोगों के क्रोध को भी देखता किन्तु उसे किसी भी वस्तु की इच्छा

नहीं हुई, वह तो अपनी ज़मीन पर ही जाना चाहता था।

वाँगहुआ को इस शहर में नित प्रति एक न एक नई बात होती दिखाई देती। एक दिन ऐसे ही जो कुछ उसने देखा वह उसकी समझ में नहीं आया। जब वह सवारी की खोज में रिक्शा चलाते हुए जा रहा था तो एक के बाद एक ऐसे कई व्यक्ति पकड़ लिये गए। वाँगहुआ ने देखा कि वे सब व्यक्ति वो ही थे जो दिन भर मेहनत करके गुज़ारा कर रहे थे, इतने ही में देखते २ एक और व्यक्ति हिरासत में लिया गया। वह वही था जो वाँगहुआ की झोंपड़ी के पास अपनी झोंपड़ी में रहता था।

थोड़ी ही देर में वाँगहुआ यह भी समझ गया कि जो व्यक्ति गिरफ्तार किये जा रहे हैं उन्हें स्वयम् नहीं मालूम कि उन्हें क्यों पकड़ा जा रहा है? कहीं उसे भी न पकड़ लिया जाय इस डर से वह रिक्शा को एक ओर गली में खड़ा कर एक दुकान में जाकर बेंच के नीचे छुप गया, जब तक फ़ौजी सिपाही वहाँ से चले नहीं गए, वह वहीं पड़ा रहा। बाद में निकल कर उसने दुकानदार से पूछा कि बात क्या है? दुकानदार बड़ी बेरुखी से बोला—

"कहीं कोई लड़ाई की बातचीत होगी। कौन जानता है कि यह लड़ाई क्यों हो रही है? मेरे बचपन के समय से तो इधर-उधर के देशों में आपस में युद्ध हो रहे हैं और शायद मेरे मरने के बाद तक होते रहेंगे।"

"ठीक है, लेकिन इन्होंने मेरे पड़ोसी को ही पकड़ लिया जिसे भी मेरी तरह कुछ नहीं मालूम कि यह नई लड़ाई क्यों हो रही है।" वाँगहुआ ने बड़ी चिन्ताग्रस्त आवाज़ से कहा। दुकानदार ने फिर उत्तर दिया—

"वे सिपाही कहीं लड़ाई में भेजे रहे होंगे। उनके सामान सन्दूकें, गोला बारूद उठाने के लिये तो मजदूरों की आवश्यकता होती

है इसलिये वह तुम्हारे जैसे लोगों की धर पकड़ कर रहे हैं। लेकिन तुम कहां के रहने वाले हो? यहाँ तो ऐसा रोज ही होता रहता है।

"तो इससे क्या!" बोंगसुङ एक ही श्वास में कह गया "कितनी मजदूरी का वादा—"

दुकानदार बूढ़ा था एवं उसे इन बातों से कोई सरोकार भी नहीं था और न उसमें अधिक बात करने की शक्ति ही थी उसने लापरवाही से उत्तर दिया—

'मजदूरी कुछ नहीं मिलती दिन भर में दो सूखी रोटियों के टुकड़े दे दिये जाते हैं और जगह पर पहुँच कर काम लिया जाता है। वहाँ से यदि पैरों में शक्ति बची रह जाये तो वापिस आ सकते हो।

किन्तु उस व्यक्ति के घर वाले बोंगसुङ डरा डरा सा बोला।

ठीक है लेकिन उन्हें घर वालों की क्या परवाह?' बूढ़ा दुकानदार कहते हुए कड़ाई के खौलते पानी को उतारने लगा, उबलते पानी की भाप से उसका मुँह बिलकुल ढक गया। और वह कुछ न देख सका। इतने में दो फौजी सिपाही गलियों में से गश्त लगाते हुए उन आदमियों की तलाश में इधर से निकले जो वहाँ से भाग चुके थे।

"अभी यहीं ठहरे रहो" उसने बोंगसुङ से कहा "वे लोग फिर आ रहे हैं।"

बोंगसुङ फिर भट्टी के पीछे जाकर बेंच के नीचे छिप गया जब उन सिपाहियों के बूटों की आवाज काफी दूर हो गई तो वहां से निकला और खाली रिक्शा ले अपनी झोंपड़ी की ओर तेजी से भागा।

झोंपड़ी में पहुँचते ही हाँफते हुए उसने सोकाम को सब बताया और कहा कि किस प्रकार वह बाल बाल बचा है वर्ना तो बार्डर पर भेज दिये जाने पर क्या होता सारा परिवार बूढ़ा बाप सब तड़प-तड़प कर मर जाते और वह भी लड़ाई के मैदान में जाकर मर जाता, फिर वह

अपनी जमीन कभी नहीं देख पाता। यह सब कहते-कहते बांगाजुल डर के मारे कांपने लगा और फिर गोपाल से बोला—

"अब तो इन लड़कों को बेखबर अपनी जमीन पर जाना ही चाहिये।"

यह सब सुनकर गोपाल कुछ सोचकर बोला—

"थोड़े दिन और ठहरो। एक नवीन सी बात इधर चल रही है।"

बांगाजुल इतना डर गया था कि उसने दिन में बाहर निकलना बन्द कर दिया, अपने बड़े लड़के के हाथ किराये की रिक्शा वापस करा दी। अब वह रात को आधी मजदूरी में ही व्यापारियों के माल ढोने का काम करने लगा। रात भर माल के बक्से मालगाड़ी के डिब्बों में भरे जाते थे एक एक डिब्बे पर लगभग एक दर्जन मजदूर लगे रहते। रेशमी व सूती कपड़े और कीमती तम्बाकू से पेटियाँ भरी रहतीं। कीमती तम्बाकू की सुगन्ध पेटियों के बाहर भी महकती रहती। इसके अतिरिक्त इन पेटियों में तरह-तरह के खुशबूदार तेल व अच्छी २ शराब के कुप्पे २ जाम भी भरे रहते।

अंधेरी रातों में इस प्रकार भारी वज़न पर पेटियों को रस्से से खींचकर ढोते-ढोते बांगाजुल पसीने से तरबतर हो जाता, सुबह होते २ वह किसी तरह अपनी झोंपड़ी में पहुँच, बिना कुछ खाए पिये ही सो रहता किंतु दिन में वह झोंपड़ी के बाहर नहीं निकलता। दिन में जब फौजी सिपाही मजदूरों की खोज में फिरते तो वह आराम से अपनी झोंपड़ी में सोता रहता उसकी स्त्री ने बांगाजुल को छिपाने के लिये उसके बिस्तरे के आगे बीन बटोरकर घास फूस के ढेर भी लगा दिये थे।

यह लड़ाई कैसी थी एवं कौन-कौन आपस में लड़ रहे थे यह बांगाजुल नहीं जानता था। किंतु जैसे-जैसे दिन बढ़ते गए लोगों में आतंक और डर फैलता गया। दिन भर लोग गाड़ियों में धनीमानी

व्यक्तियों के कीमती सामान लाद लादकर जहाजों में भेजे जाते इन धनवानों की सुन्दरियों को आभूषणों से लदी हुई बाहर गाड़ियों में सवार हो नदी किनारे जाते जहाजों में भेजी जातीं। कोई जहाज से तो कोई रेल से अन्य स्थानों के लिए कूँच कर रहे थे। वांगलुङ्ग को यह सब समाचार उसके लड़कों से मिल जाया करते। लड़के आकर कहते—

"आज हमने यह देखा वह देखा एक इतना मोटा आदमी देखा जैसे कि मन्दिर में भगवान होते हैं उसके शरीर पर पीला रेशमी दुपट्टा पड़ा हुआ था अंगुलियों में अँगूठियाँ चमक रही थीं खूब खाता-पीता वह आदमी सवारी में बैठा जा रहा था। उसका सारा शरीर चिकना पड़ा था।"

दूसरा कहता मैंने इतनी-इतनी बड़ी पेटियाँ लदती हुई देखीं, जब मैंने पूछा कि इन पेटियों में क्या है तो किसी ने कहा, इनमें सोना और चाँदी भरा है लेकिन यह अमीर लोग सब कुछ नहीं ले जा सकते किसी दिन यह सब हमारा हो जायेगा। पिताजी, यह कहने का क्या मतलब होता है?" इतना कहकर आँखें खोले हुए वह लड़का अपने बाप की ओर देखने लगा।

वांगलुङ्ग ने धीरे से उत्तर दिया मुझे क्या मालूम ये बेकार लोग क्या बकते रहते हैं?" लड़का चिल्ला उठा—

"यदि यह सब माल हमारा है तो जल्दी ही भागकर ले आना चाहिए। मैं तो एक केक खाना चाहता हूँ। मैंने मीठा 'केक' अभी तक नहीं खाया।"

बूढ़ा बाप ऊँघता हुआ बोला, "एक बार जब फसल अच्छी हुई थी तो हम लोगों ने मीठे २ ऐसे 'केक' खाये थे।"

वांगलुङ्ग को भी ख्याल आया कि एक बार नये वर्ष के उत्सव में ओलान ने चावल के आटे में चीनी डालकर मीठे 'केक' बनाये थे। उसके मुँह में भी पानी आने लगा, किन्तु साथ ही उसका जी बड़ा दुखी हो

गया, क्योंकि जो कुछ उसके पास था वह अब नहीं रहा था।

"काश हम लोग अपनी ज़मीन पर वापस आ सकते होते।" वह गुनगुनाया।

सोंगछुक फिर अपने विचारों में डूब गया, सोचने लगा कि अब वह एक दिन भी इस झोंपड़ी में नहीं रहेगा—जहाँ उसके हाथ पैर पूरे नहीं फैल सकते और न वह रात में इतना भारी बोझा ही ढोएगा। अँधेरी रात में कितनी कठिनाइयाँ होती हैं उसे, भारी २ पैरियाँ उसने में ये कठिनाइयाँ भारी पड़ने से और भी बढ़ जाती हैं। वह देखिये, यह बोझा यह शायद अब किसी दिन उसके शरीर का अस्थि पंजर निकाल डालेंगे।

"आह, मेरी अच्छी और उपजाऊ ज़मीन" वह एकदम चिल्ला उठा और फूट-फूटकर रोने लगा। उसका दहाड़ मार कर रोना सुनकर बच्चे डर के मारे सहम गए व पूरे घर का चेहरा इधर उधर होने लगा, जैसे माँ को रोता हुआ बच्चे की तरफ़ निहारने लगते हैं। तब फिर ओलान ने धैर्य से धीरे से कहा—

"थोड़ा और ठहरो, सब कुछ ठीक होता है। अब ये बातें चारों ओर फैल रही हैं।"

अपनी झोंपड़ी में पड़ा सोंगछुक इन चीनी सिपाहियों के चलने की आवाज़ सुना करता। कभी २ बाहर जाकर चुपचाप उन्हें देख भी लेता। ये सिपाही बड़े-बड़े जोड़े व चमड़े के जूते पहिने रहते और उनकी आइयें भरी रहतीं। हज़ारों की संख्या में वे रोज़ आया उधर से निकलते रहते। रात में भी आते जाते समय कभी २ सड़कों की रोशनी में इन सिपाहियों की सूरतें चमक उठतीं। उसे कुछ भी उनके सम्बन्ध में पूछने का साहस नहीं होता, आते होते में पूछताछ लगा रहता। कभी समय मिलने पर आकर चावल का बोझा और फिर झोंपड़ी में मालघुम के पीछे जाकर सो रहता। इन दिनों कोई एक हमारे से अधिक

बातचीत नहीं करता था। शहर में एक प्रकार का ऐसा भय फैला रहता कि लोगों को जो कुछ काम करना होता उसे झटपट करके झोंपड़ी में घुस कर किवाड़ बन्द किया करते थे।

संध्या के समय भी अब वह लोग आपस में मिलकर कोई बात चीत नहीं करते थे। बाजारों में खाने पीने की दुकानें खाली पड़ी रहतीं और दुकानें भी दिन में इस प्रकार बन्द रहतीं कि मालूम होता मानो सब लोग सो रहे हों।

अफवाह उड़ी हुई थी कि शत्रु एक करीब आ पहुँचा है इस डर से सभी अपने माल असबाब की ओर से चिन्तित रहे आते। किन्तु बाँगडूड को ऐसा कोई डर न था और न उन झोंपड़ियों में रहने वाले अन्य व्यक्तियों को ही। उनको पहिले तो यही नहीं मालूम था कि शत्रु कौन है, इसके अतिरिक्त उनके पास कुछ ऐसा सामान ही क्या था जिस का उन्हें डर होता? उन लोगों को आग लगे जाने से भी कोई विशेष हानि की बात नहीं थी। यदि शत्रु आ रहा है तो भले ही आ जाय, इससे अधिक वे और गरीबी के दिन ला ही नहीं सकते थे। यही सोचकर सब अपने काम काज में लगे रहते। कोई एक दूसरे से खुल कर बात भी नहीं करता था।

दो चार दिन में ही व्यापारियों के व्यवस्थापकों ने कुली मजदूरों से कह दिया कि अब उन लोगों के आने की कोई आवश्यकता नहीं रह गई क्योंकि इन दिनों खरीद फरोख्त करने वाले कोई नहीं आते थे अतएव बाँगडूड अपनी झोंपड़ी में ही दिन रात बेकार पड़ा रहता। पहिले तो बाँगडूड को थोड़ी प्रसन्नता हुई क्योंकि अब उसके शरीर को पूरा आराम मिल रहा था वह अब खूब आनन्द से सोता रहता था, किन्तु उसका काम रुक जाने से आमदनी बन्द होने का पूरा डर था, इसलिए फिर वह इस सोच विचार में पड़ गया कि कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। इस मुसीबत में एक और मुसीबत पड़ गई कि

गरीबों को जहाँ मुफ्त खाना पीना मिलता था वे सार्वजनिक रसोईघर भी बन्द हो गए थे, सड़क पर चलने वाले भी न रहे, अतएव भीख मिलने की भी आशा जाती रही।

तब एक दिन वांगलुङ अपनी छोटी लड़की को गोद में लेकर उसी से बातें करने लगा,—

"बच्ची क्या तुम किसी बड़े रईस घराने में जाना चाहोगी जहाँ तुम्हें अच्छी तरह खाना पीना मिल सके जहाँ तुम्हें पहिनने को भी वस्त्र मिल सकें ?"

बच्ची मुस्करा उठी और हाथ बढ़ाकर वांगलुङ की ओर किलकारियाँ भरने लगी। वांगलुङ अचानक अपनी स्त्री की ओर देख फिर कर पूछने लगा—

"सच बताओ क्या तुम्हें उस बड़े घर में मारा पीटा भी जाता था ?"

उसने साफ २ शब्दों में कहा—

'नित्य प्रति मार पड़ती थी।'

वांगलुङ ने फिर पूछा—

'लेकिन क्या मार चमड़े के कोड़ों से ही पड़ती थी या बाँस के डंडों से या रस्से से पड़ती थी ?"

"चमड़े का हंटर रसोई के पास टंगा रहता था और उसी हंटर से मैं पीटी जाती थी।'

वांगलुङ समझ गया कि उसकी स्त्री ने मन की बात जान ली है उसने एक बार फिर एक आशा से पूछा—

'यह हमारी लड़की तो अभी से इतनी सुन्दर है बड़ी होकर तो इसका सौन्दर्य और भी निखर आयेगा। क्या सुन्दर नौकरानियों को भी पीटा जाता था ?"

अचानक एक तेज धमाके की आवाज सुनाई दी और झोंपड़ी

१५

कुछ दिन ऐसे ही व्यतीत हो गए, लेकिन वाँगलुङ को यही प्रतीत होता गया, मानो वह अपनी जमीन अपने पैरों से कभी अलग न हुआ हो, यह स्वाभाविक ही था क्योंकि हृदय तो उसका बराबर वहीं रहा था। सोने की तीन मुहरों से उसने गेहूँ, चावल व अन्य अनाज के ऐसे बीज खरीदे जो उसने पहले कभी नहीं बोये थे। अपने तालाब के लिए उसने कमल की डंडियाँ खरीदीं व [illegible] मटर, सेम के भी बीज खरीद लिए।

पाँच मोहरों से एक किसान से उसने एक बैल हल चलाने के लिए खरीदा। यह बैल उसने रास्ते में ही एक किसान से जो हल चला रहा था खरीदा क्योंकि उसकी कन्धी मजबूत गर्दन से वह इतना रीझ गया था कि कोई भी कीमत देने को तैयार था। उसे खरीदने के लिए उसने कुछ चालाकी भी दिखाई, किसान से वह बोला—

"यह बैल तो किसी काम का नहीं! तुम इसे किस भाव में बेच सकोगे मेरे पास कोई जानवर नहीं है और मुझे आवश्यकता है।"

किसान ने उत्तर दिया—

"इस बैल की उम्र केवल तीन वर्ष की है। मैं अपनी बीवी को बेच सकता हूँ किन्तु यह तो नहीं बेचूँगा," और वह हल चलाता गया वाँगलुङ की बात पर ठहरा नहीं।

वाँगलुङ अपनी बात पर अड़ गया और अपनों की ओर से पिता की ओर देखकर कहने लगा—

इस बैल के बारे में क्या राय है ?"

बूढ़ा बोल उठा "जानवर तो अच्छा मालूम देता है।"

ओलान ने कहा, 'इसकी उम्र एक साल अधिक जान पड़ती है।'

वाँगलुङ ने कोई उत्तर नहीं दिया वह तो उसे खरीदने को आतुर था अतएव किसान के पास जाकर बोला—

मैं तुम्हें दूसरा बैल खरीदने के लिए काफी कीमत दे सकता हूँ इसे मैं खरीदूँगा अवश्य।"

आखिर थोड़ी बहुत हुज्जत के बाद भाव तय हो गया, वाँगलुङ को अब कीमत की कोई फिक्र तो थी नहीं उसने मुट्ठीभर मोहरें किसान के हाथ में थमा दीं। किसान ने हल में से बैल खोल दिया और वाँगलुङ बड़े प्रसन्न हृदय से रस्सी से बाँध बैल को खींच ले चला।

जब वे लोग अपने मकान पर पहुँचे तो देखा कि दरवाजा तोड़ दिया गया है, छत भी उड़ गई है, दीवारें भी वर्षा व मेह से भीगकर कमजोर पड़ गई हैं। वाँगलुङ को पहले तो कुछ आश्चर्य हुआ किन्तु यहाँ पहुँचने की इतनी प्रसन्नता थी कि उसे यह सब देखकर कोई दुःख नहीं हुआ। वही बाजार जाकर वह मकान की मरम्मत के लिए घासफूस व बल्लियाँ खरीद लाया।

सन्ध्या के समय वह दरवाजे पर खड़े होकर अपनी जमीन की ओर देखता रहा। सर्दी व बारिश से जमीन आप से आप नम पड़ चुकी थी पेड़ों पर पत्तियाँ निकल आई थीं व जगह २ हरियाली सी दिखाई दे रही थी। यह सब देखते २ वाँगलुङ इतना मुग्ध हो गया कि वह अब किसी मनुष्य को नहीं देखना चाहता था। गाँव में वह किसी से मिलने नहीं गया, जो कोई लोग उससे मिलने स्वयं यहाँ आए, उनसे

ओर भी उसने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, तब पर झल्ला कर उसने पूछना आरम्भ किया—

"किसने यह दरवाजे और किसने मेरे छप्पर की बाड़ तोड़ उजाड़ी है?"

सब लोगों ने केवल सर हिला दिये, एक ने कहा—"यह सब तुम्हारे चाचा की करामात है।' तो दूसरा बोला, 'यहाँ तो डाकू लुटेरों ने अड्डा बना लिया था यह नहीं कहा जा सकता कि किसने यह सब नुकसान किया है। भुखमरी से तंग आकर कोई भी व्यक्ति चोर डाकू बन सकता है।"

इतनी ही देर में उसका पुराना पड़ोसी चिन अपने घर से किसी प्रकार रेंगता हुआ वहाँ आ पहुँचा और कहने लगा—

"सर्दियों भर तुम्हारे इस मकान में चोरों का एक गिरोह रहा था उन लोगों ने हर तरह से गाँव को लूटा। तुम्हारे चाचा को अधिक जानकारी होगी। अकाल के समय में यह नहीं कहा जा सकता कि कौन लूटता है और कौन लुटा, वास्तव में किसी को भी दोष देने का साहस नहीं कर सकता।"

चिन की शारीरिक दशा बहुत ही खराब थी, हड्डियों का ढाँचा भर रह गया था, बाल सफेद हो चुके थे यद्यपि अभी पैंतालीस की भी नहीं थी। वांगलुंग उसे देखकर दया और सहानुभूति से पसीज गया और एकाएक बोल उठा—

"तुम्हारी दशा तो हम लोगों से भी कहीं अधिक गई बीती हो गई है क्या खाया है तुमने?"

चिन ने एक लम्बी दर्दभरी आह भरी और कहा—

"क्या नहीं खाया है मैंने! सड़कों पर घूम फिर कर भीख माँगी है मरे हुए कुत्तों का माँस खाया है मरने से पहले मेरी स्त्री ने कोई माँस पका कर भी खिलाया था, किन्तु मेरी हिम्मत यह पूछने की नहीं

हुई कि किसका माँस था। चो में स्वयं कोई शक्ति नहीं रह गई थी मतलब जो कुछ भी इसने खाया होगा वह कहीं पड़े हुए माँस के टुकड़े ही होंगे। इसके मरने के बाद अपनी लड़की को मैंने एक सिपाही के हाथ बेच दिया क्योंकि मैं उसे भूखा मरता नहीं देख सका" इतना कह कर वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला — 'यदि मुझे कुछ बीज मिल जाते तो मैं अपनी जमीन फिर बोय देता, लेकिन मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

'इधर आयो" कह कर वांगलुङ ने हाथ पकड़ कर चिंग को घसीट लिया और अन्दर कमरे में ले जाकर अपने बीजों में से बीज निकाल कर उसके कपड़े में भर दिये। गेहूँ चावल व गोभी के बीज देता हुआ वांगलुङ बोला—

'कल मैं आऊँगा और अपने बैल से तुम्हारी जमीन पर स्वयं हल चलाऊँगा।"

चिंग फूट-फूट कर रोने लगा, वांगलुङ की आँखें भी भर आईं और बोला, "क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे उस उपकार को भूल गया हूँ जब तुमने थोड़े से मटर के दाने मेरे गाढ़े समय पर दिये थे?" किन्तु चिंग कोई उत्तर नहीं दे सका वहाँ से चल दिया और रोता ही रहा।

वांगलुङ को यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि उसका चाचा उस गाँव से चला गया था। कहाँ चला गया यह कोई ठीक-ठीक नहीं बता सका। किसी ने कहा कि वह शहर में रहने लगा है या कोई बोला कि वह तो अपनी स्त्री व लड़के सहित कहीं बहुत दूर चला गया है। लड़कियों को वह एक एक कर के बेच गया उसकी वह कुरूप चेचक के दाग वाली लड़की भी एक सिपाही के हाथ एक पैसे में बिक गई।

वांगलुङ फिर अपनी जमीन पर जुट गया और अधिक से अधिक समय वहीं परिश्रम करने लगा, यहाँ तक कि खाने और सोने की भी उसे कोई चिन्ता नहीं रही। अधिकतर अपना खाना वह खेत पर ही ले जाता और वहीं किनारों में बैठ कर खा लेता, 'यहाँ मटर लगा-

ऊँचा और वहाँ बादल की क्यारियाँ बनेंगी।" कह चुकने पर दिन में प्रातः वह वहीं किसी झाड़ी के सहारे थोड़ी देर सो बैठा।

इधर ओलान भी अपने घर में खाली नहीं बैठी। धीरे धीरे मिट्टी में घास फूस मिलाकर वह मकान की दीवारें ठीक करती रही। फर्श की फटी हुई दरारों को भी उसने स्वयं मेहनत करके भर दिया, रसोईघर में नई अलमारी व अन्य आवश्यक वस्तुओं का संग्रह भी उसने अपने आप कर लिया।

इसके बाद एक दिन वाँगलुङ के साथ जाकर बाजार से वह एक मेज, चारपाइयाँ, व बेंच व एक लोहे का चूल्हा भी खरीद लाई। मिट्टी की एक सुन्दर फूलों से भरी हुई चायदानी और उसी के साथ के छः प्याले भी उसने खरीद लिए। यह सब खरीदने के पश्चात् उसने बीच के कमरे को सजाने के लिए कागज की बनी हुई भगवान की मूर्ति भी खरीदी। मोमबत्तियाँ व धूपबत्ती और सुगन्धित अगरबत्तियाँ भी खरीदीं। वाँगलुङ को मन्दिर की पुरानी मिट्टी की मूर्तियों का ध्यान हो आया। पर लौटते समय वे लोग जब उस मन्दिर में जाकर झाँके तो उन मूर्तियों की बड़ी बुरी दशा दिखाई दी, मेह के पानी से मिट्टी के बने वह धुल चुके थे। पिछले वर्षों के इतने लम्बे समय में किसी ने भी इस मन्दिर की ओर कोई ध्यान नहीं दिया था। वाँगलुङ उन मूर्तियों की ओर देखते हुए बड़ा दुःखी हुआ किन्तु फिर भी उससे यह कहे बिना न रहा गया, "जो मनुष्यों की दशा इतनी बुरी कर देते हैं उनके भगवान की भी ऐसी दशा हो जानी स्वाभाविक ही है।"

धीरे-धीरे घर को ठीक किया गया, मोमबत्तियों का प्रकाश होने से सभी वस्तुएँ चमकने लगीं। चायदानी व प्याले मेज पर सजा दिये गए, चारपाइयों पर बिस्तर लग गए, कमरे की दीवारों पर रंगीन कागज चिपका दिये गए, नया दरवाजा भी लग गया, तब वाँगलुङ को थोड़ा चैन मिला, किन्तु इस चैन में कमी डर सा लगने लगा। चावल का पेड़

फिर बढ़ रहा था, बल्कि इधर उधर लांघते गिरते पड़ते थे और वाँगचुक का बूढ़ा पिता दरवाजे पर बैठा २ प्रसन्न मुद्रा में झूमता रहता था, खेत में धानों की छोटी २ पौद भी उग आई थी मटर भी उठ आई थी। फसल पक जाने के लिए काफी मोहरें बची हुई थीं अतएव और कोई चिन्ता भी नहीं रह गई थी। एक दिन ऊपर नीले आकाश में बादलों की घुमेड़ देखकर वाँगचुक को ऐसा आभास हुआ कि अब की बार खेत में होने वाली फसल को धूप और पानी यथेष्ट मात्रा में मिल सकेगा और वह मनसे आप बोल पड़ा

"मंदिर में उन छोटी २ मूर्तियों के सामने मुझे धूपदान अवश्य रखना चाहिये, आखिर जमीन पर फसल पैदा करने की शक्ति उनमें ही ती है।'

१६

एक रात सोते समय चौंगलुक को अपनी स्त्री का खोया कोष में न कुछ बंधा हुआ दिखाई दिया तो उसने पूछा—

'यह तुम्हारे क्या हो रहा है ?'

चौंगलुक ने हाथ लगाकर देखा उसे कड़ी वस्तु कपड़े में छिपी हुई दिखाई दी । स्त्री पहिले तो एक झटका सा देकर पीछे हट गई किन्तु फिर उसने कहा—

'यदि देखना चाहते हो तो देख ही लो, चौंगलुक ने जैसे ही कपड़े की गांठ खोली तो उसके हाथ में हीरे जवाहरात गिर पड़े और वह आश्चर्यचकित रह गया । इसने प्रकार के रत्न तो उसने कभी स्वप्न में भी नहीं देखे थे कोई लाल रंग का था तो कोई सुनहरा व कोई हरा । इन हीरों का किस नाम से पुकारे यह बात भी चौंगलुक के ज्ञान से परे थी । वह तो केवल इतना ही समझ पाया कि उसके हाथ में रत्नों का खजाना पड़ा । हक्काबक्का सा वह अपनी स्त्री को मात्र देखता ही रह गया ।

"कहाँ से   कहाँ से   "

'उस अमीर के घर से । वहाँ अवश्य ही कोई बड़ा खजाना रहा होगा । उस घर की दीवाल में एक ओर ईंट कुछ बाहर सी निकली हुई थी कि मैंने ईंट को बाहर निकाल कर जब हाथ अन्दर किया तो मेरे हाथ में यह सब हीरे आ पड़े ।"

"तो तुम्हें तुमने कैसे जाना ?" एक प्रशंसा के भाव से वह बोला। स्त्री ने मुस्कराते हुए कहा—

"क्या तुम समझते हो कि मैं किसी राज्य घराने में रही नहीं हूँ। अमीर लोग सदैव ही डरपोक होते हैं। एक बार नवाब के घर में डाकुओं का गिरोह जब धावा था तो उस घर की स्त्रियों ने एक-एक ईंट खिसका कर वहीं अपने हीरे व अन्य आभूषण रख दिये थे। तभी से यदि मुझे कहीं दीवार में कोई खोखली ईंट दिखाई देती है तो सब कुछ समझ जाती हूँ।"

इसके बाद बहुत देर तक वे दोनों चुप रहे। वांगलुङ फिर बोला—

"किसी को ऐसा खजाना अपने पास रखना नहीं चाहिये। इन्हें बेच कर जो रकम हाथ लगे उसे सावधानी से ही लगाना पड़ेगा। आज कल जमीन से अधिक सुरक्षित और कुछ नहीं है। यदि किसी को जरा भी पता लग जाय तो दूसरे दिन हम लोग मरे हुए ही पाये जायेंगे। आज ही जमीन खरीद लेनी चाहिये।" इतना कह कर वांगलुङ ने फिर उन हीरों को कागज में लपेट कर रख दिया किन्तु अपनी स्त्री की ओर देखा तो उसे ज्ञात हुआ कि वह कुछ कहना चाहती है।

"कहो, क्या बात है ?" उसने अपनी स्त्री से पूछा।

"क्या सभी हीरे बेच दोगे ?" स्त्री ने रूखी आवाज में पूछा।

"क्यों नहीं ? हम किसी के घर में इतना खजाना रखना खतरे से बाहर नहीं।"

"मैं चाहती हूँ कि कम से कम इनमें से दो तो अपने पास रख लूँ।" ओ-लान ने इतने भाव से कहा जैसे कोई छोटा बालक किसी सुन्दर खिलौने के लिये अपनी इच्छा दिखाता है।

वह फिर बोली—"चाहे कोई छोटे से छोटे दो रख लो—मोती ही

सही। मैं केवल अपने पास रखूँगी, पहिनूँगी नहीं। हाँ, कभी २ हाथों में रख कर देख ही लिया करूँगी।

वांगलुङ चुपचाप राजी हो गया और उसकी स्त्री ने रत्नों के उस ढेर में से दो मोती निकाल लिए। बाकी आभूषणों को ले उसने प्राचीन परिवार के घराने में जाकर उन चीजों को जमीन खरीदने का विचार ठान लिया।

उस बड़े घर के पास जब वह पहुँचा तो उसे सब कुछ उजड़ा सा दिखाई दिया। फाटक पर कोई चौकीदार न था और उसमें अन्दर से ताले लगे हुए थे। वांगलुङ उस फाटक को जोर २ से खटखटाने लगा। सड़क पर चलने वालों ने कहा—

"*तुम खटखटाते जाओ, वह बुड्ढा रईस यदि जगा रहा होगा* तो खोल देगा अथवा उसकी कोई रखेली जगी होगी तो शायद वही आ जाय।"

थोड़ी देर में वांगलुङ ने किसी के आने की आवाज सुनी।

"कौन है?"

"मैं हूँ, वांगलुङ। वह जोर से बोला—यह कौन कमबख्त वांगलुङ है।

वांगलुङ आवाज से समझ गया कि यह अवश्य ही उस बड़े रईस की ही आवाज है क्योंकि उसे ही इस प्रकार गाली दे देकर अपने नौकरों को बुलाने की आदत थी।'

"साहब मालिक मैं आपको कोई कष्ट नहीं देना चाहता, आपके किसी आदमी से ही कुछ व्यापार की बात कर लूँगा।" वांगलुङ ने कहा।

इतने पर भी उस बुड्ढे ने किवाड़ खोले बिना ही अन्दर से कहा—"वह कमबख्त तो कभी का यहाँ से चला गया, यहाँ कोई नहीं है।

वांगलुङ को कुछ समझ नहीं पड़ा कि अब क्या करे। मालिक से ही सीधी बात करना वह उचित नहीं समझता। कुछ हिचकिचाते हुए वह बोला—

"कुछ रुपये की बात करनी है।"

मालिक ने शीघ्र ही किवाड़ों को बन्द कर दिया और जोर से चिल्लाया—"अब इस घर में कोई रुपया पैसा नहीं रहा। सब आदमी लूट कर ले गये, वे सब मर जायें उनके घर वाले मर जायँ। अब कोई उधार नहीं चुकाया जा सकता।'

'नहीं नहीं' वांगलुङ शीघ्रता से बोला—'मैं तो रुपया देने आया हूँ, लेने नहीं।'

इतने में ही एक स्त्री की आवाज़ उसे सुनाई पड़ी—'ऐसी बात तो बहुत दिनों से नहीं सुनी।" एक सुन्दर स्त्री ने किवाड़ों को खोलते हुए कहा—"अन्दर आ जाओ।" वांगलुङ के अन्दर घुसते ही किवाड़ फिर बन्द हो गए।

वांगलुङ ने उस रईस मालिक को बड़ी दयनीय दशा में देखा। एक ओर पड़ा हुआ वह काँप रहा था, उसका साटन का गाउन मैला हो रहा था और वह बूढ़ा अपनी दशा में कुछ भयभीत सा दिखाई दे रहा था। उधर दूसरी ओर वह स्त्री साफ सुथरी दिखाई दे रही थी। बड़ी सुडौल नाक, चमकीली बड़ी आँखें सुर्ख होंठ और भरे हुए गालों से बड़ी सुन्दर दिखाई देती थी। किन्तु उसकी बातचीत व चाल चतुर लौंडी की ही है। घर में जहाँ नौकर-नौकरानियों की भरमार रहती थी वहाँ अब केवल इन दोनों के सिवाय और कोई दिखाई नहीं दे रहा था।

स्त्री ने बाहर आकर रुपये पैसे की बातचीत की ओर वांगलुङ का ध्यान आकर्षित किया, किंतु वांगलुङ कुछ झिझक रहा था। मालिक

के सामने वह कोई बात नहीं करना चाहता था। यह बात वह स्त्री समझ गई और उसने बूढ़े से वहाँ से चले जाने के लिये कहा। बूढ़ा मालिक बिना कुछ कहे हुए खाँसता हुआ वहाँ से चला गया। अब वांगलुङ्ग की समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे क्या न कहे। आखिर उसने ही सकुचाकर पूछा—

"बताओ कौन से काम की बात है? यदि तुम्हारे पास रुपया है तो दिखाओ।"

वांगलुङ्ग ने कुछ हँसकर कहा—"नहीं तो मैंने यह नहीं कहा था कि मेरे पास रुपए हैं। मुझे तो कुछ काम था।"

"काम के सामने रुपये के हैं?" स्त्री ने उत्तर दिया—"रुपया इस घर में सब आना ही चाहिये क्योंकि यहाँ अब कुछ बचा नहीं है।"

"अच्छा! किन्तु मैं इस सम्बन्ध में स्त्री से कोई बात नहीं करना चाहता।"

"क्यों नहीं? तुमने सुना नहीं कि यहाँ मेरे व मालिक के अतिरिक्त और कोई नहीं है!"

"और सब कहाँ गये?" वांगलुङ्ग कुछ आश्चर्य से बोला।

"मालकिन तो मर गई" वो बोली—"क्या तुमने ऐसी कोई खबर नहीं सुनी? एक बार चोर डाकू घुस आये और यहाँ का सब माल असबाब उठाकर ले गये। बूढ़े मालिक का एक बार बाँध कर टाँग दिया और मालकिन तो अफीम के नशे में तो रहती ही थीं उन्हें भी कुर्सी सहित बाँधकर डाल दिया, वह तो डर के मारे ही मर गई।"

"नौकर-नौकरानियों और चौकीदारों का क्या हुआ?"

"वे लोग तो सब पहिले ही चले गए थे, पिछली सर्दियों में जब भुखमरी से लोग मरने लगे और किसी के पास भी पैसा नहीं बचा तो यहाँ के नौकर चाकर भी चलते बने। बहुत से नौकर तो डाकुओं के गिरोह में ही मिल गए और उन्होंने ही सारा घर लुटवा दिया।"

"लड़के लोग कहाँ गए ?"

"वे सब भी इधर उधर चले गए। इतना अच्छा हुआ कि लड़कियों का विवाह पहिले ही हो गया था। मेरे लड़के ने बाप को ले जाने के लिए आदमी भी भेजे लेकिन मैंने उन्हें नहीं जाने दिया।"

वांगलुंग सब कुछ समझ गया और कहने लगा—"तुमसे काम की बात मैं कैसे कर सकता हूँ ?"

वह जोर से बोली "बूढ़ा मालिक जो कुछ मैं कहूँगी राजी हो जायगा।"

वांगलुंग ने सोचा, कि कहीं और लोग तो इन लोगों की खोज में हालकर जमीन खरीद कर न ले जायँ और पूछने लगा "कितनी जमीन बची है ?"

"यदि तुम जमीन खरीदने आए हो तो जमीन है। इस मकान के पश्चिम की ओर सौ एकड़ व दक्षिण की ओर सौ एकड़ जमीन है जो बिक सकती है।"

वांगलुंग को एकाएक कुछ विश्वास नहीं हुआ किन्तु फिर भी पूछा, "शायद अपने लड़कों से पूछे बिना मालिक जमीन न बेचें ?"

"लड़कों ने तो पहिले ही कह रखा है कि मालिक जो चाहें बेच सकते हैं। यहाँ कोई रहना नहीं चाहता क्योंकि यहाँ अकाल के समय चोर डाकुओं का जोर अधिक है। अतएव वे चाहते हैं कि यह सब कुछ बेचकर रुपया बाँट लिया जाय।"

"रुपया किसे देना होगा ?"

"मालिक को और किसे ?" स्त्री ने शीघ्रता से कुछ रूखे शब्द कहा।

वांगलुंग फिर किसी दिन आने को कहकर वहाँ से चल पड़ा किन्तु वह स्त्री सड़क तक उसके पीछे-पीछे गई और कहा—कल इसी समय आ जाना अथवा किसी भी समय आ जाने से काम बन जायगा।

वौंगलुग बिना कुछ कहे सुने चल दिया और बाजार में एक दूकान पर जाकर चाय पीने लगा। चाय पीते २ उसने सोचा कि उसके लड़के अब बड़े हो रहे हैं उनका पढ़ना बन्द कराके उन्हें भी खेत के काम में डालना आवश्यक होगा। इधर इतनी भारी रकम के हीरे उसके पास रखे थे और उसे कुछ घबराहट सी हो गयी थी। वह चाहता था कि शीघ्र ही इन हीरों को जमीन से बदल लिया जाय। इतने में चाय वाला जब कुछ खाली दिखाई दिया तो उसने चाय वाले को बुलाकर कहा—

"इधर आओ और मेरे खर्चे से तुम भी एक प्याला चाय पीकर यहाँ के कुछ समाचार सुनाओ। इधर मैं बहुत दिनों बाद आया हूँ।"

चाय वाला तो ऐसी बातों के लिए सदैव ही तैयार था, वह एक प्याला चाय लेकर वहीं पर आ गया और कहने लगा—

'यहाँ के लोगों में भुखमरी इतनी अधिक फैली, वह तो आप जानते ही होंगे। इसके अतिरिक्त विशेष समाचार यह है कि ह्वांग परिवार का सारा घर लुट गया।"

वौंगलुग इसी घर के बारे में सुनना चाहता था। चाय वाला उसे सब कुछ बता रहा था कि किस प्रकार उस घर में लूटमार हुई व वहाँ की औरतों से कैसा व्यवहार डाकुओं ने किया। अब उस बूढ़े मालिक के साथ केवल एक लौंडी बची है। उसका नाम कुक्कू है और वह बूढ़ा उसी के कहने में चलता है।

वौंगलुग ने चाय वाले से पूछा कि उस घराने की कोई जमीन भी बची है कि नहीं।

चाय वाले ने उत्तर दिया कि जमीन है और बिकने वाली है। वौंगलुग इतना सुन कर उसी समय फिर उस स्त्री के पास पहुँचा और कहा—

"अब बताओ कि इस ज़मीन की बिक्री की रसीदों पर जो मालिक स्वयं ही दस्तख़त करेंगे?"

"अवश्य वही दस्तख़त करेंगे—" माँ ने उत्तर दिया।

"ज़मीन के बदले में पाया, चाँदी का ढेर क्या होगी?" इस की आँखें अचानक चमक उठीं और वह तड़प कर बोली—

"मैं इस ज़मीन को हीरों के बदले में बेचूँगी।"

१७

अब वांगलुङ के पास यथेष्ट भूमि हो जाने से फसल अच्छी होने लगी। एक बैल के बस के बाहर काम हो गया तो एक नया और खरीद लिया गया। मकान में एक कमरा और बन गया। काम बढ़ जाने से और आदमियों की आवश्यकता हुई, अतएव उसने एक दिन अपने पड़ोसी चिंग को बुलाकर कहा कि वह अपनी जमीन भी उसे दे दे और उसके बदले में वांगलुङ के यहाँ रहकर कुछ काम करे व खाना पीना पाए। चिंग बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने वांगलुङ का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

इस वर्ष वर्षा समय पर हुई और यथेष्ट मात्रा में हुई। धान बहुत हुआ, गेहूँ की फसल भी बहुत हुई। फसल काटने के लिये और दो मजदूर रख लिये गए।

अब परिवार के बच्चों की ओर वांगलुङ का ध्यान चला गया तो उसने सोचा कि अपने बच्चों को बिगड़ने से बचाना होगा और उसका उपाय यही है कि उनको भी खेत के काम में लगा दिया जाय। खेत में कितनी मेहनत पड़ती है शरीर को कितनी गर्मी झेलनी पड़ती है इसका अनुभव उन्हें भी होना चाहिये। यह सब सोच विचार कर उसने अपने दोनों लड़कों को खेत के काम में लगा दिया।

अपनी स्त्री ओलान के लिये अलबत्ता वांगलुङ ने अब यह पसंद नहीं किया कि वह भी खेत पर जाकर पहले की तरह काम करे। अब

वह निबल तो था नहीं, और भी आदमी काम के लिए रख सकता था। इस वर्ष जितनी पैदावार हुई थी, उतनी पहिले कभी नहीं हुई यहाँ तक कि भरी हुई फसल को रखने के लिये उसे और भी कमरे बनवाने पड़े। बिखरा हुआ नाज भी किसी काम आ जाय इसलिए उसने तीन सुअर व ढेर सारी मुर्गियाँ भी खरीद डालीं।

ओलान का कार्य अब केवल घर को सजाना व बच्चों के कपड़े लत्तों का प्रबन्ध करना हो रह गया था, जिसे वह बड़े चाव से करती रहती। पहिनने के कपड़े व बिस्तर पर बिछाने के कपड़ों का अच्छा सामान उसने जमा कर लिया। इसके अतिरिक्त इस बार एक साथ दो बालकों (एक लड़का व एक लड़की) को भी उसने जन्म दिया था। हाँ, प्रसव काल में इस बार भी उसने किसी की सहायता न ली थी। अपने आप ही सारा काम निपटा लिया। वांगलुङ को भी पता तब चला जब वह सन्ध्या समय शहर से घर लौटा। उसके पिता ने प्रसन्न मुद्रा में एक हास्य उत्पन्न करते हुए कहा "इस बार तो एक कपड़े में से ही दो बच्चे फूट निकले हैं।"

वांगलुङ भी प्रसन्न होकर अन्दर कमरे में गया, उन दोनों सुन्दर बालकों को देखकर उसने भी ये कहा "शायद इसीलिए तुमने दो मोतियों को अपनी छाती से चिपटा रखा था।" इतना कह कर अब वह फिर खुलकर हँसा तो अपने पति की इस प्रसन्नता में ओलान के होंठ भी एक मीठी मुस्कराहट से खिल उठे।

वांगलुङ को अब और किसी बात का तो कोई दुःख न था केवल एक बात से वह कभी-कभी उदास हो जाता था। उसकी पहली लड़की जो अब बड़ी हो चली थी कुछ बोलती न थी। उसके मुँह से अभी भी कोई शब्द नहीं निकल पाये थे। उसके बचपन में भीषण दुर्भिक्ष जो पड़ा था कदाचित उसका प्रभाव रहा हो अथवा कोई और बात हो। वह सुन्दर लड़की केवल मुस्करा भर रह जाती थी। वांगलुङ

पास ही आ सकता हूँ।" चौंगहु ग इस बच्चे के हठ से बचना चाहता था। उसने दोनों को पढ़ने के लिये कह दिया।

चौंगहु ग ने बच्चों की माँ से उनके स्कूल के कपड़ों इत्यादि का प्रबन्ध करने को कहा और स्वयं बाजार जाकर पढ़ने की पुस्तकें लिखने के लिये स्लेट कलम पैंसिल कागज कापी आदि ले आया। शहर के बड़े फाटक के पास जो एक पुराना स्कूल था वहाँ लड़कों के पढ़ाने का निश्चय कर लिया। घर के एक कमरे में पढ़ने के लिए मेज कुर्सी बेंच आदि की व्यवस्था कर दी। उस स्कूल का मास्टर एक बूढ़ा था किन्तु बड़ी सख्ती से बच्चों को पढ़ाता था। विद्यार्थियों को गर्मी के दिनों में ही मास्टर जी से कुछ फुर्सत मिल जाती थी क्योंकि बूढ़े मास्टर जी को पढ़ाते पढ़ाते झपकियाँ आ जाती थीं और वह नींद में जोर जोर से खुर्राटे भर लेते थे। लड़के इस बीच सारी शैतानियाँ कर डालते, कोई शोर मचाता तो कोई कागज पेंसिल लेकर एक दूसरे की तस्वीरें खींचता रहता। लड़के इतने चतुर थे कि मास्टर जी की नींद खुलने से पहिले ही चौकन्ने हो जाते और इस प्रकार मास्टर जी को बच्चों की शैतानियों का जरा भी मालूम नहीं होता और वे फिर उन्हें पढ़ाने में व्यस्त हो जाते। पड़ोसियों से भी चौंगहु ग ने इस स्कूल व मास्टर जी की प्रशंसा सुन रखी थी।

पहिले दिन जब चौंगहु ग बच्चों को लेकर स्कूल गया तो वह बराबर गम्भीर रहा आया बच्चों के आगे आगे वह चला रास्ते में कुछ फल व पान के बीड़े बाँध कर मास्टर जी के लिये ले चला। मास्टर जी के पास जाकर झुक कर बड़े आदर से वह बोला—

"श्रीमान्, ये मेरे दो लड़के बड़े शैतान हैं, इनकी खोपड़ी में जरा भी अकल नहीं है। कृपा कर इनको मार मार कर पढ़ाना ताकि कुछ सीख जाँय।

स्कूल में बच्चों को दाखिल करा कर जब चौंगहु ग घर पहुँचा तो उसे एक प्रकार का गर्व हुआ कि उसके लड़के भी अब पढ़ लिख कर

होशियार हो जायेंगे और इस घर का भाग्य चमक उठेगा। मार्ग में जब एक परिचित से उसकी भेंट हुई तो वह अपने आप बोल पड़ा—"मैं अभी २ बच्चों को स्कूल में दाखिल कराकर चला आ रहा हूँ। अब मुझे खेतों में काम करने के लिए उनकी आवश्यकता नहीं है। अब तो वे जितना चाहें पढ़ लें।" आगे चल कर वह अपने आप ही सोचने लगा कि यदि बड़ा लड़का पढ़ लिख कर कोई बड़ा आदमी हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

उस दिन से बच्चों को छोटे बड़े कह कर पुकारना भी छोड़ दिया गया। स्कूल के मास्टर ने वॉन्ग लुंग के कथनानुसार आदि की जानकारी लेकर, बच्चों के नाम रख दिये। बड़े का नाम नुंग एन व छोटे का नाम नुंग वेन रक्खा गया।

—

: १८ :

वाँगलुङ ने अपने परिवार के लिए सुरक्षित मकान तो बनवा ही लिया था और अब कहीं से कोई चिन्ता की बात नहीं थी। सात वर्ष से निरन्तर अन्नोत्पादन करके वह पूर्ण रूप से निश्चिन्त था। सातवें वर्ष जब सभी नदियों में बाढ़ आने का प्रकोप हुआ और उसके खेतों में अधिक खेत पानी में डूब रहे तो भी वाँगलुङ को किसी प्रकार की चिन्ता न हुई।

वसन्त और इसके बाद गर्मियाँ भी आ गईं किन्तु नदियों व खेतों में पानी भरा ही रहा। जिधर देखो उधर अथाह जल से सारा प्रदेश एक विशाल सागर सा ही दिखाई देता था। पानी के इस प्रकोप से कितने ही मकान गिर गए और वहाँ के कितने ही निवासी कहीं के चले गए। वाँगलुङ का मकान पहाड़ी पर बना होने के कारण वैसे का वैसा ही बना रहा। वाँगलुङ को अब भी कोई चिन्ता नहीं व्यापी। बाजार वाले सभी गोदामों पर उसका रुपया चाहिये था और नाज से कितने ही गोदाम भरे हुए थे।

इस बाढ़ के कारण लोगों का कुछ काम नहीं हो सकता था और प्रायः सभी लोग खाली ही बैठे रहते थे। वाँगलुङ को भी केवल खाना और सोना ही रह गया था जो कुछ काम था भी उसके लिए उसके पास मजदूर थे। इन मजदूरों को भी काफी समय मिल जाता था। इस

समय में उसने मकान की मरम्मत व मजबूती का काम कराना ही बहुत था। एक समय वह भी था जब बाँकेलाल को स्वयं अपने ही हाथों से सारे काम करने पड़ते थे, किन्तु अब उसके पास कुछ करने को न था और उसका समय बीतना ही कठिन हो जाता था।

इस प्रकार खाली बैठे २ बाँकेलाल ऊबता गया, कोई वैद्य से अधिक तो वह हो नहीं सकता था सोते २ भी वह थक गया। उसका जिगर भी बहुत बूढ़ा हो चुका था और अब उसे दिखाई भी कम देता था। बाँकेलाल को यही खेद था कि उसका मित्र उसकी कमजोरी अपनी आँखों से नहीं देख पा रहा। वह बूढ़ा अब भी अब अपने गर्म प्याले को हाथ में लेकर पीता तो यही बड़बड़ाता कि इसमें चाय की पत्तियाँ क्यों डाली गई हैं।

कभी वह बूढ़े कुत्ते के साथ गप्प हाँकता कभी अपनी लड़की गूँगी लड़की के साथ समय बिताता या कभी दोनों छोटे बच्चों के साथ जो एक साथ पैदा हुए थे, बिताना चाहता। किन्तु बच्चे तो हँस हँसाकर व इधर उधर कूदकर भाग जाते और वह अकेला रह जाता। बच्चों की चुलबुलाहट व मुस्कराहटों से उसका मन अच्छी तरह न बहलता। तब वह अपनी स्त्री की ओर सम्पूर्ण पूर्ण दृष्टि से देखता। इस प्रकार गौर से घूरने पर उसे कभी यह अनुभव होता कि वह अपनी पत्नी को पहिली बार अच्छी तरह देख रहा है। अपनी स्त्री की ओर देखने से उसे लगा कि उसके सिर के बाल झड़ने क्यों लगे हैं चेहरा भी बीमार सा लगता है तथा उसमें सौन्दर्य जरा भी नहीं रह गया है। होंठ भी मोटे हैं व पैर भी बड़े बड़े हैं। एक बार स्त्री की ओर घूरते हुए वह बोला—

'कोई भी तुम्हें देखे तो यही कहेगा कि तुम किसी मामूली आदमी की घरवाली हो। कोई तुम्हें ऐसे व्यक्ति की पत्नी कहना स्वीकार नहीं करेगा जिसके यहाँ बहुत से नौकर चाकर हों व जो सब एक अमीर आदमी है।

ओलान को भी यह अनुभव होता कि उसका पति उसे इस प्रकार क्यों देख रहा है और वह शर्माते हुए कहने लगती —

"अब से दोनों बच्चे एक साथ हुए हैं, मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। सारे बदन में आग सी जलती रहती है।"

वाँगलु ग ने सोचा कि कदाचित ओ ने यह समझा होगा कि वह उसे इस बात के लिए दोष दे रहा है कि इन सात वर्षों में उसके कोई बच्चा क्यों नहीं हुआ। तब वह रुक कर बोला—

'मेरा मतलब यह है कि क्या तुम सिर के बालों के लिए कोई तेल नहीं खरीद सकती? अपने पहिनने के लिए अच्छे वस्त्र नहीं सिलवा सकती? जो कपड़े तुम पहिनती हो वह भी तो तुम्हें शोभा नहीं देते।'

पत्नी कुछ बोली नहीं, केवल अपने पाँव और सिकोड़ कर बैठ गई। वाँगलुङ ने फिर सोचा कि उसे इस प्रकार अपनी स्त्री से नहीं कहना चाहिये था जिसने किसी समय में भी अब से उसके साथ खेतों में मेहनत की है और कभी भी किसी वस्तु की माँग नहीं की। ओलान ने फिर इतना ही कहा कि वह बचपन में ही बेच दी गई थी इसलिए उसके पैर भी नहीं बाँधे गए थे। लड़कियों के पैर वह अवश्य ही बाँध कर रखेगी।

वाँगलु ग ने किसी प्रकार वहाँ से हट जाने का प्रयत्न किया। मन में वह लज्जित हो रहा था कि व्यर्थ में उसे अपनी पत्नी के प्रति रोष प्रकट नहीं करना चाहिए, जो उत्तर कर कभी क्रोध नहीं करती केवल सहन कर ही रह जाती है। वाँगलु ग ने कहा —

'अच्छा अब जरा चाय की दुकान पर हो आऊँ कुछ इधर उधर के समाचारों का पता चलेगा। घर में बच्चों और मूर्खों से ही बात करनी होती है।'

बाहर जाने के मार्ग में वाँगलुँग का मिजाज बिगड़ता ही गया। उसे यह भी ख्याल में आने लगा कि यदि उसकी पत्नी इतने अनुरूप

रत्नों को न हथियाओ तो वह इतनी जमीन कैसे खरीद पाता न इतना अमीर कदापि नहीं बन सकता था। किन्तु फिर इस बात से सन्तोष कर लेता कि केवल बहुमूल्य रत्नों के रखने से ही तो आदमी अमीर नहीं हो जाता। उनका उपयोग करने में तो उसी की बुद्धिमानी काम आई है।

बॉमहुंग का इन बातों की ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं होता यदि उस बाबे से उसे इतना प्यारी समय न मिल जाता। अब तो उसके मकान में बड़े स्थान पर चांदी ही चांदी भरी हुई थी और इतना धन था कि यदि पानी की तरह भी बहाया जाता तो भी समाप्त नहीं होता। अब उस इस धन का उपयोग करके अपने पुरुषत्व को ही सार्थक बनाना शेष रह गया था।

अपनी अमीरी के दिखाने में उसे चाय की दुकान भी कुछ ओछी नहीं। इसी चाय की दुकान पर वह पहिले सिगरेट का धुआं उड़ाता था किन्तु अब उसे वही गन्दी दिखाई दे रही थी। पहिले उसे कोई यदि जानता भी नहीं था और अब उस दुकान में घुसते ही वहाँ बैठे लोगों ने अपना कुर्सी खाली करना आरम्भ कर दिया। उसे ऐसा सुनाई दिया मानो लोग कह रहे हों कि यह स्थान अब और का सार्थक नहीं है। इसी से उस महान धनवान ह्वांग को अमीरों वाली है और वह भी सम्मान के लिये है। अब वही धनवान हो गया है।"

बॉमहुंग वह सब सुनकर बिना कोई परवाह किए एक ओर बैठ गया, किन्तु अब अपने अस्तित्व पर उस हुए २ वर्ष पश्चात होने वाला बात वह अपनी ही को स्वीकार कर आ जाता था। उसे अपना वह मान अच्छा नहीं लगा उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। अचानक उसने सोचा कि इस दुकान पर चाय पीते हुए उसे कोई शोभा नहीं देगा, जिसकी आमदनी से कहीं अधिक मजदूरी वह अपने हर आदमी को दे रहा है जिसके पास इतनी जमीन है व जिसके आश्रय पर जिन रहे हैं।

इतना सुनकर उसने कुछ पैसे वहाँ रख दिए और वहाँ से बिना कुछ कहे सुने चल दिया । बिना किसी मतलब के वह शहर के बाजारों में घूमता फिरा ।

शहर में एक दूसरी चाय की दुकान और थी जो हाल ही में खुली थी । उस दुकान की ओर से जब वह निकला तो वहाँ की चहल पहल से बौंगसु ग कुछ भौचक्का सा रह गया । सोचने लगा कि यहाँ आने वाले भी खूब हैं जो जुआ शराब और अय्याशी में अपना धन लुटाते हैं । अपनी बेबसी से मजबूर होकर उसकी इच्छा भी इस दुकान में जाने की हुई और वहाँ जाकर एक मेज पर बैठ गया । चाय का एक प्याला मंगाकर वह इधर उधर देखने लगा । दुकान में एक बड़ा कमरा था जो भली भाँति सुसज्जित था छत पर से चमकता हुआ झाड़ लटक रहा था, व दीवारों पर रंगीन रेशमी वस्त्रों पर एक से एक अधिक सुन्दरियों के चित्र बने हुए थे । इन चित्रों की ओर देख देखकर बौंगसु ग बड़ा प्रसन्न हुआ । ऐसी सुन्दरियाँ तो उसके लिए केवल सपनों की माया ही थीं क्योंकि उसने आँखों से ऐसा वास्तविक सौंदर्य कभी देखा ही नहीं था । आज इस दुकान पर आने का पहिला ही दिन था अतएव वह चाय पीकर चुपचाप चला गया ।

दिन प्रति दिन उसकी उत्सुकता बढ़ती ही गई घर में न बैठ कर नित्यप्रति जाने लगा । प्रति दिन पहिले दिन की अपेक्षा अधिक समय तक वह वहाँ बैठा रहता और सुन्दरियों के चित्रों से अपना मन बहलाने में समय बिताता । इसमें तो कोई सन्देह न था कि बौंगसु ग के पास धन की कोई कमी नहीं थी किन्तु देखने में वह गँवार ही लगता था । उस दुकान पर आने वालों में वही ऐसा था जो सूती कमीज पहिने आता और सब लोग रेशमी व अधिक मूल्यवान वस्त्र पहिनकर आते और आराम करते थे । एक दिन संध्या समय जब वह इसी प्रकार वहाँ बैठा चाय पी रहा था तो उसने ऊपर कमरे में से आते हुए किसी को देखा ।

नगर की यहां तक सिर्फ दुकान थी जिसकी ऊपरी मंजिल में भी कमरे थे। रात के समय इन्हीं कमरों से मधुर मधुर संगीत की ध्वनि आती थी तथा अनेक वाद्यों पर सुन्दरियों के अधखुले हाथ थिरका करते रहते थे। बीच के बड़े कमरे में जुआ खेलने वालों के शोरगुल के कारण वह संगीत की ध्वनि वहीं विलय हो जाती किंतु आधी रात के बाद वह संगीत और नृत्य-नूपुरों की झंकार दूर दूर तक साफ सुनाई पड़ती थी।

इसी शोरगुल में बड़ा बन उमस किसी को ऊपर से बात इतना तो कोई विशेष ध्यान उधर नहीं दिया लेकिन जब उसके कंधे पर हाथ रखा गया तो उसने देखा कि यह तो वही सुन्दरी युवती थी जिसके हाथों में अपने समस्त स्त्रीत्व को समेटकर उसने दौलत का सौदा खरीदा था। वह बोंगशु ग को देखकर मधुर स्वर से हँसी और कहने लगी—

'अच्छा! बोंगशु ग—किसान! किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि तुम भी यहाँ आ जाओगे।'

इतना सुनकर बोंगशु ग ने सोचा कि इस स्त्री को यह बताना होगा कि बोंगशु ग कोरा गँवार नहीं है चाहे इसमें कितना ही धन खर्च करना पड़े। बोंगशु ग बोला—

"क्या मेरा पैसा दूसरों के पैसों से खराब है? आजकल मेरे पास धन की कोई कमी नहीं। अब तो भाग्य चमक रहा है।"

युवती सुनकर खुश हुई किंतु शीघ्र ही अपनी खुशी छिपाती हुई बोली—

"कौन तुम्हारा नाम नहीं जानता! सभी नगर के धनवान यहाँ आकर हर प्रकार का आनन्द लेते हैं। ऐसी कोई और जगह नहीं जहाँ रुपये पैसों का इससे अच्छा उपयोग होता हो। यहाँ जैसी शराब और कहीं नहीं मिलती—क्या तुमने यहाँ की शराब का स्वाद भी लिया है बोंगशु ग?"

"मैंने अभी तक केवल चाय ही पी है।" बाँगड़ू ने कुछ २ लज्जित होकर बोला, "मैंने न तो शराब ही पी है और न जुआ ही खेला है।"

"चाय!" वह हँसते हुए बोली, "जब हमारे यहाँ इतनी बढ़िया शराब मिल सकती है तो तुम चाय क्यों पीते हो?"

बाँगड़ू ने सिर झुका लिया और वह बोलती ही गई—

"मैं समझती हूँ तुमने तो और भी बहुत सी चीजें नहीं देखी होंगी? गोरे २ सुन्दरियों के हाथ मीठे २ सुगन्धित गाना?"

बाँगड़ू का सिर और झुक गया चेहरे पर कालिमा छा गई। उसे लगा मानो सभी इस सुन्दरी की बातें सुन रहे हैं और उसकी हँसी उड़ा रहे हैं। इधर उधर जब उसने देख लिया कि वास्तव में कोई उसकी ओर नहीं देख रहा तो कुछ साहस बटोर कर बोला—

'नहीं नहीं—और कुछ नहीं—केवल चाय ही पी है।'

सुन्दरी फिर बड़े ज़ोर से हँसी और दीवारों पर लगे चित्रों की ओर संकेत करती हुई कहने लगी—

'उन चित्रों की ओर देखो। जिस किसी को भी तुम अपने पास बुलाना चाहते हो मुझे बताओ तथा मेरे हाथ में रुपये रखो। मैं उसे तुम्हारे पास बुला दूँगी।'

"ये तसवीरें!" बाँगड़ू ने आश्चर्य चकित हो कहा, "मैं तो समझता था कि यह कथा कहानियों व धर्म ग्रन्थों की देवियाँ हैं। अथवा स्वर्ग की ही सुन्दरियाँ हैं।"

"स्वर्गों की तो हैं ही" "किन्तु रुपया इन स्वर्ग की वस्तुओं को भी वास्तविकता का रूप दे सकता है।" इतना कहते हुए सुन्दरी होटल के बैरे की ओर कुछ इशारा करते हुए वहाँ से चली गई।

बाँगड़ू उन चित्रों को अब एक और ही उत्सुकता से देखने लगा। उसके मस्तिष्क में हलचल सी मच गई और भाँति २ के विचारों की श्रृंखला सी बँध गई। इन्हीं सीढ़ियों द्वारा ऊपर के कमरों में जाना

जा सकता है। वहीं उसे वह सभी सुन्दरियाँ अपना सौंदर्य दिखा सकती हैं। यदि वह कोई पसन्द कर तो किसे करे, वह तो सभी बच्चों वाला आदमी है, किन्तु फिर भी मन नहीं माना और इन चित्रों में से उसने पाँच-छः तो तीन चित्र पसन्द किए और फिर इन तीनों में से एक की ओर उँगली से इशारा करता हुआ बोला यह तो फूल की भाँति सुन्दर है। उसकी इस बात का स्वर्ण दासी ने सुना और सुनकर उसे कुछ शर्म भी आई। किसी प्रकार शीघ्रता से उसने कुछ पैसे मेज पर छोड़े और वहाँ से चल दिया।

घर आते आते रात हो गई और पानी भरे मेघों में चमकती चाँदनी भी उसे कुछ सुना नहीं सकी। उसके शरीर में तो खून तेजी से दौड़ रहा था। इसमें क्या भेद था, वह नहीं जानता था।



यदि भोंगसुन के खेतों का पानी सूख जाता और जमीन हल चलाकर बीज बोने के योग्य हो जाती तो शायद वह फिर उस चाय की दूकान पर न आ पाता, या उसका कोई बच्चा बीमार हो जाता या बूढ़े बाप की मृत्यु ही हो जाती तब तो भोंगसुन के पास कुछ न कुछ काम करने को रहता और वह उस सुन्दरी को भूल जाता।

किंतु पानी न सूखा, सूखा कम भी मात्रा से सर्दी शाम तक उतना ही रहता, बच्चे भी सुबह के गये शाम को स्कूल से आते अतएव भोंगसुन अपने को बेकाम की स्थिति में पाता कभी इधर देखता कभी उधर। वह इस तरह भूखा-सा रहने लगा कि कभी चाय वाली प्यारी बोतल तक देखता तो कभी बाहर निकलता पर भी बिना वहाँ जाये चैन न आता। गर्मी के दिन भी जल्दी होने के कारण कठिनता से ही कटते। ऐसे ही एक दिन वह अपने दरवाजे पर खड़ा हुआ था कि एकाएक उसे ख्याल आया और वह सोचता अपने कमरे में गया वहाँ जाकर नया कोट पहिना व बिना किसी से कहे सुने घर से बाहर चल पड़ा।

उसी चाय की दूकान पर जा पहुँच गया। उस दूकान पर तेज रोशनी हो रही थी, पंखे चल रहे थे और लोग खूब—चाय पीकर हँस-बोल रहे थे। भोंगसुन पहिले तो वहाँ पहुँच कर कुछ झिझका, उसके हृदय में कुछ धुकधुकी उठी, बदन में खून की रफ्तार तेज हो गई। शायद वह यह

बरसम ओर पड़ता किन्तु इतने में ही कुरङ्ग उधर आती हुई दिखाई दी। कुरङ्ग ने यह समझा कि कोई अमीर पुरुष आना चाहता है, लेकिन जब उसने बोंगहु ग का रूप देखा तो उसके मुँह से निकल पड़ा—

अरे यह तो वही किसान है।

बोंगहु ग को यह वाक्य बड़ा बुरा मालूम हुआ। इतना सुन कर उसे क्रोध आना स्वाभाविक था तो भी उसने कुछ हिम्मत बटोरी और कहा—

"क्या मैं इस बाजार में नहीं आ सकता अथवा और लोग आते हैं।

कुरङ्ग कुछ हँसी और कुछ दिखाती हुई बोली—

'औरों की तरह तुम्हारी जेब में भी कौड़ी हो तो अवश्य तुम भी सब की भाँति यहाँ बैठ के सकते हो।

बोंगहु ग उसे दिखाना चाहता था कि वह भी कुछ कम रईस नहीं और उसने जेब में से कोरी रकम निकाल कर हाथ में ले कुरङ्ग की ओर बढ़ाई और कहा—

'क्या इतने से काम चल जायगा या और आवश्यकता पड़ेगी?"

"कुरङ्ग गौरव बोल पड़ी "मेरे साथ आओ और बताओ तुम्हें कौन सी पसन्द है?

बोंगहु ग बिना कुछ कहे सुने उसके पीछे-२ चल पड़ा। पहिले तो उस बड़ा भारी कहने कुछ नहीं चाहिये किन्तु उसकी इच्छा शक्ति ने जोर पकड़ा तो वह एक चित्र की ओर इशारा करते हुए बताने लगा, "यह चित्र बहुत अच्छा किन्तु सुन्दर है जिसकी रोटी खुरीली है व जिसके हाथ में कमल का फूल है। मुझे वही चाहिये।'

कुरङ्ग उसे चरण साथ ले चली। भीड़ में से निकल कर सुन्दर बाले समय बोंगहु ग को जान पड़ा मानो सभी उसकी ओर टकटकी बाँधे देख रहे हैं। किसी प्रकार कठिनता से उसने सीढ़ियाँ चढ़ीं। ऊपर पहुँचा तो कुरङ्ग ने आवाज देकर कहा—

"आज रात में आने वाला पहिला व्यक्ति आ गया।" इतने में एक बड़े कमरे का दरवाजा खुल गया और वहाँ की सारी सुन्दरियाँ एक लाइन में खड़ी हो गईं। कुछ बड़ी उत्सुकता से बोलती चली गईं—

"नहीं, तुम नहीं—और तुम भी नहीं— तुम्हारे लिए भी कोई नहीं आया है यह तो सुलाने वाली लड़की के लिए है, वह समझ।"

वही सुन्दरी रह गई और सब वापस भाग गईं। कुछ ने फिर कहा "अब तो लेजाओ इसे। इसके मुँह से बदबू आती है।"

चौंगहु'ग ने जब यह सुना तो उसे प्यारा रंज लग गया। लेकिन अपने मन के क्रोध से उसकी हिम्मत नहीं टूटी और वह सीधा कमरे में चला गया, वहाँ एक सुशोभित बिस्तरे पर जाकर वह सुन्दरी भी बैठ गई।

यदि कोई चौंगहु'ग को समझाता कि हाथ इतने नाजुक, सुन्दर, लचीले और छोटे व मुलायम भी हो सकते हैं तो उसे कभी भी विश्वास नहीं होता। यदि कोई यह बताता कि पुरुष के पैर की पीठ की लंबाई के बराबर भी किसी सुन्दरी का पैर हो सकता है तो उसे यकीन नहीं होता। किन्तु आज वह सब स्वयं अपनी आँखों से ऐसा सौन्दर्य देख रहा था। वह फिर विस्मित सा टकटकी बाँधे इस सौन्दर्य को देखता रहा। साटन के वस्त्रों से सुसज्जित इस सुन्दरी के हाथ भी वस्त्रों के अन्दर अपनी केलि-क्रीड़ा कर रहे थे। चौंगहु'ग को तो स्वप्न में भी यह आभास नहीं होता कि ऐसे सुन्दर हाथों का भी स्पर्श किया जा सकता है। जब उस सुन्दरी की आँखें अखरोट की तरह गोल व छोटी दिखाई दीं तो उसकी समझ में आया कि कवि लोग आँखों की उपमा अखरोटों से ठीक ही देते हैं।

इतने बाद सुन्दरी ने धीरे से उठा कर अपना हाथ चौंगहु'ग के कंधे से लेकर घोंटों तक फेरा। चौंगहु'ग को ऐसे स्पर्श का अनुभव पहिले कहाँ हुआ था? इस समय भी यदि वह पूछता नहीं तो उसे कभी मालूम

नहीं हो सकता था कि उसकी आँखों में किसी का हाथ भी रखा हुआ है किन्तु अब तो उसकी रग-रग इस स्पर्श से काँप उठी और उधर हाथ गिरते ? उसकी कलाई तक आ गया । इस सुन्दर हाथ को वह कैसे समझे यह उसकी समझ के बाहर की बात थी ।

बाँगहुक को शीघ्र ही एक धीमी हँसी की आवाज सुनाई दी "ओह ! तुम तो कुछ भी नहीं जानते ? क्या तुम सारी रात इसी प्रकार टकटकी बाँधे देखते रहोगे ?"

सुन्दरी का हाथ अपने हाथों में ले बाँगहुक ने नम्रता से कहा—"मुझे तो कुछ मालूम नहीं। तुम ही बताओ क्या करूँ ?"

और सुन्दरी ने सब कुछ बता दिया ।

बाँगहुक को जो अब यह रोग लगा तो वह वास्तविक रोग से भी अधिक दुःखदायी हो गया । चमचमाती धूप की गर्मी में उसने कभी सैन्धव की रेगिस्तान की ठंडी व सर्द हवाओं का भी वह शिकार हो चुका था, बरसात के दिनों में धूल की वेदना भी उसने सही थी दक्षिण प्रदेश के इस नगर में काम की खोज में निराशा की ठोकरें भी वह खा चुका था । किन्तु इस कोमलांगी के सुन्दर हाथ के स्पर्श से जो वेदना व टीस उस हुई वह असह्य थी ।

नित्य प्रति वह चाय की दूकान पर आता रोज शाम से ही वह अपनी प्रियतमा से मिलने की घड़ी का इन्तजार करता हर रात वह इसी के साथ व्यतीत करता । रोज आते-जाते भी दरवाजे तक पहुँच कर काँपता धड़कता उसके बराबर आकर बैठ जाता और सुन्दरी की मुस्कराहट उसका स्वागत करती । फिर सुन्दरी भी क्रमशः अपना शरीर समक्ष किये रोका करती और छिपे हुए रूप को खोजने में बाँगहुक व्याकुल होकर ही रह न जाता । सुन्दरी की इच्छा होते हुए भी वह उसे अपने अङ्क में नहीं समेटता क्योंकि अपनी शक्ति से वह इस रूप को मसलना नहीं चाहता था । ओझल के साथ काम और भी वह भी उतनी ही दूर

हुई थी, इसलिये चौंगहुआ उसको पूरी शक्ति से अपने बाहु में भर, प्रसन्न कर शांत कर डालता था। किन्तु इस सुन्दरी में इतनी शक्ति कहाँ थी जो चौंगहुआ का बोझ सह लेती। चौंगहुआ की लिप्सा शान्त नहीं होती और वह भूखा ही बाहर चला जाता। इसी तरह यह भूख उसको नित्य प्रति और भी व्याकुल करती चली जाती।

गर्मी भर चौंगहुआ इस सुन्दरी के साथ प्रेम-क्रीड़ायें करता रहा। उसे फिर भी मालूम नहीं हुआ कि वह कहाँ से आई। मिलने पर उसके मुँह से शब्द ही नहीं निकलते। वह तो उसके मुख की ओर, हाथों की ओर या अङ्ग २ की गोलाई की ओर अपनी भूखभरी निगाहों से देखता ही रहता। कभी भी उसे तृप्ति नहीं हो पाती।

घर पर उसे अपने बिस्तरे में नींद नहीं आती, कभी गर्मी का बहाना करके व कभी किसी और बहाने से वह बाहर अन्दर चटाई बिछा कर पड़ रहता और अपनी छटपटाहट में करवटें बदलता रहता।

कोई बच्चा व स्वयं उसकी स्त्री जब कभी बोलती तो वह क्रोध से उबल पड़ता। कभी बिना कारण उनके बोलने की बात करता तो झल्ला कर कह उठता—"मुझे तंग क्यों करते हो!

इस प्रकार वह उस सुन्दरी की याद में ही अपना दिन बिताता रहा। बच्चे, स्त्री व भूमि खेत की ओर देखता भी नहीं। उसकी स्त्री कभी २ कह उठती—

"यह तुम्हें क्या रोग हो गया है जो बात-बात में गुस्सा हो जाते हो! शक्ल भी तुम्हारी फीकी होती जा रही है।"

इसी प्रकार दिन बढ़ जाता, रात हो जाती और वह सुन्दरी चौंगहुआ के साथ अपनी मनमानी करती। उसके बड़े-बड़े पैने हुए सिर के बालों पर जब उसने एक बार अचरज किया तो दूसरे दिन उसने बाल भी कटवा दिये। बाल कट जाने पर घर में कोलाहल हो उठा। उसको उसने कहा—"यह तुमने क्या किया?"

वाँगलुङ फिर मचला उठा "तो क्या जीवन भर गँवार ही बना रहूँ ? सभी भले आदमी आज छोटे बाल रखते हैं।"

किन्तु हृदय में उसे ज्ञान हो रहा था कि वह यह सब क्या कर रहा है। उस सुन्दरी पर वह इतना आसक्त था कि अपनी जान भी गँवा सकता था। अब वह पहिले की अपेक्षा नित्य प्रति स्नान भी करता था यद्यपि ओलान कहती रहती कि कहीं सर्दी न लग जाय। ओलान की परवाह उसे न थी। वह सुगन्धित व कीमती तेल-साबुन का प्रयोग भी करने लगा। महाशय वह अपने बालों पर इत्र भी छिड़कता। उसकी इन सब क्रियाओं से घर वालों की समझ में कुछ भी न आता कि आखिर वाँगलुङ किधर जा रहा है।

वाँगलुङ ने पहिनने के लिए नये नये कीमती कपड़े खरीदे और इस बार उसने ओलान से वह कपड़े नहीं सिलवाये बल्कि शहर के नामी दर्जी से तैयार करवाये। जूते भी मखमल के खरीद लिए। इन कपड़ों व जूतों को अपनी स्त्री-बच्चों के सामने पहिनने में उसे बड़ी शर्म लगी, अतएव उसने यह उपाय किया कि इस सिंगार को उसने एक कागज की तह में लपेट कर चाय की दूकान के एक बाबू के पास रखवा दिया। वहाँ जाकर वह इन वस्त्रों को पहिन लिया करता। अपनी चाँदी की अँगूठी पर भी उसने सोने का पानी चढ़वा दिया था।

एक दिन घर में जब वह दोपहर का खाना खा रहा था तो ओलान ने उसे गौर से देख कर कहा —"तुम्हें देखकर मुझे ढोंग के सौदागरों का ध्यान हो आता है।" वाँगलुङ ने उत्तर दिया कि अब उसके पास खर्च करने को काफी रकम है तो वह गँवार नहीं बना रह सकता किंतु ओलान की इस सूझ पर उसे मन ही मन बड़ी प्रसन्नता हुई और वह उस दिन से अपने व्यवहार में कुछ नम पड़ गया।

वाँगलुङ के पास जो भी धन था धीरे धीरे उस सुन्दरी के पास स्वाहा होने लगा। रोज नई फरमाइश होती और वह उसे पूरी करता।

कभी वह हीरे की अँगूठी माँगती तो वह दे जाती तो कभी सोने की बाली, कभी कुछ कभी कुछ । इसका परिणाम यह हुआ कि दीवालों में गड़ा हुआ धन भी निकलने लगा । एक दिन जब सोनाम ने उसे दीवाल खोदते देखा तो उसे बड़ी फिक्र हुई और वह समझ गई कि उसका जीवन पर लाखों से दूर ही नहीं, बल्कि उसके टेठी के स्वभाव ने भी परे होता जा रहा है । सोनाम को कुछ न संदेह तो उसी दिन से हो चला था जिस दिन उसके पति ने उससे बड़ी लॅबरी रखने के लिये कह कर फटकार बताई थी । अब ही सब सोनाम की चिंता करने लगी । किन्तु बाँगहुड़ के क्रोध के भय से वह कुछ कहती न थी।

एक दिन वह भी आया जब बाँगहुड़ सोनाम की ओर कुछ और जब वह अपने जो रही थी तो धीरे से उसके पास आकर कहा — तुम्हारे पास जो मोती थे वह कहाँ है ?"

सोनाम ने कुछ सशंकित होकर कहा 'मोती ! हैं मेरे पास ।'

'इन मोतियों के व्यर्थ पड़े रहने से कोई लाभ नहीं' बाँगहुड़ ने कहा । सोनाम धीरे से बोली ।

'सोचा तो मैंने यह था कि इन्हें बच्चों के हाथों में उठवाऊँगी और लड़की के विवाह में उसे दे दूँगी ।'

बाँगहुड़ ने अपने हृदय को कड़ा करते हुए कहा उस काले रंग की लड़की पर ये मोती नहीं दिखेंगे । मोती तो गोरे रंग पर अधिक खिलते हैं । लाओ मुझे दो ।

सोनाम ने चुपचाप निकाल कर पुड़िया दे दी । मोती जब बाँगहुड़ के हाथों में आ गये तो वह प्रसन्न हो गया ।

सोनाम पहिले की भाँति अपने कोने में जा गई । पास न जाय आँखों से आँसू टपक आए तो उन्हें पोंछने की चिंता भी उसने नहीं की वह अपनों के ढेर का मोह ढंके से पीरती ही रही।

———

: २० :

बौंगशु न का उस सुन्दरी से नित्य प्रति का मिलना जारी रहता यदि उसका चाचा एकाएक उसके घर तक न पहुँचता। थके हुए बच्चों में चाचा के चेहरे की झुर्रियाँ साफ दिखाई दे रही थीं वह आकर चुपचाप दरवाजे पर खड़ा हो गया। बौंगशु न व उसका बाप सुबह के खाने के लिए मेज पर बैठे ही थे कि अभी उसकी ओर एकटक देखने लगे किन्तु उसे पहिचान न सके। आखिर चाचा बोला "अब भाई! भतीजे! क्या तुम मुझे पहिचान नहीं रहे?" बौंगशु न अब पहिचान गया परन्तु घबराहट की मुद्रा से किन्तु अपना लगाव प्रकट करते हुए बोला —

आओ चाचा आप आए हुए हो क्या?"

नहीं अब तुम्हारे साथ खाऊँगा" कहते हुए चाचा बैठ गया और थपेड़े मारकर साथ ही भोजन करने लगा। खाने में वह इस प्रकार जुट गया मानो कितने ही दिन का भूखा हो। खा पीकर जब उठा तो कहने लगा— 'अब सो जाऊँगा तीन रात से नहीं सोया हूँ।"

जी भरकर जब वह सोकर उठा, तो अपने भाई के कमरे में जाकर बोला, "मैं सुन चुका था कि तुम अमीर हो गए हो किन्तु मुझे इस बात का विश्वास नहीं होता था।" बौंगशु न भी वहीं बैठा था सुनकर वह दूसरे कमरे में चला गया। उसे जिस बात का डर था वही होकर रहा, उसने देखा कि चाचा मजे में उसके भीतर बिस्तर पर लेट

कर अपनी थकान दूर कर रहा है। चाचा वहीं से वाँगलुङ को सम्बोधित कर कहने लगा—

"अब मैं अपने लड़के व बीबी को भी यहीं ले आऊँगा। तुम्हारे बड़े घर में हम तीनों के पेट भी आसानी से भर जायेंगे। हम लोगों की खुराक थोड़ी ही तो है इसके अतिरिक्त जो कुछ भी तुम्हारे फटे पुराने कपड़े होंगे उनसे हमारी गुजर हो जायेगी।"

वाँगलुङ कोई उत्तर नहीं दे सका। अब उसके पास बाकी क्या था। इन परिस्थितियों में भी यदि वह चाचा को मना कर दे तो उसके लिए शर्म की बात होती और गाँव वाले हँसी उड़ायेंगे। उसने यह मन सोचकर बाहर वाले मकान में रहने वाले मजदूरों को चिङ के पास वाले कमरे खाली कर देने को कह दिया। शाम को ही चाचा अपने लड़के और बीबी को ले आया। वाँगलुङ का मन ही मन क्रोध बहुत आ रहा था। जब उसने चाची को मोटी ताजी देखा तो और भी गुस्से में भर गया, किन्तु बोलना चाहते हुए भी कुछ कह न सका। चुप हो रहा। उधर ओलान ही कह उठी, 'गुस्सा करने से क्या होगा? यह सब तो सहा ही जाता है।' वाँगलुङ का क्रोध भी धीरे २ शांत हो गया। सोचने लगा कि यह लोग खाना खायेंगे, यहीं रहेंगे तो कुछ न कुछ काम भी करेंगे। यह सब तो ठीक था लेकिन उसे सुन्दरी की याद फिर सताने लगी थी। इन झंझटों के चक्कर में इधर वह दो-तीन दिन से अपनी प्रेयसी से मिलने नहीं जा सकता था। बाद में व्याकुल वह आप ही आप बड़बड़ाने लगा जब घर में ऐसी झंझटों के मारे फिर उलझनें रहें तो उसे मन को शांति के लिये बाहर जाना ही पड़ेगा।

उसके हृदय में जो प्रेम की आग दबी हुई थी, वह फिर भड़क उठी और सुन्दरी के यहाँ आना जाना फिर शुरू हो गया।

ओलान तो सीधी सादी प्रकृति की थी ही, वाँगलुङ का बाप बुढ़ापे की कमजोर निगाहों से समझता था, किन्तु अपनी निपुणता विचार

रहा था। किसी को यह पता नहीं लग सका कि आखिर बाँग बाबू क्यों है? उसकी चाची बाँग के दिन रात घूमकर सब कुछ ताड़ गई और बोली "बाँगबाबू अब किसी कुसुम-कली पर मुग्ध हो गया दीखता है।"

लो-लान ने यह सुनकर चाची की ओर हैरत से देखा तो चाची हँसते हुए बोली "तुम्हें अभी तक यह पता नहीं कि बात क्या है! यकीनन तुम्हारा पति किसी अन्य स्त्री के प्रेम में मस्त हो रहा है।"

बाँगबाबू पास के ही कमरे में व्याकुल प्रेमी की भाँति बैठा हुआ तड़पता रहा था। उसके कानों में चाची के ये शब्द जब पड़े तो वह सचेत हो गया। चाची कहती जा रही थी "मैंने ऐसी तबियत वाले कितने ही आदमियों को देखा है। अधेड़ को व्यक्ति नये नये वस्त्र खरीदने लगे तन ठन कर रहने लगे तो समझना चाहिए कि वह अवश्य ही किसी स्त्री के प्रेम में फँस गया है।" यह सुनकर ओलान का हृदय टूट सा गया और उसके मुँह से क्या कुछ निकला यह बाँग नहीं सुन पाया किंतु चाची जो कुछ कह रही थी उसे ध्यान से सुनने लगा। वह कह रही थी "यह सोचना ठीक नहीं कि पुरुष के लिए एक ही स्त्री काफी है। यदि स्त्री पति के लिए कड़ी से कड़ी मेहनत करके सब कुछ न्यौछावर कर दे तो वह भी काफी नहीं। स्त्री तो पुरुष के लिए मेहनत करने के लिये है। जब पुरुष के पास पैसा अधिक हो जाय तो क्या कुछ नहीं हो सकता। मेरा पति भी यदि उसके पास पैसा होता तो अवश्य ही किसी और स्त्री के प्रेम में अपना पैसा उड़ाने को तैयार रहता। इन मामलों में सभी पुरुष प्रायः एक से ही होते हैं।"

चाची कुछ न कुछ कहती चली गई किंतु बाँग को उसके शब्दों से सहारा ही मिला। बाँग का ध्यान फिर उसी सुन्दरी पर जाकर अटक गया। वह सोचने लगा कि उस सुन्दरी को अवश्य ही इस घर में ले आना चाहिए, अपने को पूर्ण रूप से उस पर मिटा देना चाहिए, ताकि और कोई उसके रास्ते में न आ सके। वह उसी समय उठकर बाहर

निकल आया और चाची को बुलाकर कहने लगा— "मैंने तुम्हारी बातें सुन ली हैं। यह सच है कि केवल ओलान से ही मेरा काम नहीं चल सकता, उससे मेरा जी भर गया है। मेरे पास काफी रुपया है फिर अपने मन की क्यों न की जाय?"

चाची ने आश्वासन दी दिया "अवश्य ऐसा ही करना चाहिए। सभी धनवान ऐसा ही करते हैं। निर्धनों के लिये एक ही बर्तन काफी होता है किन्तु तुम जैसों के लिए तो एक से अधिक होने ही चाहिए।" चाची यह समझती थी कि वाँगलुङ अब क्या करेगा। वाँगलुङ बोला "कौन मेरा काम करेगा। मैं दुःखी होकर किसी स्त्री से अपने घर आने के लिए कैसे कहूँ?"

चाची तुरन्त ही बोली "यह काम मेरे सुपुर्द कर दो। मैं सब कुछ कर दूँगी तुम केवल यह बताओ कि वह कौन सी है?"

वाँगलुङ हिचकिचाते हुए बोला, "उस स्त्री को लोटस (कमल) कहते हैं।"

वह समझता था कि इस नाम को सब जानते हैं। इतना ध्यान उसे नहीं रहा कि दो महीने पहिले वह स्वयं इस नाम से अपरिचित था और आज उसके ध्यान में ही वह केवल रह आया है। लेकिन चाची ने पूछा "उसका घर कहाँ है?"

कुछ लाचार होकर वह बोला "शहर में जो बड़ी चाय की दुकान है वहीं उसका घर है।"

"वही जो पुष्प वास कहलाता है?" चाची ने पूछा

"और नहीं तो क्या?" वाँग ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर चाची कुछ सोचती रही, फिर बोली "मैं वहाँ किसी को नहीं जानती। कौन उसकी देख रेख करता है?"

वाँगलुङ ने जब कुक्कू का नाम लिया तो चाची हँसते हुए कहने लगी, "वही जो हाँग-भवन में रहती थी। हाँग के मर जाने के बाद उसने यह

काम करना आरम्भ कर दिया होगा। तब तो काम आसानी से हो सकेगा, केवल उसके हाथ में पैसा रखना होगा।

वांगलुङ का मुँह एकदम सूखने लगा किंतु फिर भी कुछ उत्साह बटोर कर बोला "चाँदी ! सोना ! जो कुछ भी खर्च आयेगा मैं दूँगा। जमीन के बदले में चाँदी सोने की कमी नहीं।"

इसके बाद म मनोवेदना में विकल वांग ने सोचा कि वह अब उस चाय की दूकान पर तब तक नहीं जायगा, जब तक कि सारा मामला तय न हो जाय। शीघ्र ही उसने अपने निर्णय पर फिर विचार किया उसे डर लगा "यदि वह न आई तो ? और वह चाची से कहने लगा "रुपये पैसे के कारण मामला समाप्त न कर देना। मेरे पास काफी सोना चाँदी है। और हाँ कुछ से यह भी कह देना कि उस सुन्दरी को हम घर में कोई काम न करना पड़ेगा वह सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित हो बड़े आराम से रह सकेगी।'

चाची आँखें मटकाते हुए बोली 'ठीक है ! ठीक है। मैं कोई मूर्ख नहीं हूँ और न यह मेरे लिए कोई नया काम है। कई बार कह तो दिया कि सब कुछ ठीक कर लूँगी।

चाची जब इस काम के लिए चली गई तो वांगलुङ को यह धुन सवार हुई कि उस सुन्दरी के लिए घर की सफाई अच्छी तरह होनी चाहिये और उसने ओलान को बुहारी सफाई के काम में लगा दिया। ओलान का हृदय धड़कने लगा और वह समझ गई कि यह सफाई क्यों कराई जा रही है।

ओलान के पास सोना अब वांग के लिए मुश्किल था उसने सोचा पर मैं अब दो स्त्रियाँ हो जायेंगी तो यह मकान छोटा पड़ेगा। अतएव उसने तुरंत ही मजदूरों को बुलाकर बराबर में ही एक तीन कमरों का और बना देने के लिए कह दिया। मजदूर सब उसकी ओर घूरकर देखने लगे, किंतु कुछ भी कहने का साहस किसी को न हुआ। वांग न भी

किसी को ऐसा कोई अवसर नहीं दिया। वह स्वयं अपनी धुन एक में जमीन में नींव खुदवाने लगा। नींव पुर कर जब दीवारें खिंच गईं तो उसने मिस्त्री को नई खपरैलें डालने के लिये भेज दिया। कमरे तैयार जब हो चुके तो फर्श ठीक करा दिया गया। इस सब काम में पन्द्रह दिन लग गये। बाँके ने कमरों के पर्दों के लिये कीमती कपड़ा खरीदा, नई मेज और दो कुर्सियाँ खरीदीं और एक सुन्दर मसहरीदार पलंग भी खरीद लिया। नहाने के लिये सुन्दर टब भी खरीद लिया गया। यह सब प्रबंध उसने अपने आप ही किया क्योंकि कोशल्या से कुछ सलाह मशवरा करने में तो उसे शर्म लगती थी।

इतना सब इन्तजाम तो हो गया किन्तु उस सुन्दरी का डोरा तय न हो सका। बाँकेलाल अकेला ही इस नये मकान में रहना करता। अपने मन को बहलाने के लिये व सुन्दरी को प्रसन्न करने के लिये उसने आँगन में एक छोटा सा बगीचा लगवाया और उसमें रंग बिरंगी मछलियाँ खरीदकर छोड़ दीं। इसके बाद भी जब वह सुन्दरी न आई तो वह और भी व्याकुल रहने लगा। अपनी इस व्याकुलता में वह किसी से सीधे मुँह बात भी नहीं करता। बच्चों को भी डाँटता रहता, कभी २ कोशल्या पर भी बरस उठता कि 'आज तुमने बाल क्यों नहीं संवारे या आज तुम्हारे कपड़े कितने गन्दे हो रहे हैं।' कोशल्या पति के इस व्यवहार से तंग आकर एक दिन फूट २ कर रो पड़ी। बाँके ने अपनी स्त्री को इस प्रकार रोते हुए पहिले कभी नहीं देखा था। किन्तु आज उसके रोने पर कठोरता से बोला "क्या मैं तुमसे इतना भी नहीं कह सकता कि साफ़ी कर लो या साफ कपड़े पहिनो, जो तुम इस तरह रो रही हो?"

कोशल्या सिसकते हुये बोली, "मैंने तुम्हारे लिये बच्चे पैदा किये हैं, और कुछ पाप न किया हो।"

इस उत्तर पर बाँकेलाल का मिजाज कुछ ठीक हुआ और उसने उस समय क्षमा भी माँग ली।

इसी बीच एक दिन चाची ने आकर कहा "सौदा तय हो गया। कुक्कू ने बदले में सौ चाँदी के सिक्के माँगे हैं और वह सुन्दरी भी अपने लिए एक अँगूठी, जड़ाऊ इयरिंग, कुछ रेशमी सूट और कोई दस बारह बढ़िया जूते माँगती है।" वाँगलुङ ने इन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया केवल यही सुना कि सौदा पट गया अतएव वह बोला "ठीक है जाने दो" इतना कह कर वह भागा हुआ कमरे में गया और उस सारी चाँदी निकाल लाया और चाची के हाथ में सब सिक्के रख दिये। दस ऐसे चाँदी के सिक्के उसने चाची को अपने लिए रख लेने को भी कह दिया।

चाची ने पीछे हट कर कहा "नहीं, नहीं, मैं कुछ न लूँगी आखिर हम लोग एक ही कुटुम्ब के तो हैं और मैं तो तुम्हारी माँ के बराबर हूँ। तुम्हारे लिए मैंने यह काम किया है रुपयों के लिए नहीं।" किन्तु वाँगलुङ भाँप गया क्योंकि चाची मुँह से मना कर रही थी और हाथ आगे बढ़ा रही थी अतः वाँग ने कहा कि यह सिक्के वह इसकी मेहनत के बदले नहीं बल्कि भेंट में दे रहा है और उसके हाथ में रकम रख ही दी। चाची ने चुपचाप वह रकम छिपा ली उधर वाँग ने भी सोचा कि यह रकम तो वास्तव में ही कम हुई कोई चिन्ता की बात नहीं।

दूसरे दिन वाँग ने बढ़िया बढ़िया कोट [illegible] को सजाने भी बाजार से आया और बड़ी बेसब्री से उस सुन्दरी का इन्तजार करने लगा।

गर्मियों के खत्म होते होते वह सुन्दरी उसके घर आ गई। वाँग ने दूर से ही देख लिया कि डोली पर सवार वह आ रही है। साथ में कुक्कू भी चलती दिखाई दी। थोड़ी देर के लिए वाँग डर गया कि आखिर वह क्या कर रहा है और वह भागकर कमरे में चला गया। घर में उसने किवाड़ भी बंद कर लिए, इतने में चाची ने बाहर से आवाज दी और

वह बाहर निकल कर इधर-उधर देखने का बहाना करने लगा। कुन्दू ने मुस्काते हुए कहा "हमें क्या मालूम था कि हम दोनों में यह सौदा होगा।" इसके बाद वह डोली के पास गई और पर्दा हटाते हुए बोली "आओ, प्यारी, फूल सी सुकुमारी—यह तुम्हारा घर है और यह हैं तुम्हारे मालिक।

बाँगड़ू के हृदय में एक वेदना उमड़ रही थी किंतु जब उसने देखा कि पालकी वाले उसे देख देख कर हँस रहे हैं तो उसे गुस्सा आया किन्तु चुप रह न सका।

उसने पर्दा उठाकर जो देखा तो उसकी प्रियतमा आराम से एक कुर्सी पर बैठी हुई थी। वह अपना सारा क्रोध भूल गया। सुन्दरी को उसने कुर्सी से उठते हुए देखा तो उसे लगा मानो कोई गुलाब का फूल हवा के झोंके से हिल गया हो। वह कुन्दू का हाथ पकड़ते हुए हल्की और पलकें गिराते हुए कुन्दू से ही पूछने लगी कि उसके रहने के लिए कमरे कौन से हैं।

यह सुनकर चाची आगे बढ़ी और सहारा देती हुई सुन्दरी को उन कमरों की ओर ले चली जो बाँस ने हाल ही में नये बनवाये थे। उस समय घर में कोई न था क्योंकि बाँस ने सभी मजदूरों को व किसा को तो खेत व काम से भेज दिया था। बोकाम स्वयं ही छोटे छोटे बच्चों को लेकर कहीं चली गई थी। वे बच्चा स्कूल गये हुए थे और यही बात का होना न होना बराबर था। जब सुन्दरी कमरे में चली गई तो कुन्दू ने पर्दे खींच दिये।

थोड़ी देर बाद चाची उधर फिर आई और हाथ फैलाते हुए बोली यह सुसज्जित बहुओं की तो इच्छा रखती है किन्तु देखो तो, मुँह से कितनी बदल आ रही है। वैसे, यह तो इतनी जवान भी नहीं कितनी दिखाई देती है। वह इतनी कम की है, यदि उम्र कम हो गई होती तो यह जवान इसलिए, हाथों में अँगूठियाँ व कीमती पोशाकें तन पर

जरा भी शोभा न रहती और न यह किसी को रिझा सकती।" उसने यह कहते हुए देखा कि वाँग के चेहरे का रंग क्रोध से लाल होता जा रहा है। वह बात बदल कर कहने लगी "कितनी सुन्दर है यह। मैंने इतनी सुन्दरता तो पहिले किसी में नहीं देखी।"

वाँग ने सुनी अनसुनी कर दी और कोई उत्तर नहीं दिया किंतु एक स्थान पर स्थिर नहीं रह सका। इधर उधर चक्कर काटते २ आखिर साहस करके उसने पर्दा उठाया और फिर सुन्दरी के पास जाकर बैठ गया। रात होने समय तक वह उसी के पास पड़ा रहा।

ओलान शाम तक भी घर में नहीं आई। सुबह ही वह कुछ खाना साथ बाँधकर छोटे बच्चों समेत कहीं चली गई थी रात होते २ जब वह घर लौटी तो सदैव की भाँति सबका खाना तैयार किया बच्चों को खिलाया बूढ़े ददुर को खिलाया और फिर कुछ थोड़ा सा स्वयं भी खाया। जब सब लोगम् और वाँग फिर भी नहीं आया तो वह भी हाथ पैर धोकर अकेली ही अपने बिस्तर पर जा सो रही।

वाँगलुङ अब सुन्दरी के कमरे में ही पड़ा रहता और उसका रस पान किया करता। वह सुन्दरी भी गर्मी के कारण बाहर न निकलती। इसलिए हर समय ही सुगन्धित तर कुल्लेयों से उसकी मालिश करती रहती। सारे दिन वह सुन्दरा ही कमरे के अँधेरे में नरम गद्देदार पलंग पर मस्त सी पड़ी रहती। शाम हो आने पर वह फिर स्नान करती और सज संवर कर वाँगलुङ के साथ वहीं बाग में घूमती कभी २ मंदिर की मछलियों से मन बहला लिया करती थी।

इसी प्रकार वाँगलुङ आनन्द के साथ अपनी प्रियतमा के साथ दिन बिताने लगा।

: २१ :

बाँकेलाल ने यह नहीं सोचा कि घर में अन्य स्त्रियों के आने से किसी न किसी दिन तो झगड़ा होना अवश्य ही। जुगनू की बदली सी बर्ताव व कोयल के दूर न कर देखने से उसे कुछ आभास तो होता था किन्तु इस ओर वह विशेष ध्यान नहीं देता था। फिर भी कई दिन निकल गए लेकिन कोयल और जुगनू की एक बात न बनी। बाँके को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ। यदि कोयल की असली सौत से न पटती तो यह समझने की बात होती किन्तु यह समझ में न आया कि जुगनू से न बनने की कौन सी बात है। कोयल जुगनू को देखते ही आग बबूला हो जाती। वह जानती थी कि जिन दिनों वह इस परिवार में नौकरी के रूप में काम करती थी तब यही जुगनू बड़े ढोंग की रखैल थी व हर तरह के हुक्म चलाती थी। जुगनू ने एक बार कोयल से कहा थी 'अब हम दोनों फिर एक ही घर में आ गए, लेकिन अब तुम मालकिन हो; क्या समय का चक्कर है!'

कोयल ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। पानी का घड़ा उतार कर रखा और सीधी बाँके के कमरे में जाकर उससे पूछा—'यह नीच औरत हमारे घर में क्यों आई है?'

बाँके इधर उधर कुछ कर किसी बहाने से बात टालने की चेष्टा करने लगा। एक बार यह भी सोचा कि कह दे तुम घर का मालिक

में हूँ, जिसमें मैं चाहूँ रख सकता हूँ। तुम मुझसे कभी कीच हाती हो ?'
किंतु ओलान के सामने उसे आप ही आप शर्म आ जाती और वह कुछ भी न कह पाता। ओलान ने थोड़ी देर में फिर पूछा, 'बताओ न यह औरत यहाँ क्यों आई है ?"

वाँग ने सोचा कि उत्तर देना ही पड़ेगा, बोला "तुम्हें इससे क्या ?"

मैं पहले से ही नफरत करती हूँ जब कि ह्वांग के घर में यह मालकिनी की तरह कहती थी 'चाय लाओ' 'खाना लाओ' "यह ज्यादा गरम है" 'यह बहुत ठंडा है।" मुझे जितना तंग करती थी यह "

वाँग की समझ में न आया कि क्या कहे। ओलान चुप हो गई और आँसू टपकाते हुए एक ओर सिसकने लगी। आखिर बोली "यह घर में न जाने क्या हो रहा है। मेरा कोई मालिक भी तो नहीं जहाँ चली जाऊँ।

वाँग फिर भी चुप रहा। वह पाइप के कश खींचते हुए ओलान की ओर देखता रहा। उसे चुप कराने का प्रयत्न न किया। ओलान जब वहाँ से चली गई तो वाँग को अपने ऊपर ही शर्म व गुस्सा आने लगा मानो किसी से झगड़ा करना चाहता हो। मन ही मन कहने लगा, "और बहुत से आदमी भी हैं जो पत्नियों को इससे कहीं ज्यादा बुरी तरह पेश आते हैं, मैंने तो कुछ भी नहीं किया।"

ओलान अपने काम में लगी रही। सुबह उसने पानी गरम करके अपने श्वसुर को दिया, वाँग को गरम चाय दी। कुक्कू जब ऊपर गई तो गर्म पानी का बर्तन खाली था और वह ज़ोर से चिल्लाने लगी "मेरी मालकिन के लिए गर्म पानी भी नहीं है। लेकिन ओलान ने सुनी अनसुनी कर दी और अपने काम में लगी रही। कुक्कू ने जब ऊपर वाँग से शिकायत की तो वाँग को क्रोध आ गया, उसने ओलान को कंधों से पकड़ कर झकझोरते हुए कहा, 'क्या तुम थोड़ा पानी और गरम करके नहीं दे सकती थीं ?'

जोखाम खिसियाते हुए बोली "मैं कोई कौशल्यानी की नौकरानी थोड़े ही हूँ जो सब के हुक्म मानती रहूँ।"

"देवकी की बात क्यों करती हो? पानी उसके लिए क्यों चाहिये? उसे उसकी मालकिनी को चाहिए।"

जोखाम ने पति का उपहास को हास्यपूर्वक सह लिया और एकदम सहमते हुए बोली, "इसे ही क्या तुमने मेरे जोता दिये थे?"

कौतूहल कुछ कह न सका, इतना सुनते ही उसका क्रोध कुछ ठंडा पड़ गया और वहाँ से लज्जित होता हुआ चला गया। बाहर कुन्दू से बोला "मैं एक स्टोईवर और बनवाए देता हूँ, अँगीठी भी मँगा दूँगा। मेरी घरवाली भी तो कुछ काम सीखना चाहती है [illegible] नहीं है और न वह जानती ही है। तुम भी अच्छा करते जो सिखला देना।" इतना कहकर उसने मजदूरों को बुलाकर स्टोईवर बनाने का आदेश दे दिया। कुन्दू यह सुनकर कि वह भी खाना बना सकती है, बहुत प्रसन्न हुई।

कौत ने सोचा—चलो रोज़ के झगड़े तो बन्द हो जायेंगे किन्तु कुछ ही दिनों में यह नई स्टोव उसके लिए आफत हो गई और खटकने लगा। इसका कारण यह था कि अब कुन्दू रोज़ बाजार जाकर कोयले व कीमती खाने का सामान खरीद लाती थी। इस [illegible] में पैसा अधिक खर्च होने लगा। कौत कैसे कहता कि यह तो एक प्रकार से उसी का खून पीना है। ऐसा कह देने पर उसे कुन्दरी के नाराज हो जाने का डर भी था।

साथ ही साथ एक और चिंता उसे घुलाने लगा। पानी भरने भी जाता, पानी का बोझ था अतः वह भी पानी के समय वहाँ पहुँच जाती थी। कौत यह भी नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी पानी से परिचय किये हुये किन्तु होता यही रहा कि दोनों स्त्रियाँ साथ-साथ पानी भरतीं और कौत के मर्मों पर तीर चलातीं। कौत कर ही क्या सकता था।

एक दिन अवसर पाकर उसने सुन्दरी से कहा—"प्रिये तुम इस मोटी बुढ़िया के साथ रहकर अपना सौन्दर्य न बिगाड़ देना, क्योंकि मैं तुम्हारा सौंदर्य बनाये रखना चाहता हूँ। चाची का कदापि विश्वास न करना। वह सुबह से शाम तक तुम्हारे पास ही बैठी रहती है। यह बात मुझे पसन्द नहीं।"

सुन्दरी ने गरदन मटका कर कुछ चिढ़ते हुये कहा,—"भला तुम्हारे मेरा इतना परिचय और किसी से तो है नहीं। यह तुम जानते ही हो कि मैं हँसते खेलते घर में रहती आई हूँ। यहाँ तुम्हारी चाची ही मुझसे कृपा करती है और तुम्हारे बदले कदम मना ? कर नाक में दम किये रहते हैं। और कौन है जिससे मैं हँसू बोलूँ ?" उसने यह और कह दिया कि आज रात को न आना क्योंकि तुम्हारा प्रेम कम होता जा रहा है, यदि ऐसा न होता तो तुम मुझसे यह बात न कहते। वाँग दब गया और क्षमा-याचना करते [illegible] बोला "जिसमें तुम्हारी खुशी हो वही भला।"

वाँग ने यह कह तो दिया लेकिन अब कभी वह फिर सुन्दरी के कमरे में जाता और वहाँ चाची आप व सिसकियाँ उसके सिसकी को उस प्र मिजाज खराब होने लगता इधर सुन्दरी भी उसे कुछ टाल दिया करती। वाँग को चाची पर भी मन ही मन क्रोध होता कि यह अच्छा और कामवती स्त्री बना-बना कर चिकनी-चुपड़ी व मोटी होती जा रही थी, किन्तु वह कह कुछ नहीं सकता था। चाची भी बहुत चालाक थी और वाँग से मीठा मिजाज पर मीठी मीठी बातें करती थी। चाची के कुछ व्यवहार से वाँग का क्रोध शांत हो जाता था। धीरे-धीरे वाँग का प्रेम इस आंतरिक क्रोध की अग्नि में क्षीण होता गया।

इधर एक बात और होगई। एक दिन वाँग का बड़ा बाप कल्ली देखता हुआ इधर आ निकला। यह गया दरवाजा बन्द कर यह हुआ आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि उसे मालूम ही नहीं था कि इस घर में

बराबर ही एक ओर आँगन व कमरे बन गये हैं। वाँग ने भी इसका कोई जिक्र उससे नहीं किया था। खिसाता वह बूढ़ा जब दरवाजे का पर्दा उठा कर अन्दर आँगन में निकला तो उसने देखा कि वाँग उस सुन्दरी को साथ में लिये हुए सहन के तालाब की मछलियों को देखता हुआ ठिठोलियाँ कर रहा है। वह वहीं से चिल्ला उठा— "घर में वेश्या कहाँ से आ गई !" वाँग हड़बड़ा कर बाप के पास आ गया और वह सुन्दरी भी एक कोने में छिप गई। किन्तु बूढ़ा चिल्लाता ही रहा "मैंने एक भी ही रखी, मेरे बाप ने भी एक ही की रखी और हम दोनों ने बराबर खेती का ही काम किया। यह वेश्या यहाँ कैसे आ गई ?" उस बूढ़े को बड़ा क्रोध आ रहा था वह चाहता था कि उस सुन्दरी के सामने जाकर कहे "तुम वेश्या हो !" और उसके सामने थूके। वाँग ने बाप को समझाने की चेष्टा की "यह वेश्या नहीं मेरी दूसरी बीवी है।" किन्तु बूढ़ा बराबर यही कहता रहा, "नहीं नहीं यह वेश्या है। वेश्या !! वेश्या !!!"

इस तरह आपदाने वाँग के सिर पर एक और मुसीबत का बोझ लाद दिया। वह बाप के साथ तो कहा-सुनी कर नहीं सकता था और उधर सुन्दरी की नाराजगी से भी डरता था। घर में इस बात को लेकर एक लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया था और वाँग परेशान हो उठा था।

एक दिन जैसे ही उसने सुन्दरी के कमरे में शोर गुल सुना और वह दौड़ा हुआ वहाँ पहुँचा तो देखा कि उसकी प्रौढ़ पत्नी क्रोध से काला मुँह किये ही थी और बड़बड़ करती चली आ रही थी। बात यह थी कि उसके दोनों जोड़े बच्चे अपनी मूर्खा बहन को साथ लेकर तालाब के पास पहुँच गये थे और मछलियों को एक एक कर देख रहे थे। प- जोड़े बच्चे खेलते २ उस दूसरे आँगन में पहुँच ही जाया करते थे। वे कारण स्कूल में दिन भर रहते, वे भी इस सुन्दरी के लिए अद्भुत तो रहते किन्तु दोनों आपस में ही बातचीत करते चुप हो जाते थे क्योंकि वह समझते थे कि इस सुन्दरी को उनके बाप ने क्यों रख छोड़ा है। इन बच्चों

को शिकायतें वाँगलुंग ने सुन्दरी से कीं और साथ ही उसकी हँसी उड़ाते हुए यह भी कहा— 'देखो यह बच्चे भी अपने बाप की तरह कितने खूबसूरत हैं।"

वाँग ने बच्चों को उधर जाने के लिये मना कर दिया। किन्तु उस गूँगी लड़की ने जिसके प्रति वाँग का स्नेह अधिक था सुन्दरी के रेशमी कपड़े और आभूषणों को देख कर फिर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। सुन्दरी चिढ़ गई और चिल्लाने लगी "यदि यह गूँगी लड़की मेरे कमरे में आयेगी तो मैं यहाँ कदापि न रहूँगी। मुझे यह पता नहीं था कि यहाँ मूर्खों से पाला पड़ेगा तथा तुम्हारे बच्चे इतने गंदे और कुरूप होंगे।

वाँग अपने बच्चों को प्यार करता था, इसके प्रति सुन्दरी की बातें सुनकर उसका रुका हुआ क्रोध भड़क उठा और वह बोला, "अपने बच्चों के लिए यह सब सुनना मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। तुम्हारे पेट से तो बच्चे भी पैदा नहीं होते।" इतना कह कर उसने बच्चों से कहा, 'देखो तुम इधर न आया करो यह औरत तुम्हें नहीं चाहती, यदि तुम्हें चाहती तो तुम्हारे बाप को भी चाहती।" वाँग ने प्रेम से अपनी गूँगी लड़की को गोद में उठा लिया और उसे लेकर वहाँ से चल दिया।

वाँग को भी बहुत क्रोध आ गया था कि इस दरिद्र औरत की इतनी हिम्मत कि उसके बच्चों से बुरा सलूक करे और उसकी गूँगी से नफ़रत करे। उसका दिल कुछ खट्टा हो गया और वह दो तीन दिन तक सुन्दरी के कमरे में झाँका भी नहीं। बच्चों के साथ ही खेलता रहा।

दो तीन दिन बाद जब वाँग सुन्दरी के कमरे में गया तो फिर उसने चाची को वहाँ चाय पीते हुए पाया। सुन्दरी ने उसी दम बड़े अन्दाज़ से प्यार दिखाने का नाटक किया और चाची से बोली कि तुम

बराबर ही एक ओर आँगन व कमरे बन गये हैं। बाँग ने भी इसका कोई जिक्र उससे नहीं किया था। जिज्ञासा वश बूढ़ा जब दरवाजे का पर्दा उठा कर अन्दर आँगन में निकला तो उसने देखा कि बाँग उस सुन्दरी का हाथ में लिये हुए सहन के तालाब की मछलियों को देखता हुआ इधर किलोलें कर रहा है। वह वहीं से चिल्ला उठा—"घर में वेश्या कहाँ से आ गई?" बाँग हड़बड़ा कर बाप के पास आ गया और वह सुन्दरी भी एक ओट में छिप गई। किन्तु बूढ़ा चिल्लाता ही रहा "मैंने एक ही स्त्री रखी, मेरे बाप ने भी एक ही स्त्री रखी और हम दोनों ने बराबर ठेली। अब ही काम किया। यह वेश्या यहाँ कैसे आ गई?" उस बूढ़े को बड़ा क्रोध आ रहा था वह चाहता था कि उस सुन्दरी के सामने जाकर कहकहाकर "तुम वेश्या हो!" और उसके सामने पूछे। बाँग ने बाप को समझाने की चेष्टा की "यह वेश्या नहीं मेरी दूसरी स्त्री है" किन्तु बूढ़ा बराबर यही कहता रहा "नहीं नहीं, यह वेश्या है। वेश्या!! वेश्या!!!"

इस तरह अचानक बाँग के सिर पर एक और मुसीबत का बोझ लाद दिया। वह बाप के साथ तो बहस-बहस कर नहीं सकता था और उधर सुन्दरी की नाराजगी से भी डरता था। घर में इस बात को लेकर एक लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया था और बाँग परेशान हो उठा था।

एक दिन ऐसे ही उसने सुन्दरी के कमरे में शोर गुल सुना और वह दौड़ा हुआ वहाँ पहुँचा तो देखा कि उसकी प्रेयसी क्रोध में आग बबूला हो रही थी और बकबक करती चली जा रही थी। बात यह कि उसके दोनों छोटे बच्चे अपनी छोटी बहन को साथ लेकर तालाब पास पहुँच गये थे और मछलियों को एक एक कर लेकर कूद रहे थे। छोटे बच्चे खेलते २ उस दूसरे आँगन में पहुँच ही जाया करते थे। बड़े बच्चे स्कूल में दिन भर रहते, वे भी इस सुन्दरी के लिए [illegible] तो रहते किन्तु दोनों आपस में ही बातचीत करके चुप हो जाते थे क्योंकि वह समझते थे कि इस सुन्दरी को उनके बाप ने क्यों रख छोड़ा है। हम क्यों

की शिकायतें वाँगलुग से सुन्दरी ने कीं और साथ ही उसकी हँसी उड़ाते हुए यह भी कहा— "देखो यह बच्चे भी अपने बाप की तरह कितने खूबसूरत हैं।"

वाँग ने बच्चों को ऊपर आने के लिये मना कर दिया। किन्तु उस गूंगी लड़की ने जिसके प्रति वाँग का स्नेह अधिक था, सुन्दरी के रेशमी कपड़े और आभूषणों को देख कर फिर शोर मचाना शुरू कर दिया। सुन्दरी चिढ़ गई और चिल्लाने लगी "यदि यह गूंगी लड़की मेरे कमरे में आयेगी तो मैं यहाँ कदापि न रहूँगी। मुझे यह पता नहीं था कि यहाँ मूर्खों से पाला पड़ेगा तथा तुम्हारे बच्चे इतने मैले और कुरूप होंगे।

वाँग अपने बच्चों को प्यार करता था, इसके प्रति सुन्दरी की बातें सुनकर उसका दबा हुआ क्रोध भड़क उठा और वह बोला "अपने बच्चों के लिए यह सब सुनना मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। तुम्हारे पेट से बच्चे भी पैदा नहीं होते।" इतना कह कर उसने बच्चों से कहा "जाओ तुम इधर न आया करो, यह औरत तुम्हें नहीं चाहती, यदि तुम्हें चाहती तो तुम्हारे बाप को भी चाहती।" वाँग ने प्रेम से अपनी गूंगी लड़की को गोद में उठा लिया और उसे लेकर वहाँ से चल दिया।

वाँग को भी बहुत क्रोध आ गया था कि इस रखेल औरत की इतनी हिम्मत कि उसके बच्चों से कहा सुनी करे और उसकी गूंगी बालक ा। उसका दिल कुछ खट्टा हो गया और वह दो तीन दिन तक सुन्दरी कमरे में झाँका भी नहीं। बच्चों के साथ ही खेलता रहा।

दो तीन दिन बाद जब वाँग सुन्दरी के कमरे में गया तो फिर उसने चाची को वहीं चाय पीते हुए देखा। सुन्दरी ने उसी समय बड़े अन्दाज से प्यार दिखाने का नाटक किया और चाची से बोली कि तुम जानो मेरे बिलकुल आ गये हैं। मुझे इनकी खुशी सबसे पहिले करनी है।

बराबर ही एक ओर आँगन व कमरे बन गये हैं। चौंग ने भी इसका कोई जिक्र उससे नहीं किया था। किन्तु जब बूढ़ा जब दरवाजे का पर्दा उठा कर अन्दर आँगन में निकला तो उसने देखा कि चौंग उस सुन्दरी को साथ में लिये हुए सहन के तालाब की मछलियों को देखता हुआ रंगरेलियाँ कर रहा है। वह वहीं से चिल्ला उठा—"घर में वेश्या कहाँ से आ गई!' चौंग हड़बड़ा कर बाप के पास आ गया और वह सुन्दरी भी एक ओर में छिप गई। किन्तु बूढ़ा चिल्लाता ही रहा "मैंने एक ही पत्नी रखी, मेरे बाप ने भी एक ही पत्नी रखी और हम दोनों ने बराबर खेती का ही काम किया। यह वेश्या यहाँ कैसे आयी?' उस बूढ़े को बड़ा क्रोध आ रहा था वह चाहता था कि उस सुन्दरी के सामने जाकर ललकारे "तुम वेश्या हो!' और उसके सामने थूके। चौंग ने बाप को समझाने की चेष्टा की "यह वेश्या नहीं मेरी दूसरी पत्नी है' किन्तु बूढ़ा बराबर यही कहता रहा "नहीं नहीं यह वेश्या है। वेश्या!! वेश्या!!"

इस तरह बकबक करके चौंग के सिर पर एक और मुसीबत का बोझा डाल दिया। वह बाप के साथ तो डाँट-डपट कर नहीं सकता था और उधर सुन्दरी की नाराजगी से भी डरता था। घर में इस बात को लेकर एक लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया था और चौंग परेशान हो उठा था।

एक दिन ऐसे ही उसने सुन्दरी के कमरे में शोर गुल सुना और वह दौड़ा हुआ वहाँ पहुँचा तो देखा कि उसकी प्रेयसी क्रोध से काँप रही थी और बकबक करती चली जा रही थी। बात यह थी कि उसके दोनों छोटे बच्चे अपनी गूँगी बहन को साथ लेकर तालाब के पास पहुँच गये थे और मछलियों को एक एक कर पकड़ रहे थे। वह छोटे बच्चे खेलते २ उस दूसरे आँगन में पहुँच ही जाया करते थे। बड़े लड़के स्कूल में दिन भर रहते, वे भी इस सुन्दरी के लिये उत्सुक तो रहते किन्तु दोनों आपस में ही बातचीत करके चुप हो जाते थे क्योंकि वह समझते थे कि इस सुन्दरी को उनके बाप ने क्यों रख छोड़ा है। इन बातों

: २२ :

वाँगलुङ ने खेतों पर फिर मेहनत शुरू कर दी। उसने स्वयं हल चलाया और जमीन से कम काली व मुलायम मिट्टी निकली तो बहुत प्रसन्न हुआ। कभी वह स्वयं काम करता कभी मजदूरों से काम कराता। स्वयं काम करने की उसे कोई आवश्यकता न थी किंतु उसे मजा आता था। उसके शरीर पर मिट्टी जगह जगह लग जाती तो उसे लगता मानो जिम्मा बोझ हल्का हो गया हो। कभी मेहनत के बाद आलस्य तो पास नहीं फटकता।

एक बार दूर एक दिन शाम को जब वह घर गया तो सीधा सुन्दरी के कमरे में पहुँच गया। उसके शरीर को मिट्टी से सना देख वह सुन्दरी हैरान होकर वाँग की ओर देखती रह गई किन्तु वह मुस्कराता ही रहा। अपने मिट्टी से सने सने हाथों से उसने सुन्दरी को पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और कहने लगा—"अब तो तुम्हारा पति किसान है और तुम किसान की स्त्री हो।

"तुम चाहे कुछ कहो मैं तो किसान की बीवी नहीं हूँ" सुन्दरी अपनी ही भावनाओं में खोई खोई बोली। वाँग हँसता हुआ वहाँ से चला गया। उसने जाकर खाना खाया और सोने से पूर्व अधिकता से स्नान किया। पहले समय भी वह मुस्कराता जाता था क्योंकि अब वह किसी भी से मिलने के लिए नहीं जा रहा था अब वह स्वतंत्र था। वाँग को लगा जैसे वह काफी दिनों से अपने खेतों से दूर रहा है और

पानी के चले जाने के बाद उसने वांग को हर तरह से समझाया किन्तु वांग ने उसमें सच्चे प्रेम की झलक नहीं पाई।

धीरे धीरे गर्मी के दिन भी बीत गये। वातावरण शीतल होने लगा शीतल ऋतु के झोंके चलने लगे और वसन्त का आगमन हुआ। ऋतु बदलने से मानो वांग एक गहरी नींद से जाग गया। उसने घर के दरवाजे से खेतों की ओर देखा। जमीन का पानी सूख चुका था और सूर्य के प्रकाश से जमीन चमचमा रही थी। वांग की अंतरात्मा प्रसन्न हो उठी प्रेम-लिप्सा से वह छटपटाने लगा। उसने अपना लबादा उतार दिया मखमली जूते उतार कर फेंक दिये पजामा घुटनों तक मोड़ लिया और व्याकुल होकर जोर से कहने लगा "हल कहाँ है? गेहूँ बोने के लिये दाना किधर है? चलो, चिंग—मेरे दोस्त चलो।—आदमियों को बुलाओ—हम खेत पर चलेंगे।"



: २२ :

वाँगलुङ ने खेतों पर फिर मेहनत शुरू कर दी। उसने स्वयं हल चलाया और जमीन से जब काली व मुलायम मिट्टी निकली तो बहुत प्रसन्न हुआ। कभी वह स्वयं काम करता कभी मजदूरों से काम कराता। स्वयं काम करने की उसे कोई आवश्यकता न थी किंतु उसे मजा आता था। उसके शरीर पर मिट्टी उछल उछल कर आ जाती तो उसे लगता मानो जितना बोझ हल्का हो गया हो। कभी मेहनत से थक जाता तो प्रायः वहीं बैठ जाता।

थक कर चूर एक दिन शाम को जब वह घर गया तो सीधा सुन्दरी के कमरे में पहुँच गया। उसके शरीर को मिट्टी से सना देख वह सुन्दरी हैरान होकर वाँग की ओर देखती रह गई किन्तु वह मुस्कराता ही रहा। अपने मिट्टी से सने हाथों से उसने सुन्दरी को पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और कहने लगा— अब इनको तुम्हारा पति किसान है और तुम किसान की पत्नी हो।

'तुम चाहे कुछ कहो मैं तो किसान की बीवी नहीं हूँ'' सुन्दरी अपनी ही भावनाओं में खोई खोई बोली। वाँग हँसता हुआ वहाँ से चला गया। उसने जाकर खाना खाया और खाने से पूर्व पनिक्का से स्नान किया। पहले समय भी वह मुस्कराता जाता था क्योंकि अब वह किसी स्त्री से मिलने के लिए नहीं जा रहा था अब वह स्वतंत्र था। वाँग को लगा जैसे वह काली स्त्रियों से अपने खेतों से दूर रहा है और

अब कमीज उसे गुब्बार ए भर सुना रही है। इतने दिनों अब तक यह प्रेम वासना से विरत रहा उसका शरीर पीला पड़ गया था, अब शरीर में फिर जान आ रही थी।

दोपहर व शाम को वह घर आता और सोबरन का बनाया हुआ भोजन बड़े प्रेम से खाता—रही, प्याज की रोटियाँ। सुन्दरी को जब प्याज की गंध आती और वह नाक पर रूमाल रख बैठी तो बाँके हँस पड़ता। अब उसे किसी की फिक्र नहीं थी। उसके हृदय में प्रेम वासना शुरू हो गई थी और शरीर फिर दृढ़ पुष्ट हो चला था। जब कभी भी उसे भोग करने की इच्छा होती सुन्दरी के पास जाता और शांत हो जाता। इस प्रकार घर की दोनों स्त्रियों का स्थान अलग अलग बंट चुका था। सुन्दरी तो एक खिलौना मात्र थी जिसके साथ वह खेल किया करता। सोबरन घर के कामों में लगी रहती थी—वह बच्चों की माँ थी। पति रामपुर व बच्चों को खाना खिलाती और इसी में प्रसन्न रहती। बाँके पूर्णतया संतुष्ट रहता। उसके लिए यही गर्व की बात थी कि गाँव वाले प्रायः इस सुन्दरी व बाँके की चर्चा करते रहते थे। बाँके की प्रशंसा करने में उसका चाचा सर्वप्रथम था जब उसको सुन्दरी के रहन सहन के गीत गाता फिरता और कहता कि ऐसी सुन्दरी को उसका भतीजा रखे हुए है। वह बाँके की खुशामद में ही लीन रहता और कहता कि 'यह मेरा भतीजा है इसके पास बहुत धन है, बड़ा आदमी है इसके बच्चे रईसजादे कहलायेंगे और इन्हें सारी जिन्दगी कोई काम नहीं करना पड़ेगा।'

गाँव वाले भी बाँके को आदर की दृष्टि से देखने लगे थे। वे छोटा ब्याज पर बाँके से रुपया लेने लगे। कभी कभी अपने घर गृहस्थी की समस्याओं का हल भी बाँके से पूछते, अपनी बहिन-बेटियों की शादी के लिए भी बाँके से सलाह लेते, यहाँ तक कि जब जब लोगों में आपस में जमीन को लेकर कोई झगड़ा भी हो जाता होता तो बाँके से ही

पैसा कमाता और जो कुछ भी वांग कहता, उसी को मान लेते थे।

जहाँ पहिले वांग अपनी प्रेम-क्रीड़ाओं में ही मग्न रहा करता था, उसी वांग के लिए अब बहुत से काम पड़े जाते। अब की फसल में गेहूँ की उपज बहुत हुई थी और वांग ने सारा माल रोके रखा था। भाव चढ़ जाने पर वह माल लेकर मंडी में जब बेचने चला तो अपने बड़े लड़के को भी साथ ले गया। उस लड़के की लिखावट बड़ी सुन्दर थी और वांग को इस बात का गर्व था कि अब पहिले की भाँति उसे कागज लिखने के लिए रसीद पढ़ने के लिए किसी मुन्शी की खुशामद करने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। इस बार मन्डी आकर उसने अपने लड़के से ही दस्तखत कराए और बड़ा प्रसन्न हुआ।

दोनों बाप बेटे जब घर लौट रहे थे तो वांग ने सोचा कि लड़का भी बड़ा लायक हो गया है। अब उसे बाप का अगला फर्ज पूरा करना चाहिए। अतः उसकी शादी के लिये कोई योग्य लड़की किसी संपन्न घराने से ढूँढनी होगी। घर पहुँच कर रात का खाना खाने के बाद उसने चिंग से सलाह की। चिंग वांग का बड़ा आदर करता था यहाँ तक कि उसके सामने खड़ा ही रहता। वांग को भी चिंग पर पूरा विश्वास था। वांग ने जब लड़के की बहू के लिए अपने विचार प्रकट किये तो चिंग ने बड़े आदर से कहा—"यदि मेरी लड़की होती तो उसे तुम मुफ्त में ही दे देता और मैं तुम्हारा बड़ा एहसान होगा। मगर पता नहीं वह कहाँ होगी? शायद मर भी गई हो?

वांग ने चिंग की भावनाओं का आदर किया और उसे धन्यवाद दिया। साथ ही किसी योग्य लड़की की खोज में लगे रहने का आदेश भी दिया। वांग ने यह इरादा और किसी पर जाहिर नहीं होने दिया। विशेषतया वह चाची को अपने इस इरादे की कानों कान खबर भी नहीं देना चाहता था। वह स्वयं इधर-उधर किसी लड़की की खोज में लगा रहा।

अब मेरा बालक रईस घर का बेटा है । उसके लिए कोई बाँदी खरीद लेना ठीक न होगा, बल्कि ठीक ही मैं उसका विवाह कर दूँगा । यह काम करना ही होगा ।'

इतना कह साँप वहाँ से उड़ गया और कुम्हारी के घर की ओर चल दिया ।



: २३ :

सुन्दरी ने जब जॉन को परेशानी से देखा तो वह समझ गई कि वह कोई और बात सोच रहा है उसके सौन्दर्य पर उसका ध्यान नहीं है तो वह बोली "यदि मैं जानती कि साल भर में ही तुम्हारा प्रेम फीका पड़ जायगा तो मैं यहाँ कभी भी न आती।" इतना कह कर उसने एक झटके से मुँह फेर लिया और उंगलियों से दबाने लगी। जॉन हँस पड़ा उसे अपनी ओर खींचते हुए वह उसके कोमल हाथों को अपने मुँह के पास ले गया और बोला—"किसी के कोष में हीरा जड़ा हो तो उसका इतना ध्यान मनुष्य को नहीं होता किंतु यदि हीरा खो जाय तो इस नुकसान को सहने की शक्ति मनुष्य में नहीं होती। आजकल मुझे अपने बड़े लड़के की ओर से चिन्ता रहती है और चाहता हूँ कि उसका विवाह कर दूँ, किंतु कहाँ लड़की तलाश करूँ यह समझ में नहीं आता। मैं यह नहीं चाहता कि गाँव की ही किसी लड़की से शादी कर दी जाय। शहर में किसी को जानता नहीं। इसके अतिरिक्त किसी दुकान के चक्कर में पड़ना नहीं चाहता क्योंकि वह लोग रुपया जमा कर किसी लूली लंगड़ी या भोंडी सूरत की लड़की का विवाह भी रचा देते हैं।

जॉन का बड़ा लड़का जवान हो गया था, उसके शरीर का गठन भी अच्छा था और वह सुन्दर लगता था। यह सुन्दरी भी उसकी ओर आकर्षित हो गई थी। अपने भाव छिपाते हुए वह बोली—"अब मैं

शहर में थी तो एक आदमी मेरे पास बराबर आया जाया करता था। वह अक्सर अपनी लड़की का ज़िक्र किया करता था। कहता था कि वह मेरे समान ही सुन्दर है बल्कि मेरे जैसे ही लगती है और इसीलिये वह मुझसे बेटी का सा प्यार करता था। ऐसे उसका प्रेम एक दूसरी ही से था।

वाँग लुंग ने पूछा, "वह किस किस्म का आदमी था?"

'आदमी वह बहुत अच्छा था। रुपये भी खूब खर्च करता था। हम बातों से अच्छी तरह पेश आता था और हम सभी उसे पसन्द करते थे। मालूम होता था—किसी शाही खानदान का शाहज़ादा हो।'

वाँग उस सुन्दरी का पिछला हाल नहीं सुनना चाहता था। बोला—'उसके पास जब इतना रुपया था तो कौन सा व्यवसाय था उसका?'

"यह तो मैं नहीं जानती पर शायद वह मंडी का बड़ा सौदागर था। मैं कुक्कू से पूछे लेती हूँ वह तो सब रुपये पैसे बातों को जानती है।" इतना कह कर सुन्दरी ने ताली बजाई और कुक्कू वहाँ तुरन्त उपस्थित हो गई। सुन्दरी ने उससे पूछा—"वह कौन बड़ा आदमी था जो मेरे पास तो आता था लेकिन मुझसे बेटी की तरह प्यार करता था।"

कुक्कू मतलब समझ गई और बोली—"मैं उसे खूब जानती हूँ। उसका नाम 'लिपू' ही तो था। वह अनाज का बड़ा व्यापारी था। कितना अच्छा आदमी था वह हमेशा मुझे कुछ न कुछ देता ही रहता था।'

"उसकी दूकान कहाँ है?" वाँग ने पूछ लिया यद्यपि वह समझ रहा था कि इन औरतों की बातों पर क्या यकीन किया जाय।

"पत्थर के पुल के पास" कुक्कू ने कहा।

वाँग को कुछ चैन मिला वह बोला—"वहीं तो मैं भी अनाज बेचने आया करता हूँ।'

जब कोई काम करने को होता था, तब कुक्कू फौरन ताड़ लेती थी कि रुपया पैदा हो सकता है। वह तुरन्त ही बोली—"मैं यह काम करने को तैयार हूँ।"

वांग लुंग इस संशय में था कि कुक्कू कुछ काम करना भी चाहेगी या नहीं। किंतु सुन्दरी ने ज़ोर देते हुए कहा—"कुक्कू जाकर 'लिए' से सब कुछ साफ कर आएगी। वह उसे खूब जानती है। अगर काम बन जाय तो इसे ही कुछ दे देना।"

वांग कोई निश्चित उत्तर नहीं देना चाहता था। उसने कहा कि चार दिन अच्छी तरह सोच विचार करने के बाद ही वह कुक्कू को काम पर देने के लिए कह सकता है। आखिर उसके लड़के की सारी जिन्दगी की बात है। दोनों औरतें तो रुपया ऐंठने के लिए बेताब थीं किन्तु फिर भी वांग ने कह दिया—"ठहरो, सोच लूँ फिर बताऊँगा।"

वांग इसी सोच विचार में कई दिन गुजार देता यदि एक और घटना न हो गई होती। दूसरे दिन सवेरे ही वांग ने बड़े लड़के को दालान में लड़खड़ाते हुए गिरते सुना। जाकर देखा तो उसका चेहरा लाल हो रहा था, सांस जल्दी आ रही थी और पैर लड़खड़ा रहे थे। लड़के ने उसी समय उल्टी की और वह बेहोशी में गिर पड़ा। वांग ने जो गेहूँ की शराब तैयार की थी उसका तो वह आदी था ही उस दिन कोई और भी अधिक तेज़ शराब पी हुई मालूम पड़ती थी। वांग लड़के का यह हाल देखकर घबरा उठा और उसने ज़ोर से आवाज़ देकर कोयल को बुलाया। फिर दोनों ने लड़के को उठाकर पलंग पर लिटा दिया। लड़का थोड़ी ही देर में सो गया।

तब वांग लड़कों के कमरे में गया। छोटा लड़का स्कूल जाने के लिए किताबों का बस्ता तैयार कर रहा था। वांग ने उससे पूछा, "क्या तुम्हारा भाई रात को यहीं तुम्हारे साथ सोया था?"

छोटे लड़के ने कहा—"नहीं तो। बड़ा बाहर गया था। रात

सहमे हुए देखकर वाँग ने डाँटते हुए पूछा— 'तो कहाँ गया था वह ?'

लड़के ने कोई उत्तर नहीं दिया। वाँग के डाँटने पर बोला— 'भाई ने बताने को मना कर दिया है। यदि बता दूँगा तो वह मुझे मारेगा नहीं तो पैसे देगा।'

वाँग ने उसे जोर का चाँटा मारा और कहा— "बताओ, नहीं तो मारते ही दम निकाल दूँगा।" लड़का डर गया और बोल पड़ा— "भाई तो बराबर तीन रात से कहीं जा रहा है, वह क्या करता है यह मैं नहीं जानता। आपके चाचा के लड़के के साथ जाता है।"

वाँग ने लड़के की बाँह से हाथ खींच लिया और सीधा चाचा के कमरे में जा पहुँचा। जाकर उसने देखा कि उस लड़के का चेहरा भी क्रोध से लाल हो रहा है और मुँह से शराब की बू आ रही है। वाँग उस पर बरस पड़ा और बोला— 'बताओ, तुम मेरे लड़के को कहाँ ले जाते हो ?'

वह बोला, 'तुम्हारे लड़के को कौन ले जायगा वह तो स्वयं जा सकता है।'

वाँग ने फिर अपना प्रश्न दोहराया इस पर लड़का बोला—

"वह चाय की दूकान पर जाता है उस औरत के पास जो कभी हुँग के घर में रहा करती थी।

यह सुनकर वाँगलुङ चौंक उठा। वह औरत तो बाजारू थी जहाँ सभी छोटे बड़े आदमी आते रहते थे और अब तो वह जवान भी नहीं रही थी। वह सीधा दरवाजे के बाहर निकला और नैनों का बोझिल हुआ चल पड़ा। लोगों की नजरें कैसी पड़ रही हैं, इस ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। वह सीधा उस जगह पर पहुँचा और बिना कुछ सोचे चिल्लाया—"वह औरत—बाजारू औरत किधर है ?" वहीं एक औरत स्टूल पर बैठी हुई एक बच्चे का जूता सीने में व्यस्त थी वह बोली— तुम सामने चले जाओ, मुझे अभी बहुत काम करना होता है अब मैं एक

चुकी हूँ।" जॉन ने ज़ोर से खटखटाना शुरू कर दिया। इतने में अन्दर से आवाज़ आई—"कौन है?"

जॉन ने देखा कि भोंडी सी शक्ल की एक औरत कमरे में से झाँकी। उसके मुँह पर पाउडर पुता हुआ था और चेहरे पर रंग पुत रहा था लगता था कि वह थकी हुई दिखाई देती थी। चौंकते हुए उसने कहा—"इस वक्त मैं कुछ नहीं कर सकती, बात करनी है तो रात को आना। अब तो मैं सोने जाती हूँ।

जॉन ने कहा— मुझे तुमसे कोई काम नहीं और न मुझे तुम जैसी औरत की ज़रूरत ही है। मुझे अपने लड़के के लिए कुछ पूछना है।'

औरत ने पूछा— 'क्या बात पूछनी है?"

जॉन की आवाज़ भर्रा उठी और वह बोला—"क्या वह रात को यहाँ आया था?

'रात को कई लड़के यहाँ थे। तुम्हारा लड़का कौन सा था, मुझे पता नहीं।"

जॉन ने फिर गिड़गिड़ाते हुए कहा—"सुनो ज़रा ध्यान करो, वह लम्बे कद का लड़का है। मैं तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि वह अभी से किसी औरत के पास जाने की हिम्मत भी कर सकेगा।"

औरत ने याद करने का बहाना करते हुए कहा—"क्या वे दोनों साथ थे, एक की नाक तो ऊपर को उठी हुई थी जो सब बातों की बात करता रहता था और दूसरा एक लड़का भी लम्बे कद का भी था।'

हाँ, वही तो मेरा लड़का है। जॉन ने कहा।

तो फिर क्या?" वह औरत बोली।

जॉन ने कहा—

"ठीक है। वह लड़का अब यदि आए तो उसे किसी न किसी बहाने टरका देना। जितनी बार तुम उसे वापस कराओगी मैं तुम्हें दो चाँदी के सिक्के ईनाम के रूप में दे दूँगा।'

औरत मुस्करा पड़ी। बोली—"मुझे भी इन इनके मुनाफ शब्दों से कोई विशेष आनन्द नहीं मिलता। बिना किसी काम के यदि कोई हाथ धरे ना कोई हर्ज नहीं। मैं जरूर ही पैसा करूँगी।

वाँगलुङ यह बात पसन्द करके सीधा घर की ओर चल दिया। इस औरत का ध्यान करते हुए वह रास्ते भर सोचता चला आया। घर पहुँच कर उसने कुक्कू को बुला कर कहा—

"तुमने क्या बात कही थी याद है न! तुम उस सफाई के सौदागर के पास जाओ जिसका तय करने का वादा करो। दहेज अच्छा आना चाहिए, किन्तु लड़की अगर मुनासिब समझो तो दहेज की भी कोई शर्त न होगी।

इतना कहकर वह अपने लड़के के पास गया। वह सो रहा था। उसे देख कर वाँग सोचने लगा—कितना सुन्दर लड़का है, मगर इसकी क्या हालत हो गई है। इतने में ओलान भी वहाँ पहुँच गई और लड़के के पसीने को सिरके व पानी से साफ करने लगी। इतने पर भी लड़का जगा नहीं। वाँग ने लड़के का चेहरा और सुपरिचित न समझ और वहाँ से चल गया। अन्दर ही अन्दर उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था, वह सीधा चाचा के पास गया और बोला—"घर पर मैं लोग पल रहे हैं या मुझे ही डस रहे हैं।

चाचा मेज पर बैठा नाश्ता उड़ा रहा था, चुप कर बोला—

"क्या बात है?

वाँग ने सारा किस्सा कह सुनाया, लेकिन चाचा ने हँसते हुए उत्तर दिया—क्या तुम किसी लड़के की उमड़ती हुई जवानी को रोक सकते हो?

वाँग ने जब चाचा को हँसते हुए देखा तो उसे चाचा के किए पिछले सारे करतूत याद आ गए। इन बातों के बावजूद भी उसने इन लोगों को अपने घर में जगह दी, खाने पीने का सारा आराम दिया

था। चाची अब भी कीमती कपड़ा पा ही रही थी। इतने पर भी इसी चाचा का लड़का अब उस लड़के को बर्बाद करने पर तुला हुआ था।

वाँग ने तैश में आकर जाहिर कर दिया— 'तुम सब इसी समय मेरे घर से बाहर चले जाओ। तुम्हें यहाँ रखने से अच्छा तो यही होगा कि घर को जला दिया जाय।'

किंतु चाचा वैसे हुआ पाता ही रहा। वाँग का खून खौल रहा था अब उसने देखा कि चाचा टस से मस भी नहीं होता तो उसे हाथ पकड़ कर उठाने लगा। इस पर चाचा ने कहा, 'यदि हिम्मत हो तो निकाल दो।' वाँग 'वह' ''वह''''वह'' 'वह''कहने लगा। चाचा ने कोट के बटन खोले तो कमर में लाल कपड़ा और लम्बी छुरी दिखाई दी। वाँग यह सब देखकर सहम गया खून पानी हो गया। यह तो डाकुओं का सा रूप रङ्ग था। वह चुपचाप वहाँ से हट गया, चलते-चलते उसने चाचा के हँसने की आवाज फिर सुनी।

वाँग ने अपने आपको कठोरता में बँधा हुआ पाया। चाचा अपने परिवार सहित उसी प्रकार रहता चला गया। यह बात तो ठीक थी कि अब और लोग गरीबी से तंग थे तो वाँग आनन्द से रह रहा था। इधर उधर चोरी डकैती के समाचार आते रहते थे लेकिन वाँग का घर सही सलामत था। वाँग ने इस ही अपनी खुशकिस्मती समझी अतएव उसने चाचा से कुछ भी कहना सुनना बन्द कर दिया। चाचा से भी सुख-चैन से रहने के लिए कह दिया। चाचा के लड़के को बुला कर भी कुछ रुपये दिए और कह दिया कि सुख से रहो। किंतु साथ ही साथ अपने लड़के पर निगरानी रखने लगा। रात को वह कहीं बाहर न जाय, इस बात पर भी उसने विशेष ध्यान रखना शुरू कर दिया।

वाँग बरसों इन्हीं मुसीबतों में पड़ा रहा, काम पर आने में उसका जी जरा भी नहीं लगता। कभी सोचता कि पुलिस या मजिस्ट्रेट के सामने चाचा का सारा भेद खोल दे फिर डर की वजह से चुप हो

औरत मुस्करा उठी। बोली—'मुझे भी इन इतने मुआवजे वकीलों से कोई विशेष आनन्द नहीं मिलता। बिना किसी काम के मैं कोई भी हाथ धरी ला कोई हर्ज नहीं। मैं जरूर ही ऐसा करूँगी।'

यों रघुवर वह बात पक्की करके सीधा घर का द्वार बन्द किया। बस औरत का ध्यान करते २ वह रास्ते भर कूदता चला आया। घर पहुँच कर उसने बुड्ढे को बुला कर कहा—

"तुमसे जो बात कही थी याद है न! तुम अब मकान के सौदागर के पास जाओ किराया तय करने की बात करो। दहेज अवश्य माना चाहिए, किन्तु लड़की अगर मुनासिब समझे तो दहेज की भी कोई शर्त न रहेगी।"

दूसरे दुसरा वह बहुत लड़के के साथ रहता। वह ठीक रहता था। उस दुख कर बाँग सोचने लगा—कितना सुन्दर लड़का है मगर इसकी क्या हालत हो गई है। इतने में बोलास भी वहाँ पहुँच गई और लड़के के पसीने को सिरके के फाहों से साफ करने लगी। इतने पर भी लड़का अच्छा नहीं। बाँग ने लड़के को देखा और मुनासिब न समझा और वहाँ से उठ गया। अन्दर ही अन्दर उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था, वह सीधा चाचा के पास गया और बोला—"मेरे घर में कौन रह रहे हैं या मुझे ही बस रहे हैं?"

चाचा मेज पर बैठा नक्शा बना रहा था, सुन कर बोला—

'क्या बात है?'

बाँग ने सारा किस्सा कह सुनाया, लेकिन चाचा ने हँसते हुए उत्तर दिया—क्या तुम किसी लड़के की उभरी हुई जवानी को रोक सकते हो?'

बाँग ने अब चाचा को हँसते हुए देखा तो उसे बचपन के दिन पिछले सारे बरस याद आ गये। उन बातों के बावजूद भी उसने इन दोनों को अपने घर में जगह दी, जाने कैसे वह सारा अतिरिक्त दिया

था। चाची अब भी कीमती खाना खा ही रही थी। इतने पर भी इसी चाचा का लड़का अब उस लड़के को बर्बाद करने पर तुला हुआ था।

वांग ने तैश में आकर आखिर कह दिया— 'तुम सब इसी समय मेरे घर से बाहर चले जाओ। तुम्हें यहाँ रखने से अच्छा तो यही होगा कि घर को जला दिया जाय।''

किंतु चाचा वैसा हुक्का खाता ही रहा। वांग का खून खौल रहा था जब उसने देखा कि चाचा टस से मस भी नहीं होता तो उसे हाथ पकड़ कर उठाने लगा। इस पर चाचा ने कहा, 'यदि हिम्मत हो तो निकाल दो।' वांग "यह" "यह" कहकर हकलाने लगा। चाचा ने कोट के बटन खोले तो अस्तर में लाल कपड़ा और नकली दाढ़ी दिखाई दी। वांग यह सब देखकर सहम गया। खून पानी हो गया। यह तो डाकुओं का सा रूप रंग था। वह चुपचाप वहाँ से हट गया। जाते-जाते उसने चाचा के हँसने की आवाज फिर सुनी।

वांग ने अपने आपको एकाएक में बँधा हुआ पाया। चाचा अपने परिवार सहित उसी प्रकार रहता चला गया। यह बात तो ठीक थी कि जब और लोग गरीबी से तंग थे तो वांग आनन्द से रह रहा था। इधर उधर चोरी डकैती के समाचार आते रहते थे लेकिन वांग का घर सही सलामत था। वांग ने इस ही अपनी खुशकिस्मती समझी, अतएव उसने चाचा से कुछ भी कहना सुनना बन्द कर दिया। चाचा से भी सुख-चैन से रहने के लिये कह दिया। चाचा के लड़के को बुला कर भी कुछ रुपये दिए और कह दिया कि धैर्य से रहो। किंतु साथ ही साथ अपने लड़के पर निगरानी रखने लगा। रात को लड़का कहीं बाहर न जाय इस बात पर भी उसने विशेष ध्यान रखना शुरू कर दिया।

वांग अपनी इन्हीं मुसीबतों में फंसा रहा। खेत पर जाने में उसका जी जरा भी नहीं लगता। कभी सोचता कि पुलिस या मजिस्ट्रेट के सामने चाचा का सारा भेद खोल दे फिर डर की वजह से चुप हो

रहता कि कहीं डाकुओं का गिरोह पकड़ा लेकर उसी की जिन्दगी समाप्त न कर दे।

कुमक् उधर अपना काम करके लौटी और कहा कि मामला तो तय ही है किंतु लड़की अभी छोटी है और वह सौदागर कहता है कि बात पक्की करली जाय, लेकिन विवाह तीन साल बाद ही हो सकेगा। वाँग ने सोचा कि तीन वर्ष तक लड़की की जान भी मुसीबत हो है, इन वर्षों में लड़का बिल्कुल ही हाथ से बाहर निकल जायेगा। रात में उसने ओलान से बातें की और कहा कि सभी बच्चों के विवाह की बात हम मरने से पहिले ही तय कर दी जानी चाहिये नहीं तो एक के बाद एक सन्तान ऐसी ही मुसीबतें पैदा करती रहेगी। अपनी गूँगी लड़की की ओर इशारा करते हुए उसने यह अवश्य कहा कि यह लड़की मुझे जरा भी तंग नहीं करेगी।

इसके बाद कई दिनों तक वह बराबर अपने खेतों पर जाता रहा। काम में व्यस्त रहने से उसकी घर की चिन्तायें भी दबी रहीं।

एक दिन जब दक्षिण की ओर से बादल आते दिखाई दिये तो गाँव वाले कहने लगे कि यह अवश्य ही एक अशुभ चिन्ह है। शीघ्र ही पता चल गया कि यह बादल नहीं थे बल्कि टिड्डियों का दल था जो दक्षिण की ओर से उमड़ा चला आ रहा था। वाँग ने भी इस दल को देखा और सभी गाँव वालों को इस आफत से खबरदार रहने की सलाह दी। गाँव वाले बेचारे क्या करते? कुछ ने कहा—जब भगवान की यही मर्जी है कि हम भूख से मरें तो हम कोशिश कर ही क्या सकते हैं, जो कुछ भाग्य में होगा भुगता जायगा।

स्त्रियों भी इस भयङ्कर आपत्ति से बचने के लिये बाजार जाकर धरती माता पर चढ़ाने के लिए धूप दीप व धूप बत्तियाँ लाने लगीं। बहुत सी स्त्रियों ने भाँति २ के टोटके भी किये।

किंतु टिड्डियों का आगमन हुआ ही और वे आ पहुँचीं। खेत-

अविराम, पेड़ पौधों पर धरती आकाश पातों ओर टिड्डियाँ छा गईं और सबके दिल दहल उठे।

वॉंग ने फिर को बुलाया अपने मजदूरों को इकट्ठा किया साथ ही सारे गाँव वालों की सहायता से बड़ी फसलों में आग लगा दी ताकि आग की लपटों से टिड्डियाँ भाग जावें। खेतों के पास पास की जमीन को खोद २ कर पानी से भर दिया जिससे टिड्डियों को बस जाने के लिये कोई जगह न मिले। दिन रात सारे गाँव वाले लगातार मेहनत करते रहे। वॉंग ने सब को इन दिनों बड़ी आशा में भरकर खिलाया।

आग के धुएं से आकाश काला हो गया और टिड्डियाँ इधर उधर बिखरने लगीं। लाखों टिड्डियाँ इस आग में जल गईं। आखिर प्रयत्न सफल हुआ यद्यपि बहुत सी खेती बरबाद हो गई लेकिन फिर भी वॉंग के कुछ खेत बच गए। वॉंग को कुछ संतोष हुआ। गाँव वालों ने भी टिड्डियों को भून भून कर खूब खाया। इन सात आठ दिनों में दिन रात जो यह मेहनत हुई उससे वॉंग को एक प्रकार का चैन ही मिला। वह अपनी सारी मुसीबतों को भूल गया था। उसने शांति से सोचा कि मनुष्य को अपने दुख अपने आप ही भोगने होते हैं। चाचा उम्र में बड़ा है और उससे पहिले ही मृत्यु को प्राप्त होगा। किसी प्रकार तीन वर्ष भी समाप्त हो ही जावेंगी।

समय आने २ उसने अपनी गेहूँ की फसल काट ली और फिर धान बो दिया। इतने में गर्मी का मौसम फिर आ गया।

रहता कि कहीं डाकुओं का गिरोह पकड़ा लेकर इसी की जिन्दगी समाप्त न कर दे।

कुनइ इधर अपना काम करके लौटी और कहा कि मामला तो तय ही है किंतु लड़की अभी छोटी है और वह सौदागर कहता है कि बाद उसकी अपनी जात लेकिन विवाह तीन साल बाद ही हो सकेगा। गाँव ने सोचा कि तीन वर्ष तक ठहरने की बात भी मुसीबत ही है, इन वर्षों में लड़का बिल्कुल ही हाथ से बाहर निकल जायेगा। तब में उसने बोबान से बच्चों की ओर कहा कि सभी बच्चों के विवाह की बात उन बच्चों से पहिले ही तय कर दी जानी चाहिये नहीं तो एक के बाद एक सम्भव ऐसी ही मुसीबतें पैदा करती रहेंगी। अपनी गूँगी लड़की की ओर इशारा करते हुए उसने यह अवश्य कहा कि यह लड़की मुझे जरा भी तंग नहीं करेगी।

इसके बाद कई दिनों तक वह बराबर अपने खेतों पर काम करता रहा। काम में व्यस्त रहने से उसकी घर की चिन्तायें भी दबी रहीं।

एक दिन जब दक्षिण की ओर से बादल आते दिखाई दिये तो गाँव वाले कहने लगे कि यह अवश्य ही एक मौसम फिर है। शीघ्र ही पता चल गया कि यह बादल नहीं थे बल्कि टिड्डि दल था जो दक्षिण की ओर से उमड़ा चला आ रहा था। गाँव ने भी इस दल को देखा और सभी गाँव वालों को इस आफत से खबरदार रहने की सलाह दी। गाँव वाले बेचारे क्या करते? कुछ ने कहा—अरे। भगवान की यही मर्जी है कि हम भूख से मरें तो हम लोग कर ही क्या सकते हैं, जो कुछ भाग्य में होगा भुगता जायगा।

स्त्रियाँ भी इस भयंकर आपत्ति से बचने के लिये बाजार जाकर धरती माता पर चढ़ाने के लिए धूप दीप ले धूप बत्तियाँ लाने लगीं। बहुत सी स्त्रियों ने भाँति २ के टोटके भी किए।

किंतु टिड्डियों का आगमन दक्षिण की ओर से आ पहुँची। लेक

अधिकतर, पेड़ पौधों पर, सारा आकाश पातों और टिड्डियों से छा गया और उनके दिल दहल उठे।

वांग ने चिंग को बुलाया अपने मजदूरों को इकट्ठा किया साथ ही सारे गाँव वालों की सहायता से बड़ी बगलों में आग लगा दी ताकि आग की लपटों से टिड्डियाँ मारी जायें। खेतों के आस पास की जमीन को खोद कर पानी से भर दिया जिससे टिड्डियों को बस आने के लिये कोई जगह न मिले। दिन रात सारे गाँव वाले लगातार मेहनत करते रहे। वांग ने तब भी इन दिनों यहीं खाना में लाकर खिलाया।

आग के धुएं से आकाश काला हो गया और टिड्डियाँ इधर उधर भिनभिनाने लगीं। लाखों टिड्डियाँ उस आग में जल गईं। आखिर प्रयत्न सफल हुआ यद्यपि बहुत सी खेती बरबाद हो गई लेकिन फिर भी वांग के कुछ खेत बच गए। वांग को कुछ संतोष हुआ। गाँव वालों ने भी टिड्डियों को भून भून कर खूब खाया। इन सात आठ दिनों में दिन रात जो यह मेहनत हुई उससे वांग को एक प्रकार का चैन ही मिला। वह अपनी सारी मुसीबतों को भूल गया था। उसने शांति से सोचा कि मनुष्य को अपने दुख अपने आप ही झेलने होते हैं। अपना दुख मैं बड़ा है और उससे लड़के की मृत्यु को सह लूँगा। किसी प्रकार तीन वर्ष भी समाप्त हो ही जायेंगे।

समय आया। उसने अपनी गेहूँ की फसल काट ली और फिर धान बो दिया। इतने में गर्मी का मौसम फिर आ गया।

रहता कि कहीं डाकुओं का गिरोह धावा बोलकर उसी की जिन्दगी समाप्त न कर दे।

कुन्दू उधर अपना काम करके लौटी और कहा कि मामला तो ठीक ही है किंतु लड़की अभी छोटी है और वह सोलह वर्ष की हो सकेगा। बात पक्की करली जाय, लेकिन विवाह तीन साल बाद ही हो सकेगा। बाँग ने सोचा कि तीन वर्ष तक ठहरने की बात भी मुसीबत हो है, इन वर्षों में डाकू बिल्कुल ही हाथ से बाहर निकल जायेगा। रात में उसने बोलान से बातें की और कहा कि सभी बच्चों के विवाह की बात उन जाने से पहिले ही तय कर ली जानी चाहिये नहीं तो एक के बाद एक सम्भव ऐसी ही मुसीबतें पैदा करती रहेगी। अपनी गूँगी लड़की की ओर इशारा करते हुए उसने यह अवश्य कहा कि यह लड़की मुझे जरा भी तंग नहीं करेगी।

इसके बाद कई दिनों तक वह बराबर अपने खेतों पर काम रहा। काम में व्यस्त रहने से उसकी घर की चिन्तायें भी दबी रहीं।

एक दिन जब दक्षिण की ओर से बादल आते दिखाई दिये तो गाँव वाले कहने लगे कि यह बादल ही एक भयानक चिन्ह है। ठीक ही पता चल गया कि यह बादल नहीं थे बल्कि टिड्डियों का समूह था। दक्षिण की ओर से उमड़ा चला आ रहा था। बाँग ने भी इस दल को देखा और सभी गाँव वालों को इस आफत से खबरदार रहने की सलाह दी। गाँव वाले बेचारे क्या करते? कुछ ने कहा—यह भगवान की मर्जी है कि हम भूख से मरें तो हम कोशिश कर ही क्या सकते हैं, जो कुछ भाग्य में लिखा भुगता जायगा।

स्त्रियाँ भी इस भयंकर आपत्ति से बचने के लिये बाजार जाकर धरती माता पर चढ़ाने के लिए धूप बत्तियाँ लाने लगीं। बहुत सी स्त्रियों ने ... टोटके भी किये।

किंतु टिड्डियों का आगमन हुआ और वे आ पहुँची। टेल

अधिकांश पेड़ पौधों पर धरती आकाश चारों ओर टिड्डियाँ छा गईं और सबके दिल दहल उठे।

वांग ने फिर को बुलाया अपने मजदूरों को इकट्ठा किया साथ ही सारे गाँव वालों की सहायता से अपनी फसलों में आग लगा दी ताकि आग की लपटों से टिड्डियाँ मारी जावें। खेतों के पास पास की जमीन को खोद २ कर पानी से भर दिया जिससे टिड्डियों को बच जाने के लिये कोई जगह न मिले। दिन रात सारे गाँव वाले लगातार मेहनत करते रहे। वांग ने सब को इन दिनों बड़ी आशा में व्यस्त दिखाया।

आग के धुएँ से आकाश काला हो गया और टिड्डियाँ इधर उधर बिखरने लगीं। लाखों टिड्डियाँ अग्नि ज्वाला में जल गईं। आखिर प्रयत्न सफल हुआ, यद्यपि बहुत सी खेती बरबाद हो गई लेकिन फिर भी वांग के कुछ खेत बच गए। वांग को कुछ संतोष हुआ। गाँव वालों ने भी टिड्डियों को भून भून कर खूब खाया। इन सात आठ दिनों में दिन रात जो यह मेहनत हुई उससे वांग को एक प्रकार का चैन ही मिला। यह अपनी सारी मुसीबतों को भूल गया था। उसने शांति से सोचा कि मनुष्य को अपने दुःख अपने आप ही भेलने होते हैं। चाचा अन्त में बड़ा है और उसका लड़का ही मृत्यु को प्राप्त होगा। किसी प्रकार तीन वर्ष भी समाप्त हो ही जावेंगे।

समय आते २ उसने अपनी गेहूँ की फसल काट ली और फिर खेत को दिया। इतने में गर्मी का मौसम फिर आ गया।

: २४ :

वाँग लुङ को अब इस ओर से इत्मीनान हो गया था। एक दिन जब वह खेत से वापिस आया तो बड़े लड़के ने उससे कहा—"अब तो मास्टर जी तो आगे कुछ पढ़ा नहीं सकते। आगे पढ़ाना है तो और कोई प्रबन्ध होना चाहिये।"

वाँग उस समय गरम पानी से हाथ मुँह धो रहा था बोला—"तो फिर क्या करना है?"

लड़के ने कुछ झिझकते हुए कहा—"यदि मुझे पढ़ाना ही है तो दक्षिण नगर के किसी स्कूल में जाना पड़ेगा।"

वाँग तौलिया से बदन पोंछने में लगा रहा। दिन भर की मेहनत से उसका शरीर भी थका हुआ था। लड़के की बात उसे कुछ तीखी लगी और वह बोला—"यह क्या बदतमीजी है। मैं कहता हूँ तुम नहीं जाओगे, नहीं जाओगे। यहाँ के लिए तुम काफी पढ़ चुके हो।"

लड़का फिर से चुपचाप बड़बड़ाता रहा तो वाँग ने कहा—"यह बड़बड़ाते क्या हो? जो कहना है साफ २ कहो।"

"तो मैं अवश्य पढ़ने दक्षिण नगर में जाऊँगा। घर में बच्चों की तरह नहीं रह सकता। इस गाँव में क्या रखा है? शहरों में सीखने की बहुत सी बातें हैं।"

वाँग ने पहिले लड़के की ओर, फिर अपनी ओर देखा। लड़का विचित्र था। लम्बा गाउन पहिने हुए था शरीर से पतला लगता

गोल्फ़ाम लगता था। चोटी व मूछों की रेखें भी निकल आई थीं। उसके हाथ नाज़ुक एवं मुलायम थे। इसके विपरीत वाँग का अपना शरीर मोटा व मिट्टी से सना हुआ था, घुटनों तक का ओवरकोट पहिने हुए था एवं शरीर का ऊपर का भाग नंगा ही था। उसे देख कर कोई नहीं समझ सकता था कि वह उस लड़के का बाप नहीं बल्कि नौकर होगा। अपने को ऐसी विपरीत स्थिति में पाकर उसे कुछ अपमान सा आ गया और वह चिल्लाकर बोला, अच्छा, ज़रा खेत पर आकर अपने बदन में मिट्टी लगा जाओ, कहीं तुम्हें लोग चौरस न समझ लें। जो कुछ खाते हो उसके लिए कुछ तो खेत पर काम करो।"

इस समय वाँग बिल्कुल भूल गया कि उसे इस लड़के की पढ़ाई लिखाई पर कभी गर्व भी हुआ था। लड़का वहीं खड़ा हुआ बाप की ओर नफ़रत से देख रहा था किंतु वाँग उस ओर न देख कर वहाँ से चल दिया।

रात को जब वह सुन्दरी के कमरे में गया तो देखा वह आराम से लेटी हुई है और हुक्का पी रही है। सुन्दरी के पास बैठ और कुछ कहने को न हो तो बोली 'तुम्हारा बड़ा लड़का बाहर जाने के लिए बेचैन हो रहा है।"

"तो फिर उसे क्या! इस उम्र में बाहर जाने से उसकी आदतें और खराब हो जायेंगी।"

"नहीं, नहीं! मुझसे तो कुछ ही कह रही थी। इतना सुन्दर लड़का है यहाँ बेकार रहने से अच्छा होगा कि बाहर जाये उसका मन भी बहलेगा।

वाँग को मन ही मन लड़के पर क्रोध आ रहा था वह बोला 'नहीं वह नहीं जायगा। मैं अपना रुपया व्यर्थ में खर्च नहीं करूँगा।" यह सुन कर सुन्दरी ने आगे कोई चर्चा नहीं चलाई चुप होकर वाँग की बातें अनमनी सी सुनती रही।

इसके बाद कई दिनों तक इस विषय में और कोई बात नहीं हुई। लड़का भी चुप रहा। स्कूल जाना तो बन्द हो ही गया था। वह अब ग्यारह वर्ष का सुन्दर नौजवान था। वाँग जब जाता तो उसे कमरे में ही पढ़ता हुआ देखता। वाँग को यह सब देखकर प्रसन्नता होती और वह सोचता— 'यह तो लड़के की सनक ही थी उसे यह भी पता नहीं कि आखिर वह चाहता क्या है। अब तीन वर्ष की ही तो बात है— और यदि कुछ रुपया खर्च किया जाय तो दो वर्ष बल्कि एक वर्ष में ही उसका विवाह किया जा सकता है। यदि फसल अच्छी हुई और रुपया मिल गया तो विवाह होते देर न लगेगी।'

वाँगलुङ इसके बाद लड़के की बात बिलकुल भूल गया। टिड्डियों ने नुकसान तो कर ही दिया था फिर भी उसकी फसल अच्छी हो गयी हुई तथा जो रुपया पैसा उसने सुन्दरी पर खर्च कर दिया था, वसूल हो गया। कभी कभी उसे मन ही मन यह पछतावा भी हो जाता कि व्यर्थ में ही उसने इतना रुपया अपनी प्रेम क्रीड़ाओं में बर्बाद क्यों किया?

फिर भी कभी २ वह उसकी सुन्दरता से प्रभावित हो जाता, यद्यपि पहिले की भाँति अब उस पर आसक्त नहीं था। चाची ने ठीक ही कहा था कि वह इतनी कम उम्र की नहीं थी जितनी वह समझता था। उससे कोई बच्चा भी नहीं हुआ था, किन्तु इस बात की विशेष चिन्ता वाँग को न थी क्योंकि ओलान से उसके बेटे-बेटियाँ थीं। वह सुन्दरी को उसकी प्रेम पिपासा बुझाने का साधन मात्र थी। पहिले से उसका जीवन और अधिक निखर आया था। खुराक अच्छी मिलती थी काम कुछ करने को था नहीं, अतः वह अब गोल मटोल हो गई थी। यदि वह अधखिली कली न थी तो पूर्ण-विकसित पुष्प भी नहीं थी। यद्यपि जवानी ढल रही थी तो भी बुढ़ापा अभी कोसों दूर था।

एक दिन वाँग बैठे-बैठे अनाज की बिक्री का हिसाब लगा रहा था कि ओलान उसके कमरे में आई। उसने पूछा—ओलान धीरे से

अधिक दुबला हो गई है और उसकी आँखें गड्ढे में धुसी जा रही हैं। किसी के पूछने पर वह यही कहती थी कि उसके अन्दर बलगम इकट्ठी रहती है। यद्यपि इधर कई वर्षों से उसके संतान होना बन्द हो चुका था लेकिन फिर भी उसका पेट बढ़ा दिखाई देता। दिन भर वह काममें लगी रहती थी। बातचीत तो किसी से करती ही नहीं थी। उसे दिन भर काम में लगा देख कर कभी-कभी वाँग कह बैठता था—"तुम खुद काम में क्यों लगी रहती हो! अब मेरे पास इतना रुपया है तो अपने लिए कोई नौकर न रख लो। वाँग इतना कह करके ही रह जाता था।

इससे स्पष्ट नहीं होता कि जहाँ कि खेतों पर काम करने के लिये वह इतने मजदूर रखता फिरता है, तो एक नौकर घर के लिए भी रख ले।

ओलान उसके पास जाकर धीरे से बोली—

"मुझे कुछ कहना है।"

"कहो।"

"जब तुम नहीं होते तो बड़ा लड़का सुन्दरी के कमरे में जाता है।"

"यह स्वप्न की बातें हैं, ऐसा नहीं हो सकता—" वाँग ने कहा उसने सोचा शायद ओलान सौतिया-डाह के कारण यह बातें बना रही होगी।

ओलान ने फिर कहा, "अब भी कुछ समझने की कोशिश करो, बड़े लड़के को बाहर भेजना ही उचित होगा।"

वाँग ने कोई उत्तर नहीं दिया औरत की बातों पर हँसता ही रहा। वह स्वयं लड़के की ओर से सन्तुष्ट था क्योंकि उसे वह सदा पढ़ता ही देखता रहता था।

इसी तरह से जब वह सुन्दरी के पास गया तो उसने वाँग को एक ओर खिसकाते हुए कहा— कितनी गर्मी है और तुम्हारे शरीर से पसीने की बू आ रही है। मेरे पास आया करो तो नहा धो कर आया करो।

सुन्दरी इतना कह एक ओर उठ कर बैठ गई। कौस के बुलाने से भी पास नहीं आई। उसे कोतवाल की बात याद आ गई तथा इस समय सुन्दरी का व्यवहार भी उसे अच्छा नहीं लगा। वह तुरन्त ही बिस्तरे से उठ खड़ा हुआ और बोला—"अच्छा तुम अकेली ही सो जाओ, अब यदि मैं तुम्हारे पास आऊँ तो गधा कह देना।" इतना कह वह कमरे से बाहर होगया तथा अपने मकान में जाकर दो कुर्सियाँ बिछा, पड़ रहा। कुर्सियों पर पड़े हुये जब नींद नहीं आई तो मकान से बाहर जाकर ठंडी हवा में घूमता रहा। वह यही सोचता रहा "कि आखिर सुन्दरी को कैसे मालूम हुआ कि मेरा उसका बाहर जाना चाहता है। इधर कई दिनों से मैंने उ भी इस बारे में कोई जिक्र नहीं किया था। अब उसने सोचा कि भेद का पता लगाना ही चाहिये।"

दूसरे दिन सुबह उसने जरा जोर से खाना खाया और फिर ऊँची आवाज में कहा—"मैं शहर के पास एक जगह जा रहा हूँ और जरा देर से लौटूँगा।" उसकी यह बात घर वालों ने सुन ली।

कौस शहर की ओर चल पड़ा किन्तु आधा रास्ता तय कर ही वह पुराने मन्दिर की छाया में जाकर बैठ रहा। पास के खिड़कों से दोनों को झरोखे हुये वह ऊपर की मूर्तियों की ओर देखता रहा। सोचने लगा—"यह वही देवता है जिससे पहिले वह डरा करता था किंतु अब जिसकी उसे कोई परवाह भी नहीं है।" ऐसा विचार करते हुये फिर वह बहुत देर तक इस ऊहापोह में पड़ा रहा कि घर वापस जाये या नहीं। सुन्दरी का ध्यान आते ही उसे फिर गुस्सा आने लगा—"यहाँ आराम से पड़ी रहती है फिर भी कभी नहीं मिलती, चाहे उस बाप की दुकान में उसे अब कोई दिलचस्पी भी नहीं।" इसी धुन में वह एकाएक उठ खड़ा हुआ और दूसरे रास्ते से चुपचाप घर आ पहुँचा। सुन्दरी के कमरे में पर्दा पड़ा हुआ था, उसी पर्दे की आड़ में वह चुपचाप खड़ा हो गया। अन्दर उसने किसी आदमी की आवाज सुनी। झाँक कर देखा तो वहां उसका सुन्दरी

का हाथ पकड़े हुए मुस्करा रहा था। कौंगनुन का इस समय जो क्रोध उमड़ा उतना उफान पहिले कभी नहीं आया था। होंठ पीसते हुए वह लड़के के साथ अपनी प्रेयसी की प्रेम-क्रीड़ायें देखता रहा, लेकिन उसके आने का इन दोनों को ज़रा भी पता न चला।

कौंग किसी प्रकार बाहर से आया, पेड़ से एक लकड़ी सी छड़ी तोड़ी और उसे हाथ में ले वह कमरे की ओर गया, फिर वहाँ उछल हुए कमरे के अन्दर घुस गया। कमरे में देखा दोनों मैं डूबते चले रहे थे और सुन्दरी नई उमङ्ग से लड़के की ओर बढ़ रही थी। उसके कमरे में दाखिल हो जाने पर भी दोनों को कुछ पता नहीं चला इतने ही में कुछ ऊपर सा आ गिरी। उसने कौंगनुन को जब हाथ में छड़ी लिए हुए देखा तो उसकी चीख निकल पड़ी। चीख की आवाज़ सुनकर दोनों ने देखा कि कौंग वहाँ खड़ा था। कौंग का क्रोध उबल पड़ा और इसके पहिले कि वे दोनों सँभलें वह अपने लड़के पर टूट पड़ा और छड़ी से मारते मारते लड़के को लहूलुहान कर दिया। लड़का पाप में चूर में ऊँचा था किंतु मार में ताकत अधिक थी। लड़का चुपचाप मार सहता गया। सुन्दरी ने भाग कर उसे बचाने की चेष्टा की तो कौंगने उसे भी मार लगाई, तब सुन्दरी वहाँ से भाग खड़ी हुई।

मारते मारते कौंगनुन का दम घुट उठा और वह पसीने से लथ पथ हो गया। वह थक चुका था, उसने छड़ी एक ओर फेंक दी और लड़के से कहा— "जाओ अपने कमरे में जाओ यहाँ से जब तक मैं न कहूँ निकलना मत नहीं तो जान निकाल लूँगा।" लड़का चुपचाप सिसकता हुआ वहाँ से चल दिया। कौंग वहीं बैठा रहा उसका क्रोध को देखकर किसी को उसके पास आने का साहस न हुआ। धीरे-धीरे जब क्रोध शांत हुआ तो वह सुन्दरी के कमरे में गया—वह पलंग पर पड़ी हुई ज़ार ज़ार से रो रही थी। कौंग ने उसे उठाने की कोशिश की किंतु वह पड़ी ही रही। कौंग ने देखा कि मार से उसके शरीर में फफोले पड़

गये थे । वाँग को इससे दुःख हुआ, परन्तु उसने कहा —तुम मेरे बच्चे के ही साथ बदचलनी करने पर उतारू हो गई" ..."

वह फिर जोर से रो पड़ी और अपनी सफाई देती हुई बोली — 'नहीं मैंने कुछ नहीं किया । लड़का अकेला था वह स्वयं ही इधर आया । चाहो तो तुम कुक्कू से पूछ सकते हो, यदि वह मेरे बिस्तर के पास भी आया हो तो ।" उसने फिर वाँग की ओर डरते हुए देखा अपने हाथों से मार की चोटें दिखाते हुये कहा, "देखो तुमने अपनी प्रेयसी के साथ क्या व्यवहार किया है । मैंने सिवाय तुम्हारे और किसी आदमी को पास नहीं आने दिया है । यदि तुमने लड़के को यहाँ देखा तो वह तुम्हारा ही लड़का था मेरे लिए कोई नहीं— "

वाँग ने देखा सुन्दरी की आँखों से आँसुओं का स्रोत बह रहा था । वह मन ही मन पछताने लगा । उसकी सुन्दरता वाँग के लिए बहुत बड़ी वस्तु थी, अतएव वाँग और कुछ न सुन सका । वह सीधा लड़के के कमरे में गया और उससे कहा, 'अच्छा अब अपना बस्ता बिस्तर ठीक करो और अब यहाँ से चले जाओ जहाँ भी तुम पढ़ने जाना चाहते हो । पर तभी आओगे, जब मैं तुम्हें बुलाऊँ ।"

इसके बाद वाँग वहाँ से भी चल दिया । उधर चोताम बैठी उसकी सी रही थी । वाँग को उधर से जाते देख कर भी वह कुछ न बोली । चोताम ने अपने कानों से मार पीट व चीखने चिल्लाने की आवाजें सुन ली थी, किन्तु वह सब कुछ सुनी अनसुनी कर गई ।

वाँग सीधा अपने खेत पर जा पहुँचा । वह बहुत थक गया था, दिन भर की परेशानी से उसका शरीर चूर-चूर हो चुका था ।

: २५ :

बड़े लड़के के जाने के बाद वाँगलुङ्ग एक प्रकार से निश्चिन्त हो गया। अब उसने सोचा कि और बच्चों के हाल चाल की भी कुछ खबर लेनी चाहिये। दूसरे लड़के की प्रकृति और ही थी। कद उसका मंझला था व रङ्ग भी सफेद था। यह लड़का अपनी माता की तरह धीम स्वभाव का होते हुए भी हिसाबी था, कुछ-कुछ चालाकी भी उसमें थी। वाँग ने सोचा कि यह लड़का व्यापार में ठीक रहेगा, इसलिये उसे स्कूल से उठा लेना चाहिये। किसी सौदागर के यहाँ नियुक्त करा देने से वह व्यापार के सब ढङ्ग सीख लेगा। ऐसा करने से उसे अपना भाग्य देखने के लिये और कहीं न जाना पड़ेगा। इसी विचार से उसने एक दिन कुक्कू को बुला कर कहा—"बड़े लड़के के ससुर से जाकर कहना कि मुझे एक बात करनी है।"

कुक्कू इतना सुनकर वहाँ से चल दी और शीघ्र ही हँसी खुशी लौट कर बोली—"यदि आप चाहें तो वह आने को तैयार है, किन्तु यदि आप वहीं आ सकें तो वह आपकी खातिर करके अपने को सौभाग्यशाली समझेंगे।"

वाँग ने सोचा कि शहर के उस व्यापारी का यहाँ आना तो ठीक होगा नहीं उल्टा उसकी खातिरदारी में खर्चा ही पड़ेगा। अतएव नहा-धोकर व नये रेशमी कपड़े पहिनकर वह शीघ्र पत्थर के पुल के पास वाले फाटक पर जा पहुँचा। उसी फाटक पर बोर्ड पर लिङ्ग का नाम लिखा

था। वाँग ने सोचा शायद यही जगह है किन्तु स्पष्ट पता लिखा न होने से उसने एक राह चलते व्यक्ति से पूछा — 'क्या यहीं पर 'लियू' लिखा हुआ है ?'' उसने जब पूरी तरह से इत्मीनान कर लिया कि लियू'' महाशय यहीं रहते हैं तो जाकर फाटक के किवाड़ खटखटाये। आवाज सुन कर एक औरत बाहर निकली और पूछा आपका नाम क्या है ? आप कहाँ से आये हैं ?''

वाँगलुंग ने जब अपना नाम पता बताया तो वह हैरत से देखने लग गई और समझ गई यही उसके मालिक की लड़की के भावी ससुर हैं। बड़े आदर के साथ उसने वाँग को अन्दर जाकर मेहमानों की बैठक में बिठा दिया। कमरा बड़ा शानदार था। आधुनिक व प्रचलित फैशन की सारी सामग्रियों से वो भली भाँति सुसज्जित था। वाँग यह देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ उसे निश्चय हो गया कि लियू काफी सुघड़ व धनी आदमी है चाहे बहुत अधिक धनी न हो। किन्तु यही ठीक भी था। उसे बहुत रईस घर की लड़की पसन्द न थी क्योंकि ऐसे घर की लड़की आने से अपना लड़का भी हाथ से जाता रहता है।

वाँग इन विचारों में बैठा था कि समधी महाशय भी आ गये। दोनों आदर पूर्वक अभिवादन के साथ एक दूसरे से मिले। लियू ने वाँग की बड़ी खातिर की। दोनों ने थोड़ा मद्यपान किया फिर इधर उधर की बातों में लीन हो गये। वाँगलुंग ने थोड़ी देर बाद कहा—

' मैं एक आवश्यक बात करने आया हूँ। यदि आप चाहें तो मेरे दूसरे लड़के को अपनी दूकान में रख लें, वह कुछ सीख जायगा क्योंकि लड़का होशियार है।''

व्यापारी लियू ने हँसते हुए कहा यदि कोई पढ़ा लिखा व समझदार लड़का मिल जाए तो अवश्य अपने यहाँ रख लेंगे।

वाँग ने कहा, "मेरे दोनों लड़के पढ़े लिखे हैं, और वह लड़का

आपका काम बड़ी अच्छी तरह से चला सकेगा इसका मुझे पूरा विश्वास है।"

"तो ठीक है आप उसे भेज दीजिए। पहिले साल तो वह काम ही सीखेगा अतएव उसे खाना ही दिया जायेगा इसके बाद उसको प्रति मास एक चौथाई का हिस्सा व फिर तीन साल में करीब तीन पैसे ही मिलने लग प्रति मास मिल जाया करेंगे। इतने में ही लड़के का कुछ अनुभव भी हो जायगा। वह इधर-उधर से जो भी कुछ कमा सकेगा, वह सब उसका ही रहेगा। चूंकि हमारे आपके सम्बन्ध हो चुके हैं, अतएव मैं कोई जमानत लेने की आवश्यकता नहीं समझता।"

वांगलुङ प्रसन्न हुआ और उठते हुए बोला "हम लोगों की मित्रता अवश्य बनी रहेगी। हाँ एक बात और है मेरी लड़की के लिए भी कोई लड़का है आपके यहाँ?"

व्यापारी ने मुस्कराते हुए कहा "मेरे दूसरे लड़के का सम्बन्ध अभी कहीं निश्चित नहीं हुआ है, उसकी उम्र एक वर्ष है। आपकी लड़की की आयु कितनी होगी?"

"अगले साल वह भी एक वर्ष की हो जायगी। लड़की फूल की तरह सुन्दर है।" वांग ने कहा।

यह सुनकर दोनों बहुत प्रसन्न हुए। किन्तु महाशय बोले "तब तो फिर हम लोग दोहरे रिश्ते में बंध जायेंगे।"

वांग कोई उत्तर न दे सका, उसने अपने सम्बन्धी से आज्ञा ली और प्रसन्न चित्त अपने घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुँच कर उसने अपनी लड़की को पास बुलाया तो देखा कि उसके गालों पर बहते हुए आँसुओं के निशान हैं। उसे अपनी गोदी में बिठाते हुए वह बोला "क्यों क्या बात है?"

लड़की ने बड़ी दयनीय दशा से कहा "माँ मेरे पैर कस कर बाँध गयी है, इसलिये बड़ा दर्द होता है, रात में भी नींद नहीं आती।"

वाँग बोला, "मैंने तुम्हें रोते हुए तो कभी नहीं देखा।" इस पर लड़की ने उसे बताया, "माँ ने मुझे ज़ोर से रोने को मना कर रखा है, क्योंकि यदि तुम सुन लोगे तो दया कर के मेरे पैर बाँधना बंद करा दोगे, जिससे वह बड़े हो जायेंगे। तब मेरा पति भी इसी प्रकार मुझे नहीं चाहेगा, जिस तरह से कि वह स्वयं अपने पति की नज़रों से गिर चुकी है।"

लड़की के इन शब्दों से वाँग के हृदय में बड़ा आघात पहुँचा और उसे ओलान के साथ किया हुआ बर्ताव याद आ गया। वह लड़की के सिर को सहलाता हुआ बोला, "तुम फ़िक्र न करो। मैंने तुम्हारे लिए बड़ा नेक पति ढूँढ़ लिया है। देखो, कुक्कू की मारफत बात पक्की किये देते हैं।"

लड़की शर्मा गई। वाँग ने उसी समय कुक्कू को बुलाकर बात पक्की करने के लिए भेज दिया और स्वयं सुन्दरी के पास सोने चला गया। लेकिन उसे नींद नहीं आई। लड़की की बातों का उसके हृदय पर बड़ा अमिट प्रभाव पड़ चुका था। वह सोचता रहा कि ओलान उसकी पत्नी है किन्तु नौकर की तरह सारे दिन उसके काम में लगी रहती है— कितनी सीधी सच्ची है ओलान।

कुछ दिनों बाद वाँग ने अपने दूसरे लड़के को भी लियू की दूकान पर भेज दिया। लड़की की शादी की बात भी तय हो गई, लेन-देन—दान दहेज सब पक्का हो गया। विवाह का दिन भी निश्चित हो गया। वाँग को पूरी तसल्ली हो गई कि अब उसने अपने सारे बच्चों का काम ठीक कर दिया। केवल वह गूँगी लड़की और सबसे छोटा लड़का रह गया। लड़की के लिए खाने पीने की कोई कमी नहीं थी। सबसे छोटे लड़के के लिए उसने सोचा कि उसे वह पढ़ने के लिए स्कूल न भेज कर खेती का काम ही सिखायेगा। बच्चों की ओर ध्यान करते करते उसे ओलान का भी ध्यान हो आया, जिसने उसके लिए बच्चों को पैदा किया

था। सोजान की ओर इतना ध्यान उसने पहिले कभी नहीं दिया था। अब उसे ख्याल हुआ कि बेचारी दिन भर मेहनत करती रहती है परन्तु दिनों दिन गिरती जा रही है किन्तु फिर भी वह चुपचाप ही रहती है। अपने किये गये व्यवहारों पर वह स्वयं ही झेंपता रहने लगा था। कभी सोचता कि उसे प्यार नहीं किया तो क्या, खाना तो दिया है तथा उसकी और भी मांगें पूरी की हैं। किन्तु जब उसने फिर सोजान की ओर गौर से ध्यान दिया तो पता चला कि उसका स्वास्थ्य बहुत गिर चुका था, बाल सफेद होने लगे थे और कमर झुक गई थी।

एक दिन जब सोजान बोंगसुक के लिये खाना लाई तो उसने देखा कि चेहरे पर झुर्रियाँ सी आई हुई हैं और वह पेट पकड़े हुए इधर आ रही है। बोंग ने पूछा उसे कोई तकलीफ तो नहीं है। इस पर सोजान ने यही कहा कि पेट की नसें दुखती हैं। बोंग ने छोटी बहू को तुरन्त बुलाया और कहा "जाओ तुम कमरा साफ करो, तुम्हारी माँ की तबियत ठीक नहीं है।" इसके बाद बड़ी नरमी से सोजान से कहा — "तुम बिस्तर पर लेट जाओ बहू को पेट सेंकने के लिये गरम पानी दे जायेगी, तुम उठना नहीं।"

सोजान चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गई। दर्द के मारे अब वह कराह रही थी। बोंग उसके कराहने की आवाज सुनता रहा। जब उससे सोजान की तकलीफ नहीं देखी गई तो वह घबरा कर उठा और शहर जाकर डाक्टर को बुला लाया।

डाक्टर ने मरीज की जाँच की और कहा "जिगर बढ़ गया है पेट में शायद पथरी पड़ गई है, इसीलिये पेट दुखने लगता है। हृदय की धड़कन भी मन्द पड़ चुकी है।"

डाक्टर द्वारा यह हाल सुन कर बोंगसुक धक से रह गया। उसने डाक्टर से कहा — "तो ठीक है उसकी दवा दीजिये।"

डाक्टर ने शीघ्र ही गम्भीर होकर कहा "मर्ज बढ़ चुका है। मैं

तुम्हें एक जड़ी-बूटियों का नुस्खा लिखे देता हूँ उनको उबाल कर पानी पीने को देना। इस नुस्खे की फीस दस चाँदी के सिक्के होंगे, लेकिन इसकी गारन्टी नहीं होगी। यदि तुम मर्ज ठीक होने की गारन्टी चाहते हो तो इसकी फीस पाँच सौ चाँदी के सिक्के होंगे।

ओलान ने जब सुना कि फीस पाँच सौ सिक्कों तक पहुँच गई है तो वह आँखें खोल कर बोली "नहीं, नहीं! मेरी जिन्दगी इतनी कीमती नहीं है। इस रकम से तो अच्छी खासी जमीन खरीदी जा सकती है।" वाँग ओलान की यह बात सुनकर और उदास हो गया फिर बोला— 'डाक्टर साहब! आप फिक्र न करें, मैं आपको पूरा रुपया दूँगा, किन्तु अब मैं मौत नहीं होने दूँगा।

डाक्टर ने जब सुना कि इतनी फीस वाँग दे सकेगा तो उसे और भी लालच हो आया। वह बोला—"इसकी शायद मुझसे कोई गलती हो गई है। आँखों का रङ्ग सफेद पड़ गया है। पाँच हजार सिक्के दो तब ही पूरी गारन्टी कर सकूँगा।"

इतनी लम्बी चौड़ी फीस सुन कर वाँग को बहुत क्षोभ हुआ। डाक्टर तो समझ गया था कि ओलान का जीवित रहना सम्भव नहीं फीस लेकर गारन्टी देने से वह कानूनी फंदों में फंस जाता अतएव उसने एकदम इतनी फीस बढ़ाई थी। किन्तु वाँग का हाल बुरा हो रहा था। सारी जमीन बेचकर भी उसके लिये इतनी बड़ी रकम इकट्ठा कर देना सम्भव न था।

वाँगलुङ्ग ने चुपचाप डाक्टर की फीस के दस चाँदी के सिक्के दे दिये। डाक्टर के जाने के बाद वाँग उस अन्धेरी रसोई घर में गया, जहाँ ओलान का दिन बीत जाता था। ओलान की मृत्यु के भय से वह वहीं मुँह पर हाथ रख कर रोने लगा।

: २६ :

ओलान महीनों भर मृत्यु शय्या पर पड़ी रही। वांगलुङ व बच्चों को अब ओलान के काम-काज की कीमत मालूम पड़ने लगी। घर बिगड़ा घर सा दिखाई देने लगा। उसे किसी को चाय तक बनानी आती थी, न आग जलाना और न घर की सफाई रखना होता। थोड़े ही दिनों में बूढ़े ससुर के ढेर से वांग का चित्त व्याकुल हो गया। आखिर उसने अपनी लड़की को घर की सफाई करने के लिये कहा।

वांग का छोटा लड़का दस वर्ष का जो कुछ काम बन पड़ता किया करता, बूढ़ा बाप तो किसी काम का था ही नहीं। वांग को समझ में न आया कि बूढ़े बाप से कैसे कहे कि आजकल जब स्वयं उसके लिए तर्क पानी न आप लेकर क्यों नहीं आती। ऐसे बाप न रहा पानी जब उसे मिलता रहा तो वह भी चिड़चिड़ा हो गया। आखिर एक दिन वांग अपने बाप को ओलान के कमरे में ले ही गया, जहाँ वह बिस्तरे पर पड़ी थी। अपनी धुंधली आँखों से जो वह ओलान की तरफ ताक रहा था और मन ही मन रोने लगा। पगली उसको कतई कुछ समझी नहीं वह तो मुस्कराती ही रहती। पगली होने के साथ वह भूखी भी तो अब किसी न किसी को उसका ध्यान रखना ही पड़ता था। वांग स्वयं उसकी देखभाल करना भूल गया था। एक दिन बेचारी रात भर सर्दी में बाहर ही पड़ी रही, सुबह जब उसने बच्चों की आवाज़ सुनी तो गुस्से में

लड़के-लड़की पर बरस पड़ा । यद्यपि बेचारे सब बच्चे मिल कर काम रहे थे फिर भी अपनी माँ की जगह तो नहीं ले सकते थे ।

ओलान की बीमारी में वांग ने तो खेतों पर जाना भी छोड़ दिया । इस काम की पूरी जिम्मेदारी उसने चिंग पर छोड़ दी । दिन भर वह ओलान के कमरे के दरवाजे पर बैठा रहता दिन पर दिन ओलान की खुराक भी घटती जाती थी । उसकी घबराहट बढ़ गई । अब वह इन सर्दियों में ओलान के पास स्वयं बार २ अँगीठी जलाता एक स्वच्छ बिछौना गर्म रखता था । ओलान कह उठती, "इतना खर्च क्यों करते हो ?" आखिर एक दिन जब वांग को उसका यह कहना न सहा गया तो वह कह उठा-"तुम्हारी तकलीफ अब मुझे बरदाश्त नहीं होती यदि मेरी सारी जमीन भी बिक जाय तो भी फिक्र नहीं, तुम्हारा इलाज पूरा होना चाहिये ।"

ओलान ने अपनी धीमी मुस्कराहट से कहा 'नहीं, नहीं, मैं तुम्हें यह सब न करने दूँगी । मुझे तो किसी न किसी दिन मरना ही है, किन्तु जमीन तो मेरे मरने के बाद भी रहेगी ।'

वांग को ओलान की मृत्यु की बात सुनना असह्य थी । जब भी ऐसी बात होती तो वह उठकर चला जाता था । इतना वह अवश्य समझ गया था कि ओलान की मृत्यु निश्चित है, अतएव एक दिन वह शहर में ताबूत रखने के बक्स देखने गया । कई बक्स देखने के बाद उसने एक अच्छी काली लकड़ी का बक्स पसन्द किया । बढ़ई ने कहा,' यदि आप दो ऐसे सन्दूक खरीदें तो कीमत में एक तिहाई कम किया जा सकता है । एक सन्दूक आप अपने लिये लेकर निश्चिन्त क्यों न हो जावें ?'

"नहीं, मेरे बच्चे स्वयं जरूरत पड़ने पर प्रबन्ध कर लेंगे किन्तु मेरा बाप बूढ़ा हो चुका है, पता नहीं कब चल बसे, इसलिये दो ही संदूक लिये लेता हूँ ।'

बढ़ई ने दोनों संदूकों पर काला रंग व पालिश लगाने के बाद वांग के घर पहुँचा देने का वायदा कर लिया । वांग ने घर आकर ओलान

को सब कुछ बता दिया। ओलान को भी पति के लिये कुछ इस सम्बन्ध से कुछ शांति हुई।

वांग ओलान के पास कभी बैठा रहता परन्तु उसकी बढ़ती हुई दुर्बलता के कारण बात अधिक नहीं करता था। वह जो चुप चाप पड़ी हुई कभी-कभी बचपन की बातें याद करने की चेष्टा करती और कह उठती 'मैं बाजार केवल दुवारे तक ही जाऊँगी। मैं जानती हूँ कि मैं सुन्दर नहीं हूँ अतएव मालिक के सामने मुझे नहीं जाना चाहिये।" वांग ने जब यह सुना था वह बहुत दुखी हुआ उसने ओलान का हाथ अपने हाथ में लेकर हलका दबाने की चेष्टा की। वांग को अपने ऊपर घृणा सी होने लगी कि वास्तव में ओलान सदैव सत्य पर ही रह रही परन्तु उसके प्रति स्वयं उसका व्यवहार अच्छा नहीं हुआ। इन सब कारणों से जब वह ओलान के प्रति बड़ी ममता प्रकट करता रहता था, उसको बड़े २ हकीमों को दिखाया। अपनी बड़ी प्रथमों के बाद जाना की हड़के यह मा हो कर दिया था पर कभी जाता भी ओलान का ध्यान बराबर रहता।

ओलान को बेहोशी कभी थोड़ी २ [illegible] के लिये हुए जाती। एक बार जब वह कुछ होश में आई तो उसने कुक्कू को बुलवा भेजा और सिरहाने पर बैठकर कहा—"मैं जानती हूँ तुम्हारा स्थान बूढ़े रईस के घर की सुन्दरियों में था, किन्तु मैं एक कुरूप स्त्री जो रही हूँ और मैंने पति के लिये सन्तान पैदा की है। तुम अब भी एक रखैल ही हो।"

कुक्कू उसे हाथ में उत्तर देने लगी तो वांग उसका हाथ पकड़ कर बाहर ले गया और समझाने लगा—"इस समय यह बात पूरे होश में नहीं है, तुम इसका ख्याल न करो।" इतना कह कर वांग जब कमरे में वापस गया तो ओलान ने फिर हाथ उठाकर कहना प्रारम्भ किया—"मेरे मरने के बाद भी उसको व कुक्कू को मेरे कमरे में न आने देना और न मेरी कोई वस्तु ही उन्हें छूने देना नहीं तो मैं उसको हर मेज

कर तंग करना।" इतना कह कर वह थक कर तकिये पर गिर पड़ी और बेहोश हो गई।

बहू लाने के बारे से एक दिन पहिले अचानक सोनाम की दशा कुछ कुछ सुधरी दिखाई दी, बीमारी के इस लम्बे अर्से में इतनी अच्छी दशा उसकी अब तक नहीं हुई थी। वह स्वयं ही बिना किसी सहारे के बिस्तर पर बैठी हो गई, सिर के बालों को उसने कस कर गूंथा और मांग भरी। सोम जब उसके पास पहुंचा तो वह बोली—

"बहू कल आने ही वाली है किन्तु अभी तक न तो किसी ने मांस-मछली बनाई और न केक मिठाइयाँ ही। मैंने एक बात सोची है—उस रसोइये को तो मैं रसोई में हरगिज न आने दूंगी। मैं चाहती हूं कि बहू को—जिसके साथ बड़े लड़के का विवाह तय हुआ है—बुला भेजो। मैंने उसे अभी तक देखा भी नहीं है। उसके आ जाने पर सब काम मैं उससे ही करवा लूंगी।"

सोम ने देखा कि सोनाम में कुछ दम आ गया है। वह प्रसन्न हुआ और उसने तुरन्त ही इनचू को लिपू के पास भेज दिया। पहिले तो लिपू ने कुछ आनाकानी की किन्तु फिर उसने सोचा कि सोनाम का जीवन अधिक दिन नहीं है, लड़की भी पूरी वय की हो चुकी है, अतएव भेजने में कोई हर्ज नहीं है—लड़की को उसने भेज दिया।

नई बहू के आने पर कोई खास रौनक सोनाम की तबियत के कारण नहीं की गई। बहू अपनी मां व एक पुरानी नौकरानी के साथ आ गई। मां तो थोड़ी देर में अपनी लड़की को सोनाम के सुपुर्द कर वापस चली गई, नौकरानी को वहीं छोड़ गई।

बच्चों का कमरा खाली करवा कर नई बहू के लिये वहां सारा प्रबन्ध कर दिया गया। बहू ने झुक कर सोम को प्रणाम किया तो वह खुश हो गया। यही संतोष हुआ कि बहू सुन्दर है तथा सब तौर तरीके जानती है। सोनाम के पास जाकर उसने सेवा-सुश्रूषा करना

आरम्भ कर दिया। ओलान को भी बहू की इस अदम्य प्रेरणा से बड़ा सन्तोष हुआ।

तीन दिन तक ओलान की तबियत सम्भली रही। उसने वांग से कहा– "मेरे मरने के बाद एक काम और करना।" इस पर वांग बोल उठा– "मेरे सामने मरने की बात न किया करो।" तब ओलान धीरे धीरे मुस्करा उठी और बोली– "मरना तो मुझे है ही किन्तु मैं उस समय तक न मरूंगी, जब तक कि बड़ा लड़का घर आकर इस लड़की से विवाह न करले। मेरी मृत्यु तभी शान्ति से हो सकती है। क्योंकि मैं निश्चिन्त हो जाऊंगी कि लड़के का विवाह हो गया। तुम्हारे पोता होने की आकांक्षा भी फिर शीघ्र पूरी हो जायगी।

वांग चाहता था कि लड़के के विवाह के लिये जो कुछ प्रबन्ध करना होगा, उसके लिये काफी समय चाहिये किन्तु फिर भी ओलान की इस नई स्फूर्ति से वह प्रसन्न हुआ। उसने ओलान से कहा "आज ही मैं एक आदमी लड़के को बुलाने के लिये भेजे देता हूं। तुम ऐसा ही प्रयत्न करती रहो कि धीरे धीरे तुम में प्राण बल आ जाय और बहुत दिनों तक जीवित रह सको। अन्यथा तुम्हारे बिना यह घर बर्बाद हो जायगा।' वांग के उत्तर से ओलान खुश तो हुई किन्तु कुछ न बोली नहीं।

वांग ने तुरन्त ही एक आदमी को बुलाकर आदेश दे दिया कि वह जाकर लड़के से कहे कि वह शीघ्र ही घर आ जाए उसकी मां बहुत बीमार है और वह चाहती है कि उसके जीवित रहते ही लड़के का विवाह हो जाय। आज से तीसरे दिन ही विवाह की तैयारियां पूरी हो जायगी।" इतना कह कर वांग ने कुक्कू को बुलाकर विवाह की तैयारियों के सारे काम सौंप दिये। वांग ने स्वयं गांव के तमाम लोगों को आमन्त्रित किया। शहर, चाय की दुकान—जहां कहीं भी

पर जिस किसी को जानता, उसके निमन्त्रण दे दिया। चाचा को बुला कर भी कह दिया कि वह जिसको चाहे बुला ले।

विवाह के दिन से पहिली रात को जब लड़का घर आ पहुँचा तो चाँद उसे देखकर उसकी दी हुई चिट्ठी सारी शिकायतें भूल गया। दो वर्षों में ही लड़का पूरा आदमी हो चुका था। सुगठित शरीर पर स्वास्थ्य का लावण्य पहिनने से सौन्दर्य चमक उठा था। चाँद उसे लेकर सीधे कौशल्या के कमरे में गया। माँ ने पुत्र देखकर लड़के की आँखों में आँसू छलछला आए, किन्तु हास्य दिखाते हुए बोला—"तुम भी बहुत ढीठ हो, तुमसे तो कहा गया था कि मामला बहुत खराब है।" कौशल्या बोली—"अब तुम्हारी शादी हो जाएगी उसके बाद मैं शान्ति से मर सकूँगी।"

कुन्ती नई बहू को अपने कमरे में ले जाकर उसका बनाव श्रृंगार करने लगी। उसे अपने कमरे में ले जाने का एक कारण यह भी था कि कहीं विवाह से पूर्व ही नये लड़के से उसकी भेंट न हो जाय। बहूरानी के शृंगार के लिये कुसुम, कुन्ती व कौशल्या दो वालों के लिये भी एक २ काम हो गया। उसे स्नान कराया गया व नए वस्त्र पहिनाए गए इसके बाद इत्र तेल छिड़का गया। नए जरी के गोटे पहिनाकर जब सबने बहू को देखा तो सब चकित रह गए। चाँद ने जब सजी हुई बहू को देखा तो उसने स्वयं शर्मा कर मुँह फेर लिया। उधर लड़का भाग भरी व भारी पगड़ी पहिने कुछ मुँह बाँधे भाइयों के साथ वहाँ लाया गया। चाँद के पूछे जाने से जब वह ठीक ठीक सुनी तो उसे बताया गया कि नये लड़के का विवाह हो रहा है। वह भी खुशी के मारे फूला न समाया और कहने लगा—'शादी हो रही है फिर बच्चे होंगे—उसके बच्चे!" यह सुनके चाँद ने देखा कि सारे महमान भी हँस पड़े। चाँद को कौशल्या का स्वभाव तो याद ही रहा था। पर वह भी सोच रहा था कि लड़का किस प्रकार चाँद की ओर से उसकी बहू को देखकर खुश हो रहा है। उसका संताप और भी बढ़ गया।

दूल्हा-दुलहिन ने पहिले वांग के पिता के सामने, फिर वांग के आगे शीश झुका कर आशीर्वाद लिया। इसके बाद दोनों ओलान के पास गए और नत-मस्तक हो गए। ओलान ने प्यार से दोनों के सिर पर हाथ फेरा और कहा—"यह घर अब तुम दोनों का ही होगा। मेरा जीवन समाप्त हो रहा है तुम लोग सुख रखना।"

ओलान की बात का उत्तर तो कुछ था ही नहीं दोनों चुपचाप एक दूसरे की ओर देखते रहे। इतने में वांग का चाचा दो प्यालों में शराब लिये हुए अन्दर आया। उसने एक-एक प्याला दोनों को दे दिया। दोनों ने अपने २ प्यालों में मधुपान किया, फिर एक दूसरे के प्यालोंमें शराब उंडेल कर इस बात की पुष्टि की कि दोनों अब एक हो गये हैं। दोनों ने एक साथ भोजन किया और इस प्रकार दोनों का विवाह संपन्न हुआ। ओलान के सामने एक बार और झुक कर दोनों ने बाहर आकर मेहमानों के आशीर्वाद लिये।

इसके बाद दावत शुरू हो गई,मेहमानों में शराब का दौर चल पड़ा और सबने जी भर भोजन किया। ओलान ने अपने कमरे के सब दरवाजे खुलवाकर बिस्तरे पर पड़े हुए ही इस रौनक का मजा बहुत आनन्द लिया। वांग इस बीच कभी २ ओलान के पास आता तो वह कहती–क्या सबको शराब मिल गई? देख लेना कहीं किसी के पास कुछ सामान न पहुंचा हो तो—और सबको गरम २ भोजन मिलना चाहिए।" वांग कह उठता—"तुम कुछ फिक्र न करो, मेहमानों को पूरी ऐश आज तो आ रही है।"

सारे मेहमान जब प्रसन्न चित्त हो दावत की तारीफ करते हुए चले गए तो ओलान ने बहू बेटे को बुलाकर कहा-देखो बेटा! यह काम तो अब हो गया, तुम अपने पिता और चाचा का ख्याल रखना और बहू तुम अपने पति, पति के पिता व चाचा की सेवा करना। इसके दूसरे

लड़की का ख्याल भी रखना । इतना करने से ही तुम सब अपने कर्तव्यों का पालन कर सकोगे ।'

बात करते करते ओलान एक गहरी निद्रा में डूबने लगी और उसकी सांस रुक गई । फिर मूर्छा की हालत में उसने कहना प्रारम्भ किया 'ठीक है, मैं बदसूरत हूँ किन्तु फिर भी मैंने लड़के पैदा किये हैं। घर में एक रखैल भी है वह कितनी भी सुन्दर क्यों न हो किन्तु सुन्दर होने से ही तो लड़के पैदा नहीं हो सकते—वह इनको पैदा क्या कर सकेगी ?'

वांगलुङ ने उसको इशारे से वहाँ से हटा दिया और स्वयं ओलान के बिस्तर के पास बैठ कर उसकी ओर देखता रहा । ओलान को देख २ कर उसे अपने से घृणा होती जा रही थी । ओलान ने वांग को देखने के लिये आँखें खोलीं किन्तु प्रकाश धीमा होता जा रहा था । एकाएक एक हिचकी आई सिर एक ओर लुढ़क गया और सांस फड़फड़ाने के बाद प्राण-पखेरू उड़ गये ।

वांग अपने इस दुःख को न सह सका । उसने तुरन्त चाची को बुलाकर ओलान के शरीर को स्नान कराने को कहा । इसके बाद लड़के व बहू की अर्थी को सन्दूक में रखने के लिए विशाल सन्दूकों की ओर स्वयं बाहर जाकर दूर दूर तक ढूँढ़ता फिरा । जब काफी ठीक ठीक सन्दूक के सन्दूक में रख दी गई तो वांग गाँव के ज्योतिषी के पास दाह को करने का मुहूर्त पूछने गया । मुहूर्त तीन महीने बाद का निकला । तीन महीने तक लाश को वांग घर में नहीं रख सकता था अतएव उसने पादरी को फीस चुकाने के बाद, शहर के मन्दिर में किराया देकर वहाँ लाश रख दिये जाने का प्रबन्ध कर ओलान के सन्दूक को वहीं पहुँचा दिया । बाद इसके मातम की तमाम रस्में पूरी की गईं, बच्चों के लिए सफेद मोटे कपड़े के जूते बनवाये गये, घर की स्त्रियों के लिये सफेद फीते सिर में बाँधने के लिए दे दिये गए ।

जिस कमरे में ओलान की मृत्यु हुई, उस कमरे में वांग का रहना कठिन था, अतएव वह सुन्दरी के गृह में चला गया और अपने बड़े लड़के को बुलाकर कहा—"तुम अपनी स्त्री के साथ उस कमरे में जाकर रहो जहां तुम्हारी माँ रहती थी और जहां उसकी मृत्यु हुई है।" दोनों चुपचाप वहाँ जाकर रहने लगे।

कई दिनों तक घर में सन्नाटा छाया रहा एक निर्जीव शान्ति बनी रही। ऐसा मालूम होता था मानो यमदूत अब भी उस घर से बाहर जाने को तैयार नहीं थे। ओलान के मरने से वांग के बूढ़े बाप को बड़ा धक्का पहुंचा। एक दिन सुबह जब वांग की दूसरी लड़की बाबा के पास चाय की प्याली व गर्म पानी लेकर पहुंची तो उसने देखा कि उसका शरीर बिस्तरे पर अकड़ा हुआ पड़ा है। लड़की यह देख कर डर के मारे चिल्लाने लगी और भागकर अपने बाप वांग को बुला लाई। वांग ने आकर देखा कि उसका बाप भी मरा पड़ा है। पिता की मृत्यु से वांग को बड़ा दुःख हुआ। बाप की लाश को उसने स्वयं स्नान कराया और दूसरे कफन के सन्दूक में उसकी लाश को बंद कर दिया। उसने सोचा कि एक ही दिन पत्नी व पिता के कफन को पहाड़ी जमीन के कब्रिस्तान पर दफना दिया जायगा। उसने उसी समय अपनी यह इच्छा भी प्रकट कर दी कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी लाश भी उन्हीं के पास दफना दी जाय।

आखिर नियत समय पर उसने कई मन्दिरों से पुरोहित बुलवाये। वह लाल रंग के लम्बे चोगों में आकर ढोल पीटते और मृतकों की शान्ति के लिए मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। थोड़े २ देर में वांग ने उन पर रुपयों की वर्षा की।

सारी रात इन पुरोहितों ने मंत्र पढ़ पढ़कर मरी गई आत्माओं को शांति देने की चेष्टा की। वांग ने कब्रों के लिए अपनी खानदानी जगह पहले से ही नियत कर रखी थी। दिन में कब्र के लिये गड्ढे खोदकर

चारों ओर मिट्टी की दीवाल भी खड़ी कर दी थी। दूसरा स्थान उन कब्रों के बीच में छोड़ दिया गया था जहाँ वाँग स्वयं अपनी मृत्यु के बाद शांति पाना चाहता था। यही नहीं जिन ने तो इतना बड़ा अहाता बना दिया था कि वहाँ सारे परिवार के सदस्यों के लिये जगह हो गई थी। वाँग ने भी कोई एतराज़ ज़ाहिर न किया क्योंकि इससे उसमें कम उसकी ज़मीन तो उससे भी बाहर नहीं जा सकती थी।

दूसरे दिन वाँगलुङ ने सब घर के लोगों ने मातमी लिबास पहिना। उसके लिए डोलियाँ मंगवाई गईं और सब लोग इस नये कब्रिस्तान की ओर चल पड़े। वाँग को अँथी की दुनियादारी का क्यावकर के साथ हो गई। पीछे ७ खेत पर काम करने वाले मजदूर व गाँव वाले पैदल चले। रोता हुआ वह बूढ़ा कब्रिस्तान पहुँच गया और उसकी इच्छा पूरी हो गई। ओलान को कब्र में उतारने के बाद जब मिट्टी डाली गई तो वाँग फूट फूट कर रोने लगा। वापसी में वह पैदल ही घर लौटा। रास्ते में रह रह कर उसे यही ख्याल आता था कि उसने ओलान के वे दो बेशकीमती मोती क्यों ले लिए। सुन्दरी अब उन मोतियों को अपने गहनों में लगायेगी, तो वह बरदाश्त न कर सकेगा।

अपने इस रंगीले मकानों में वह सोचता रहा—"मेरी ज़मीन के इस टुकड़े में मेरा जीवन दबा हुआ है। अब मेरे जीवित रहने में कोई तत्त्व नहीं है। अब तो केवल अपने दिन गिनने हैं।" उसकी आँखों में फिर आँसू छलछला आए और वह बच्चों की भाँति अपने हाथों से आँसुओं को पोंछता ही रह गया।

: २७ :

इतने दिनों तक वॉनगफ़ घर में ही विवाह, दावतों व मौत की लगातार होने वाली घटनाओं में इस प्रकार डूबा रहा कि उसे अपने खेतों व जमीन की ओर ध्यान देने का कोई समय ही न मिला। एक दिन चिन ने उसके पास आकर कहा—

"यदि आपको समय हो तो जमीन के बारे में कुछ बातें करनी हैं।"

"अरे मैं तो खेत व जमीन के बारे में सब कुछ ही भूला हुआ हूं।" चिन ने कुछ देर चुप रहने के पश्चात कहा— "भगवान न करे ऐसा हो, किंतु ऐसा दिखाई दे रहा है कि इस वर्ष इतनी बाढ़ आने वाली है जितनी शायद पहिले कभी न आई हो। नदियों में पानी अभी से बढ़ता दिखाई दे रहा है और अभी तो गर्मी बहुत दूर है।"

वॉन को एकदम इस ऐसी भविष्यवाणी पर झुंझलाहट आने लगा "वह ऐसी भविष्यवाणी ही सब करता है चाहे भगवान की इच्छा हो या नहीं। चलो खेत ही चलकर देखें।"

चिन भगवान से डरता था और उसको इतना साहस कभी न होता कि वह इसी प्रकार के प्रति अपना रोष प्रकट करे केवल 'भगवान की मर्जी ही ऐसी है।' कहकर चुप हो जाता था। वॉन जब खेत पर पहुँचा तो देखा कि चिन ठीक ही कहता था। हांग से जो जमीन खरीदी

प्रति वह उदासीन ही बना रहता। किसी भी अनजाने आदमी को वह अपने घर के अहाते में नहीं आने देता था। वह यह भी समझता था कि बाहर वाले व रिश्तेदार ऊपर से कितनी ही इज्जत करें लेकिन अन्दर अन्दर उसके रईस होने के कारण जलते हैं। इस समय वह किसी से मिलाजुलना भी नहीं चाहता था। इसका कारण रोज का आए दिन डाका पड़ने की खबरें उसके कानों में पड़ती रहती थीं। उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसका घर केवल उसके चाचा के कारण ही सुरक्षित है अतएव वह चाचा, चाची व चचेरे भाइयों को पूरा आराम देता रहा। चाचा, चाची भी कम होशियार न थे। वे ताड़ गये कि भोंग उनसे डरता है, तभी इतनी खातिरदारी करता है। इस डर का फायदा उठाकर वे भोंग की नित्य नई फरमाइशें किया करते। विशेषतया चाची कुन्दन व सुन्दरी की नित नई मांगों से वह तंग आ गया था।

अपने चाचा की ओर से तो भोंग को ऐसी विशेष चिंता नहीं थी, क्योंकि वह बूढ़ा हो गया था और चुपचाप घोर ध्यान में ही चूर था किन्तु उसका लड़का व चाची की ओर से खतरा बना ही रहता था। भोंग ने इन दोनों को एक दिन चाचा से कहते हुए सुना—

'उसके पास माल भरा पड़ा है, रुपये भी हैं। हमें कुछ अपना मांग लेना चाहिए। —चाची ने कहना शुरू किया—"भोंग को पता है कि तुम डाकुओं के सरदार हो इसीलिए हम लोगों की इतनी खातिर होती है हम लोगों के यहाँ रहने से भोंग को चोरी डकैती का कोई खतरा नहीं है। इस मौके का हमें फायदा उठा लेना चाहिए।"

भोंगसिंह ने चुपचाप दरवाजे के पास खड़े होकर जब यह सुना तो वह मजबूर होकर मन ही मन तिलमिलाकर रह गया। सोचने लगा कि किसी विशेष युक्ति से ही इन लोगों से सुरक्षित रहना होगा। दूसरे दिन चाचा ने अपने लिये तम्बाकू व चाबुक और अपनी स्त्री के लिए नया कपड़ा बनवाने के लिए भोंग से कुछ रुपये मांगे। भोंग ने चुपचाप

रुपये दे दिए। इस बात को दो दिन भी न हो पाए थे कि चाचा ने फिर रुपया का सवाल किया तो लाचार होकर चौंग को कहना पड़ा—"यदि यही हाल रहा तो फिर हम सबको भूखों मरने की नौबत शीघ्र ही आ जायगी।' इस पर चाचा ने बड़ी लापरवाही से हँसते हुए जवाब दिया—'तुम्हें तो बाप के जो मुतफ़र्रिक़ात समझना चाहिये देखते नहीं हो तुमसे कम उम्र वाले आजकल किस ही मजा लिये जा रहे हैं।"

यह सुनते ही चौंग की छाती पर पसीना उभर आया और चुपचाप उसने चाचा के हाथ पर रुपये रख दिए। उसका भोजन तो बिना मांस मछली के होता रहा, किन्तु चाचा के परिवार के लिए मांस लाना बन्द न हुआ। चौंग स्वयं तो कभी कभी ही तम्बाकू पीता किन्तु चाचा के मुँह में पाइप हमेशा ही सुलगा करता।

चौंग का बड़ा लड़का विवाह के बाद अपनी नई बहू के संग बड़ी मस्त था। घर पर क्या बीत रही थी इसका उसे कुछ भी न था। अलबत्ता अपने चचेरे भाई की नजर से वह अपनी बहू को बचाये रखता था। वह बहू का कमरे से बाहर नहीं निकलने देता था। जब लड़के को यह पता चला कि चाचा, चाची व चचेरे भाई न बाप को तंग कर रखा है तो उसे बड़ा गुस्सा आया और एक दिन बाप से कहने लगा—यदि आप मोह से अधिक इन लोगों का ख्याल रखते हैं तो अच्छा नहीं होगा कि मैं अपना घर किसी और जगह बना लूँ।" चौंग ने सब बेटे को सारी बातें बतलाईं और फिर कहा—'मैं इन लोगों को अपने यहां से हटाना चाहता हूँ किन्तु लाचार हूँ। चाचा डाकुओं के सरदार हैं। उनसे कुछ भी कहने में हमारा बड़ा नुकसान हो जाने का खतरा है।

यह बात सुनकर लड़के को बड़ा तैश आया। वह कहने लगा "इनको भगाने की तरकीब तो बड़ी सीधी है। आज ही रात को मुर्दों की याद में हवन किया जाय। चाची मोटी ताजी है उसे बिना बढ़ा

: २८ :

वांगलुंग अपनी दूसरी लड़की को जब सिंदू को सौंपकर निश्चिन्त हो गया तो एक दिन चाचा से बोला—

“आप मेरे पिता के भाई हैं, उनके लिये कभी कभी मैं यह बढ़िया तम्बाकू लाता था। यह उन्हें बड़ी स्वादिष्ट लगती थी। कभी कभी जब उनके बदन में दर्द होता था तो यह तम्बाकू दर्द दूर कर, उन्हें नींद ले आती थी। आपके बुढ़ापे में भी यह अवश्य आराम पहुँचाएगी।’

चाचा ने जब तम्बाकू का जिक्र सुना तो उसकी खुशबू से वह प्रसन्न हो गया और बोला— “मैंने भी यह तम्बाकू पी है लेकिन थोड़ी ही पी सकता था, क्योंकि यह बड़ी मँहगी होती है। वैसे मुझे यह पसन्द है।”

चाचा का मन ललचा उठा और उसने अपना पाइप मँगाकर इस नशीली तम्बाकू को पीना शुरू कर दिया। फिर वह इसी मद में दिनरात पड़ा रहने लगा। वांग को यह देखकर कुछ चैन मिला, किंतु अपने लड़कों को यह लत न लगे इस बात की होशियारी उसने रखी।

सर्दी समाप्त होने पर नदियों का पानी कम होने लगा। फलस्वरूप खेत पर काम शुरू हो गया। एक दिन जब बड़ा लड़का उसके साथ खेत पर जा रहा था तो उसने बताया—“घर में आपके पोता होने वाला है।” वांगलुंग यह सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। चिंग को उसी समय बाज़ार भेजकर उसने मांस मछली आदि अच्छा अच्छा कीमती खाना मंगवाया और

लड़के की बहू को बुलाकर कहा—"तुम बाजरो पीसो, ताकि बच्चा कमजोर न रहे।"

इसके बाद जब कभी वह काम से थक जाता तो छोटे वाले बच्चे के स्वभाव से ही वह बड़ी खुशी हो जाती। इधर गर्मी के बाद २ जब पानी सूखने लगा तो उजड़ा जाता था। वो वापस आने लगे और उन्होंने वटाइयों की कई व्यवस्थियाँ क्या की। जिस किसी को रुपये की जरूरत हुई उसको वांग ने भारी ब्याज पर रुपया भी दे दिया, किन्तु समयावधि के अन्त में उसकी जमीन उसके कब्जे में चली। इस प्रकार बहुत सी जमीन वांग को सस्ते दामों में मिल गई। बहुत से ऐसे अकर्मण्य लोग भी थे जिनके पास घर जमीन कुछ न था, वे लोग अपनी लड़कियाँ ही वांग के हाथ बेचने आए। वांग ने छोटे वाले बच्चे की खुशी में न सही और लड़कों की आनेवाली बहुओं के लिए पांच छः बाँदियां एक ही दिन में ले लीं। एक को तो अपनी सुन्दरी के सुपुर्द कर दिया, बाकी को घर के काम काज में डाल दिया। वांगलुङ के पास पैसा काफी था, अतएव यह सब खरीदफरोख्त करने में उसे कोई समय न लगा।

इसके कई दिन बाद एक बूढ़ा आदमी करीब सात साल की एक कमजोर बालिका को बेचने के लिये वांग के पास आया। पहिले तो उसने मना कर दिया, किन्तु उसकी सुन्दरी को वह बालिका पसन्द आ गई। सुन्दरी के कहने पर उसे भी वांग ने बीस रुपये में खरीद लिया।

× × × ×

अब वांगलुङ ने सोचा कि अब उसे काफी सुख चैन मिल रहा है तो उसने अपने सबसे बड़े लड़के को अपने साथ खेत पर ले जाना शुरू कर दिया। वह लड़का चुपचाप बाप के साथ इधर उधर टहला करता, किंतु न तो लड़का ही कुछ काम करने समझने की कोशिश करता और न बाप को ही उसकी फिक्र थी।

पड़ा रहूँगा। मैं अब शांति से आराम करना चाहता हूँ। बताओ तुम मुझसे क्या चाहते हो?'

लड़का बोला—"मैं चाहता हूँ कि हम लोग यहाँ से शहर के किसी मकान में रहने के लिए चले चलें। यह अच्छा मालूम नहीं होता कि अब भी हम लोग गँवारों की तरह यहीं पड़े रहें। यहाँ चाचा व उनके परिवार को छोड़ कर हम लोग शहर में काफी सुरक्षित रह सकेंगे।'

वांग ने कहा—"यह बेवकूफी की बात है। यह मेरा घर है, तुम चाहो तो यहाँ रहो चाहे न रहो। यहाँ मेरी जमीन है इसी धरती की बदौलत आजकल हम लोग रईस हैं और इसी की पैदावार से आज तुम्हारी इतनी शान बनी हुई है।'

लड़का भी पूरा जिद्दी था वह अपनी बात पर अड़ रहा और बोला— 'शहर में वह हुआंग का मकान है। वहाँ आगे के हिस्से में बहुत से लोग रहते हैं किन्तु यदि उस मकान का भीतरी हिस्सा हम लोगों को किराये पर मिल सके तो वहाँ आराम से रहा जा सकता है। यहाँ खेतों पर काम जारी रहेगा यहाँ से शहर अधिक दूर भी नहीं है, किन्तु मैं अब इस चचेरे भाई के साथ रहना पसन्द नहीं करता।' इतना कहते-कहते लड़के की आँखों में आँसू आ गए और वह बात पर दबाव डालते हुए कहने लगा— 'आप मेरी ओर से निश्चिन्त रहें मैं कोई ऐब नहीं करता। मैं जुआ नहीं खेलता शराब नहीं पीता अफीम के नशे का भी मुझे शौक नहीं है। दूसरी स्त्रियों के पीछे मैं नहीं दौड़ता। जो भी आपने मेरे लिए कर दी है, मैं उसी से संतुष्ट हूँ। किन्तु मैं सिर्फ यही एक बात आपसे चाहता हूँ।"

वांग को कोई उत्तर सो था ही नहीं, उसके तो दिल था। बच्चे की आँखों में आँसू देखकर वह पसीज गया। "हुआंग के मकान" वाली बात भी उसकी समझ में आ गई। उस समय तो न अपनी उस हालत को वह भूल गया जब "चावल" का ढेर के लिए वह इस मकान में

यद्यपि जॉन ने घर के सभी सदस्यों को रहने के लिये अलग-अलग कोठरियों का प्रबन्ध कर दिया था किंतु इतना सब कुछ होते हुए भी जॉन को घर में शान्ति के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते थे। बड़ा लड़का चचेरे भाई के साथ कुछ न कुछ गाल बजा किया ही करता था। उसे बराबर यही डर लगा रहता कि वह चचेरा भाई कहीं उसकी स्त्री को प्यार कोई जाल न फेंक दे। घर में इतनी कोठरियाँ थीं, उनमें सर्व भी भाग्य के डर से जॉन को डर ही लगा रहता। इधर सुन्दरी के चरित्र पर भी जॉन का शक रहने लगा। इस स्त्री का यौवन ढल चुका था और वह आगे पीछे में ही मस्त रहकर लोभी हो चली थी। जॉन ने उसके पास जाना कम कर दिया था, इसकी भी कोई शिकायत न उसे थी न थी। इन्हीं सब कारणों से जॉन को चैन न थी।

एक दिन जब छोटे लड़के को लिए जॉन खेत से घर लौटा तो बड़े लड़के ने जॉन को एक ओर ले जाकर कहा—"अब मैं चचेरे भाई का इस घर में रहना बरदाश्त नहीं कर सकता, दिन भर वह कोठरियों पर नज़र लगाये रहता है। इतना ही नहीं, आपकी पत्नि पर भी इसकी नज़र रहने लगी है।"

जॉन खेत से हँसी खुशी लौटा था, पर आते ही जब उसने यह सब सुना तो मिज़ाज बिगड़ गया और लड़के पर गुस्सा उतारते हुए बोला—"तुम तो मूर्खों की तरह इन्हीं बातों में पड़े रहते हो। मालूम होता है तुम अपनी स्त्री के पीछे बुरी तरह दीवाने हो और उसकी बातों में आ जाते हो। यह सब ठीक नहीं है।"

लड़के को यह फटकार अच्छी न लगी। वह बोला—"मैं अपनी स्त्री के कहने में नहीं हूँ, जैसा कि आप समझते हैं। यह तो मैंने इसलिए कहा है कि आपके घर में यह बातें शोभा नहीं देतीं।" जॉन ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, किंतु अन्दर ही अन्दर उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था। उसने लड़के से फिर कहा—"मैं कब तक इन घर के झगड़ों में

पड़ा रहूँगा । मैं अब शांति से आराम करना चाहता हूँ । बताओ तुम मुझसे क्या चाहते हो ?'

लड़का बोला—"मैं चाहता हूँ कि हम लोग यहाँ से शहर के किसी मकान में रहने के लिए चले जाएँ । यह अच्छा मालूम नहीं होता कि अब भी हम लोग गँवारों की तरह यहीं बने रहें । यहाँ चाचा व उनके परिवार को छोड़ कर हम लोग शहर में अच्छी सुरक्षित रह सकेंगे ।"

लोंग ने कहा—"यह बेवकूफी की बात है । यह मेरा घर है, तुम चाहो या यहाँ रहो अथवा न रहो । यहाँ मेरी जमीन है इसी धरती की बदौलत आजकल हम लोग रईस हैं और इसी की पैदावार से आज तुम्हारी इतनी शान बनी हुई है ।

लड़का भी पूरा ज़िद्दी था वह अपनी बात पर डट रहा और बोला—"शहर में वह हुआंग का मकान है । उसके आगे के हिस्से में छोटे २ लोग रहते हैं किन्तु यदि हम मकान का भीतरी हिस्सा हम लोगों को किराये पर मिल सके तो वहाँ आराम से रहा जा सकता है । यहाँ खेतों पर काम जारी रहेगा यहाँ से शहर अधिक दूर भी नहीं है, किन्तु मैं अब इस बर्बर चाचा के साथ रहना पसन्द नहीं करता ।'

इतना कहते-कहते लड़के की आँखों में आँसू आ गए और वह बाप पर दबाव डालते हुए कहने लगा— आप मेरी ओर से निश्चिन्त रहें मैं कोई दुःख नहीं करता । मैं जुआ नहीं खेलता चाय के यहाँ पीना अफीम के नशे का भी मुझे शौक नहीं है । दूसरी स्त्रियों के पीछे मैं नहीं दौड़ता । जो कुछ आपने मेरे लिए कर दी है, मैं उसी से सन्तुष्ट हूँ । किन्तु मैं सिर्फ घर की यह आशा आपसे चाहता हूँ ।"

लोंग को कोई बराबर को था ही नहीं, उसके भी दिल था । बच्चे की आँखों में आँसू देखकर वह पसीज गया । "हुआंग के मकान" वाली बात भी उसकी समझ में आ गई । उस समय को न भूलने उस दावत को वह भूल गया जब "आशान" का लेने के लिए वह उस मकान में

रहा था। पाइप से धुँआ उगलता हुआ वह कुछ देर तक इस विषय पर सोचता रहा। चाचा के लड़के की हरकतों को जब उसने स्वयं देख लिया तो डॉन के मकान में जाना ही उचित समझा।

इधर चाचा की चित्त प्रति अफीम के नशे में डूबे रहने से कम जोर हो गया था। रूप तो था ही उसकी आँखों से खून भी निकलना शुरू हो गया। चाची की भी यही हालत थी। अफीम का प्रयोग करा देने से डॉन को उनकी दिन रात की कराहटों से काफी छुटकारा मिल गया था। किन्तु चाचा का लड़का अपनी जवानी के नशे में मस्त था। अपनी वासनाओं के वश उसे भले बुरे की कोई पहिचान नहीं रह गई थी। उसका एक ही इलाज था—विवाह। लेकिन डॉन यह नहीं चाहता था कि इस घर में ही उसका विवाह करके—उसकी संतानों का भार और अपने ऊपर लाद लिया जाय।

एक दिन वह शहर जाकर अपने बूढ़े लड़के से मिला और उससे डॉन के मकान के बारे में राय ली तो वह लड़का भी आवश्य प्रसन्न होकर कहने लगा—"यह बड़ी अच्छी बात रहेगी। शादी होने पर मेरी बीबी भी यहीं रह सकेगी और इस प्रकार हम सभी चैन से रहेंगे।'

डॉन ने अपने इस लड़के के विवाह के बारे में जो कुछ सोचा ही नहीं था इसका कारण कदाचित यही था कि यह लड़का शांत स्वभाव का और एकान्त प्रिय था। बात को आगे बढ़ाते हुए डॉन ने कहा—"मैं भी कई दिनों से तुम्हारे विवाह के बारे में सोच रहा था कि तुम्हें एक समय ऐसे पड़ते गये कि कोई बात मैं तुमसे न कर सका। अब समय ठीक आ गया है, कहीं अच्छी सी लड़की खोज कर तुम्हारा विवाह कर दूँगा। बातचीत के इसी दौरान में लड़के ने बताया कि वह किसी शहरी लड़की से विवाह न करके एक साधारण देहाती लड़की के साथ अधिक आराम से रह सकेगा। उसकी बातों से डॉन को ऐसा लगा कि

इस लड़के को फूटी तरह सड़क पसन्द नहीं है। सीधे सादे जीवन में तो वह खुश है।

चाँगहुइ लड़के की इन बातों को सुनकर प्रसन्न तो हुआ ही हैरान भी हुआ। उसे अपने सभी लड़कों पर गर्व था किन्तु वह लड़का इतने उच्च विचारों का होगा, ऐसी आशा उसे न थी। मन ही मन अपने इस बेटे पर फूला न समाया। फिर भी उसने दुबारा पूछा—"अच्छा बताओ, तुम्हें कैसी लड़की पसन्द होगी?'

लड़के ने उत्तर दिया—"मैं गाँव की लड़की चाहता हूँ। उसके घर वाले अच्छे आदमी होने चाहिये। लड़की न तो बहुत सुन्दर हो और न बदसूरत हो। केवल घर के काम काज में होशियार हो और फिजूल खर्ची न हो।"

वांग इस उत्तर से और भी प्रसन्न हुआ। वह मुस्कराते हुए बोला— 'मैं तुम्हें ऐसी ही लड़की लेकर दूँगा। बिन मध्यस्थ ही गाँवों में घूम घूमकर ऐसी लड़की खोज लेगा।"

इतना कहकर वांग घर का बाहर हो लिया। रास्ते में वह हुआंग के मकान के पास आकर खड़ा होगया। वहाँ पहुँचते ही उसे पुरानी यादगारों ने घेर लिया। उसने देखा कि मकान के बाहरी हिस्सा में बड़ी तोड़ फोड़ है फिर भी वह किसी प्रकार अन्दर आहाते में घुस गया। मकान के भीतरी भाग में सामान पड़ा हुआ था बाहर बरामदे में एक बूढ़ी औरत बैठी हुई ऊँघ रही थी। वांग ने उसे पहचाना—यह वही दरबान की बीवी थी, जिसके मुँह पर चेचक के बड़े बड़े दाग थे—वह अब बूढ़ी हो चुकी थी। उसे देखकर वांग भी अपने को बूढ़ा समझने लगा। किसी प्रकार जब उस औरत से वांग ने दरवाजा खोलने के लिए कहा तो वह बोली—"यदि आप सारा मकान किराये पर ले सकें तो मैं दिखा सकती हूँ।"

"पसन्द आने पर सारा मकान को किराये पर ले सकता हूँ।" वांगलुङ ने उत्तर दिया।

नौकर से यह नहीं बताया कि वह कौन है, चुपचाप दरवाजा खुलने पर अन्दर चला गया। मकान तो उसका देखा हुआ था ही, किंतु अब इस मकान को देखने पर वह सोचने लगा कि समय का फेर भी कैसा होता है। अन्दर उसने वह स्थान भी देखा मोटे-मोटे गद्दों पर बैठी वह बूढ़ी मालकिन अफ़ीम के नशे में डूबी रहती थी। उस जगह पर जाकर बैठ गया तथा निश्चिन्त हो उसने एक लम्बी सांस ली। मेज पर जोर से हाथ पटक कर वह बोल पड़ा—

'मैं यह मकान ले लूँगा।'

थमी न जाने के लिये यह बहाना कर दिया कि दूसरे लड़के के लिए जब कोई योग्य लड़की मिल जायगी तो वह बना पायेगा।

गाँव वाले मकान में अब केवल वांग का परिवार व लिंग और उसके साथी मजदूर ही रह गए थे। बीच के कमरों में वांग अपनी गूँगी लड़की के साथ रहने लगा। चाची स्वयं ही सुन्दरी वाले हिस्से में चली गई, वांग को इस पर कोई आश्चर्य न हुआ न दुःख ही हुआ, क्योंकि वह समझता था कि दोनों अफीम के नशे में चूर रहते हैं तथा उनका जीवन भी अब थोड़ा ही रह गया है। इन दोनों के मर जाने के बाद उसके ऊपर कोई जिम्मेदारी न रह जायगी। यदि इनका बरताव ठीक से न रहेगा तो उन्हें भी निकाल बाहर करने में कोई आपत्ति न होगी।

किसी बात की विशेष चिन्ता अब वांग को न रह गई थी, वह आराम से पड़ा रहता था। उसे तंग करने के लिए भी अब उसके पास कोई नहीं रह गया था, सबसे छोटा लड़का शांत स्वभाव का था ही, उसे खेत के काम से ही फुर्सत न मिल पाती थी। एक दिन अवसर पाकर उसने लिंग को दूसरे लड़के के लिये कोई सुयोग्य लड़की की खोज में जाने के लिए कह दिया।

कई गाँवों में घूमने के बाद जब लिंग घर लौटा तो उसने आकर वांग से कहा— 'यहाँ से तीन गाँवों के पार एक बड़ी सुन्दर लड़की है उसमें केवल यही ऐब है कि सदैव मुस्कराती रहती है। उसका पिता आपके घर से संबन्ध करने को तैयार है। आजकल के समय के अनुसार वह दान दहेज भी अच्छा देगा। उसके पास काफी जमीन व खेत भी हैं। मुझे वह घर पसन्द है किंतु वायदा कोई नहीं किया है।'

वांग ने अपनी स्वीकृति तुरन्त ही दे दी। इस प्रकार दूसरे लड़के की सगाई भी होगई। वांग ने संतोष की सांस लेते हुए कहा—"एक कर्तव्य रह गया है उसका सम्बन्ध और हो जाय तो फिर मुझे शांति ही शांति है।" वांग की जमीन जायदाद अब काफी बढ़ चुकी थी, वह

उसने रोगवश के लिये आवश्यक दवा दे दिया। लड़के के जाने पर जब भाभी रोने चिल्लाने लगी तो उसे भी वैद्य ने ढाढ़स देते हुए कहा —"रोने से कुछ लाभ न होगा। यह लड़का शीघ्र ही ठीक एवं बड़ा स्वस्थ हो जायगा और इस प्रकार इस रोगी का आदर न [illegible] हो जायगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

वैद्य अब पूर्ण रूप से निश्चिन्त हो गया था। उसे सोने व आराम करने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं न था, क्योंकि इस [illegible] वह सभी वस्तुएँ काफी संख्या था अतः अब वह अच्छा अच्छा खाना खाता था। कुम्हारी, कुम्हार व लड़के सभी प्रसन्न थे। वैद्य के पोते के जन्म का दिन भी समीप ही था। वह बड़ी बेसब्री से इस खुशी का इन्तजार कर रहा था। एक दिन जब उसने बहू के तड़पने व दर्द से कराहने की आवाज सुनी तो वह कमरे के पास ही जाकर बैठ गया, परन्तु जब कुम्हार ने आकर यह कहा कि "अभी बहुत देर लगेगी, अभी [illegible] मालूम है तो वैद्य यह सुन कर अपने कमरे में आराम करने चला गया। फिर वह अपने इष्ट देवताओं को पूजा करने के लिए घर पर बाजार चला गया। वहाँ से उसने पूजा के लिये धूप व अगरबत्ती खरीदी। फिर सीधा मन्दिर में जाकर भगवान से प्रार्थना करते हुए कहने लगा "मेरी पत्नी मर चुकी है इसलिये मैं स्वयं आया हूँ। हे भगवान! मेरे लड़के की बहू की रक्षा करो। यदि कुशलता पूर्वक हो जाय तो मैं दूना चढ़ावा भेंट करूँगा, किन्तु जल्दी होने से मैं कुछ न कर सका।

इस मन्दिर में प्रार्थना करने के तुरन्त बाद ही वह काली माता के मन्दिर में पहुँचा। "काली माता की कृपा से ही उसको ऐसी पत्नी मिली थी। काली माता से उसने प्रार्थना की—"मैंने, मेरे पिता ने मेरे लड़के ने सदैव ही आपकी आराधना की है। मेरे [illegible] के घर पुत्र प्रगट होने वाला है। माँ, लड़का ही देना।

दोनों मन्दिरों में अर्चना कर वह जल्दबाज़ी में शीघ्र ही घर

शोर मचा। पर जोरसे न वह बुरी तरह थक चुका था, वह चाहता था कि कोई एक प्याला गरम चाय व पसीना पोंछने के लिये तौली ही दवा दे दे। किन्तु वहां कौन सुनता था सब इधर उधर भाग दौड़ रहे। थोड़ी देर में कुछ हंसती हुई उधर आई और उसने पोता होने का शुभ-समाचार सुनाया। लड़का बहुत सुन्दर व स्वस्थ था तथा माँ-बेटा दोनों सकुशल थे।

बीरु प्रसन्न तो हुआ ही, किन्तु फिर बहुत देर तक सोचता रहा। "जब मेरा पहिला लड़का पैदा हुआ था मुझे इतनी फिक्र नहीं हुई थी। गाँवड़ी जमाने में बेचारी आजकल के मुकाबले सारी तकलीफ सहती थी। आज लड़के की बहू को यह क्या है कि औषधियाँ चारों ओर मेवा में तत्पर है, पति भी डाक्टर बना है फिर भी वह बच्चों की भांति रोती चिल्लाती है।" इतने में लड़के ने आकर कहा—"लड़का पैदा हुआ है, हमें तुरन्त ही एक धाय (दाया) का प्रबन्ध करना चाहिये जो बच्चे को दूध पिला सके। मैं नहीं चाहता कि मेरी भी दूध पिला कर अपना स्वास्थ्य व सौन्दर्य खो दे। हमारे जैसे सभी सम्पन्न व्यक्ति धाय का प्रबन्ध कर लेते हैं।"

बीरु सोच विचार में ही था। उसने कहा-यदि बच्चे की माँ दूध न पिला सके तो धाय का प्रबन्ध अवश्य कर लिया जाय। बीरु को पहिली बार मालूम हुआ कि शहर की स्त्रियाँ अपनी सुन्दरता बनाए रखने के कारण अपने बच्चों को भी दूध पिलाना पसन्द नहीं करती हैं।

बच्चा जब एक महीने का हो गया तो बड़ी धूमधाम से दावत का प्रबन्ध किया गया। दावत में दोनों पक्ष के मेहमान बुलाए गए, प्रमुख-नागरिकों को भी निमन्त्रण दिया गया। सैंकड़ों थाल रंग से रंगे गए कई मेहमानों को बांटे गए।

दावत की समाप्ति पर बीरु का बड़ा लड़का बोला— "अब इसके घर में ठीक गाड़ियाँ होगई, तथा परिवार की स्थिति भी सुदृढ़ है। हमें

चाहिये कि पुरानी रीति के अनुसार हर एक के नाम के स्तंभ बनवा दिये जाँय ताकि प्रत्येक स्मरणवासर व त्योहार पर उनकी पूजा की जा सके।

वांग लड़के की सलाह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने इस कार्य को शीघ्र निपटा देने का आदेश दिया। चरखी माता के मन्दिर में पुराना चढ़ावा भेंट देने की बात तो उस बार ही आई अब उसका विचार वह मन्दिर के पुजारी को भी भेंट कर आता। किन्तु उसके समय जब उसने यह सुना कि चिन मरणासन्न अवस्था में पड़ा हुआ आखिरी साँसें ले रहा है तो उसे ख्याल आया कि चरखी माता पर चढ़ावा देने से शायद उससे दूसरे मन्दिर के इष्ट देवता अप्रसन्न हो गए हैं अभी तो इस खुशी के समय भी कोई दुःखद घटना होना चाहती है। घर पर वांग के लिये खाना तैयार था, किन्तु अपनी भूख की बात भी भुलाकर वह सीधा चिन को जल्दी देखने दौड़ पड़ा। मकान के जिस कमरे में चिन बीमार पड़ा था, वहीं सभी मजदूर एकत्रित थे। जब वांग ने मजदूरों से चिन के एक दम बढ़ते हुए कष्ट का कारण पूछा तो उसे बताया गया कि एक नये मजदूर को चावल कूटने का ढंग बतलाते हुए ही चिन ने वह भारी मूसल उठाया कि उसकी कमर टूट गई और वह दर्द के मारे गिर पड़ा। वांग ने उस मजदूर को बुलाकर खूब फटकारा और खूब मार लगाई, किन्तु चिन की दशा बिगड़ती ही जा रही थी। वांग मजदूर को छोड़कर एक दम चिन की सेवा सुश्रूषा में जुट पड़ा। उसने बड़े स्नेह और आदर के साथ चिन से बातें करनी शुरू की, मगर जैसे चिन ने कुछ भी न सुना हो। दर्द से व्याकुल चिन ने कुछ ही देर में वांग की आँखों के सामने अपना दम तोड़ दिया।

चिन के मरते ही वांग उसके शव के ऊपर गिर पड़ा और फूट फूट कर रोने लगा। इतना तो वह बाप के मरने पर भी नहीं रोया था।

अच्छी से अच्छी लकड़ी का बना बढ़िया सा सन्दूक मंगवाया गया और सोते हुए चिन का शव गाड़ने के लिये ले जाया गया। वांग

वे बच्चों तक को स्पैद आदमी विश्वास पहिचाना। यदि उसका वश चलता तो अपने परिवार के अहाते में ही वह चिंग का शव दफ़ना देता। किन्तु लड़कों को इस पर ऐतराज़ था यद्यपि वांग ने बहुतेरा समझाया कि चिंग नौकर नहीं बल्कि इस घर का सबसे बड़ा शुभचिंतक था। आख़िर परिवार का जो कब्रिस्तान था, उसके अहाते की दीवार के साथ ही चिंग का शव दफ़ना दिया गया। वांग ने उसी समय अपनी यह इच्छा प्रकट करदी कि उसके मरने पर उसका शव भी चिंग के क़रीब ही दफ़नाया जाय।

चिंग के मरने से वांग का सारा उत्साह ढीला पड़ गया। घर बार से तो वह उदासीन ही हो गया था अब ज़मीन व खेतों की ओर से भी उसका ध्यान हट गया। उसने अपने पास कुछ भी न रख कर, सारी ज़मीनें किराये पर उठा दीं। एक मज़दूर और उसके दो बच्चों को गाँव के मकान में छोड़कर वह अपने पुराने गाँव से उठकर शहर के मकान में आ गया। आते समय वह अपने सबसे छोटे लड़के व गूंगी लड़की को भी साथ ले आया।



: ३० :

वाँगलुङ को अब और कोई आकांक्षा नहीं रह गई थी। अब चाहता यही था कि आराम से गुजारा कर ले। सारे खेत किराये पर उठा दिये गये थे और उस किराये से बिना परिश्रम किये ही काफी आमदनी हो जाती थी किन्तु अभी उसके भाग्य में शायद चैन न था। उसका बड़ा लड़का किसी न किसी उधेड़बुन में लगा ही रहता। एक दिन वह बाप से कहने लगा—"छोटे भाई का विवाह समीप आ रहा है, विवाह के लिये काफी कुछ करना है। घर में इतनी भी जगह नहीं कि सारे मेहमान बैठाये जा सकें। इसके अतिरिक्त खाने के बर्तन, मेज़ें वगैरा की काफी जरूरत होगी। मकान के बाहरी हिस्सों में जो छोटे मोटे लोग रहते हैं उन रहते न मेहमानों का बुलाने में बड़ी शर्म लगती है। फिर घर में बच्चे भी होंगे और हमें इस बाहरी हिस्से की भी आवश्यकता हो सकती है।"

"तो फिर अब और क्या चाहते हो?"—वांग बोला।

"मेरे कहने का मतलब है कि हम बाहरी हिस्सा भी अपने कब्ज़े में करलें। हमारे जैसे सम्पन्न परिवार को अच्छा नहीं लगता कि छोटे मोटे लोगों को किराये पर मकान के हिस्से उठाये रखें। हमारे पास स्वयं ही बहुत अधिक ज़मीन है।"

हल्का मुस्कुराते हुए वांग ने कहा—

"इसमें क्या, यह ज़मीन भी अब मेरी कमाई हुई है, मुझे तो कोई दूसरी भी नहीं है।

लड़का चिढ़ गया और कहने लगा—"पिताजी, आप ही ने तो मुझे पढ़ना सिखाया है किन्तु अब जबकि मैं कुछ कहता हूं कि आप इसी तरह विरोध किया करते हैं।" लड़के के गर्म मिजाज से चौन को डर बना रहता था कि कहीं अपने जिये कुछ कर न बैठे, इसलिये चौन ने कह दिया—"ठीक है, जो मर्जी आए करो लेकिन मुझे तंग न करो।"

लड़के ने यह स्वीकृति सुनते ही और वह तुरन्त ही सारी जागीर-दारी में व्यस्त गया। फर्नीचर को दुकान व मेज कुर्सियां दरवाजों के लिये साफ कपड़े के पर्दे, दीवारों पर लगाने के लिये चित्र व तस्वीरें खरीदने में उसने कितने ही दिन लगा दिये। रईसी शान में जब इस जागीरदारी में यह प्रकार के बाहरी दिखने से कई बार सिखाया तो उसने चाचों ने यह नुक्ताचीनी भी की— "देखो यह लड़का भूल गया है कि आखिर किसान का लड़का है।" लेकिन उसके मुँह पर कोई कुछ न कहता। आखिर लड़के ने किरायेदारों का किराया बढ़ाने का नोटिस दे दिया।

कई सीधे सादे किरायेदार तो इस धमकी से ही जगह खाली कर गए और जिन्होंने विरोध की, उन्हें भी खाली करने को मजबूर कर दिया गया। किरायेदारों ने खूब गालियां सुनाई और लड़के को खूब कोसा। चौन का इन बातों की कोई खबर ही न हुई। लड़का मकानों की मरम्मत सफेदी व उन्हें सजाने में लगा रहा। कई व राज मजदूरों के काम की समाप्ति पर उसने जगह जगह तालाब बनवा कर सुन्दर सुन्दर मछलियां डालीं, क्यारियों व गमलों में किस्म किस्म के फूलों के पौधे लगवाए। लड़के को भी ये सो धुन अपनी ऐश ऐश में मकान खूब सजा दिया।

मकान की मरम्मत व सजावट की खबर सारे शहर में फैल गई और सभी लोग कहने लगे कि चौन वास्तव में बहुत बड़ा रईस है। इस सजावट में चौन का रुपया और व पानी की तरह बह गया, जैसे

यह पता भी न चला कि कितना रुपया उसके हाथ से निकल गया है।

दूसरे लड़के ने जब इतना खर्च होते देखा तो पिता को जाकर समझाया कि यह सब खर्च जरूरी नहीं है। इतना रुपया यदि उधार दिया जाता तो कम से कम बीस प्रतिशत का काम हो सकता था। बाप समझ गया कि अब लड़कों में झगड़ा हुआ चाहता है लेकिन लड़के को ढाढस बंधाते हुए उसने कहा—यह सब कुछ तुम्हारे विवाह की तैयारियां ही तो हैं। लड़के को यह बात जरा भी पसन्द न आई। उसने मुस्कराते हुए कहा—"यह अजीब बात है कि बहू की कीमत से दसगुना अधिक बहू लाने की तैयारियों में खर्च किया जाय। इन सब रुपयों में हमारा सबका हिस्सा है, लेकिन बड़े भाई अपनी शान में यह सब खर्च किये दे रहे हैं।

बाप इस लड़के की प्रकृति भली-भांति समझता था। उसे टालने के लिए बोला— 'तुम ठीक ही कहते हो मैं तुम्हारे बड़े भाई से इस बारे में बात करूंगा और रुपया देता है जो हाथ खींच लूंगा।' लड़के ने तुरन्त ही जो कुछ खर्च हुआ था उसका एक लम्बा हिसाब बाप के सामने लाकर रख दिया। इस लम्बी लिस्ट को देखकर बाप ने कहा कि यह हिसाब फिर देखूंगा, अभी तो मैंने खाना भी नहीं खाया है और वह सीधा अपने कमरे में चला गया।

उसी दिन शाम को बाप ने बड़े लड़के को बुलाकर कहा 'इतनी शाहखर्ची, बहुत है। आखिर हम लोग देहाती आदमी हैं।'

लड़के ने गर्व से उत्तर दिया— 'नहीं अब हम देहाती नहीं रहे। अब शहर के सभी लोग हमें गांव के बड़े खानदान के आदमी समझते हैं। दूसरा भाई जब दौलत का उपयोग करना नहीं जानता, लेकिन मैं अपने घराने के नाम को हर हालत में बनाये रखूंगा।'

बाप को अभी तक इतना पता न था कि बाहर वाले उसके घराने को बड़ा घराना समझने लगे हैं इसलिये यह बात सुनकर उसे

अन्दर ही अन्दर तो कुढ़ते हुए, किन्तु फिर भी वह बोला—'तमाम बड़े घराने वालों और किसानों के बल पर ही फलते फूलते हैं।"

"किन्तु बड़े घराने के लोग गँवारों की तरह नहीं रहते, बल्कि अपनी सम्पत्ति ही बढ़ाते जाते हैं।"

'मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका। अब और ज्यादा बर्दाश्त नहीं होने दूँगा।' वांग ने गरम होकर कहा। लड़के ने जब बाप का मिजाज गरम होते देखा तो झट बात बदल कर कहने लगा—'ठीक है, और खर्च नहीं होना चाहिये, किन्तु एक बात और कहनी है।"

वांग ने उस क्रम में हुक्का उठाकर जमीन पर रख दिया और कहने लगा—"वह भी कह दो, तुम लोग मुझे चैन से नहीं रहने दोगे।"

'मेरी अपनी बात कोई नहीं है। अपने छोटे भाई के लिए कहना चाहता हूँ कि उसे कोई धंधा दिया जाय तो ठीक रहेगा।'

वांग हैरत में आकर कहने लगा—"नहीं, नहीं घर में दो ही तो लड़के बचे हैं। उसे तो मेरे मरने के बाद खेती-बाड़ी का काम करना ही उचित होगा।"

आप नहीं जानते कि वह इसी बात को लेकर रात भर रोता रहता है। इसी सोच में वह पीला पड़ा जा रहा है कि उसे पढ़ाया लिखाया नहीं जा रहा है।'

वांग ने अपने सबसे छोटे लड़के से कभी यह न पूछा था कि वह क्या करना चाहता है। वह लड़का चुपचाप शांति से रहता था, शायद इसी वजह से कोई भी उसकी बात नहीं पूछता था। वांग ने कहा—"क्या उसने तुमसे कभी पढ़ने की इच्छा प्रकट की है?"

'पिताजी, आप स्वयं उससे पूछ देखें'—बड़े लड़के ने उत्तर दिया।

"लेकिन एक लड़के को तो खेती का काम संभालना ही पड़ेगा"—वांग ने कहा।

"लेकिन पिताजी ! यह कहाँ का इन्साफ है कि हम बाग तो पढ़ लिखकर शान से रहें और हममें से एक गंवार ही बना रहे ? वांग क्या करेंगे ?

यह सुनकर वांग को क्रोध तो बहुत आया किंतु वह कर भी क्या सकता था ? बच्चों के सामने उसे झुकना ही पड़ा। वांग का मानसिक संतुलन बिगड़ते देख बड़े लड़के ने अपनी स्थिर दृष्टि से कह दिया— "सबसे छोटे भाई के लिये हम एक मास्टर रख सकते हैं अथवा उसे बाहर किसी स्कूल में भेज दिया जा सकता है। रही घर के प्रबंध की बात सो मैं यहाँ आपके पास हूँ ही दूसरा भाई व्यापार के काम में लगा ही है। क्या शिक्षा पर इस भाई को भी अपना काम करने की स्वतन्त्रता है ऐसी चाहिए ?"

आखिर वांग ने अपने सबसे छोटे लड़के को भी पास बुलाया। कुछ देर में वह आ गया। वांग उसकी ओर देखता रहा—वह लड़का और लड़कों से कहीं अधिक सुन्दर था, उसके चेहरे से अपनी माँ की गम्भीरता व शान्ति टपकती थी। वांग ने उससे कहा—"बड़ा भाई कहता है कि तुम पढ़ना चाहते हो ?"

लड़के ने केवल होंठ ही हिलाये—'जी हाँ।'

वांग ने फिर पाइप की तम्बाकू को हाथ में दबाते हुए कहा "तो इसका मतलब यह है कि तुम खेती का काम नहीं करना चाहते। यह मेरा छोटा बालक है कि मेरे लड़के होते हुए भी कोई मेरा काम नहीं अपनाना चाहता।

लड़के ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप खड़ा देख वाँग को और क्रोध आ गया। उसने कहा—"बोलते क्यों नहीं ? क्या यह ठीक है कि तुम खेती बारी का काम नहीं करना चाहते ?"

इसका उत्तर उसे एक ही शब्द में मिला—"यही बात है।

वांग का चेहरा तमतमा गया कि उसके ये लड़के इतने में

सोचा ही है। उसकी समझ में न आया कि वह क्या करे और क्या न करे। वह बहुत खिन्न था फिर कहने लगा—"बड़े भाग्य मेरे सामने से तो नहीं चले गये।"

लड़का बहुत घरों से बाहर गया और बैठा बैठा सोचता रहा कि इन लड़कों से तो लड़कियां कहीं अच्छी हैं, वे कभी कोई तक-लीफ तो नहीं देतीं। फिर भी गुस्सा उतर जाने के बाद आदत से मज-बूर वह लड़कों की इच्छानुसार ही काम किया करता। बड़े लड़के को बुलाकर उसने कहा—"छोटे भाई के लिये मास्टर रख लो उसकी भी पढ़ाई जारी रहे। लेकिन मुझे कोई तंग न करो।"

इसके बाद दूसरे लड़के को बुलाकर कहा—"अब तुममें से कोई खेती के काम पर न रहो तो तुम किराया वगैरह वसूल करो और कमल उसके का भी सब काम अपने ऊपर ले लो।" लड़का इस आदेश से प्रसन्न हो गया कि कम से कम इतना भर उसके हाथ पैसा मिलेगा।

बौगांवन को अपने दूसरे लड़के की प्रकृति अजीब सी लगी। उसने अपने विवाह के दिन भी बड़ी होशियारी से इन्तजाम प्रबंध किया। विवाह में जो भेंट, उपहार आए, उन्हें भी अच्छी तरह संभाला, बल्कि इनाम देते वक्त भी उसने काफी समझदारी से काम लिया। बेटा! अब कर्ज बहुत बजाना-बुजुर्ग के लिए इनाम में जब उसने केवल दो रुपये दिये तो वह रोने-चिल्लाने लगी। बड़े लड़के ने जब यह शोर-गुल सुना तो भाई पर बहुत नाराज हुआ तथा बुजुर्ग को पुचकार अपनी पास से और रुपये दे दिए। धीरे धीरे दोनों भाइयों में अनबन होने लगी। यहाँ तक कि जिस दिन बहू घर में आई तो बड़े भाई ने ताना देते हुए कह दिया—"मेरा बस तो हीरे मोतियों से लदी बहू भी ला सकता था, लेकिन भाई ऐसा कुछ रहा कि गांव की लड़की पसन्द की।"

धीरे धीरे परेशू अपने बड़े ही गए। बड़ा लड़का अपनी गांव में ही रहता था। उसे बड़ा ध्यान रहता कि कहीं गांव वालों के सामने

सीधा न देखना पड़े। उधर दूसरा भाई खर्चे की ओर कड़ी नजर रखता था व तीसरा भाई अपने बीते हुए समय की अज्ञानता दूर करने में लगा रहता था। इन सबके बीच एक आदमी ऐसा भी था जो इधर-उधर खेलता फिरता था। माँ बाप चाचा, चाचा जैसे सब ही उसकी देख भाल के लिए नियुक्त हों—वह कभी बाप के पास दौड़ता तो कभी चाचा के पास। कभी फूल तोड़ता तो कभी तालाब की मछलियों को पकड़ने की चेष्टा करता। वांग भी कभी-कभी उसे गोद में उठाये फिरता। वह असल में और कोई नहीं—वांग का पोता था। वही बच्चा कभी-कभी अपने भोले मुँह से चाचा की परेशानियाँ दूर कर देता था। वांग को भी इसी बच्चे से कुछ शांति मिलती थी।

बड़ी बहू के एक के बाद एक बच्चा पैदा होता गया। गाँव में जब कोई यह कहता कि "अब घर में एक और खाने वाला हो गया है" तो मारे खुशी के वह कह उठता—"कोई बात नहीं जब तक हमारे खेतों में चावल उगता रहे तब तक खाने पीने की कोई कमी नहीं होगी।

समय बीतते-बीतते दूसरी बहू के भी बच्चा हो गया। उसकी पहली सन्तान लड़की हुई। इन चार वर्षों में वांग के चार पोते और तीन पोतियाँ हो गईं। घर बच्चों की चहल-पहल से भरा रहने लगा। इस चहल-पहल में वांग अपनी सारी परेशानियाँ भूल गया। उसने चाहा कि ईश्वर जीते जी उसे कोई कष्ट न दे।

पाँचवें वर्ष वर्षा इतनी जोर की पड़ी जितनी कि पिछले तीन वर्षों में नहीं पड़ी थी। चारों ओर जल ही जल भर गई। घरों के हरएक कमरे में लगातार आग जलाये रखना आवश्यक हो गया। उधर गाँव में चाचा और चाची अफीम के इतने आदी हो गये थे कि अब खाट से उनका उठना बैठना भी मुश्किल था। वांगलुंग को जब यह पता चला कि दोनों बिस्तर से भी नहीं उठ सकते हैं और चाचा खूब रोने लगा है तो वह उन दोनों को देखने के लिये गया। उसने आकर देखा कि चाचा

कुछ ही वर्षों का मेहमान था। अर्जुन ने तुरन्त दो दो कफ़न के सन्दूक बनवाये और उन्हीं के कमरे में एक साथ रखवा दिये, जिससे कि वे देखते कि उनकी हड्डियाँ बोझ से हलकी हो जावेंगी और वह शांति से मर सकें। बाबा ने जब सन्दूक देखे तो कहा— तुम तो मेरे लड़के से भी अधिक हो, जो इतना फ़र्ज़ पूरा कर रहे हो।

किन्तु चाची में अब भी काफ़ी शक्ति थी। वह बोली—

'यदि मैं मर जाऊँ और मेरा बेटा वापस आवे तो उसके लिए भी अच्छी सी बहू ला देना, ताकि हमारा भी खानदान चलता रहे।' अर्जुन ने इस काम का भार लेने का वादा भी कर दिया।

× × × ×

एक दिन अचानक बाबा मर गया। अर्जुन ने उसके शव को अपने पिता की रस्म के साथ फुँकवा दिया। घर में एक वर्ष तक मातम भी मनाया गया—इसलिए नहीं कि बाबा के मरने का किसी को दुःख था, परन्तु इसलिए कि बड़े आदमी की परम्परानुकूल यही बात उचित थी।

इसके बाद अर्जुन चाची को भी अपने शहर के मकान में ले आया। उसे एक कमरा दे दिया गया तथा उसकी सेवा के लिए एक बाँदी का भी प्रबन्ध करा दिया। बुढ़िया वहीं अतीत की स्मृतियों में बिस्तर पर मरणोन्मुख पड़ी हुई अपने कफ़न के सन्दूक को देख देखकर खुश होती थी। अर्जुन भी उस बुढ़िया को देखकर यही सोचा करता कि यह वही औरत है जिसमें कोई न कोई डर ही लगा रहता था—और अब वह निर्जीव सी पड़ी रहती है।

: ३१ :

वांग ने अपने अब तक के जीवन में युद्ध की रोमांचकारी घटनाओं के हाल ही सुन रखे थे किन्तु ऐसा अवसर न मिला था कि वह स्वयं युद्ध के विध्वंसकारी दृश्य देखे। उसके लिये युद्ध, भी असीम आसमान व पानी की भाँति कोई वस्तु थी। वह अक्सर लोगों के मुँह से यही सुना करता था कि 'हम तो फौज में भर्ती होंगे।' फौज में भर्ती होने की बातें यदि सुनाई देती थीं तब लोगों में बेकारी अधिक होती अथवा अकाल पड़ा होता। किन्तु इस बार 'युद्ध' तो ऐसे पास ही आ रहा था।

एक दिन उसके दूसरे लड़के ने आकर कहा "अचानक ही अनाज के भाव ऊँचे चढ़ गए हैं, युद्ध हमारे गाँव के निकट ही आ रहा है। हमें चाहिए कि अनाज इस समय न बेचें, बल्कि कुछ दिन इकट्ठा कर रखें ताकि बाद और ऊँचे भाव पर उसे अधिक दामों से बेचा जा सके।"

वांग ने आश्चर्य से कहा—"यह तो अजीब सी बात है कि युद्ध के निकट आने से नाज के भाव चढ़ गये हैं। और मैंने तो कभी युद्ध देखा नहीं यदि पास ही आ रहा है तो देख लूँगा। अनाज का बेचना तो तुम्हारे हाथ में ही है, जैसा उचित समझो करो।"

इतना कह कर वांग ने आगे बात न बढ़ाई बल्कि अपने पोता-पोतियों के साथ खेलने लग गया। इसी प्रकार कितने ही दिन बीत गये।

एक दिन टिड्डी-दल की भांति फौज की एक टुकड़ी शहर में घुस आई । वांग के नातीने जब यह तमाशा फाटकसे देखा तो घर भाग का बुला लाया । बच्चे की पुकार पर जब वह बाहर गया तो देखा कि अनेकों सैनिक बन्दूकें हाथ में लिये चले आ रहे थे । भीड़ के चलने से जो धूल उड़ती थी उसमें सूर्य का प्रकाश भी मन्द हो गया था । वांग बड़ी उत्सुकता से फौज के हर एक सिपाही को घूर-घूर कर देखता । बहुत से सिपाही जवान थे किन्तु उनकी शक्लें इतनी कठोर एवं भयङ्कर दिखाई देती थीं कि डर लगता था । वांग ने एक दम बच्चों को मोरी में धकेलते हुए कहा—"बच्चो फाटक में ताला लगाओ, ये लोग अच्छे आदमी नहीं हैं । इतने में ही सिपाहियों में से एक आवाज आई 'वह है वांग मेरा भाई !" वांग ने घूमकर देखा तो वह चाचा का लड़का निकला । उसकी भारी मूँछों पर धूल जमी हुई थी और शक्ल भी डाकुओं की तरह हो रही थी । उसने मुस्कराते हुए अपने साथियों से कहा— साथियो यहीं ठहर जाओ, यह धनी आदमी है और मेरा रिश्तेदार है ।'

वांग के देखते-देखते कोसों सिपाही धड़ाधड़ घर में घुसते चले गये । कोई कहीं लेट गया कोई तालाब के पानी से हाथ मुँह धोकर पानी फैलाने लगा कोई इधर-उधर घूमने लगा । सभी एक दूसरे पर ही हमला करने लगे । वांग घबराकर सोचा अपने बड़े लड़के के कमरे में गया । लड़का उस समय आराम कुर्सी पर बैठा हुआ एक पुस्तक पढ़ रहा था । बाप ने जब यह हाल बताया तो वह भी घबराता हुआ बाहर आकर सब देखने लगा । अब उसकी नजर चचेरे भाई पर पड़ी तो समझ में न आया कि वह कैसा व्यवहार करे अथवा देखी दिया है लेकिन बाप ने पीछे से कहा "कि हथियारों से काम लेना, क्योंकि हर सिपाही के पास छुरा भी है ।

वांग के लड़के ने प्रसन्नता दिखाते हुए चाचा का स्वागत किया तो वह बोला—' मेरे साथ कुछ [illegible] भी हैं ।"

"मुझे उसके पास न भेजिये वह हट्टा-कट्टा आदमी है। मैं उसके योग्य नहीं हूँ। मुझे डर है कि कहीं मुझे मार ही न डाले।"

सुन्दरी को बालिका की यह बात सुनकर बड़ा गुस्सा आया और कहने लगी—"यह भी और आदमियों की तरह ही तो है किसी न किसी समय आदमी के पास जाना ही पड़ेगा। तुम उसके पास अवश्य जाओगी।"

डॉन ने जब इस बालिका का रोना चिल्लाना सुना तो सहृदयता से पसीज गया और घबराने लगा कि ऐसा न हो कि वे फौजी लोग कोई उत्पात कर बैठें। उसने सुन्दरी से यह सुनकर यह तय किया कि इसकी बांदियों में से बाबा का लड़का किसी और को चुन ले। इस बालिका को तो भीतरी बीमारियाँ हैं—यह ठीक न रहेगी।

बाबा के लड़के ने जब और बांदियों की ओर देखा तो सबकी सब मुँह फेर कर खड़ी हो गईं किन्तु एक बीस वर्ष की हट्टी कट्टी बांदी ने जब अपने आप को पेश करने की इच्छा प्रकट की तो डॉन ने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

चचेरा भाई अन्य फौजियों के साथ लगभग डेढ़ महीना वहीं रहा। जब उसकी तबियत आती वह उस बांदी को बुलाकर अपनी तृप्ति कर लेता। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे गर्भ रह गया। इधर फौजियों को वहां से और आगे बढ़ने का हुक्म आ गया। विदा होते समय बाबा का लड़का बन्दूक को कन्धे पर रखे हुए बड़े गर्व के साथ डॉन से बोला—

"अच्छा अब यदि मैं भी न आ सकूं तो कोई फिक्र की बात नहीं। मैं अपनी निशानी और अपनी मां के लिये साथी छोड़े जा रहा हूँ यह एक बड़ी बात है जो हर आदमी के लिये मुमकिन नहीं। यह फौजी जिन्दगी की ही करामात है कि थोड़े से दिनों में ही उसका बीज पड़ सकता है और दूसरे लोग उसके लगाए हुए पौधे को सींचते हैं।"

इतना कह कर उसने डॉन को देखा फिर हँसता हुआ अन्य सिपाहियों के साथ वहां से चला गया।

: ३२ :

चोरियों के जाने के बाद सोमगुप्त ने अपने घर की दुबारा मरम्मत कराई, क्योंकि पिछले दिनों चोरों यहाँ रहे, काफी तोड़-फोड़ कर गये थे।

उसके कमरे मार्ग में जिस लड़की को वर्ष रह गया था उसे सोमगुप्त ने कुछ रेशमी कपड़े तथा रुपये देकर उसकी नानी की सेवा में नियुक्त कर दिया।

उसने सोमगुप्त से अपनी यह इच्छा जाहिर की कि यदि वह उचित समझे तो उसका विवाह किसी किसान के लड़के से कर दिया जाय और विवाह के दहेज में उसे ये सब कपड़े और रुपये दिये जाँय।

सोमगुप्त ने उसकी यह बात मानली, तब वह बुढ़िया की सेवा में रहने लगी।

कुछ दिनों बाद उस लड़की ने आकर सोमगुप्त को सूचना दी कि बुढ़िया मर गई है और उसे शव के सन्दूक में रख दिया गया है।

सोमगुप्त ने यह सुनकर नानी की अन्त्येष्टि क्रिया की। फिर उसने उस लड़की का विवाह भी एक हृष्ट-पुष्ट किसान युवक के साथ कर दिया।

× × ×

नानी की मृत्यु के बाद सोमगुप्त के घर में दोनों बहुओं में खूब झगड़ा होने लगा। वे एक दूसरे की शक्ल तक देखने से नफरत करती थीं। प्रतिदिन किसी न किसी बात पर एक नया झगड़ा खड़ा होता, सोमगुप्त यह देख कर दिन-रात चिन्तित बना रहता था।

उधर सुन्दरी की दशा भी बड़ी विचित्र थी। वह सोमगुप्त से उस दिन से रूठी बैठी थी, जिस दिन सौत ने उसकी नई चोली गुलनार को

"मुझे उसके पास न भेजिये वह हट्टा-कट्टा आदमी है। मैं उसके योग्य नहीं हूँ। मुझे डर है कि कहीं मुझे मार ही न डाले।"

सुन्दरी को बालिका की यह बात सुनकर बड़ा गुस्सा आया और कहने लगी— 'तब भी और आदमियों की तरह हो तो है किसी न किसी समय आदमी के पास जाना ही पड़ेगा। तुम उसके पास अवश्य जाओगी।'

बीजली ने जब इस बालिका का रोना चिल्लाना सुना तो वह दयाभाव से पसीज गया और घबराने लगा कि ऐसा न हो कि ये फौजी लोग कोई उत्पात कर बैठें। उसने सुन्दरी से यह सुनकर यह तय किया कि इनकी बाँदियों में से बाबा का लड़का किसी और को चुन ले। इस बालिका की तो भीतरी बीमारियाँ हैं—यह ठीक न रहेगी।

बाबा के लड़के ने जब और बाँदियों की ओर देखा तो सबकी सब मुँह फेर कर खड़ी हो गईं किन्तु एक बीस वर्ष की हृष्ट पुष्ट बाँदी ने जब अपने आप को पेश करने की इच्छा प्रकट की तो बाँग ने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

पचोरा यहाँ अन्य फौजियों के साथ लगभग डेढ़ महीना वहीं रहा। जब उसकी तबियत चाहती वह उस बाँदी को बुलाकर अपनी तृप्ति कर लेता। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे गर्भ रह गया। इधर फौजियों को वहाँ से और आगे जाने का हुक्म आ गया। विदा होते समय बाबा का लड़का बन्दूक को कन्धे पर रखे हुए बड़े गर्व के साथ बाँग से बोला—

"अच्छा अब यदि मैं भी न आ सकूँ तो कोई फिक्र की बात नहीं। मैं अपनी निशानी और अपनी माँ के लिये पोते छोड़े जा रहा हूँ यह एक बड़ी बात है जो हर आदमी के लिये मुमकिन नहीं। यह फौजी जिन्दगी की ही करामात है कि थोड़े से दिनों में हो उसका बीज पक सकता है और दूसरे लोग उसके लगाए हुए पौधे को सींचते हैं।"

इतना कह कर उसने सब को देखा, फिर हँसता हुआ अन्य सिपाहियों के साथ वहाँ से चला गया।

: ३२ :

फौजियों के जाने के बाद बोंगहुड़ ने अपने घर की दुबारा मरम्मत कराई, क्योंकि जितने दिनों फौजी वहाँ रहे, काफी तोड़-फोड़ कर गये थे।

उसके भतीजे भाई ने जिस लड़की को गर्भ रह गया था उसे बोंगहुड़ ने कुछ रेशमी कपड़े तथा रुपये देकर अपनी चाची की सेवा में नियुक्त कर दिया।

उसने बोंगहुड़ से अपनी यह इच्छा जाहिर की कि यदि वह उचित समझे तो उसका विवाह किसी किसान के लड़के से कर दिया जाय और विवाह के दहेज में उसे ये सब कपड़े और रुपये दे दिये जाँय।

बोंगहुड़ ने उसकी यह बात मानली, तब वह बुढ़िया की सेवा में रहने लगी।

कुछ दिनों बाद उस दासी ने आकर बोंगहुड़ को सूचना दी कि …दिया मर गई है और उसे कफ़न के संदूक में रख दिया गया है।

बोंगहुड़ ने यह सुनकर चाची की अन्त्येष्टि क्रिया की। फिर उसने उस लड़की का विवाह भी एक हट्टे-कट्टे किसान युवक के साथ कर दिया।

× × ×

चाची की मृत्यु के बाद बोंगहुड़ के घर में दोनों बहुओं में खूब झगड़ा होने लगा। वे एक दूसरे की शक्ल तक देखने से नफरत करती थी। प्रतिदिन किसी न किसी बात पर एक नया झगड़ा खड़ा होता बोंगहुड़ यह देख कर दिन-रात चिन्तित बना रहता था।

उधर सुन्दरी की दशा भी बड़ी विचित्र थी। वह बोंगहुड़ से
दिन से बड़ी मैली थी, जिस दिन बोंग ने उसकी नई चोटी गुथवार

अपने चचेरे भाई के पास जाने से रोक दिया था। वह समझती थी कि वांग अब गुलनार से मुहब्बत करने लगा है और इस बात को उसने वांग से कई बार साफ २ कह दिया था।

परन्तु वांग सुन्दरी की यह बात सुनकर केवल मुस्कराकर रह जाता था। कभी २ वह कहता— 'मैं बूढ़ा हो गया हूँ, क्या अब भी तुम मुझसे यह आशा करती हो कि मैं कोई ऐसा नीच कार्य कर सकूंगा!'

वांग के इस उत्तर से सुन्दरी कभी सन्तुष्ट न होती।

एक दिन वांग के सबसे छोटे लड़के ने पास आकर उससे कहा— "मैं फौज में भर्ती होकर देश-सेवा करना चाहता हूं।"

जब वांग ने उसे बहुत समझाया तो वह क्रोध से उत्तर देता हुआ बोला—"तुम यह न समझ लेना कि मैं भी बड़े भाई की तरह जीवन का गुलाम बन कर घर में पड़ा रहूँगा। इसलिए मैं तुम्हारी कोई दलील मानने के लिये तैयार नहीं हूँ।

लड़के की बात सुनकर वांगलुङ समझ गया कि वह फौज में भर्ती होने की धमकी किस लिये दे रहा है।

उसने पूछा— 'यदि तुम विवाह नहीं करना चाहते तो क्या किसी बांदी को रखने का इरादा है?'

"विवाह तो मैं करूंगा नहीं —लड़के ने उत्तर दिया—लेकिन" नई मां की बांदी गुलनार मुझे पसन्द है।"

वांगलुङ यह सुन कर हैरान हो गया। उसने कहा—"मेरे घर में अमीरों के समान अन्धाधुन्ध चलता रहे, यह मुझे पसन्द नहीं है। मैं चाहता हूं, तुम अपने निश्चय पर एक बार फिर विचार करो।"

मगर छोटे लड़के ने जैसे उसकी बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। वह अपनी लाल २ आंखें निकालता हुआ बोला—"इस प्रथा को तुम्हीं ने आरम्भ किया है, अतः मुझे रोकने को तुम कैसे कह सकते हो?"

इतना कह कर बाहर चला गया। बाँकेगुप्त को अपने बड़के
छोटे लड़के—से ऐसा सुनने की कदापि आशा नहीं थी। उससे
कुछ कहते न बना, चुपचाप अपना सिर झुकाये बैठा रहा।

× × × ×

छोटे लड़के ने गुलजार के विषय में जो कहा था बाँके के ऊपर
उसका उलटा प्रभाव हुआ।

अपने बड़े ल० को गुलजार की ओर आकर्षित नहीं हुआ
था, लेकिन अब उसे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे ऐसा न करके उसने
कोई भारी गलती की है।

उसके हृदय में एक छोटी सी गुदगुदी होने लगी, वह मन ही
मन गुलजार की ओर अधिक खिंचता चला गया। उसे अनुभव होने
लगा जैसे गुलजार के बिना उसका सारा जीवन व्यर्थ ही बीता जा
रहा है।

धीरे धीरे उसकी यह भावना और प्रबल होती गई। उसे ऐसा
प्रतीत होने लगा जैसे कोई अज्ञात शक्ति उसे गुलजार की ओर खींचे
ले जा रही है।

बाँकेगुप्त मन ही मन गुलजार की ओर आकर्षित हो रहा
था, परन्तु साथ ही डर भी वह अभी समझता था कि अब बूढ़ा हो चला
है। उसकी आयु सत्तरी के लगभग पहुँच गई है, ऐसे में यदि उसने
गुलजार की ओर पैर बढ़ाया तो लोग उसे क्या कहेंगे?

अन्त में उसने निश्चय किया कि गुलजार और उसके छोटे
लड़के की अवस्था बराबर की है। इसलिए गुलजार को अपने लड़के
को सौंप देना ही उचित रहेगा।

वह यह विचार कर ही रहा था कि उसी समय गुलजार उसके
पास से निकली। उसे देखते ही सोच का विचार फिर बदल गया। उसने
इशारे से गुलजार को बुलाया, वह चुपचाप पास आकर खड़ी हो गई।

५३

जाड़े की धूप के समान गुलनार की मोहब्बत थोड़े ही दिनों में समाप्त हो गई। अब कौंग को अपनी गूंगी लड़की के विवाह की चिन्ता हुई।

एक दिन कौंग ने गुलनार से कहा—"यदि कोई लड़का मेरी गूंगी लड़की से विवाह करने के लिए तैयार हो जाय, तो मेरी चिंता दूर हो सकती है। अन्यथा यह शोक मुझे अधिक दिनों तक जीवित न रहने देगा।" फिर बोला "यदि मैं मर जाऊँ और इस लड़की का विवाह न हो सके तो मेरे बाद तुम इसे ज़हर दे देना।

गुलनार यह सुनते ही काँप गई—उसने कहा—"ऐसी अशुभ बात अपने मुँह से न निकालिये। जब तक मैं जीवित हूँ तब तक आपकी लड़की को कोई कष्ट न होने दूँगी परन्तु किसी को ज़हर देने, का काम मुझ से न हो सकेगा।

'मेरे लड़के अपनी २ मस्ती में लगे हैं—वह बोला—'उन्हें अपने अतिरिक्त और किसी की चिंता नहीं है। मेरी मृत्यु के बाद संभव हो सकता है कि तुम्हें भी ज़हर खाने के लिये बाध्य होना पड़े। मैं तुम्हें ज़हर की पुड़िया देता हूँ। इसे सम्हाल कर रख लो। उस समय कहाँ ढूँढती फिरोगी ?"

गुलनार कौंग के हृदय की वेदना को समझ गई। उसके शब्दों का आशय भी उसने भली भाँति पहिचान लिया था।

× × × ×

दिन बीतते गये। बाँग की आयु बढ़ती ही रही उसमें अब अधिक चलने फिरने की शक्ति भी नहीं रह गई थी, सिवाय इसके कि वह एक जगह बैठकर बातें बनाया करता और अपने बीते दिनों की बाबत सोचा करता था।

कभी-कभी वह बच्चों से पूछता—'तुम स्कूल जाते हो?

सब एक साथ उत्तर देते—बाबा हम स्कूल रोज जाते हैं।'

"तुम चारों किताबें पढ़ते हो?"—वह फिर पूछता।

'इन्कलाब के बाद अब चार पुस्तकों का पढ़ना बन्द कर दिया गया है बाबा!'—उसके पौत्र और पौत्रियाँ सहज भाव से उत्तर देते।

इन्कलाब की बात सुनकर बाँगलुङ मन ही मन सोचता अपने समय में इन्कलाब न देख सका। मुझे तो इस विषय में कभी सोचने का अवसर भी न मिला

कभी कभी वह बड़ी बहुओं से पूछता—"मेरे दामाद बहुएँ तो अच्छी तरह हैं?

वह उत्तर देती—'शासन में बहुत बढ़ती है। आपका बड़ा बेटा कहलाया जाता है और छोटा दूसरी शादी करने की फिक्र में है।"

कभी वह अपने सबसे छोटे लड़के के बारे में पूछता—"क्या उसका कोई पत्र आया है?"

उसे बताया जाता—"अब वह दक्षिण प्रदेश में एक फौजी अफसर है। वह घर के लिए कोई पत्र नहीं भेजता।'

एक दिन वह टहलता-हुआ पर्वत की चोटी पर जा पहुँचा। वहाँ उसके पुरखों की कब्रें थीं। मन ही मन उसने कहा—"अब की मेरी बारी है।"

वहाँ से लौटकर घर आने पर बेटे से बोला—मैं अपने लिए स्थान ढूँढ आया हूँ। मेरे पिता की कब्र के पास ही तुम मेरी भी कब्र बनाना। अच्छा हो यदि तुम मुझे मेरा ताबूत लाकर दिखा दो।

उसके बेटे ने यह सुनकर उसे बेल-बूटों से कढ़ा हुआ एक चादर लाकर दिखा दिया। उसे देखकर वाँग बहुत प्रसन्न हुआ।

कुछ दिनों बाद वाँग अपनी गूँगी लड़की और गुलनार को लेकर अपने गाँव के पुराने मकान में चला गया। उसकी इच्छा थी कि मृत्यु के समय वह अपने गाँव में ही रहे।

एक दिन उसके दोनों लड़के उससे मिलने के लिए गाँव में आये।

वाँग ने कान लगा कर उनकी बातें सुनीं। मंझले लड़के ने कहा—"आज कल चावलों के व्योपार में अधिक लाभ है। हमें इस गाँव की जमीन को बेचकर रुपया आपस में बाँट लेना चाहिए और उससे व्यापार करना चाहिए।'

वाँग यह सुनकर अपने को अधिक न संभाल सका। उसने चिल्ला कर कहा—"बेवकूफ लड़को! क्या तुम इस जमीन को बेच देना चाहते हो?"

भविष्य के दुख को कल्पना कर, वह धरती पर गिर पड़ा।

लड़कों ने उसे उठाते हुये तसल्ली दी—"नहीं बापा! हमारा ऐसा कोई इरादा नहीं है। हम तो यह मजाक में कह रहे थे।

वाँग बोला— 'मेरे बच्चो! यदि तुमने इस धरती को बेच दिया तो फिर हमारे खानदान को खतम हुआ समझना। इस धरती की बदौलत ही हम इतनी उन्नति कर सके हैं।

फिर उसने आँखों में आँसू भर कर कहा—"खेत के बिकते ही हमारा खानदान बरबाद हो जायगा।

"तुम हम पर विश्वास करो बापा!" —लड़कों ने कहा—"हम इस धरती को बिल्कुल नहीं बेचेंगे।"

परन्तु दूसरी बार मुँह फेर कर वे दोनों ही मुस्करा रहे थे।
